इतिहास

1

भारत का इतिहास

उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में समुद्र तक फैला यह उपमहाद्वीप भारतवर्ष के नाम से ज्ञात है, जिसे महाकाव्य तथा पुराणों में 'भारतवर्ष' अर्थात् 'भरतों का देश' तथा यहाँ के निवासियों को भारती अर्थात् भरत की संतान कहा गया है। भरत एक प्राचीन कबीले का नाम था। प्राचीन भारतीय अपने देश को जम्बूद्वीप, अर्थात् जम्बू *(जामुन)* वृक्षों का द्वीप कहते थे। प्राचीन ईरानी इसे सिन्धु नदी के नाम से जोड़ते थे, जिसे वे सिन्धु न कहकर हिन्दू कहते थे। यही नाम फिर पूरे पश्चिम में फैल गया और पूरे देश को इसी एक नदी के नाम से जाना जाने लगा। यूनानी इसे ''इंदे'' और अरब इसे हिन्द कहते थे। मध्यकाल में इस देश को हिन्दुस्तान कहा जाने लगा। यह शब्द भी फारसी शब्द ''हिन्दू'' से बना है। यूनानी भाषा के ''इंदे'' के आधार पर अंग्रेज इसे ''इंडिया'' कहने लगे। पारा बदले विंध्य की पर्वत-शृंखला देश को उत्तर और दक्षिण, दो भागों में बाँटती है। उत्तर में इंडो यूरोपीय परिवार की भाषाएँ बोलने वालों की और दक्षिण में द्रविड़ परिवार की भाषाएँ बोलने वालों का बहुमत है।

नोट : *भारत की जनसंख्या का निर्माण जिन प्रमुख नस्लों के लोगों के मिश्रण से हुआ है, वे इस प्रकार हैं—प्रोटो-आस्ट्रेलायड, पैलियो-मेडिटेरेनियन, काकेशायड, निग्रोयड और मंगोलायड।*

भारतीय इतिहास को अध्ययन की सुविधा के लिए तीन भागों में बाँटा गया है—प्राचीन भारत, मध्यकालीन भारत एवं आधुनिक भारत।

नोट : *सबसे पहले इतिहास को तीन भागों में बाँटने का श्रेय जर्मन इतिहासकार क्रिस्टोफ सेलियरस (Christoph Cellarius (1638 – 1707 AD)) को है।*

प्राचीन भारत

1. प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत

प्राचीन भारतीय इतिहास के विषय में जानकारी मुख्यतः चार स्रोतों से प्राप्त होती है—1. धर्मग्रंथ 2. ऐतिहासिक ग्रंथ 3. विदेशियों का विवरण व 4. पुरातत्व-संबंधी साक्ष्य

धर्मग्रंथ एवं ऐतिहासिक ग्रंथ से मिलनेवाली महत्वपूर्ण जानकारी

- भारत का सर्वप्राचीन धर्मग्रंथ वेद है, जिसके संकलनकर्ता महर्षि कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास को माना जाता है। वेद बसुधैव कुटुम्बकम् का उपदेश देता है। भारतीय परम्परा वेदों को नित्य तथा अपौरुषय मानती है। वेद चार हैं—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद। इन चार वेदों को संहिता कहा जाता है।

ऋग्वेद

- ऋचाओं के क्रमबद्ध ज्ञान के संग्रह को ऋग्वेद कहा जाता है। इसमें 10 मंडल, 1028 सूक्त *(वालखिल्य पाठ के 11 सूक्तों सहित)* एवं 10,462 ऋचाएँ हैं। इस वेद के ऋचाओं के पढ़ने वाले ऋषि को होतृ कहते हैं। इस वेद से आर्य के राजनीतिक प्रणाली, इतिहास एवं ईश्वर की महिमा के बारे में जानकारी मिलती है।
- विश्वामित्र द्वारा रचित ऋग्वेद के तीसरे मंडल में सूर्य देवता सावित्री को समर्पित प्रसिद्ध गायत्री मंत्र है। इसके 9वें मंडल में देवता सोम का उल्लेख है।
- इसके 8वें मंडल की हस्तलिखित ऋचाओं को खिल कहा जाता है।
- चातुष्वर्ण्य समाज की कल्पना का आदि स्रोत ऋग्वेद के 10वें मंडल में वर्णित पुरुषसूक्त है, जिसके अनुसार चार वर्ण *(ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र)* आदि पुरुष ब्रह्मा के क्रमशः मुख, भुजाओं, जंघाओं और चरणों से उत्पन्न हुए।
- ऋग्वेद के कई परिच्छेदों में प्रयुक्त अधन्य शब्द का संबंध गाय से है।

नोट : *धर्मसूत्र चार प्रमुख जातियों की स्थितियों, व्यवसायों, दायित्वों, कर्तव्यों तथा विशेषाधिकारों में स्पष्ट विभेद करता है।*

ईसा पूर्व एवं ईसवी

वर्तमान में प्रचलित ग्रेगोरियन कैलेंडर *(ईसाई कैलेंडर/जूलियन कैलेंडर)* ईसाई धर्मगुरु ईसा मसीह के जन्म-वर्ष *(कल्पित)* पर आधारित है। ईसा मसीह के जन्म के पहले के समय को ईसा पूर्व (*B.C.–Before the birth of Jesus Christ*) कहा जाता है। ईसा पूर्व में वर्षों की गिनती उल्टी दिशा में होती है, जैसे महात्मा बुद्ध का जन्म 563 ईसा पूर्व में एवं मृत्यु 483 ईसा पूर्व में हुआ। यानी ईसा मसीह के जन्म के 563 वर्ष पूर्व महात्मा बुद्ध का जन्म एवं 483 वर्ष पूर्व मृत्यु हुई।

ईसा मसीह की जन्म-तिथि से आरंभ हुआ सन्, ईसवी सन् कहलाता है, इसके लिए संक्षेप में ई. लिखा जाता है। ई. को लैटिन भाषा के शब्द A.D. में भी लिखा जाता है। A.D. यानी *Anno Domini* जिसका शाब्दिक अर्थ है— *In the year of lord (Jesus Christ)*।

- वामनावतार के तीन पगों के आख्यान का प्राचीनतम स्रोत ऋग्वेद है।
- ऋग्वेद में इन्द्र के लिए 250 तथा अग्नि के लिए 200 ऋचाओं की रचना की गयी है।

नोट : *प्राचीन इतिहास के साधन के रूप में वैदिक साहित्य में ऋग्वेद के बाद शतपथ ब्राह्मण का स्थान है।*

यजुर्वेद

- सस्वर पाठ के लिए मंत्रों तथा बलि के समय अनुपालन के लिए नियमों का संकलन यजुर्वेद कहलाता है। इसके पाठकर्ता को अध्वर्यु कहते हैं।
- यजुर्वेद में यज्ञों के नियमों एवं विधि-विधानों का संकलन मिलता है।
- इसमें बलिदान विधि का भी वर्णन है।
- यह एक ऐसा वेद है जो गद्य एवं पद्य दोनों में है।

सामवेद

- 'साम' का शाब्दिक अर्थ है गान। इस वेद में मुख्यतः यज्ञों के अवसर पर गाये जाने वाले ऋचाओं *(मन्त्रों)* का संकलन है। इसके पाठकर्ता को उद्गातृ कहते हैं। इसका संकलन ऋग्वेद पर आधारित है।
- इसे भारतीय संगीत का जनक कहा जाता है।

नोट : *यजुर्वेद तथा सामवेद में किसी भी विशिष्ट ऐतिहासिक घटना का वर्णन नहीं मिलता।*

अथर्ववेद

- अथर्वा ऋषि द्वारा रचित इस वेद में कुल 731 मंत्र तथा लगभग 6000 पद्य हैं। इसके कुछ मंत्र ऋग्वैदिक मंत्रों से भी प्राचीनतर हैं। अथर्ववेद कन्याओं के जन्म की निन्दा करता है।

पुराण	संबंधित वंश
विष्णु पुराण	मौर्य वंश
मत्स्य पुराण	आन्ध्र सातवाहन
वायु पुराण	गुप्त वंश

- ऐतिहासिक दृष्टि से अथर्ववेद का महत्व इस बात में है कि इसमें सामान्य मनुष्यों के विचारों तथा अंधविश्वासों का विवरण मिलता है।
- पृथिवीसूक्त अथर्ववेद का प्रतिनिधि सूक्त माना जाता है। इसमें मानव जीवन के सभी पक्षों–गृह निर्माण, कृषि की उन्नति, व्यापारिक मार्गों का गाहन *(खोज)*, रोग निवारण, समन्वय, विवाह तथा प्रणय गीतों, राजभक्ति, राजा का चुनाव, बहुत से वनस्पतियों एवं औषधियों, शाप, वशीकरण, प्रायश्चित, मातृभूमि महात्मय आदि का विवरण दिया गया है। कुछ मंत्रों में जादू-टोने का भी वर्णन है।

- अथर्ववेद में परीक्षित को कुरुओं का राजा कहा गया है तथा कुरु देश की समृद्धि का अच्छा चित्रण मिलता है।
- इसमें सभा एवं समिति को प्रजापति की दो पुत्रियाँ कहा गया है।

नोट : *सबसे प्राचीन वेद ऋग्वेद एवं सबसे बाद का वेद अथर्ववेद है।*

- वेदों को भली-भाँति समझने के लिए छह वेदांगों की रचना हुई। ये हैं—शिक्षा, ज्योतिष, कल्प, व्याकरण, निरूक्त तथा छंद।
- भारतीय ऐतिहासिक कथाओं का सबसे अच्छा क्रमबद्ध विवरण पुराणों में मिलता है। इसके रचयिता लोमहर्ष अथवा इनके पुत्र उग्रश्रवा माने जाते हैं। इनकी संख्या 18 है, जिनमें से केवल पाँच–*मत्स्य, वायु, विष्णु, ब्राह्मण* एवं *भागवत* में ही राजाओं की वंशावली पायी जाती है।

नोट : *पुराणों में मत्स्यपुराण सबसे प्राचीन एवं प्रामाणिक है।*

- अधिकतर पुराण सरल संस्कृत श्लोक में लिखे गये हैं। स्त्रियाँ तथा शूद्र जिन्हें वेद पढ़ने की अनुमति नहीं थी, वे भी पुराण सुन सकते थे। पुराणों का पाठ पुजारी मंदिरों में किया करते थे।
- स्त्री की सर्वाधिक गिरी हुई स्थिति मैत्रेयनी संहिता से प्राप्त होती है जिसमें जुआ और शराब की भाँति स्त्री को पुरुष का तीसरा मुख्य दोष बताया गया है।
- शतपथ ब्राह्मण में स्त्री को पुरुष की अर्धांगिनी कहा गया है।
- जाबालोपनिषद् में चारों आश्रमों का उल्लेख मिलता है।
- स्मृतिग्रंथों में सबसे प्राचीन एवं प्रामाणिक मनुस्मृति मानी जाती है। यह शुंग काल का मानक ग्रंथ है। नारद स्मृति गुप्त युग के विषय में जानकारी प्रदान करता है।
- जातक में बुद्ध की पूर्वजन्म की कहानी वर्णित है। हीनयान का प्रमुख ग्रंथ 'कथावस्तु' है, जिसमें महात्मा बुद्ध का जीवन-चरित अनेक कथानकों के साथ वर्णित है।
- जैन साहित्य को आगम कहा जाता है। जैनधर्म का प्रारंभिक इतिहास 'कल्पसूत्र' से ज्ञात होता है। जैन ग्रंथ भगवती सूत्र में महावीर के जीवन-कृत्यों तथा अन्य समकालिकों के साथ उनके संबंधों का विवरण मिलता है।
- अर्थशास्त्र के लेखक चाणक्य *(कौटिल्य या विष्णुगुप्त)* हैं। यह 15 अधिकरणों एवं 180 प्रकरणों में विभाजित है। इससे मौर्यकालीन इतिहास की जानकारी प्राप्त होती है। *(अनुवादक-शाम शास्त्री)*
- संस्कृत साहित्य में ऐतिहासिक घटनाओं को क्रमबद्ध लिखने का सर्वप्रथम प्रयास कल्हण के द्वारा किया गया। कल्हण द्वारा रचित पुस्तक राजतरंगिणी *(आठ तरंग)* है, जिसका संबंध कश्मीर के इतिहास से है।
- अरबों की सिंध-विजय का वृत्तांत चचनामा *(लेखक–अली अहमद)* में सुरक्षित है।
- 'अष्टाध्यायी' *(संस्कृत भाषा व्याकरण की प्रथम पुस्तक)* के लेखक पाणिनि हैं। इससे मौर्य के पहले का इतिहास तथा मौर्ययुगीन राजनीतिक अवस्था की जानकारी प्राप्त होती है।
- कत्यायन की गार्गी-संहिता एक ज्योतिष ग्रंथ है, फिर भी इसमें भारत पर होने वाले यवन आक्रमण का उल्लेख मिलता है।
- पतंजलि पुष्यमित्र शुंग के पुरोहित थे, इनके महाभाष्य से शुंगों के इतिहास का पता चलता है।

विदेशी यात्रियों से मिलनेवाली प्रमुख जानकारी

A. यूनानी-रोमन लेखक

1. टेसियस : यह ईरान का राजवैद्य था। भारत के संबंध में इसका विवरण आश्चर्यजनक कहानियों से परिपूर्ण होने के कारण अविश्वसनीय है।
2. हेरोडोटस : इसे 'इतिहास का पिता' कहा जाता है। इसने अपनी पुस्तक हिस्टोरिका में 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व के भारत-फारस *(ईरान)* के संबंध का वर्णन किया है। परन्तु इसका विवरण भी अनुश्रुतियों एवं अफवाहों पर आधारित है।
3. सिकन्दर के साथ आनेवाले लेखकों में निर्याकस, आनेसिक्रटस तथा आरिस्टोबुलस के विवरण अधिक प्रामाणिक एवं विश्वसनीय हैं।
4. मेगास्थनीज : यह सेल्युकस निकेटर का राजदूत था, जो चन्द्रगुप्त मौर्य के राजदरबार में आया था। इसने अपनी पुस्तक इण्डिका में मौर्य युगीन समाज एवं संस्कृति के विषय में लिखा है।
5. डाइमेकस : यह सीरियन नरेश आन्तियोकस का राजदूत था, जो बिन्दुसार के राजदरबार में आया था। इसका विवरण भी मौर्य-युग से संबंधित है।
6. डायोनिसियस : यह मिस्र नरेश टॉलमी फिलेडेल्फस का राजदूत था, जो अशोक के राजदरबार में आया था।
7. टॉलमी : इसने दूसरी शताब्दी में 'भारत का भूगोल' नामक पुस्तक लिखी।
8. प्लिनी : इसने प्रथम शताब्दी में 'नेचुरल हिस्ट्री' नामक पुस्तक लिखी। इसमें भारतीय पशुओं, पेड़-पौधों, खनिज-पदार्थों आदि के बारे में विवरण मिलता है।
9. पेरीप्लस ऑफ द इरिथ्रियन-सी : इस पुस्तक के लेखक के बारे में जानकारी नहीं है। यह लेखक करीब 80 ई. में हिन्द महासागर की यात्रा पर आया था। इसने उस समय के भारत के बन्दरगाहों तथा व्यापारिक वस्तुओं के बारे में जानकारी दी है।

B. चीनी लेखक

1. फाहियान : यह चीनी यात्री गुप्त नरेश चन्द्रगुप्त द्वितीय के दरबार में आया था। इसने अपने विवरण में मध्यप्रदेश के समाज एवं संस्कृति के बारे में वर्णन किया है। इसने मध्यप्रदेश की जनता को सुखी एवं समृद्ध बताया है। यह 14 वर्षों तक भारत में रहा।
2. संयुगन : यह 518 ई. में भारत आया। इसने अपने तीन वर्षों की यात्रा में बौद्ध धर्म की प्राप्तियाँ एकत्रित कीं।
3. ह्वेनसाँग : यह हर्षवर्धन के शासनकाल में भारत आया था। ह्वेनसाँग 629 ई. में चीन से भारतवर्ष के लिए प्रस्थान किया और लगभग एक वर्ष की यात्रा के बाद सर्वप्रथम वह भारतीय राज्य कपिशा पहुँचा। भारत में 15 वर्षों तक ठहरकर 645 ई. में चीन लौट गया। वह बिहार में नालंदा जिला स्थित नालंदा विश्वविद्यालय में अध्ययन करने तथा भारत से बौद्ध ग्रंथों को एकत्र कर ले जाने के लिए आया था। इसका भ्रमण वृत्तांत सि-यू-की नाम से प्रसिद्ध है, जिसमें 138 देशों का विवरण मिलता है। इसने हर्षकालीन समाज, धर्म तथा राजनीति के बारे में वर्णन किया है। इसके अनुसार सिन्ध का राजा शूद्र था। ह्वेनसांग ने बुद्ध की प्रतिमा के साथ-साथ सूर्य और शिव की प्रतिमाओं का भी पूजन किया था।

नोट : *ह्वेनसाँग के अध्ययन के समय नालंदा विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य शीलभद्र थे। यह विश्वविद्यालय बौद्ध दर्शन के लिए प्रसिद्ध था।*

4. इत्सिंग : यह 7वीं शताब्दी के अन्त में भारत आया। इसने अपने विवरण में नालंदा विश्वविद्यालय, विक्रमशिला विश्वविद्यालय तथा अपने समय के भारत का वर्णन किया है।

C. अरबी लेखक

1. अलबरुनी : यह महमूद गजनवी के साथ भारत आया था। अरबी में लिखी गई उसकी कृति *'किताब-उल-हिन्द या तहकीक-ए-हिन्द (भारत की खोज)'*, आज भी इतिहासकारों के लिए एक महत्वपूर्ण स्रोत है। यह एक विस्तृत ग्रंथ है जो धर्म और दर्शन, त्योहारों, खगोल विज्ञान, कीमिया, रीति-रिवाजों तथा प्रथाओं, सामाजिक जीवन, भार-तौल तथा मापन विधियों, मूर्तिकला, कानून, मापतंत्र विज्ञान आदि विषयों के आधार पर अस्सी अध्यायों में विभाजित है। इसमें राजपूत-कालीन समाज, धर्म, रीति-रिवाज, राजनीति आदि पर सुन्दर प्रकाश डाला गया है।
2. इब्न बतूता : इसके द्वारा अरबी भाषा में लिखा गया उसका यात्रा-वृतांत जिसे रेहला कहा जाता है, 14वीं शताब्दी में भारतीय उपमहाद्वीप के सामाजिक तथा सांस्कृतिक जीवन के विषय में बहुत ही प्रचुर तथा सबसे रोचक जानकारियाँ देता है। 1333 ई. में दिल्ली पहुँचने पर इसकी विद्वता से प्रभावित होकर सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक ने उसे दिल्ली का काजी या न्यायाधीश नियुक्त किया।

D. अन्य लेखक

1. तारानाथ : यह एक तिब्बती लेखक था। इसने 'कंग्युर' तथा 'तंग्युर' नामक ग्रंथ की रचना की। इनसे भारतीय इतिहास के बारे में जानकारी मिलती है।
2. मार्कोपोलो : यह 13वीं शताब्दी के अन्त में पाण्ड्य देश की यात्रा पर आया था। इसका विवरण पाण्ड्य इतिहास के अध्ययन के लिए उपयोगी है।

पुरातत्व संबंधी साक्ष्य से मिलनेवाली जानकारी

- भारतीय पुरातत्वशास्त्र का पितामह *(Father of Indian Archeology)* सर एलेक्जेण्डर कनिंघम को कहा जाता है।
- 1400 ई.पू. के अभिलेख 'बोगाज-कोई' *(एशिया माइनर)* से वैदिक देवता मित्र, वरुण, इन्द्र और नासत्य *(अश्विनी कुमार)* के नाम मिलते हैं।
- मध्य भारत में भागवत धर्म विकसित होने का प्रमाण यवन राजदूत 'होलियोडोरस' के वेसनगर *(विदिशा)* गरुड़ स्तम्भ लेख से प्राप्त होता है।
- सर्वप्रथम 'भारतवर्ष' का जिक्र हाथीगुम्फा अभिलेख में है।
- सर्वप्रथम दुर्भिक्ष का जानकारी देनेवाला अभिलेख सौहगौरा अभिलेख है। इस अभिलेख में संकट काल में उपयोग हेतु खाद्यान्न सुरक्षित रखने का भी उल्लेख है।
- सर्वप्रथम भारत पर होनेवाले हूण आक्रमण की जानकारी भीतरी स्तंभ लेख से प्राप्त होती है।
- सती-प्रथा का पहला लिखित साक्ष्य एरण अभिलेख *(शासक भानुगुप्त)* से प्राप्त होती है।
- सातवाहन राजाओं का पूरा इतिहास उनके अभिलेखों के आधार पर लिखा गया है।
- रेशम बुनकर की श्रेणियों की जानकारी मंदसौर अभिलेख से प्राप्त होती है।
- कश्मीरी नवपाषाणिक पुरास्थल बुर्जहोम से गर्तावास *(गड्ढा घर)* का साक्ष्य मिला है। इनमें उतरने के लिए सीढ़ियाँ होती थीं।
- प्राचीनतम सिक्कों को आहत सिक्के कहा जाता है, इसी को साहित्य में काषार्पण कहा गया है।
- सर्वप्रथम सिक्कों पर लेख लिखने का कार्य यवन शासकों ने किया।
- समुद्रगुप्त की वीणा बजाती हुई मुद्रा वाले सिक्के से उसके संगीत-प्रेमी होने का प्रमाण मिलता है।
- अरिकमेडू *(पुदुचेरी के निकट)* से रोमन सिक्के प्राप्त हुए हैं।

नोट: *सबसे पहले भारत के संबंध बर्मा (सुवर्णभूमि–वर्तमान में म्यांमार), मलाया (स्वर्णद्वीप), कंबोडिया (कंबोज) और जावा (यवद्वीप) से स्थापित हुए।*

महत्वपूर्ण अभिलेख

अभिलेख	शासक
हाथीगुम्फा अभिलेख *(तिथि रहित अभिलेख)*	कलिंग राज खारवेल
जूनागढ़ *(गिरनार)* अभिलेख	रुद्रदामन
नासिक अभिलेख	गौतमी बलश्री
प्रयाग स्तम्भ लेख	समुद्रगुप्त
ऐहोल अभिलेख	पुलकेशिन–II
मन्दसौर अभिलेख	मालवा नरेश यशोवर्मन
ग्वालियर अभिलेख	प्रतिहार नरेश भोज
भितरी एवं जूनागढ़ अभिलेख	स्कन्दगुप्त
देवपाड़ा अभिलेख	बंगाल शासक विजयसेन

नोट: *अभिलेखों का अध्ययन इपीग्राफी कहलाता है।*

- उत्तर भारत के मंदिरों की कला की शैली नागर शैली एवं दक्षिण भारत के मंदिरों की कला द्राविड़ शैली कहलाती है। दक्षिणापथ के मंदिरों के निर्माण में नागर और द्रविड़ दोनों शैलियों का प्रभाव पड़ा, अतः यह वेसर शैली कहलाती है।
- पंचायतन शब्द मंदिर रचना शैली से संबंधित है। एक हिन्दू मंदिर तब पंचायतन शैली का कहलाता है जब मुख्य मंदिर चार सहायक मंदिरों से घिरा होता है। पंचायतन मंदिर के उदाहरण हैं—कंदरिया महादेव मंदिर *(खजुराहो)*, ब्रह्मेश्वर मंदिर *(भुवनेश्वर)*, लक्ष्मण मंदिर *(खजुराहो)*, लिंगराज मंदिर *(भुवनेश्वर)*, दशावतार मंदिर *(देवगढ़, उ.प्र.)*, गोंडेश्वर मंदिर *(महाराष्ट्र)*

2. प्रागैतिहासिक काल

- जिस काल में मनुष्य ने घटनाओं का कोई लिखित विवरण उद्धृत नहीं किया, उसे 'प्रागैतिहासिक काल' कहते हैं। मानव विकास के उस काल को इतिहास कहा जाता है, जिसका विवरण लिखित रूप में उपलब्ध है।

संस्कृति	बर्तन
मालवा	काला तथा लाल
बुर्जहोम	धूसर
जोर्वे	लाल
द. नवपाषाण	चमकीला धूसर
पूर्वी नवपाषाण	भूरा लाल

- 'आद्य ऐतिहासिक काल' उस काल को कहते हैं, जिस काल में लेखन-कला के प्रचलन के बाद उपलब्ध लेख पढ़े नहीं जा सके हैं।
- 'ज्ञानी मानव' *(होमोसैपियंस)* का प्रवेश इस धरती पर आज से लगभग तीस या चालीस हजार वर्ष पूर्व हुआ।
- 'पूर्व-पाषाण युग' या पूरा-पाषाणकाल के मानव की जीविका का मुख्य आधार शिकार था—शिकार पुरा-पाषाणकाल में आदि मानव के मनोरंजन के भी साधन थे।
- आग का आविष्कार पुरा-पाषाणकाल में एवं पहिये का नव-पाषाणकाल में हुआ।
- मनुष्य में स्थायी निवास की प्रवृत्ति नव-पाषाणकाल में हुई तथा उसने सबसे पहले कुत्ता को पालतू बनाया।
- मनुष्य ने सर्वप्रथम ताँबा धातु का प्रयोग किया तथा उसके द्वारा बनाया जानेवाला प्रथम औजार कुल्हाड़ी *(प्राप्ति स्थल–अतिरम्पक्कम)* था।
- कृषि का आविष्कार नव-पाषाणकाल में हुआ। प्रागैतिहासिक अन्न उत्पादक स्थल मेहरगढ़ पश्चिमी बलूचिस्तान में अवस्थित है। कृषि के लिए अपनाई गई सबसे प्राचीन फसल गेहूँ *(पहली फसल)* एवं जौ थी लेकिन मानव द्वारा सर्वप्रथम प्रयुक्त अनाज चावल था।
- कृषि का प्रथम उदाहरण मेहरगढ़ से प्राप्त हुआ है। कोल्डिहवा का संबंध चावल के प्राचीनतम साक्ष्य से है।
- पल्लावरम् नामक स्थान पर प्रथम भारतीय पुरापाषण कलाकृति की खोज हुई थी।
- भारत में पूर्व प्रस्तर युग के अधिकांश औजार स्फटिक *(पत्थर)* के बने थे।
- रॉबर्ट ब्रुस फुट पहले व्यक्ति थे जिन्होंने 1863 ई. में भारत में पुरापाषाणकालीन औजारों की खोज की।
- भारत का सबसे प्राचीन नगर मोहनजोदड़ो था, सिंधी भाषा में जिसका अर्थ है मृतकों का टीला।
- असम का श्वेतभ्रू गिबन भारत में पाया जाने वाला एक मात्र मानवाभ कपि है।
- इनामगाँव ताम्रपाषाण युग की एक बड़ी बस्ती थी। इसका संबंध जोर्वे संस्कृति से है।
- भारत में शिवालक की पहाड़ी से जीवाश्म का प्रमाण मिला है।
- प्रागैतिहासिक काल में भीमबेटका गुफाओं के शैलचित्र के लिए प्रसिद्ध है।
- भारत में मनुष्य संबंधी सबसे पहला प्रमाण नर्मदा घाटी में मिला है।

नोट: *भारतीय नागरिक सेवा के अधिकारी रिजले प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने प्रथम बार वैज्ञानिक आधार पर भारत की जनसंख्या का प्रजातीय विभेदीकरण किया।*

3. सिन्धु सभ्यता

- रेडियोकार्बन C^{14} जैसी नवीन विश्लेषण-पद्धति के द्वारा सिन्धु सभ्यता की सर्वमान्य तिथि 2400 ईसा पूर्व से 1700 ईसा पूर्व मानी गयी है। इसका विस्तार त्रिभुजाकार है।*
- सिन्धु सभ्यता की खोज 1921 में रायबहादुर दयाराम साहनी ने की।

*द गजेटियर ऑफ इंडिया (V–II) P. 21

➢ सिन्धु सभ्यता को आद्य ऐतिहासिक *(Protohistoric)* अथवा कांस्य *(Bronze)* युग में रखा जा सकता है। इस सभ्यता के मुख्य निवासी द्रविड़ एवं भूमध्य सागरीय थे।

➢ सर जान मार्शल *(भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के तत्कालीन महानिदेशक)* ने 1924 ई. में सिन्धु घाटी सभ्यता नामक एक उन्नत नगरीय सभ्यता पाए जाने की विधिवत घोषणा की।

➢ सिन्धु सभ्यता के सर्वाधिक पश्चिमी पुरास्थल दाश्क नदी के किनारे स्थित सुतकागेंडोर *(बलूचिस्तान)*, पूर्वी पुरास्थल हिण्डन नदी के किनारे आलमगीरपुर *(जिला मेरठ, उत्तर प्र.)*, उत्तरी पुरास्थल चिनाव नदी के तट पर अखनूर के निकट माँदा *(जम्मू-कश्मीर)* व दक्षिणी पुरास्थल गोदावरी नदी के तट पर दाइमाबाद *(जिला अहमदनगर, महाराष्ट्र)*।

➢ सिन्धु सभ्यता या सैंधव सभ्यता नगरीय सभ्यता थी। सैंधव सभ्यता से प्राप्त परिपक्व अवस्था वाले स्थलों में केवल 6 को ही बड़े नगर की संज्ञा दी गयी है; ये हैं—मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, गणवारीवाला, धौलावीरा, राखीगढ़ी एवं कालीबंगन।

➢ स्वतंत्रता-प्राप्ति पश्चात् हड़प्पा संस्कृति के सर्वाधिक स्थल गुजरात में खोजे गये हैं।

नोट : *सिन्धु घाटी सभ्यता का सबसे बड़ा स्थल मोहनजोदड़ो हैं, जबकि भारत में इसका सबसे बड़ा स्थल राखीगढ़ी (घग्घर नदी) है जो हरियाणा के जींद जिला में स्थित है। इसकी खोज 1969 ई. में सूरजभान ने की थी।*

➢ लोथल एवं सुतकोतदा—सिन्धु सभ्यता का बन्दरगाह था।

➢ जुते हुए खेत और नक्काशीदार ईंटों के प्रयोग का साक्ष्य कालीबंगन से प्राप्त हुआ है।

➢ मोहनजोदड़ो से प्राप्त स्नानागार संभवतः सैंधव सभ्यता की सबसे बड़ी इमारत है, जिसके मध्य स्थित स्नानकुंड 11.88 मीटर लम्बा, 7.01 मीटर चौड़ा एवं 2.43 मीटर गहरा है।

➢ अग्निकुण्ड लोथल एवं कालीबंगन से प्राप्त हुए हैं।

➢ मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक शील पर तीन मुख वाले देवता *(पशुपति नाथ)* की मूर्ति मिली है। उनके चारों ओर हाथी, गैंडा, चीता एवं भैंसा विराजमान हैं।

➢ मोहनजोदड़ो से नर्तकी की एक कांस्य मूर्ति मिली है।

➢ हड़प्पा की मोहरों पर सबसे अधिक एक शृंगी पशु का अंकन मिलता है। यहाँ से प्राप्त एक आयताकार मुहर में स्त्री के गर्भ से निकलता पौधा दिखाया गया है।

➢ मनके बनाने के कारखाने लोथल एवं चन्हूदड़ो में मिले हैं।

➢ सिन्धु सभ्यता की लिपि भावचित्रात्मक है। यह लिपि दायीं से बायीं ओर लिखी जाती थी। जब अभिलेख एक से अधिक पंक्तियों का होता था तो पहली पंक्ति दायीं से बायीं और दूसरी बायीं से दायीं ओर लिखी जाती थी।

नोट : *लेखनकला की उचित प्रणाली विकसित करने वाली पहली सभ्यता सुमेरिया की सभ्यता थी।*

➢ सिन्धु सभ्यता के लोगों ने नगरों तथा घरों के विन्यास के लिए ग्रीड पद्धति अपनाई।

➢ घरों के दरवाजे और खिड़कियाँ सड़क की ओर न खुलकर पिछवाड़े की ओर खुलते थे। केवल लोथल नगर के घरों के दरवाजे मुख्य सड़क की ओर खुलते थे।

➢ सिन्धु सभ्यता में मुख्य फसल थी—गेहूँ और जौ।

➢ सैंधव वासी मिठास के लिए शहद का प्रयोग करते थे।

➢ मिट्टी से बने हल का साक्ष्य बनमाली से मिला है।

➢ रंगपुर एवं लोथल से चावल के दाने मिले हैं, जिनसे धान की खेती होने का प्रमाण मिलता है। चावल के प्रथम साक्ष्य लोथल से ही प्राप्त हुए हैं।

➢ सुरकोतदा, कालीबंगन एवं लोथल से सैंधवकालीन घोड़े के अस्थिपंजर मिले हैं।

➢ तौल की इकाई संभवतः 16 के अनुपात में थी।

➢ सैंधव सभ्यता के लोग यातायात के लिए दो पहियों एवं चार पहियों वाली बैलगाड़ी या भैंसागाड़ी का उपयोग करते थे।

सिन्धु काल में विदेशी व्यापार

आयातित वस्तुएँ	प्रदेश
ताँबा	खेतड़ी, बलूचिस्तान, ओमान
चाँदी	अफगानिस्तान, ईरान
सोना	कर्नाटक, अफगानि., ईरान
टिन	अफगानिस्तान, ईरान
गोमेद	सौराष्ट्र
लाजवर्त	मेसोपोटामिया
सीसा	ईरान

➢ मेसोपोटामिया के अभिलेखों में वर्णित मेलूहा शब्द का अभिप्राय सिन्धु सभ्यता से ही है।

➢ संभवतः हड़प्पा संस्कृति का शासन वणिक वर्ग के हाथों में था।

➢ पिग्गट ने हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो को एक विस्तृत साम्राज्य की जुड़वाँ राजधानी कहा है।

➢ सिन्धु सभ्यता के लोग धरती को उर्वरता की देवी मानकर उसकी पूजा किया करते थे।

➢ वृक्ष-पूजा एवं शिव-पूजा के प्रचलन के साक्ष्य भी सिन्धु सभ्यता से मिलते हैं।

➢ स्वास्तिक चिह्न संभवतः हड़प्पा सभ्यता की देन है। इस चिह्न से सूर्योपासना का अनुमान लगाया जाता है। सिन्धु घाटी के नगरों में किसी भी मंदिर के अवशेष नहीं मिले हैं।

➢ सिन्धु सभ्यता में मातृदेवी की उपासना सर्वाधिक प्रचलित थी।

➢ पशुओं में कुबड़ वाला साँड़, इस सभ्यता के लोगों के लिए विशेष पूजनीय था।

➢ स्त्री मृण्मूर्तियाँ *(मिट्टी की मूर्तियाँ)* अधिक मिलने से ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि सैंधव समाज मातृसत्तात्मक था।

सैंधव सभ्यता के प्रमुख स्थल : नदी, उत्खननकर्ता एवं वर्तमान स्थिति

क्र.	प्रमुख स्थल	नदी	स्थिति	उत्खननकर्ता
1.	हड़प्पा	रावी	पाकिस्तान के पंजाब प्रांत का साहीवाल जिला	दयाराम साहनी (1921), माधोस्वरूप वत्स (1926), व्हीलर (1946)
2.	मोहनजोदड़ो	सिन्धु	पाकिस्तान के सिंध प्रांत का लरकाना जिला	राखालदास बनर्जी (1922), मैके (1927), व्हीलर (1930)
3.	चन्हूदड़ो	सिन्धु	सिंध प्रांत *(पाकिस्तान)* नबाब शाह जिला	मैके (1925), एन.जी.मजुमदार (1931)
4.	कालीबंगन	घग्घर	राजस्थान का हनुमानगढ़ जिला	अमलानंद घोष (1951), बी.वी.लाल एवं बी.के. थापर (1961)
5.	कोटदीजी	सिन्धु	सिंध प्रांत का खैरपुर स्थान	फजल अहमद (1953)
6.	रंगपुर	मादर	गुजरात का काठियावाड़ जिला	रंगनाथ राव (1953 – 54)
7.	रोपड़	सतलज	पंजाब का रोपड़ जिला	यज्ञदत शर्मा (1953 – 56)
8.	लोथल	भोगवा	गुजरात का अहमदाबाद जिला	रंगनाथ राव (1954)
9.	आलमगीरपुर	हिन्डन	उत्तर प्रदेश का मेरठ जिला	यज्ञदत्त शर्मा (1958)
10.	सुतकांगेडोर	दाश्क	पाकिस्तान के मकरान में समुद्र तट के किनारे	ऑरेल स्टाइन (1927)
11.	बनमाली	रंगोई	हरियाणा का हिसार जिला	रवीन्द्र सिंह विष्ट (1974)
12.	धौलावीरा	लुनी	गुजरात के कच्छ जिला	जे.पी.जोशी (1967-1968), रवीन्द्र सिंह विष्ट (1990-91)
13.	सोत्काह	शादीकौर	द. ब्लूचिस्तान	जार्ज डेल्स (1962)

➢ सैंधववासी सूती एवं ऊनी वस्त्रों का प्रयोग करते थे।

➢ मनोरंजन के लिए सैंधववासी मछली पकड़ना, शिकार करना, पशु-पक्षियों को आपस में लड़ाना, चौपड़ और पासा खेलना आदि साधनों का प्रयोग करते थे।

➢ सिन्धु सभ्यता के लोग काले रंग से डिजाइन किये हुए लाल मिट्टी के बर्तन बनाते थे।

➢ सिन्धु घाटी के लोग तलवार से परिचित नहीं थे।

➢ कालीबंगन एक मात्र हड़प्पाकालीन स्थल था, जिसका निचला शहर *(सामान्य लोगों के रहने हेतु)* भी किले से घिरा हुआ था। कालीबंगन का अर्थ है काली चूड़ियाँ। यहाँ से पूर्व हड़प्पा स्तरों के खेत जोते जाने के और अग्निपूजा की प्रथा के प्रमाण मिले हैं।

➢ **पर्दा-प्रथा** एवं **वेश्यावृति** सैंधव सभ्यता में प्रचलित थी।

➢ शवों को जलाने एवं गाड़ने यानी दोनों प्रथाएँ प्रचलित थीं। हड़प्पा में शवों को दफनाने जबकि मोहनजोदड़ो में जलाने की प्रथा विद्यमान थी। लोथल एवं कालीबंगा में युग्म समाधियाँ मिली हैं।

➢ सैंधव सभ्यता के विनाश का संभवतः सबसे प्रभावी कारण बाढ़ था।

➢ आग में पकी हुई मिट्टी को टेराकोटा कहा जाता है।

4. वैदिक सभ्यता

➢ वैदिककाल का विभाजन दो भागों 1. ऋग्वैदिक काल–1500-1000 ई. पू. और 2. उत्तर वैदिककाल—1000-600 ई. पू. में किया गया है।

➢ आर्य सर्वप्रथम पंजाब एवं अफगानिस्तान में बसे। मैक्समूलर ने आर्यों का मूल निवास-स्थान **मध्य एशिया** को माना है। आर्यों द्वारा निर्मित सभ्यता **वैदिक सभ्यता** कहलाई। यह एक **ग्रामीण सभ्यता** थी। आर्यों की भाषा **संस्कृत** थी।

नोट : *आर्य शब्द भाषा-समूह को इंगित करता है।*

➢ आर्यों के प्रशासनिक इकाई आरोही क्रम से इन पाँच भागों में बँटा था—कुल, ग्राम, विश्, जन, राष्ट्र। ग्राम के मुखिया **ग्रामिणी**, विश् का प्रधान **विशपति** एवं जन के शासक **राजन** कहलाते थे।

➢ राज्याधिकारियों में **पुरोहित** एवं **सेनानी** प्रमुख थे। वसिष्ठ रुढ़िवादी एवं विश्वामित्र उदार पुरोहित थे।

दिशा	उत्तरवैदिक शब्द	राजा का नाम
पूर्व	प्राची	सम्राट्
पश्चिम	प्रतीची	स्वराष्ट्र
उत्तर	उदीची	विराट्
मध्य		राजा
दक्षिण		भोज

➢ सूत, रथकार व कम्मादि नामक अधिकारी **रत्नी** कहे जाते थे। इनकी संख्या राजा सहित करीब 12 हुआ करती थी।

➢ **पुरप**—दुर्गपति एवं **स्पश**—जनता की गतिविधियों को देखने वाले गुप्तचर होते थे।

➢ **वाजपति**—गोचर भूमि का अधिकारी होता था।

➢ **उग्र**—अपराधियों को पकड़ने का कार्य करता था।

नोट : *ऋग्वेद में किसी तरह के न्यायाधिकारी का उल्लेख नहीं है।*

➢ **सभा** एवं **समिति** राजा को सलाह देने वाली संस्था थी। **सभा श्रेष्ठ एवं संभ्रांत लोगों की संस्था थी जबकि समिति** सामान्य जनता का प्रतिनिधित्व करती थी। इसके अध्यक्ष को **ईशान** कहा जाता था। स्त्रियाँ सभा एवं समितियों में भाग ले सकती थीं।

➢ युद्ध में कबीले का नेतृत्व राजा करता था। युद्ध के लिए **गविष्टि** शब्द का प्रयोग किया गया है, जिसका अर्थ है—गायों की खोज।

➢ **दसराज्ञ युद्ध** का उल्लेख ऋग्वेद के 7वें मंडल में है, यह युद्ध **परुषणी** *(रावी)* नदी के तट पर सुदास एवं दस जनों के बीच लड़ा गया, जिसमें सुदास विजयी हुआ।

उपनिषदों की कुल संख्या है	108
महापुराणों की संख्या है	18
वेदांग की संख्या है	6

➢ ऋग्वैदिक समाज चार वर्णों में विभक्त था। ये वर्ण थे–ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। यह विभाजन व्यवसाय पर आधारित था। ऋग्वेद के **10वें मंडल** के **पुरुषसूक्त** में चतुर्वर्णों का उल्लेख मिलता है। इसमें कहा गया है कि ब्राह्मण परम पुरुष के मुख से, क्षत्रिय उनकी भुजाओं से, वैश्य उनकी जाँघों से एवं शूद्र उनके पैरों से उत्पन्न हुए हैं।

➢ आर्यों का समाज **पितृप्रधान** था। समाज की सबसे छोटी इकाई परिवार या कुल थी, जिसका मुखिया पिता होता था, जिसे **कुलप** कहा जाता था।

➢ स्त्रियाँ इस काल में अपने पति के साथ यज्ञ-कार्य में भाग लेती थीं।

➢ बाल-विवाह एवं पर्दा-प्रथा का प्रचलन नहीं था।

➢ विधवा अपने मृतक पति के छोटे भाई *(देवर)* से विवाह कर सकती थी।

➢ स्त्रियाँ शिक्षा ग्रहण करती थीं। ऋग्वेद में लोपामुद्रा, घोषा, सिकता, आपला एवं विश्वास जैसी विदुषी स्त्रियों का वर्णन है। **गार्गी** ने **याज्ञवल्क्य** को वाद-विवाद की चुनौती दी थी।

➢ जीवन भर अविवाहित रहनेवाली महिलाओं को **अमाजू** कहा जाता था।

➢ जीविकोपार्जन के लिए वेद-वेदांग पढ़ानेवाला अध्यापक **उपाध्याय** कहलाता था।

➢ आर्यों का मुख्य पेय-पदार्थ **सोमरस** था। यह वनस्पति से बनाया जाता था।

➢ आर्य मुख्यतः तीन प्रकार के वस्त्रों का उपयोग करते थे—1. वास 2. अधिवास और 3. उष्णीष। अन्दर पहननेवाले कपड़े को **नीवि** कहा जाता था।

प्रमुख दर्शन एवं उसके प्रवर्तक

दर्शन	प्रवर्तक	दर्शन	प्रवर्तक
चार्वाक	चार्वाक	पूर्वमीमांसा	जैमिनी
योग	पतञ्जलि	उत्तरमीमांसा	बादरायण
सांख्य	कपिल	वैशेषिक	कणाद या उलूक
न्याय	गौतम		

➢ महर्षि कणाद को भारतीय परमाणुवाद का जनक कहा गया है।

➢ आर्यों के मनोरंजन के मुख्य साधन थे—संगीत, रथदौड़, घुड़दौड़ एवं द्यूतक्रीड़ा।

➢ आर्यों का मुख्य व्यवसाय **पशुपालन** एवं **कृषि** था।

➢ गाय को **अध्न्या**—न मारे जाने योग्य पशु की श्रेणी में रखा गया था। गाय की हत्या करने वाले या उसे घायल करने वाले के लिए वेदों में मृत्युदंड अथवा देश से निकाले की व्यवस्था की गई है।

➢ आर्यों का प्रिय पशु **घोड़ा** एवं सर्वाधिक प्रिय देवता **इन्द्र** थे।

➢ आर्यों द्वारा खोजी गयी धातु **लोहा** थी जिसे **श्याम अयस्** कहा जाता था। ताँबे को **लोहित अयस्** कहा जाता था।

➢ व्यापार हेतु दूर-दूर तक जानेवाला व्यक्ति को **पणि** कहते थे।

➢ लेन-देन में वस्तु-विनिमय की प्रणाली प्रचलित थी।

➢ ऋण देकर ब्याज लेने वाला व्यक्ति को **वेकनॉट** *(सूदखोर)* कहा जाता था।

➢ मनुष्य एवं देवता के बीच मध्यस्थ की भूमिका निभानेवाले देवता के रूप में **अग्नि** की पूजा की जाती थी।

➢ ऋग्वेद में उल्लिखित सभी नदियों में सरस्वती सबसे महत्वपूर्ण तथा पवित्र मानी जाती थी। ऋग्वेद में गंगा का एक बार और यमुना का उल्लेख तीन बार हुआ है। इसमें सिन्धु नदी का उल्लेख सर्वाधिक बार हुआ है।

ऋग्वैदिककालीन नदियाँ

प्राचीन नाम	आधुनिक नाम	प्राचीन नाम	आधुनिक नाम
क्रुभ	कुर्रम	विपाशा	व्यास
कुभा	काबुल	सदानीरा	गंडक
वितस्ता	झेलम	दृसद्धती	घग्घर
आस्किनी	चिनाब	गोमती	गोमल
परुषणी	रावी	सुवस्तु	स्वात्
शतुद्रि	सतलज		

➢ उत्तरवैदिक काल में इन्द्र के स्थान पर प्रजापति सर्वाधिक प्रिय देवता हो गये थे। विष्णु के तीन पगों की कल्पना का विकास उत्तरवैदिक काल में ही हुआ।

ऋग्वैदिककालीन देवता	
देवता	संबंध
इन्द्र	युद्ध का नेता एवं वर्षा का देवता।
अग्नि	देवता एवं मनुष्य के बीच मध्यस्थ।
वरुण	पृथ्वी एवं सूर्य के निर्माता, समुद्र का देवता, विश्व के नियामक एवं शासक, सत्य का प्रतीक, ऋतु-परिवर्तन एवं दिन-रात का कर्ता।
द्यौ	आकाश का देवता *(सबसे प्राचीन)*।
सोम	वनस्पति देवता।
उषा	प्रगति एवं उत्थान देवता।
आश्विन	विपत्तियों को हरनेवाले देवता।
पूषन	पशुओं का देवता।
विष्णु	विश्व के संरक्षक एवं पालनकर्ता।
मरुत	आँधी-तूफान का देवता।

➢ उत्तरवैदिक काल में राजा के राज्याभिषेक के समय राजसूय यज्ञ का अनुष्ठान किया जाता था।

➢ उत्तरवैदिक काल में वर्ण व्यवसाय की बजाय जन्म के आधार पर निर्धारित होने लगे थे।

➢ उत्तरवैदिक काल में हल को सिरा और हल रेखा को सीता कहा जाता था।

➢ उत्तरवैदिक काल में निष्क और शतमान मुद्रा की इकाइयाँ थीं, लेकिन इस काल में किसी खास भार, आकृति और मूल्य के सिक्कों के चलन का कोई प्रमाण नहीं मिलता।

➢ सांख्य दर्शन भारत के सभी दर्शनों में सबसे प्राचीन है। इसके अनुसार मूल तत्व पच्चीस हैं, जिनमें प्रकृति पहला तत्व है।

➢ *'सत्यमेव जयते'* मुण्डकोपनिषद् से लिया गया है। इसी उपनिषद् में यज्ञ की तुलना फूटी नाव से की गयी है।

➢ गायत्री मंत्र सवितृ नामक देवता को संबोधित है, जिसका संबंध ऋग्वेद से है। लोगों को आर्य बनाने के लिए विश्वामित्र ने गायत्री मंत्र की रचना की।

➢ श्राद्ध की प्रथा पहले-पहल दत्तात्रेय ऋषि के बेटे निमि ने शुरू की।

➢ उत्तरवैदिक काल में कौशाम्बी नगर में प्रथम बार पक्की ईंटों का प्रयोग किया गया है।

➢ महाकाव्य दो हैं—महाभारत एवं रामायण।

➢ 'महाभारत' का पुराना नाम जयसंहिता है। यह विश्व का सबसे बड़ा महाकाव्य है।

➢ गोत्र नामक संस्था का जन्म उत्तरवैदिक काल में हुआ।

नोट : *वेदान्त दर्शन के मौलिक ग्रंथ 'ब्रह्मसूत्र' या 'वेदान्त सूत्र' की रचना बदरायण ने की थी।*

5. महाजनपदों का उदय

➢ बुद्ध के जन्म के पूर्व 6ठी शताब्दी ईसा पूर्व में भारतवर्ष 16 जनपदों में बँटा हुआ था। इसकी जानकारी हमें बौद्धग्रंथ अंगुत्तर निकाय से मिलती है।

क्र. महाजनपद	राजधानी	क्षेत्र *(आधुनिक स्थान)*
1. अंग	चंपा	भागलपुर, मुंगेर *(बिहार)*
2. मगध	गिरिब्रज/राजगृह	पटना, गया *(बिहार)*
3. काशी	वाराणसी	वाराणसी के आस-पास *(उत्तर प्रदेश)*
4. वत्स	कौशाम्बी	इलाहाबाद के आस-पास, *(उत्तर प्रदेश)*
5. वज्जि	वैशाली/विदेह/मिथिला	वैशाली मुजफ्फरपुर एवं दरभंगा के आस-पास का क्षेत्र
6. कोशल	श्रावस्ती	फैजाबाद, गौंडा, बहराइच *(उत्तर प्रदेश)*
7. अवन्ति	उज्जैन/महिष्मती	मालवा *(मध्य प्रदेश)*
8. मल्ल	कुशावती	देवरिया, बस्ती, गोरखपुर *(उत्तर प्रदेश)*
9. पंचाल	अहिच्छत्र, काम्पिल्य	बरेली, बदायूँ, फर्रुखाबाद *(उ. प्रदेश)*
10. चेदि	शक्तिमती	बुंदेलखंड *(उत्तर प्रदेश)*
11. कुरु	इन्द्रप्रस्थ	आधुनिक दिल्ली, मेरठ एवं हरियाणा के कुछ क्षेत्र
12. मत्स्य	विराटनगर	जयपुर, अलवर, भरतपुर *(राजस्थान)* के आस-पास के क्षेत्र
13. कम्बोज	हाटक	राजोरी एवं हजारा क्षेत्र
14. शूरसेन	मथुरा	मथुरा *(उत्तर प्रदेश)*
15. अश्मक	पोटली/पोतन	गोदावरी नदी क्षेत्र *(द. भारत का एक मात्र जनपद)*
16. गान्धार	तक्षशिला	रावलपिंडी एवं पेशावर *(पाकिस्तान)*

6. जैन धर्म

➢ जैनधर्म के संस्थापक एवं प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव थे।

➢ जैनधर्म के 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ थे जो काशी के इक्ष्वाकु वंशीय राजा अश्वसेन के पुत्र थे। इन्होंने 30 वर्ष की अवस्था में संन्यास-जीवन को स्वीकारा। इनके द्वारा दी गयी शिक्षा थी— 1. हिंसा न करना, 2. सदा सत्य बोलना, 3. चोरी न करना तथा 4. सम्पत्ति न रखना।

➢ महावीर स्वामी जैन धर्म के 24वें एवं अंतिम तीर्थंकर हुए।

➢ महावीर का जन्म 540 ईसा पूर्व में कुण्डग्राम *(वैशाली)* में हुआ था। इनके पिता सिद्धार्थ 'ज्ञातृक कुल' के सरदार थे और माता त्रिशला लिच्छवि राजा चेटक की बहन थी।

➢ महावीर की पत्नी का नाम यशोदा एवं पुत्री का नाम अनोज्जा प्रियदर्शनी था।

➢ महावीर के बचपन का नाम वर्द्धमान था। इन्होंने 30 वर्ष की उम्र में माता-पिता की मृत्यु के पश्चात् अपने बड़े भाई नंदिवर्धन से अनुमति लेकर संन्यास-जीवन को स्वीकारा था।

➢ 12 वर्षों की कठिन तपस्या के बाद महावीर को जृम्भिक के समीप ऋजुपालिका नदी के तट पर साल वृक्ष के नीचे तपस्या करते हुए सम्पूर्ण ज्ञान का बोध हुआ। इसी समय से महावीर जिन *(विजेता)*, अर्हत *(पूज्य)* और निर्ग्रन्थ *(बंधनहीन)* कहलाए।

➢ महावीर ने अपना उपदेश प्राकृत *(अर्धमागधी)* भाषा में दिया।

➢ महावीर के अनुयायियों को मूलतः निग्रंथ कहा जाता था।

➢ महावीर के प्रथम अनुयायी उनके दामाद *(प्रियदर्शनी के पति)* जामिल बने।

➢ प्रथम जैन भिक्षुणी नरेश दधिवाहन की पुत्री चम्पा थी।

➢ महावीर ने अपने शिष्यों को 11 गणधरों में विभाजित किया था।

➢ आर्य सुधर्मा अकेला ऐसा गन्धर्व था जो महावीर की मृत्यु के बाद भी जीवित रहा और जो जैनधर्म का प्रथम थेरा या मुख्य उपदेशक हुआ।

➢ स्वामी महावीर के भिक्षुणी संघ की प्रधान चन्दना थी।

प्रमुख जैन तीर्थंकर और उनके प्रतीक चिह्न			
जैन तीर्थंकर के नाम एवं क्रम	प्रतीक चिह्न	जैन तीर्थंकर के नाम एवं क्रम	प्रतीक चिह्न
ऋषभदेव *(प्रथम)*	साँड	अरनाथ *(अठारहवाँ)*	मीन
अजितनाथ *(द्वितीय)*	हाथी	नामि *(इक्कीसवें)*	नीलकमल
संभव *(तृतीय)*	घोड़ा	अरिष्टनेमि *(बाइसवें)*	शंख
संपार्श्व *(सप्तम)*	स्वास्तिक	पार्श्व *(तेइसवें)*	सर्प
शांति *(सोलहवाँ)*	हिरण	महावीर *(चौबीसवें)*	सिंह

नोट : *दो जैन तीर्थंकरों ऋषभदेव एवं अरिष्टनेमि के नामों का उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है। अरिष्टनेमि को भगवान कृष्ण का निकट संबंधी माना जाता है।*

➢ लगभग 300 ईसा पूर्व में मगध में 12 वर्षों का भीषण अकाल पड़ा, जिसके कारण भद्रबाहु अपने शिष्यों सहित कर्नाटक चले गए। किंतु कुछ अनुयायी स्थूलभद्र के साथ मगध में ही रुक गए। भद्रबाहु के वापस लौटने पर मगध के साधुओं से उनका गहरा मतभेद हो गया जिसके परिणामस्वरूप जैन मत श्वेताम्बर

एवं दिगम्बर नामक दो सम्प्रदायों में बँट गया। स्थूलभद्र के शिष्य श्वेताम्बर *(श्वेत वस्त्र धारण करने वाले)* एवं भद्रबाहु के शिष्य दिगम्बर *(नग्न रहने वाले)* कहलाए।

जैन संगीतियाँ			
संगीति	वर्ष	स्थल	अध्यक्ष
प्रथम	300 ईसा पूर्व	पाटलिपुत्र	स्थूलभद्र
द्वितीय	छठी शताब्दी	बल्लभी *(गुजरात)*	क्षमाश्रवण

- जैनधर्म के त्रिरत्न हैं—1. सम्यक् दर्शन, 2. सम्यक् ज्ञान और 3. सम्यक् आचरण।
- त्रिरत्न के अनुशीलन में निम्न पाँच महाव्रतों का पालन अनिवार्य है—अहिंसा, सत्य वचन, अस्तेय, अपरिग्रह एवं ब्रह्मचर्य।
- जैनधर्म में ईश्वर की मान्यता नहीं है।
- जैनधर्म में आत्मा की मान्यता है।
- महावीर पुनर्जन्म एवं कर्मवाद में विश्वास करते थे।
- जैनधर्म के सप्तभंगी ज्ञान के अन्य नाम स्यादवाद व अनेकांतवाद हैं।
- जैनधर्म ने अपने आध्यात्मिक विचारों को सांख्य दर्शन से ग्रहण किया।
- जैनधर्म मानने वाले कुछ राजा थे–उदयिन, वंदराजा, चन्द्रगुप्त मौर्य, कलिंग नरेश खारवेल, राष्ट्रकूट राजा अमोघवर्ष, चंदेल शासक।
- मैसूर के गंग वंश के मंत्री, चामुण्ड के प्रोत्साहन से कर्नाटक के श्रवणबेलगोला में 10वीं शताब्दी के मध्य भाग में विशाल बाहुबलि की मूर्ति *(गोमतेश्वर की मूर्ति)* का निर्माण किया गया।
- खजुराहो में जैन मंदिरों का निर्माण चंदेल शासकों द्वारा किया गया।
- मौर्योत्तर युग में मथुरा जैन धर्म का प्रसिद्ध केन्द्र था। मथुरा कला का संबंध जैनधर्म से है।
- जैन तीर्थंकरों की जीवनी भद्रबाहु द्वारा रचित कल्पसूत्र में है।
- 72 वर्ष की आयु में महावीर की मृत्यु *(निर्वाण)* 468 ईसा पूर्व में बिहार राज्य के पावापुरी *(राजगीर)* में हो गई।
- मल्लराजा सृस्तिपाल के राजप्रसाद में महावीर स्वामी को निर्वाण प्राप्त हुआ था।

7. बौद्ध धर्म

- बौद्ध धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध थे। इन्हें एशिया का ज्योति पुञ्ज *(Light of Asia)* कहा जाता है।

बुद्ध के जीवन से संबंधित बौद्ध धर्म के प्रतीक			
घटना	प्रतीक	घटना	प्रतीक
जन्म	कमल एवं सांड	निर्वाण	पद-चिह्न
गृहत्याग	घोड़ा	मृत्यु	स्तूप
ज्ञान	पीपल *(बोधि वृक्ष)*		

- गौतम बुद्ध का जन्म 563 ईसा पूर्व में कपिलवस्तु के लुम्बिनी नामक स्थान पर हुआ था।
- इनके पिता शुद्धोधन शाक्य गण के मुखिया थे।
- इनकी माता मायादेवी की मृत्यु इनके जन्म के सातवें दिन ही हो गई थी। इनका लालन-पालन इनकी सौतेली माँ प्रजापति गौतमी ने किया था।
- इनके बचपन का नाम सिद्धार्थ था।
- गौतम बुद्ध का विवाह 16 वर्ष की अवस्था में यशोधरा के साथ हुआ। इनके पुत्र का नाम राहुल था।
- सिद्धार्थ जब कपिलवस्तु की सैर पर निकले तो उन्होंने निम्न चार दृश्यों को क्रमशः देखा—1. बूढ़ा व्यक्ति, 2. एक बीमार व्यक्ति, 3. शव एवं 4. एक संन्यासी।
- सांसारिक समस्याओं से व्यथित होकर सिद्धार्थ ने 29 वर्ष की अवस्था में गृह-त्याग किया, जिसे बौद्धधर्म में महाभिनिष्क्रमण कहा गया है।
- गृह-त्याग करने के बाद सिद्धार्थ *(बुद्ध)* ने वैशाली के आलारकलाम से सांख्य दर्शन की शिक्षा ग्रहण की। आलारकलाम सिद्धार्थ के प्रथम गुरु हुए।
- आलारकलाम के बाद सिद्धार्थ ने राजगीर के रुद्रकरामपुत्त से शिक्षा ग्रहण की।
- उरुवेला में सिद्धार्थ को कौण्डिन्य, बप्पा, भादिया, महानामा एवं अस्सागी नामक पाँच साधक मिले।
- बिना अन्न-जल ग्रहण किए 6 वर्ष की कठिन तपस्या के बाद 35 वर्ष की आयु में वैशाख की पूर्णिमा की रात निरंजना *(फल्गु)* नदी के किनारे, पीपल वृक्ष के नीचे, सिद्धार्थ को ज्ञान प्राप्त हुआ।
- ज्ञान-प्राप्ति के बाद सिद्धार्थ बुद्ध के नाम से जाने गए। वह स्थान बोधगया कहलाया।
- बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेश सारनाथ *(ऋषिपतनम्)* में दिया, जिसे बौद्ध ग्रंथों में धर्मचक्रप्रवर्तन कहा गया है।
- बुद्ध ने अपने उपदेश जनसाधारण की भाषा पालि में दिए।
- बुद्ध ने अपने उपदेश कोशल, वैशाली, कौशाम्बी व अन्य राज्यों में दिए, लेकिन सर्वाधिक उपदेश कोशल देश की राजधानी श्रावस्ती में दिए।
- इनके प्रमुख अनुयायी शासक थे—बिम्बिसार, प्रसेनजित व उदयिन।
- बुद्ध की मृत्यु 80 वर्ष की अवस्था में 483 ईसा पूर्व में कुशीनारा *(देवरिया, उत्तर प्रदेश)* में चुन्द द्वारा अर्पित भोजन करने के बाद हो गयी, जिसे बौद्ध धर्म में महापरिनिर्वाण कहा गया है।
- मल्लों ने अत्यन्त सम्मानपूर्वक बुद्ध का अन्त्येष्टि संस्कार किया।
- एक अनुश्रुति के अनुसार मृत्यु के बाद बुद्ध के शरीर के अवशेषों को आठ भागों में बाँटकर उन पर आठ स्तूपों का निर्माण कराया गया।
- बुद्ध के जन्म एवं मृत्यु की तिथि को चीनी परम्परा के कैन्टोन अभिलेख के आधार पर निश्चित किया गया है।
- बौद्धधर्म के बारे में हमें विशद ज्ञान त्रिपिटक *(विनयपिटक, सूत्रपिटक व अभिदम्भपिटक)* से प्राप्त होता है। तीनों पिटकों की भाषा पालि है।
- बौद्धधर्म मूलतः अनीश्वरवादी है। इसमें आत्मा की परिकल्पना भी नहीं है।
- बौद्धधर्म में पुनर्जन्म की मान्यता है।
- तृष्णा को क्षीण हो जाने की अवस्था को ही बुद्ध ने निर्वाण कहा है।
- ''विश्व दुखों से भरा है'' का सिद्धान्त बुद्ध ने उपनिषद् से लिया।
- बुद्ध के अनुयायी दो भागों में विभाजित थे—

1. भिक्षुक : बौद्धधर्म के प्रचार के लिए जिन्होंने संन्यास ग्रहण किया, उन्हें 'भिक्षुक' कहा गया।
2. उपासक : गृहस्थ जीवन व्यतीत करते हुए बौद्ध धर्म अपनाने वालों को 'उपासक' कहा गया।

- बौद्धसंघ में सम्मिलित होने के लिए न्यूनतम आयु-सीमा 15 वर्ष थी।
- बौद्धसंघ में प्रविष्टि होने को उपसम्पदा कहा जाता था।
- बौद्धधर्म के त्रिरत्न हैं—बुद्ध, धम्म एवं संघ।

बौद्ध सभाएँ

सभा	समय	स्थान	अध्यक्ष	शासनकाल
प्रथम बौद्ध संगीति	483 ई. पूर्व	राजगृह	महाकश्यप	अजातशत्रु
द्वितीय बौद्ध संगीति	383 ई. पूर्व	वैशाली	सबाकामी	कालाशोक
तृतीय बौद्ध संगीति	255 इ. पूर्व	पाटलिपुत्र	मोग्गलिपुत्त तिस्स	अशोक
चतुर्थ बौद्ध संगीति	ई. की प्रथम शताब्दी	कुण्डलवन	वसुमित्र/ अश्वघोष	कनिष्क

- चतुर्थ बौद्ध संगीति के बाद बौद्धधर्म दो भागों हीनयान एवं महायान में विभाजित हो गया।
- बौद्ध धर्म के महायान सम्प्रदाय का आदर्श बोधिसत्व है। बोधिसत्व दूसरे के कल्याण को प्राथमिकता देते हुए अपने निर्वाण में विलम्ब करते हैं।
- हीनयान का आदर्श अर्हत् पद को प्राप्त करना है, जो व्यक्ति अपनी साधना से निर्वाण की प्राप्ति करते हैं उन्हें ही अर्हत् कहा जाता है।

- धार्मिक जुलूस का प्रारंभ सबसे पहले बौद्धधर्म के द्वारा प्रारंभ किया गया। बौद्धों का सबसे पवित्र त्योहार वैशाख पूर्णिमा है, जिसे बुद्ध पूर्णिमा के नाम से जाना जाता है। इसका महत्व इसलिए है कि बुद्ध पूर्णिमा के ही दिन बुद्ध का जन्म, ज्ञान की प्राप्ति एवं महापरिनिर्वाण की प्राप्ति हुई।
- बुद्ध ने सांसारिक दुःखों के सम्बन्ध में चार आर्य सत्यों का उपदेश दिया। ये हैं— 1.दुःख 2.दुःख समुदाय 3.दुःख निरोध 4.दुःख निरोधगामिनी प्रतिपदा।
- इन संसारिक दुःखों से मुक्ति हेतु, बुद्ध ने अष्टांगिक मार्ग की बात कही। ये साधन हैं—1.सम्यक् दृष्टि 2.सम्यक् संकल्प 3.सम्यक् वाणी 4.सम्यक् कर्मान्त 5.सम्यक् आजीव 6.सम्यक् व्यायाम् 7.सम्यक् स्मृति एवं 8.सम्यक् समाधि
- बुद्ध के अनुसार अष्टांगिक मार्गों के पालन करने के उपरान्त मनुष्य की भव तृष्णा नष्ट हो जाती है और उसे निर्वाण प्राप्त हो जाता है।
- निर्वाण बौद्ध धर्म का परम लक्ष्य है, जिसका अर्थ है *'दीपक का बुझ जाना'* अर्थात् जीवन-मरण चक्र से मुक्त हो जाना। बुद्ध ने निर्वाण-प्राप्ति को सरल बनाने के लिए निम्न दस शीलों पर बल दिया—1.अहिंसा, 2.सत्य, 3.अस्तेय *(चोरी न करना)*, 4.अपरिग्रह *(किसी प्रकार की सम्पत्ति न रखना)*, 5.मद्य-सेवन न करना, 6.असमय भोजन न करना, 7.सुखप्रद बिस्तर पर नहीं सोना, 8.धन-संचय न करना, 9.स्त्रियों से दूर रहना और 10.नृत्य-गान आदि से दूर रहना। गृहस्थों के लिए केवल प्रथम पाँच शील तथा भिक्षुओं के लिए दसों शील मानना अनिवार्य था।
- बुद्ध ने मध्यम मार्ग *(मध्यमा-प्रतिपद)* का उपदेश दिया।
- अनीश्वरवाद के संबंध में बौद्धधर्म एवं जैनधर्म में समानता है।
- जातक कथाएँ प्रदर्शित करती हैं कि बोधिसत्व का अवतार मनुष्य रूप में भी हो सकता है तथा पशुओं के रूप में भी ।
- बोधिसत्व के रूप में पुनर्जन्मों की दीर्घ शृंखला के अन्तर्गत बुद्ध ने शाक्य मुनि के रूप में अपना अन्तिम जन्म प्राप्त किया किन्तु इसके उपरान्त मैत्रेय तथा अन्य अनाम बुद्ध अभी अवतरित होने शेष हैं।
- सर्वाधिक बुद्ध मूर्तियों का निर्माण गन्धार शैली के अन्तर्गत किया गया लेकिन बुद्ध की प्रथम मूर्ति संभवतः मथुरा कला के अन्तर्गत बनी थी।
- तिब्बत, भूटान एवं पड़ोसी देशों में बौद्ध धर्म का प्रचार पद्मसंभव *(गुरु रिनपोंच)* ने किया। इनका संबंध बौद्ध धर्म के बज्रयान शाखा से था। इनकी 123 फीट ऊँची मूर्ति हिमाचल प्रदेश रेवाल सर झील में है।

नोट : *भारत में उपासना की जाने वाली प्रथम मूर्ति संभवतः बुद्ध की थी।*

भारत के महत्वपूर्ण बौद्ध मठ

मठ	स्थान	राज्य
टाबो मठ	तबो गाँव *(स्पीति घाटी)*	हिमाचल प्रदेश
नामग्याल मठ	धर्मशाला	हिमाचल प्रदेश
हेमिस मठ	लद्दाख	जम्मू कश्मीर
थिकसे मठ	लद्दाख	जम्मू कश्मीर
शासुर मठ	लाहुल स्पीति	हिमाचल प्रदेश
मिंड्रालिंग मठ	देहरादून	उत्तराखंड
रूमटेक मठ	गंगटोक	सिक्कम
तवांग मठ	अरुणाचल प्रदेश	अरुणाचल प्रदेश
नामड्रालिंग मठ	मैसूर	कर्नाटक
बोधिमंडा मठ	बोधगया	बिहार

8. शैव धर्म

- भगवान शिव की पूजा करनेवालों को शैव एवं शिव से संबंधित धर्म को शैवधर्म कहा गया है।
- शिवलिंग-उपासना का प्रारंभिक पुरातात्विक साक्ष्य हड़प्पा संस्कृति के अवशेषों से मिलता है।
- ऋग्वेद में शिव के लिए 'रुद्र' नामक देवता का उल्लेख है।
- अथर्ववेद में शिव को भव, शर्व, पशुपति एवं भूपति कहा गया है।
- लिंग-पूजा का पहला स्पष्ट वर्णन मत्स्यपुराण में मिलता है।
- महाभारत के अनुशासन पर्व से भी लिंग-पूजा का वर्णन मिलता है।
- रुद्र के पत्नी के रूप में पार्वती का नाम तैत्तिरीय आरण्यक में मिलता है।
- शिव की पत्नी की सौम्य रूप है : पद्मा, पार्वती, उमा, गौरी एवं भैरवी।
- 'वामन पुराण' में शैव सम्प्रदाय की संख्या चार बतायी गयी है। ये हैं—1.पाशुपत, 2.कापालिक, 3.कालामुख, 4.लिंगायत।
- पाशुपत सम्प्रदाय शैवों का सर्वाधिक प्राचीन सम्प्रदाय है। इसके संस्थापक लकुलीश थे जिन्हें भगवान शिव के 18 अवतारों में से एक माना जाता है।
- पाशुपत सम्प्रदाय के अनुयायियों को पंचार्थिक कहा गया है। इस मत का प्रमुख सैद्धान्तिक ग्रंथ पाशुपत सूत्र है। श्रीकर पंडित एक विख्यात पाशुपत आचार्य थे।

सम्प्रदाय	संस्थापक
आजीवक	मक्खलिपुत्र गोशाल
घोर अक्रियावादी	पूरण कश्यप्
यदृच्छावाद	आचार्य अजित
भौतिकवादी	पकुध कच्चायन *(भौतिक दर्शन)*
अनिश्चयवादी	संजय वेट्ठलिपुत्र

- कापालिक सम्प्रदाय के ईष्टदेव भैरव थे। इस सम्प्रदाय का प्रमुख केन्द्र *श्री शैल* नामक स्थान था।
- कालामुख सम्प्रदाय के अनुयायिओं को शिव पुराण में महाव्रतधर कहा गया है। इस सम्प्रदाय के लोग नर-कपाल में ही भोजन, जल तथा सुरापान करते हैं और साथ ही अपने शरीर पर चिता की भस्म मलते हैं।
- लिंगायत सम्प्रदाय दक्षिण में प्रचलित था। इन्हें जंगम भी कहा जाता था। इस सम्प्रदाय के लोग शिव लिंग की उपासना करते थे।
- *'शून्य सम्पादने'* लिंगायतों का मुख्य धार्मिक ग्रंथ है।
- बसव पुराण में लिंगायत सम्प्रदाय के प्रवर्तक *अल्लभ प्रभु* तथा उनके शिष्य बासव को बताया गया है। इस सम्प्रदाय को वीरशिव सम्प्रदाय भी कहा जाता है।
- 10वीं शताब्दी में मत्स्येन्द्रनाथ ने नाथ सम्प्रदाय की स्थापना की। इस सम्प्रदाय का व्यापक प्रचार-प्रसार बाबा गोरखनाथ के समय में हुआ।
- दक्षिण भारत में शैवधर्म चालुक्य, राष्ट्रकूट, पल्लव एवं चोलों के समय लोकप्रिय रहा।
- पल्लव काल में शैव धर्म का प्रचार-प्रसार नायनारों द्वारा किया गया। नायनार सन्तों की संख्या 63 बतायी गयी है जिनमें अप्पार, तिरुज्ञान, सम्बन्दर एवं सुन्दर मूर्ति आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।
- एलोरा के प्रसिद्ध कैलाश मंदिर का निर्माण राष्ट्रकूटों ने करवाया।
- चोल शासक राजराज प्रथम ने तंजौर में प्रसिद्ध राजराजेश्वर शैव मंदिर का निर्माण करवाया, जिसे बृहदीश्वर मंदिर के नाम से भी जाना जाता है।
- कुषाण शासकों की मुद्राओं पर शिव एवं नन्दी का एक साथ अंकन प्राप्त होता है।

नोट : *पशुपतिनाथ मंदिर : नेपाल की राजधानी काठमांडू से तीन किलोमीटर उत्तर-पश्चिम में बागमती नदी के किनारे देवपाटन गाँव में स्थित एक शिव मंदिर है। नेपाल के धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र बनने से पहले यह मंदिर राष्ट्रीय देवता भगवान पशुपति नाथ का मुख्य निवास माना जाता था। इस मंदिर परिसर को सन 1979 में यूनेस्को विश्व-सांस्कृतिक विरासत स्थल के रूप में सूची बद्ध किया गया। मुख्य मंदिर का निर्माण वास्तुकला की नेपाली पैगोडा शैली में हुआ है।*

9. वैष्णव धर्म

- वैष्णव धर्म के विषय में प्रारंभिक जानकारी उपनिषदों से मिलती है। इसका विकास भगवत धर्म से हुआ। नारायण के पूजक मूलतः पंचरात्र कहे जाते थे।
- वैष्णव धर्म के प्रवर्तक कृष्ण थे, जो वृषण कबीले के थे और जिनका निवास स्थान मथुरा था।

➢ कृष्ण का उल्लेख सर्वप्रथम छांदोग्य उपनिषद् में देवकी-पुत्र और अंगिरस के शिष्य के रूप में हुआ है। वासुदेव कृष्ण का सबसे प्रारंभिक अभिलेखीय उल्लेख बेसनगर स्तम्भ अभिलेख में पाया गया है।

➢ विष्णु के दस अवतारों का उल्लेख मत्स्यपुराण में मिलता है। दस अवतार इस प्रकार हैं—मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, बलराम, बुद्ध एवं कल्कि। गुप्तकाल में विष्णु का वराह अवतार सर्वाधिक प्रसिद्ध था।

➢ वैष्णव धर्म में ईश्वर को प्राप्त करने के लिए सर्वाधिक महत्व भक्ति को दिया गया है।

नोट : *भगवान विष्णु के सुदर्शन चक्र में छः तितिलियाँ हैं।*

प्रमुख सम्प्रदाय, मत एवं आचार्य

प्रमुख सम्प्रदाय	मत	आचार्य
वैष्णव सम्प्रदाय	विशिष्टाद्वैत	रामानुज
ब्रह्म सम्प्रदाय	द्वैत	आनन्दतीर्थ
रुद्र सम्प्रदाय	शुद्धाद्वैत	वल्लभाचार्य
सनक सम्प्रदाय	द्वैताद्वैत	निम्बार्क

प्रमुख सम्प्रदाय, संस्थापक एवं पुस्तक

प्रमुख सम्प्रदाय	संस्थापक	पुस्तक
बरकरी	नामदेव	—
श्रीवैष्णव	रामानुज	ब्रह्मसूत्र
परमार्थ	रामदास	दासबोध
रामभक्त	रामानन्द	अध्यात्म रामायण

नोट : *अंकोरवाट का मंदिर कंबोडिया (कंबोज) के राजा सूर्यवर्मा II (1113 ई.–1150 ई.) ने बनवाया था। इस मंदिर में लगभग 10.5 फीट ऊँची भगवान विष्णु की मूर्ति स्थापित है।*

10. इस्लाम धर्म

➢ इस्लाम धर्म के संस्थापक हजरत मुहम्मद साहब थे।

➢ हजरत मुहम्मद साहब का जन्म 570 ई. में मक्का में प्रमुख कुरैश कबीले में हुआ था।

➢ उनके पिता का नाम अब्दुल्ला और माता का नाम अमीना था। उनका लालन-पालन उनके चाचा अबू तालिब ने किया था।

➢ हजरत मुहम्मद साहब को 610 ई. में मक्का के पास हीरा नामक गुफा में ज्ञान की प्राप्ति हुई।

➢ 24 सितम्बर, 622 ई. को पैगम्बर के मक्का से मदीना की यात्रा इस्लाम जगत में मुस्लिम संवत् *(हिजरी संवत्)* के नाम से जाना जाता है।

➢ मुहम्मद की शादी 25 वर्ष की अवस्था में खदीजा नामक विधवा के साथ हुई।

➢ मुहम्मद की पुत्री का नाम फातिमा एवं दामाद का नाम अली है।

➢ देवदूत जिब्रियल *(Gabriel)* ने पैगम्बर मुहम्मद साहब को कुरान अरबी भाषा में संप्रेषित की।

➢ कुरान इस्लाम धर्म का पवित्र ग्रंथ है। यह पवित्र ग्रंथ 114 अध्यायों में बँटी हुई है, इसमें 6,360 पद्य हैं।

➢ पैगम्बर मुहम्मद साहब ने कुरान की शिक्षाओं का उपदेश दिया।

➢ हजरत मुहम्मद साहब की मृत्यु 8 जून, 632 ई. को हुई। इन्हें मदीना में दफनाया गया।

➢ मुहम्मद साहब की मृत्यु के बाद इस्लाम सुन्नी तथा शिया नामक दो पंथों में विभाजित हो गया।

➢ सुन्नी उन्हें कहते हैं जो सुन्ना में विश्वास करते हैं। सुन्ना पैगम्बर मुहम्मद साहब के कथनों तथा कार्यों का विवरण है।

➢ शिया अली की शिक्षाओं में विश्वास करते हैं तथा उन्हें मुहम्मद साहब का न्यायसम्मत उत्तराधिकारी मानते हैं। अली, मुहम्मद साहब के दामाद थे।

➢ अली की 661 ई. में हत्या कर दी गई। अली के पुत्र हुसैन की हत्या 680 ई. में कर्बला *(इराक)* नामक स्थान पर कर दी गई। इन दोनों हत्या ने शिया को निश्चित मत का रूप दे दिया।

➢ पैगम्बर मुहम्मद साहब के उत्तराधिकारी 'खलीफा' कहलाए।

➢ इस्लाम जगत में खलीफा पद 1924 ई. तक रहा। 1924 ई. में इसे तुर्की के शासक मुस्तफा कमालपाशा ने समाप्त कर दिया।

➢ इब्न ईशाक ने सर्वप्रथम पैगम्बर साहब का जीवन-चरित लिखा।

➢ मुहम्मद साहब पैगम्बर के जन्म-दिन पर ईद-ए-मिलाद-उन-नबी पर्व मनाया जाता है।

➢ भारत में सर्वप्रथम इस्लाम का आगमन अरबों के जरिए हुआ। 712 ई. में अरबों ने सिन्ध जीत लिया और सबसे पहले भारत के इसी भाग में इस्लाम एक महत्वपूर्ण धर्म बना।

नोट : *नमाज़ के दौरान मुसलमान मक्का की तरफ मुँह करके खड़े होते हैं। भारत से मक्का पश्चिम की ओर पड़ता है। मक्का की ओर की दिशा को किबला कहा जाता है।*

11. ईसाई धर्म

➢ ईसाई धर्म के संस्थापक ईसा मसीह है व प्रमुख ग्रंथ बाइबिल है।

➢ ईसा मसीह का जन्म जेरुशेलम के निकट बैथलेहम नामक स्थान पर हुआ था। ईसा के जन्म-दिवस को क्रिसमस के रूप में मनाया जाता है।

➢ ईसा मसीह के माता का नाम मेरी और पिता का नाम जोसेफ है।

➢ ईसा ने अपने जीवन के प्रथम 30 वर्ष एक बढ़ई के रूप में बैथलेहम के निकट नाज़रेथ में बिताए।

➢ ईसा मसीह के प्रथम दो शिष्य थे—एंड्रूस एवं पीटर

➢ ईसा मसीह को सूली पर रोमन गवर्नर पोंटियस ने चढ़ाया।

➢ ईसा मसीह को 33 ई. में सूली पर चढ़ाया गया।

➢ ईसाई धर्म का सबसे पवित्र चिह्न क्रॉस है।

➢ ईसाई त्रित्व में विश्वास रखते हैं, वे हैं—ईश्वर-पिता, ईश्वर-पुत्र *(ईसा)*, ईश्वर-पवित्र आत्मा

नोट : *12वीं शताब्दी से फ्रांस में आरंभिक भवनों की तुलना में अधिक ऊँचे व हल्के चर्चों के निर्माण प्रारंभ हुए। वास्तुकला की यह शैली गोथिक नाम से जानी जाती है। इस वास्तुकलात्मक शैली के सर्वोत्कृष्ट उदाहरणों में एक पेरिस का नाट्रेडम चर्च है।*

12. पारसी धर्म

➢ पारसी धर्म के पैगम्बर जरथुस्ट्र *(ईरानी)* थे।

➢ इनके शिक्षाओं का संकलन जेन्दा अवेस्ता नामक ग्रंथ में है, जो पारसियों का धार्मिक ग्रंथ है।

➢ इनकी मूल शिक्षा का सूत्र है : सद्-विचार, सद्-वचन तथा सद्-कार्य।

➢ इसके अनुयायी एक ईश्वर 'अहुर' को मानते हैं।

➢ इस धर्म के अनुयायिओं को 'अग्नि-पूजक' भी कहा जाता है।

13. मगध राज्य का उत्कर्ष

➢ मगध के सबसे प्राचीन वंश के संस्थापक बृहद्रथ था। इसकी राजधानी गिरिब्रज *(राजगृह)* थी। जरासंध बृहद्रथ का पुत्र था।

➢ हर्यक वंश के संस्थापक बिम्बिसार मगध की गद्दी पर 544 ई.पू. *(बौद्ध ग्रंथों के अनुसार)* में बैठा था। वह बौद्ध धर्म का अनुयायी था। यह प्रथम भारतीय राजा था जिसने प्रशासनिक व्यवस्था पर बल दिया।

➢ बिम्बिसार ने ब्रह्मदत्त को हराकर अंग राज्य को मगध में मिला लिया।

➢ बिम्बिसार ने राजगृह का निर्माण कर उसे अपनी राजधानी बनाया।

➢ बिम्बिसार ने मगध पर करीब 52 वर्षों तक शासन किया।

➢ महात्मा बुद्ध की सेवा में बिम्बिसार ने राजवैद्य जीवक को भेजा। अवन्ति के राजा प्रद्योत जब पाण्डु रोग से ग्रसित थे उस समय भी बिम्बिसार ने जीवक को उनकी सेवा-सुश्रूषा के लिए भेजा था।

➢ बिम्बिसार ने वैवाहिक संबंध स्थापित कर अपने साम्राज्य का विस्तार किया। इसने कोशल नरेश प्रसेनजित की बहन महाकोशला से, वैशाली के चेटक की पुत्री चेल्लना से तथा मद्र देश *(आधुनिक पंजाब)* की राजकुमारी क्षेमा से शादी की।

➢ बिम्बिसार की हत्या उसके पुत्र अजातशत्रु ने कर दी और वह 493 ईसा पूर्व में मगध की गद्दी पर बैठा।

- अजातशत्रु का उपनाम कुणिक था।
- वह प्रारंभ में जैनधर्म का अनुयायी था।
- अजातशत्रु ने 32 वर्षों तक मगध पर शासन किया।
- अजातशत्रु के सुयोग्य मंत्री का नाम वर्षकार *(वरस्कार)* था। इसी की सहायता से अजातशत्रु ने वैशाली पर विजय प्राप्त की।
- 461 ई.पू. में अपने पिता की हत्या कर उदायिन मगध की गद्दी पर बैठा।
- उदायिन ने पाटलिग्राम की स्थापना की। वह जैनधर्म का अनुयायी था।
- हर्यक वंश का अंतिम राजा उदायिन का पुत्र नागदशक था।
- नागदशक को उसके अमात्य शिशुनाग ने 412 ईसा पूर्व में अपदस्थ करके मगध पर शिशुनाग वंश की स्थापना की।
- शिशुनाग ने अपनी राजधानी पाटलिपुत्र से हटाकर वैशाली में स्थापित की।
- शिशुनाग का उत्तराधिकारी कालाशोक पुनः राजधानी को पाटलिपुत्र ले गया।
- शिशुनाग वंश का अंतिम राजा नंदिवर्धन था।
- नंदवंश का संस्थापक महापद्मनंद था।
- नंदवंश का अंतिम शासक घनानंद था। यह सिकन्दर का समकालीन था। इसे चन्द्रगुप्त मौर्य ने युद्ध में पराजित किया और मगध पर एक नये वंश 'मौर्य वंश' की स्थापना की।

14. सिकन्दर

- सिकन्दर का जन्म 356 ईसा पूर्व में हुआ।
- सिकन्दर के पिता का नाम फिलिप था।
- फिलिप 359 ईसा पूर्व में मकदूनिया का शासक बना। इसकी हत्या 329 ईसा पूर्व में कर दी गयी।
- सिकन्दर अरस्तू का शिष्य था।
- सिकन्दर ने भारत-विजय का अभियान 326 ईसा पूर्व में प्रारंभ किया।
- सिकन्दर का सेनापति सेल्यूकस निकेटर था।
- सिकन्दर को पंजाब के शासक पोरस के साथ युद्ध करना पड़ा, जिसे हाइडेस्पीज के युद्ध या झेलम *(वितस्ता)* का युद्ध के नाम से जाना जाता है।
- सिकन्दर की सेना ने व्यास नदी के पश्चिमी तट पर पहुँचकर उसे पार करने से इन्कार कर दिया।
- सिकन्दर स्थल-मार्ग द्वारा 325 ईसा पूर्व में भारत से लौटा।
- सिकन्दर की मृत्यु 323 ईसा पूर्व में बेबीलोन में 33 वर्ष की अवस्था में हो गयी।
- सिकन्दर का जल-सेनापति था—निर्यार्कस।
- सिकन्दर का प्रिय घोड़ा बऊकेफला था। इसी के नाम पर इसने झेलम नदी के तट पर बऊकेफला नामक नगर बसाया।

15. मौर्य साम्राज्य

- मौर्य वंश का संस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य का जन्म 345 ई.पू. में हुआ था।
- जस्टिन ने चन्द्रगुप्त मौर्य को सेन्ड्रोकोट्टस कहा है, जिसकी पहचान विलियम जोन्स ने चन्द्रगुप्त मौर्य से की है।
- विशाखदत्त कृत मुद्राराक्षस में चन्द्रगुप्त मौर्य के लिए वृषल *(आशय–निम्न कुल में उत्पन्न)* शब्द का प्रयोग किया गया।
- घनानंद को हराने में चाणक्य *(कौटिल्य/विष्णुगुप्त)* ने चन्द्रगुप्त मौर्य की मदद की थी, जो बाद में चन्द्रगुप्त का प्रधानमंत्री बना। इसके द्वारा लिखित पुस्तक अर्थशास्त्र है, जिसका संबंध राजनीति से है।
- चन्द्रगुप्त मगध की राजगद्दी पर 322 ईसा पूर्व में बैठा। चन्द्रगुप्त जैनधर्म का अनुयायी था।
- चन्द्रगुप्त ने अपना अंतिम समय कर्नाटक के श्रवणबेलगोला नामक स्थान पर बिताया।
- चन्द्रगुप्त ने 305 ईसा पूर्व में सेल्यूकस निकेटर को हराया।
- सेल्यूकस निकेटर ने अपनी पुत्री कार्नेलिया की शादी चन्द्रगुप्त मौर्य के साथ कर दी और युद्ध की संधि-शर्तों के अनुसार चार प्रांत काबुल, कन्धार, हेरात एवं मकरान चन्द्रगुप्त को दिए।
- चन्द्रगुप्त मौर्य ने जैनी गुरु भद्रबाहु से जैनधर्म की दीक्षा ली थी।
- मेगस्थनीज सेल्यूकस निकेटर का राजदूत था, जो चन्द्रगुप्त के दरबार में रहता था।
- मेगस्थनीज द्वारा लिखी गयी पुस्तक इंडिका है। मेगस्थनीज के अनुसार–सम्राट का जनता के सामने आने के अवसरों पर शोभा-यात्रा के रूप में जश्न मनाया जाता है। उन्हें एक सोने के पालकी में ले जाया जाता है। उनके अंगरक्षक सोने और चाँदी से अलंकृत हाथियों पर सवार रहते हैं। कुछ अंगरक्षक पेड़ों को लेकर चलते हैं। इन पेड़ों पर प्रशिक्षित तोतों का झुण्ड रहता है जो सम्राट के सिर के चारों तरफ चक्कर लगाता रहता है। राजा सामान्यतः हथियारबंद महिलाओं से घिरे होते हैं। उनके खाना खाने के पहले खास नौकर उस खाने को चखते हैं। वे लगातार दो रात एक ही कमरे में नहीं सोते थे। पाटलिपुत्र के बारे में: पाटलिपुत्र एक विशाल प्राचीर से घिरा है, जिसमें 570 बुर्ज और 64 द्वार हैं। दो और तीन मंजिल वाले घर लकड़ी और कच्ची ईंटों से बने हैं। राजा का महल भी काठ का बना है जिसे पत्थर की नक्काशी से अलंकृत किया गया है। यह चारों तरफ से उद्यानों और चिड़ियों के लिए बने बसेरों से घिरा है।
- चन्द्रगुप्त मौर्य और सेल्यूकस के बीच हुए युद्ध का वर्णन एप्पियानस ने किया है।
- प्लूटार्क के अनुसार चन्द्रगुप्त ने सेल्यूकस को 500 हाथी उपहार में दिए थे।
- चन्द्रगुप्त मौर्य की मृत्यु 298 ईसा पूर्व में श्रवणबेलगोला में उपवास द्वारा हुई।

बिन्दुसार

- चन्द्रगुप्त मौर्य का उत्तराधिकारी बिन्दुसार हुआ, जो 298 ईसा पूर्व में मगध की राजगद्दी पर बैठा।
- अमित्रघात के नाम से बिन्दुसार जाना जाता है। अमित्रघात का अर्थ है—शत्रु विनाशक।
- बिन्दुसार आजीवक सम्प्रदाय का अनुयायी था।

नोट : *अशोक पहले ब्रह्मण धर्म का अनुयायी था। कल्हण के राजतरंगिणी से पता चलता है कि वह शैव धर्म का उपासक था। निग्रोध के प्रवचन सुनकर उसने बौद्ध धर्म को अपना लिया।*

- 'वायुपुराण' में बिन्दुसार को भद्रसार *(या वारिसार)* कहा गया है।
- स्ट्रैबो के अनुसार सीरियन नरेश एण्टियोकस ने बिन्दुसार के दरबार में डाइमेकस नामक राजदूत भेजा। इसे ही मेगस्थनीज का उत्तराधिकारी माना जाता है।
- जैन ग्रंथों में बिन्दुसार को सिंहसेन कहा गया है।
- बिन्दुसार के शासनकाल में तक्षशिला *(सिन्धु एवं झेलम नदी के बीच)* में हुए दो विद्रोहों का वर्णन है। इस विद्रोह को दबाने के लिए बिन्दुसार ने पहले सुसीम को और बाद में अशोक को भेजा।
- एथीनियस के अनुसार बिन्दुसार ने सीरिया के शासक एण्टियोकस–I से मदिरा, सूखे अंजीर एवं एक दार्शनिक भेजने की प्रार्थना की थी।
- बौद्ध विद्वान् तारानाथ ने बिन्दुसार को 16 राज्यों का विजेता बताया है।

अशोक

- बिन्दुसार का उत्तराधिकारी अशोक महान हुआ जो 269 ईसा पूर्व में मगध की राजगद्दी पर बैठा। अशोक की माता का नाम सुभद्रांगी था। *(दिव्यावदान के अनुसार)*
- राजगद्दी पर बैठने के समय अशोक अवन्ति का राज्यपाल था।
- मास्की एवं गुर्जरा अभिलेख में अशोक का नाम अशोक मिलता है।
- पुराणों में अशोक को अशोकवर्धन कहा गया है।
- अशोक ने अपने अभिषेक के 8 वर्ष बाद लगभग 261 ईसा पूर्व में कलिंग पर आक्रमण किया और कलिंग की राजधानी तोसली पर अधिकार कर लिया। *(उल्लेख 13 वें शिलालेख में)*
- प्लिनी का कथन है कि मिस्र का राजा फिलाडेल्फस [टॉलमी II] ने पाटलिपुत्र में डियानीसियस नाम का एक राजदूत भेजा था। *(अशोक के दरबार में)*

- ➢ उपगुप्त नामक बौद्ध भिक्षु ने अशोक को बौद्ध धर्म की दीक्षा दी।

नोट : *आजीवक सम्प्रदाय की स्थापना मक्खलि गोसाल ने की थी।*

- ➢ अशोक एक उपासक के रूप में अपने राज्याभिषेक के 10 वें वर्ष बोधगया की, 12 वें वर्ष निगालि सागर की एवं 20 वें वर्ष में लुम्बिनी की यात्रा की।
- ➢ अशोक ने आजीवकों को रहने हेतु बराबर की पहाड़ियों में चार गुफाओं का निर्माण करवाया, जिनका नाम कर्ज, चोपार, सुदामा तथा विश्व झोपड़ी था। अशोक के पौत्र दशरथ ने आजीविकों को नागार्जुन गुफा प्रदान की थी।
- ➢ अशोक के 7वें स्तम्भ लेख में आजीविकों का उल्लेख किया गया है तथा महामात्रों को आजीविकों के हितों का ध्यान रखने के लिए कहा गया है।
- ➢ अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए अपने पुत्र महेन्द्र एवं पुत्री संघमित्रा को श्रीलंका भेजा। बौद्ध परंपरा और उनके लिपियों के अनुसार अशोक ने 84,000 स्तूपों का निर्माण किया था।
- ➢ भारत में शिलालेख का प्रचलन सर्वप्रथम अशोक ने किया।
- ➢ अशोक के शिलालेखों में ब्राह्मी, खरोष्ठी, ग्रीक एवं अरमाइक लिपि का प्रयोग हुआ है।
- ➢ ग्रीक एवं अरमाइक लिपि का अभिलेख अफगानिस्तान से, खरोष्ठी लिपि का अभिलेख उत्तर-पश्चिम पाकिस्तान से और शेष भारत से ब्राह्मी लिपि के अभिलेख मिले हैं।

नोट : *खरोष्ठी लिपि दायीं से बायीं ओर लिखी जाती थी।*

- ➢ अशोक के अभिलेखों को तीन भागों में बाँटा जा सकता है— 1. शिलालेख, 2. स्तम्भलेख तथा 3. गुहालेख।
- ➢ अशोक के शिलालेख की खोज 1750 ई. में पाद्रेटी फेन्थैलर ने की थी। इनकी संख्या-14 है।
- ➢ अशोक के अभिलेख पढ़ने में सबसे पहली सफलता 1837 ई. में जेम्स प्रिसेप को हुई।

अशोक के प्रमुख शिलालेख एवं उनमें वर्णित विषय

शिलालेख	विषय
पहला शिलालेख	इसमें पशुबलि की निंदा की गयी है।
दूसरा शिलालेख	इसमें अशोक ने मनुष्य एवं पशु दोनों की चिकित्सा-व्यवस्था का उल्लेख किया है।
तीसरा शिलालेख	इसमें राजकीय अधिकारियों को यह आदेश दिया गया है कि वे हर पाँचवें वर्ष के उपरान्त दौरे पर जाएँ। इस शिलालेख में कुछ धार्मिक नियमों का भी उल्लेख किया गया है।
चौथा शिलालेख	इस अभिलेख में भेरीघोष की जगह धम्मघोष की घोषणा की गयी है।
पाँचवाँ शिलालेख	इस शिलालेख में धर्म-महामात्रों की नियुक्ति के विषय में जानकारी मिलती है।
छठा शिलालेख	इसमें आत्म-नियंत्रण की शिक्षा दी गयी है।
सातवाँ एवं आठवाँ शिलालेख	इनमें अशोक की तीर्थ-यात्राओं का उल्लेख किया गया है।
नौवाँ शिलालेख	इसमें सच्ची भेंट तथा सच्चे शिष्टाचार का उल्लेख किया गया है।
दसवाँ शिलालेख	इसमें अशोक ने आदेश दिया है कि राजा तथा उच्च अधिकारी हमेशा प्रजा के हित में सोचें।
ग्यारहवाँ शिलालेख	इसमें धम्म की व्याख्या की गयी है।
बारहवाँ शिलालेख	इसमें स्त्री महामात्रों की नियुक्ति एवं सभी प्रकार के विचारों के सम्मान की बात कही गयी है।
तेरहवाँ शिलालेख	इसमें कलिंग युद्ध का वर्णन एवं अशोक के हृदय-परिवर्तन की बात कही गयी है। इसी में पाँच यवन राजाओं के नामों का उल्लेख है, जहाँ उसने धम्म प्रचारक भेजे।
चौदहवाँ शिलालेख	अशोक ने जनता को धार्मिक जीवन बिताने के लिए प्रेरित किया।

- ➢ अशोक के स्तम्भ-लेखों की संख्या 7 है, जो केवल ब्राह्मी लिपि में लिखी गयी है। यह छह अलग-अलग स्थानों से प्राप्त हुआ है—

1. प्रयाग स्तम्भ-लेख : यह पहले कौशाम्बी में स्थित था। इस स्तम्भ-लेख को अकबर ने इलाहाबाद के किले में स्थापित कराया।
2. दिल्ली टोपरा : यह स्तम्भ-लेख फिरोजशाह तुगलक के द्वारा टोपरा से दिल्ली लाया गया।
3. दिल्ली-मेरठ : पहले मेरठ में स्थित यह स्तम्भ-लेख फिरोजशाह द्वारा दिल्ली लाया गया है।

मौर्य प्रांत	राजधानी
उत्तरापथ	तक्षशिला
अवन्ति राष्ट्र	उज्जयिनी
कलिंग	तोसली
दक्षिणापथ	सुवर्णागिरि
प्राशी *(पूर्वी प्रांत)*	पाटलिपुत्र

4. रामपुरवा : यह स्तम्भ-लेख चम्पारण *(बिहार)* में स्थापित है। इसकी खोज 1872 ई. में कारलायल ने की।
5. लौरिया अरेराज : चम्पारण *(बिहार)* में।
6. लौरिया नन्दनगढ़ : चम्पारण *(बिहार)* में इस स्तम्भ पर मोर का चित्र बना है।

- ➢ कौशाम्बी अभिलेख को 'रानी का अभिलेख' कहा जाता है।
- ➢ अशोक का 7वाँ अभिलेख सबसे लम्बा है।
- ➢ अशोक का सबसे छोटा स्तम्भ-लेख रुम्मिदेई है। इसी में लुम्बिनी में धम्म-यात्रा के दौरान अशोक द्वारा भू-राजस्व की दर घटा देने की घोषणा की गयी है।
- ➢ प्रथम पृथक् शिलालेख में यह घोषणा है कि सभी मनुष्य मेरे बच्चे हैं।
- ➢ अशोक का शार-ए-कुना *(कंदहार)* अभिलेख ग्रीक एवं आर्मेइक भाषाओं में प्राप्त हुआ है।
- ➢ साम्राज्य में मुख्यमंत्री एवं पुरोहित की नियुक्ति के पूर्व इनके चरित्र को काफी जाँचा-परखा जाता था, जिसे उपधा परीक्षण कहा जाता था।
- ➢ सम्राट् की सहायता के लिए एक मंत्रिपरिषद् होती थी जिसमें सदस्यों की संख्या 12, 16 या 20 हुआ करती थी।
- ➢ अर्थशास्त्र में शीर्षस्थ अधिकारी के रूप में तीर्थ का उल्लेख मिलता है, जिसे महामात्र भी कहा जाता था। इसकी संख्या 18 थी। अर्थशास्त्र में चर जासूस को कहा गया है।
- ➢ अशोक के समय मौर्य साम्राज्य में प्रांतों की संख्या 5 थी। प्रांतों को चक्र कहा जाता था।
- ➢ प्रांतों के प्रशासक कुमार या आर्यपुत्र या राष्ट्रिक कहलाते थे।
- ➢ प्रांतों का विभाजन विषय में किया गया था, जो विषयपति के अधीन होते थे।
- ➢ प्रशासन की सबसे छोटी इकाई ग्राम थी, जिसका मुखिया ग्रामीक कहलाता था।

अर्थशास्त्र में वर्णित तीर्थ	
1. मंत्री	प्रधानमंत्री
2. पुरोहित	धर्म एवं दान-विभाग का प्रधान
3. सेनापति	सैन्य विभाग का प्रधान
4. युवराज	राजपुत्र
5. दौवारिक	राजकीय द्वार-रक्षक
6. अन्तर्वेदिक	अन्तःपुर का अध्यक्ष
7. समाहर्ता	आय का संग्रहकर्त्ता
8. सन्निधाता	राजकीय कोषाध्यक्ष
9. प्रशास्ता	कारागार का अध्यक्ष
10. प्रदेष्ट्रि	कमिश्नर
11. पौर	नगर का कोतवाल
12. व्यवहारिक	प्रमुख न्यायाधीश
13. नायक	नगर-रक्षा का अध्यक्ष
14. कर्मान्तिक	उद्योगों एवं कारखानों का अध्यक्ष
15. मंत्रिपरिषद्	अध्यक्ष
16. दण्डपाल	सेना का सामान एकत्र करनेवाला
17. दुर्गपाल	दुर्ग-रक्षक
18. अंतपाल	सीमावर्ती दुर्गों का रक्षक

- ➢ प्रशासकों में सबसे छोटा गोप था, जो दस ग्रामों का शासन सँभालता था।
- ➢ मेगस्थनीज के अनुसार नगर का प्रशासन 30 सदस्यों का एक मंडल करता था जो 6 समितियों में विभाजित था। प्रत्येक समिति में 5 सदस्य होते थे।
- ➢ बिक्री-कर के रूप में मूल्य का 10वाँ भाग वसूला जाता था, इसे बचाने वालों को मृत्युदंड दिया जाता था।
- ➢ मेगस्थनीज के अनुसार एग्रोनोमाई मार्ग-निर्माण अधिकारी था।
- ➢ जस्टिन के अनुसार चन्द्रगुप्त मौर्य की सेना में लगभग 50,000 अश्वारोही सैनिक, 9,000 हाथी व 8,000 रथ थे।

➢ जस्टिन नामक यूनानी लेखक के अनुसार, चन्द्रगुप्त ने अपनी 6 लाख की फ़ौज से सारे भारत को रौंद दिया। यह बात सही भी हो सकती है और नहीं भी, लेकिन यह सही है कि चन्द्रगुप्त ने पश्चिमोत्तर भारत को सेल्यूकस की गुलामी से मुक्त किया।

प्रशासनिक समिति एवं उसके कार्य

समिति	कार्य
प्रथम	उद्योग एवं शिल्प कार्य का निरीक्षण
द्वितीय	विदेशियों की देखरेख
तृतीय	जन्म-मरण का विवरण रखना
चतुर्थ	व्यापार एवं वाणिज्य की देखभाल
पंचम	निर्मित वस्तुओं के विक्रय का निरीक्षण
षष्ठ	बिक्री कर वसूल करना

➢ युद्ध-क्षेत्र में सेना का नेतृत्व करनेवाला अधिकारी **नायक** कहलाता था।

➢ सैन्य विभाग का **सबसे बड़ा अधिकारी सेनापति** होता था। प्लिनी नामक यूनानी लेखक के अनुसार चन्द्रगुप्त की सेना में 6,00,000 पैदल सिपाही, 30,000 घुड़सवार और 9,000 हाथी थे।

➢ मेगस्थनीज के अनुसार मौर्य सेना का रख-रखाव **5 सदस्यीय**, छह समितियाँ करती थीं।

➢ मौर्य प्रशासन में गुप्तचर विभाग **महामात्य सर्प** नामक अमात्य के अधीन था। अर्थशास्त्र में गुप्तचर को **गूढ़ पुरुष** कहा गया है तथा एक ही स्थान पर रहकर कार्य करनेवाले गुप्तचर को **संस्था** कहा जाता था। एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण करके कार्य करनेवाले गुप्तचर को **संचार** कहा जाता था।

सैन्य समिति एवं उनके कार्य

समिति	कार्य
प्रथम	जलसेना की व्यवस्था
द्वितीय	यातायात एवं रसद की व्यवस्था
तृतीय	पैदल सैनिकों की देख-रेख
चतुर्थ	अश्वारोहियों की सेना की देख-रेख
पंचम	गजसेना की देख-रेख
षष्ठ	रथसेना की देख-रेख

➢ अशोक के समय जनपदीय न्यायालय के न्यायाधीश को **राजुक** कहा जाता था।

➢ सरकारी भूमि को **सीता भूमि** कहा जाता था।

➢ बिना वर्षा के अच्छी खेती होनेवाली भूमि को **अदेवमातृक** कहा जाता था।

➢ मेगस्थनीज ने भारतीय समाज को सात वर्गों में विभाजित किया है—1. दार्शनिक, 2. किसान, 3. अहीर, 4. कारीगर, 5. सैनिक, 6. निरीक्षक एवं 7. सभासद।

➢ स्वतंत्र वेश्यावृत्ति को अपनाने वाली महिला **रूपाजीवा** कहलाती थी।

➢ नंद वंश के विनाश करने में चन्द्रगुप्त मौर्य ने **कश्मीर के राजा पर्वतक** से सहायता प्राप्त की थी।

➢ मौर्य शासन 137 वर्षों तक रहा। भागवत पुराण के अनुसार मौर्य वंश में दस राजा हुए जबकि वायु पुराण के अनुसार नौ राजा हुए।

➢ मौर्य वंश का अंतिम शासक **बृहद्रथ** था। इसकी हत्या इसके सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने 185 ईसा पूर्व में कर दी और मगध पर शुंग वंश की नींव डाली।

नोट : *अशोकाराम विहार पाटलिपुत्र में था।*

16. ब्राह्मण साम्राज्य

शुंग एवं कण्व राजवंश

➢ **पुष्यमित्र शुंग**, जिसने मगध पर शुंग वंश की नींव डाली, ब्राह्मण जाति का था।

➢ शुंग शासकों ने अपनी राजधानी **विदिशा** में स्थापित की।

➢ इण्डो-यूनानी शासक **मिनांडर** को पुष्यमित्र शुंग ने पराजित किया।

➢ पुष्यमित्र शुंग ने दो बार **अश्वमेध यज्ञ** किया। इनके लिए **पतंजलि** ने अश्वमेध यज्ञ कराए।

➢ **भरहूत स्तूप** का निर्माण पुष्यमित्र शुंग ने करवाया।

➢ शुंग वंश का अंतिम शासक **देवभूति** था। इसकी हत्या 73 ईसा पूर्व में **वासुदेव** ने कर दी और मगध की गद्दी पर **कण्व वंश** की स्थापना की।

➢ कण्व वंश का अंतिम राजा **सुशर्मा** हुआ।

सातवाहन राजवंश

➢ शिमुक ने 60 ईसा पूर्व में सुशर्मा की हत्या कर दी और **सातवाहन वंश** की स्थापना की। सातवाहन *(आन्ध्र वंश)* शासकों ने अपनी राजधानी **प्रतिष्ठान** *(गोदावरी नदी के किनारे)* में स्थापित की। *(प्रतिष्ठान महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले में है।)*

➢ सातवाहन वंश के प्रमुख शासक थे सिमुक, शातकर्णी, गौतमीपुत्र शातकर्णी, वशिष्ठीपुत्र, पुलुमावी तथा यज्ञश्री शातकर्णी।

➢ शातकर्णी ने दो **अवश्मेध** तथा एक **राजसूय** यज्ञ किया।

➢ सातवाहन शासकों के समय के प्रसिद्ध साहित्यकार **हाल** एवं **गुणाढ्य** थे। **हाल** ने *(गाथासप्तशती)* तथा **गुणाढ्य** ने **बृहत्कथा** नामक पुस्तकों की रचना की।

➢ सातवाहन शासकों ने **चाँदी, ताँबे, सीसा, पोटीन** और **काँसे** की मुद्राओं का प्रचलन किया। सातवाहन अपना सिक्का ढालने में जिस सीसे का इस्तेमाल करते थे, उसे रोम से मंगाया जाता था। सातवाहनों के समय सर्वाधिक सिक्के **सीसा** के ही बने थे।

➢ ब्राह्मणों को भूमि-अनुदान देने की प्रथा का आरंभ **सातवाहन शासकों** ने ही सर्वप्रथम किया। भूमिदान का सर्वप्राचीन पुरालेखीय प्रमाण शताब्दी ई. पू. के सातवाहनों के **नानाघाट अभिलेख** में मिलता है, जिसमें अश्वमेघ यज्ञ में एक गाँव देने का उल्लेख है।

➢ सातवाहनों की राजकीय भाषा **प्राकृत** एवं लिपि **ब्राह्मी** थी।

➢ सातवाहनों में हमें मातृतंत्रात्मक ढाँचे का आभास मिलता है। उनके राजाओं के नाम उनकी माताओं के नाम पर रखने की प्रथा थी, जैसे—गौतमीपुत्र, वासिष्ठीपुत्र आदि। लेकिन सातवाहन राजकुल **पितृतंत्रात्मक** था, क्योंकि राजसिंहासन का उत्तराधिकारी पुत्र ही होता था।

➢ सातवाहन शासकों ने ग्रामीण क्षेत्रों में प्रशासन का काम **गौल्मिक** को सौंपा। गौल्मिक एक सैनिक टुकड़ी का प्रधान होता था जिसमें नौ रथ, नौ हाथी, पच्चीस घोड़े और पैंतालीस पैदल सैनिक होते थे।

➢ सातवाहनों की महत्वपूर्ण स्थापत्य कृतियाँ हैं—कार्ले का चैत्य, अजंता एवं एलोरा की गुफाओं का निर्माण एवं अमरावती कला का विकास। शातकर्णी एवं अन्य सभी सातवाहन शासक दक्षिणापथ के स्वामी कहे जाते थे।

नोट : *सातवाहन राज्य ने उत्तर और दक्षिण भारत के बीच सेतु का काम किया।*

चेदी राजवंश *(कलिंग)*

➢ अशोक की मृत्यु के उपरांत संभवत: प्रथम शताब्दी ई.पू. में कलिंग में **चेदी** राजवंश का उदय हुआ। इसकी जानकारी हमें हाथी गुम्फा अभिलेख *(भुवनेश्वर, उड़ीसा)* से मिलती है। **खारवेल** इस वंश का एक प्रतापी राजा था।

➢ खारवेल जैन धर्म का अनुयायी था और उसने जैन मुनियों के लिए उदयगिरि की पहाड़ी में गुफा का निर्माण करवाया था।

17. भारत के यवन राज्य

➢ भारत पर आक्रमण करनेवाले विदेशी आक्रमणकारियों का क्रम है—**हिन्द-यूनानी → शक → पहलव → कुषाण**।

➢ सेल्यूकस के द्वारा स्थापित पश्चिमी तथा मध्य एशिया के विशाल साम्राज्य को इसके उत्तराधिकारी **एन्टिओकस प्रथम** ने अक्षुण्ण बनाए रखा।

➢ **एन्टिओकस-II** के शासनकाल में विद्रोह के फलस्वरूप उसके अनेक प्रांत स्वतंत्र हो गए।

➢ बैक्ट्रिया के विद्रोह का नेतृत्व डियोडोट्स प्रथम ने किया था। बैक्ट्रिया पर डियोडोट्स प्रथम के साथ इन राजाओं ने क्रमशः शासन किया—डियोडोट्स-II, यूथिडेमस्, डेमिट्रियस, मिनाण्डर, युक्रेटाइडस, एण्टी आलकीडस तथा हर्मिक्स।

➢ भारत पर सबसे पहले आक्रमण बैक्ट्रिया के शासक **डेमिट्रियस** ने किया। इसने 190 ईसा पूर्व में भारत पर आक्रमण कर अफगानिस्तान, पंजाब एवं सिंध के बहुत बड़े भाग पर अधिकार कर लिया। इसने **शाकल** को अपनी राजधानी बनायी। इसे ही हिन्द-यूनानी या बैक्ट्रियाई यूनानी कहा गया।

- हिन्द-यूनानी शासकों में सबसे अधिक विख्यात मिनान्डर *(165-145 ईसा पूर्व)* हुआ। इसकी राजधानी शाकल *(आधुनिक सियालकोट)* शिक्षा का प्रमुख केन्द्र था।
- मिनान्डर ने नागसेन *(नागार्जुन)* से बौद्ध धर्म की दीक्षा ली।
- मिनान्डर के प्रश्न एवं नागसेन द्वारा दिए गए उत्तर एक पुस्तक के रूप में संगृहीत हैं, जिसका नाम मिलिन्दपन्हो अर्थात् मिलिंद के प्रश्न या 'मिलिन्दप्रश्न' है।
- हिन्द-यूनानी भारत के पहले शासक हुए जिनके जारी किये सिक्कों के बारे में निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि सिक्के किन-किन राजाओं के हैं।
- भारत में सबसे पहले हिन्द-यूनानियों ने ही सोने के सिक्के जारी किये।
- हिन्द-यूनानी शासकों ने भारत के पश्चिमोत्तर सीमा-प्रांत में यूनान की प्राचीन कला चलाई, जिसे हेलेनिस्टिक आर्ट कहते हैं। भारत में गंधार कला इसका उत्तम उदाहरण है।

नोट : *यूनानियों ने परदे का प्रचलन आरंभ कर भारतीय नाट्यकला के विकास में योगदान किया। चूँकि परदा यूनानियों की देन था इसलिए वह यवनिका के नाम से प्रसिद्ध हुआ।*

18. शक

- यूनानियों के बाद शक आए। शकों की पाँच शाखाएँ थीं और हर शाखा की राजधानी भारत और अफगानिस्तान में अलग-अलग भागों में थी।
- पहली शाखा ने अफगानिस्तान, दूसरी शाखा ने पंजाब *(राजधानी–तक्षशिला)*, तीसरी शाखा ने मथुरा, चौथी शाखा ने पश्चिमी भारत एवं पाँचवीं शाखा ने ऊपरी दक्कन पर प्रभुत्व स्थापित किया। प्रथम शक राजा मोअ था।
- शक मूलतः मध्य एशिया के निवासी थे और चरागाह की खोज में भारत आए।
- 58 ईसा पूर्व में उज्जैन के एक स्थानीय राजा ने शकों को पराजित करके बाहर खदेड़ दिया और विक्रमादित्य की उपाधि धारण की।
- शकों पर विजय के उपलक्ष्य में 58 ईसा पूर्व से एक नया संवत् विक्रम संवत् के नाम से प्रारंभ हुआ। उसी समय से 'विक्रमादित्य' एक लोकप्रिय उपाधि बन गयी, जिसकी संख्या भारतीय इतिहास में 14 तक पहुँच गयी। गुप्त सम्राट् चन्द्रगुप्त द्वितीय सबसे अधिक विख्यात विक्रमादित्य था।
- शकों की अन्य शाखाओं की तुलना में पश्चिम भारत में प्रभुत्व स्थापित करनेवाली शाखा ने सबसे लम्बे अरसे तक शासन किया। *(लगभग चार शताब्दी तक)*
- गुजरात में चल रहे समुद्री व्यापार से यह शाखा काफी लाभान्वित हुई और भारी संख्या में चाँदी के सिक्के जारी किए।
- शकों का सबसे प्रतापी शासक रुद्रदामन प्रथम था, जिसका शासन *(130-150 ई.)* गुजरात के बड़े भाग पर था। इसने काठियावाड़ की अर्धशुष्क सुदर्शन झील *(मौर्यों द्वारा निर्मित)* का जीर्णोद्धार किया।
- रुद्रदामन संस्कृत का बड़ा प्रेमी था। उसने ही सबसे पहले विशुद्ध संस्कृत भाषा में लम्बा अभिलेख *(गिरनार अभिलेख)* जारी किया, इसके पहले के सभी अभिलेख प्राकृत भाषा में रचित थे।
- भारत में शक राजा अपने को क्षत्रप कहते थे।

पार्थियाई या पहलव

पश्चिमोत्तर भारत में शकों के आधिपत्य के बाद पार्थियाई लोगों का आधिपत्य हुआ। सबसे प्रसिद्ध पार्थियाई राजा गोंडोफर्निस था। इसी के शासन काल में सेंट टामस ईसाई धर्म का प्रचार करने के लिए भारत आया था।

नोट : *पार्थियाई लोगों का मूल स्थान ईरान में था।*

19. कुषाण

- पहलव के बाद कुषाण आए, जो यूची एवं तोखरी भी कहलाते हैं।
- यूची नामक एक कबीला पाँच कुलों में बँट गया था, उन्हीं में एक कुल के थे कुषाण।
- कुषाण वंश के संस्थापक कुजुल कडफिसेस था। इस वंश का सबसे प्रतापी राजा कनिष्क था। इनकी राजधानी पुरुषपुर या पेशावर थी। कुषाणों की द्वितीय राजधानी मथुरा थी।
- कनिष्क ने 78 ई. *(गद्दी पर बैठने के समय)* में एक संवत् चलाया, जो शक-संवत् कहलाता है जिसे भारत सरकार द्वारा प्रयोग में लाया जाता है।
- बौद्ध धर्म की चौथी बौद्ध-संगीति कनिष्क के शासनकाल में कुण्डलवन *(कश्मीर)* में प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान वसुमित्र की अध्यक्षता में हुई।
- कनिष्क बौद्ध धर्म के महायान सम्प्रदाय का अनुयायी था।

नोट : *चीनी जनरल पेन चीआ ने कनिष्क को हराया था।*

- आरम्भिक कुषाण शासकों ने भारी संख्या में स्वर्ण मुद्राएँ जारी कीं, जिनकी शुद्धता गुप्त काल की स्वर्ण मुद्राओं से उत्कृष्ट है।

नोट : *कुषाणों ने सोने के सर्वाधिक शुद्ध सिक्के जारी किए।*

- कुषाणों ने उत्तरी तथा उत्तरी पश्चिमी भारत में सर्वाधिक संख्या में ताँबे के सिक्कों को जारी किया था।
- कनिष्क का राजवैद्य आयुर्वेद का विख्यात विद्वान चरक था, जिसने चरकसंहिता की रचना की।
- महाविभाष सूत्र के रचनाकार वसुमित्र हैं। इसे ही बौद्धधर्म का विश्वकोश कहा जाता है।
- कनिष्क के राजकवि अश्वघोष ने बौद्धों का रामायण 'बुद्धचरित' की रचना की।
- वसुमित्र, पार्श्व, नागार्जुन, महाचेत और संघरक्ष भी कनिष्क के दरबार की विभूति थे।
- भारत का आइन्सटीन नागार्जुन को कहा जाता है। इनकी पुस्तक माध्यमिक सूत्र *(इस पुस्तक में नागार्जुन ने सापेक्षता का सिद्धान्त प्रस्तुत किया था)* है।
- कनिष्क की मृत्यु 102 ई. में हो गयी। कुषाण वंश का अंतिम शासक वासुदेव था।

नोट : *कुषाण राजा देवपुत्र कहलाते थे। यह उपाधि कुषाणों ने चीनियों से ली।*

- गांधार शैली एवं मथुरा शैली का विकास कनिष्क के शासनकाल में हुआ था। मथुरा संग्रहालय में कुषाणकालीन मूर्त्तियों का संग्रह अधिक मात्रा में है। गंधार कला के लिए तक्षशिला प्रसिद्ध है।
- रेशम मार्ग पर नियंत्रण रखने वाले शासकों में सबसे प्रसिद्ध कुषाण थे। कुषाण साम्राज्य में मार्गों पर सुरक्षा का प्रबंध था। रेशम मार्ग का आरंभ कनिष्क ने कराया था।

नोट : *रेशम बनाने की तकनीक का आविष्कार सबसे पहले चीन में हुआ था।*

- कुषाण काल में सबसे अधिक विकास वास्तुकला के क्षेत्र में हुआ था। इसी काल में बुद्ध की खड़ी प्रतिमा का निर्माण हुआ।

20. संगम युग

- ऐतिहासिक युग के प्रारंभ में दक्षिण भारत का क्रमबद्ध इतिहास हमे जिस साहित्य से ज्ञात होता है उसे संगम साहित्य कहा जाता है। संगम शब्द का अर्थ परिषद् अथवा गोष्ठी होता है जिनमें तमिल कवि एवं विद्वान एकत्र होते थे। प्रत्येक कवि अथवा लेखक अपनी रचनाओं को संगम के समक्ष प्रस्तुत करता था तथा इसकी स्वीकृति प्राप्त हो जाने के बाद ही किसी भी रचना का प्रकाशन संभव था।

नोट : *कवियों और विद्वानों की परिषद् के लिए संगम नाम का प्रयोग सर्वप्रथम सातवीं शती के प्रारंभ में शैव सन्त (नायनार) तिरूनाबुक्क रशु (अप्पार) ने किया।*

- परम्परा के अनुसार अति प्राचीन समय में पाण्ड्य राजाओं के संरक्षण में कुल तीन संगम आयोजित किए गए। इनमें संकलित साहित्य को ही संगम साहित्य की संज्ञा प्रदान की गयी।
- उपलब्ध संगम साहित्य का विभाजन तीन भागों में किया जाता है—1. पत्थुप्पात्तु 2. इत्थुथोकै तथा 3. पादिनेन कीलकन्क्कु।
- तिरूवल्लुवर कृत कुराल तमिल साहित्य का एक आधारभूत ग्रंथ बताया जाता है। इसके विषय त्रिवर्ग आचारशास्त्र, राजनीति, आर्थिक जीवन एवं प्रणय से संबंधित है।

	स्थान	अध्यक्ष	संकलित महत्वपूर्ण ग्रंथ
प्रथम संगम	मदुरा *(समुद्र में विलीन)*	अगस्त्य	अकट्टियम परिपदाल, मदुनारै, मुदुकुरुकु तथा कलारि आविरै। *(कोई भी इनमें उपलब्ध नहीं है।)*
दूसरा संगम	कपाटपुरम *(अलैवाई)* *(समुद्र में विलीन)*	अगस्त्य	तोल्काप्पियम *(तमिल व्याकरण, रचनाकार-तोल्काप्पियर)*
तीसरा संगम	मदुरा	नक्कीरर	नेदुन्थोकै, कुरुन्थोकै, नत्रिनई, एन्कुरु भूरू, परिपादल, कूथु, वरि, पेरिसै तथा सित्रिसै आदि

- इलांगो कृत शिल्पादिकारम् एक उत्कृष्ट रचना है जो तमिल जनता में राष्ट्रीय काव्य के रूप में मानी जाती है। इसमें कावेरीपट्टन के कोवलन उसकी पत्नी कण्णगि एवं नर्तकी माधवी की प्रेम कहानी है।
- मदुरा के बौद्ध धर्मावलंबी व्यापारी सीतलैसत्तनार ने मणिमेकलै की रचना की। इसमें राजकुमार उदयकुमारन् एवं मणिमेकलै *(कोवलन एवं नर्तकी माधवी की पुत्री)* की प्रेम कहानी है। इस ग्रंथ की कहानी दार्शनिक एवं शास्त्रार्थ संबंधी बातों के लिए बनाई गई है। इसका महत्व मुख्यतः धार्मिक है। नीलकंठ शास्त्री के अनुसार यह बौद्ध लेखक दिङ्नाथ *(पांचवीं शती)* की कृति 'न्याय प्रवेश' पर आधारित है।
- जीवकचिन्तामणि संगमकाल के बहुत बाद की रचना है। इसकी रचना का श्रेय जैन भिक्षु तिरुत्तक्क देवर को दिया जाता है। कहा जाता है कि तिरुत्तक्क देवर पहले चोल राजकुमार था जो बाद में जैन भिक्षु बन गया।
- संगम साहित्य में हमें तमिल प्रदेश के तीन राज्यों चोल, चेर, तथा पाण्ड्य का विवरण प्राप्त होता है। उत्तर-पूर्व में चोल, दक्षिण-पश्चिम में चेर तथा दक्षिण-पूर्व में पाण्ड्य राज्य स्थित था।
- संगम युगीन राज्यों में सर्वाधिक शक्तिशाली चोलों का राज्य था। यह पेन्नार तथा दक्षिणी वेल्लारू नदियों के बीच स्थित था। इसका सबसे प्रतापी राजा करिकाल था।
- करिकाल ब्राह्मण मतानुयायी था और इसे ब्राह्मण धर्म को राजकीय संरक्षण प्रदान किया। पुहार पत्तन का निर्माण इसी के समय हुआ। इसने कावेरी नदी के मुहाने पर बाँध बनवाया तथा सिंचाई करने के लिए नहरों का निर्माण करवाया। पेरूनानुन्नुपादे में करिकाल को संगीत के सप्तस्वरों का विशेषज्ञ बताया गया है।
- संगम युग का दूसरा राज्य चेरों का था जो आधुनिक केरल प्रान्त में स्थित था। इस राज्य के कुछ प्रमुख राजा हुए—उदियंजीरल *(लगभग 130 ई.)*, नेदुंजीरल आदन *(155 ई.)* एवं सेनगुट्टुवन *(180 ई.)*।
- सेनगुट्टुवन ने अधिराज की उपाधि ग्रहण की। इसने पत्तिनी नामक धार्मिक सम्प्रदाय को समाज में प्रतिष्ठित किया।
- संगम युग का तीसरा राज्य पाण्ड्यों का था जो कावेरी के दक्षिण में स्थित था। इसकी राजधानी मदुरा में थी। पाण्ड्य राजाओं में नेडुंजेलियन *(लगभग 210 ई.)* सबसे शक्तिशाली था।
- संगम युग में मंत्रियों को अमाइच्चान या अमाइच्चार कहा जाता था।
- राजधानी में एक राजसभा होती थी जिसे नालवै कहा जाता था। यह राजा के साथ न्याय का कार्य करता था। राजा देश का प्रधान न्यायाधीश तथा सभी प्रकार के मामलों की सुनवाई की अंतिम अदालत होता था। राजा के न्यायालय को मन्रम कहा जाता था।
- चोरी तथा व्यभिचार के अपराध के लिए मृत्युदण्ड दिया जाता था। झूठी गवाही देने पर जीभ काट ली जाती थी।
- भूमिकर नकद तथा अनाज दोनों रूपों में अदा किया जाता था। संभवतः यह उपज का छठा भाग होता था, किन्तु कभी-कभी इसे बढ़ाया जाता था। व्यापारियों से सीमा शुल्क एवं चुंगी वसूल की जाती थी।
- सेना चतुरंगिणी होती थी जिसमें अश्व, गज, रथ तथा पैदल सिपाही सम्मिलित थे। नागड़ा एवं शंख बजाकर सैनिकों को बुलाया जाता था। युद्ध भूमि में वीरगति पाने वाले सैनिकों के सम्मान में पत्थर की मूर्ति बनवाए जाने की प्रथा थी।
- राजा अपने आवास की रक्षा के लिए सशस्त्र महिलाओं को तैनात करता था।
- संगम काल में समय जानने के लिए जल घड़ी का प्रयोग किया जाता था।
- तमिल प्रदेश में ब्राह्मणों का उदय सर्वप्रथम संगम काल में हुआ जो समय का सबसे प्रतिष्ठित वर्ग था। इसकी हत्या को सबसे बड़ा अपराध माना जाता था। संगम कालीन ब्राह्मण मांस भक्षण करते थे तथा सुरा पीते थे।
- ब्राह्मणों के पश्चात् संगम युगीन समाज में वेल्लार वर्ग का स्थान था। इसका मुख्य पेशा कृषि कर्म था।
- संगम साहित्य में व्यापारी वर्ग को वेनिगर कहा गया है।

संगम कालीन कुछ अन्य वर्ग

1. **पुलैयन** : दस्तकारों का एक वर्ग जो रस्सी तथा पशुचर्म की सहायता से चारपाई एवं चटाई बनाने का कार्य करते थे।
2. **एनियर** : शिकारियों की एक जाति
3. **मलवर** : लूट-पाट करने वाली जाति

- संगम साहित्य में दास प्रथा के अस्तित्व का प्रमाण नहीं मिलता है।
- तोल्काप्पियम नामक तमिल रचना से ज्ञात होता है कि संगम काल में विवाह को संस्कार के रूप में मान्यता प्रदान की गयी थी। इसमें हिन्दू धर्मशास्त्रों में वर्णित विवाह के आठ प्रकारों *(ब्रह्म, दैव, आर्ष, प्रजापत्य, असुर, गान्धर्व, राक्षस तथा पैशाच)* का उल्लेख मिलता है।
- प्रणय विवाह की मान्यता दी गई थी जिसे पंचतिणै कहा गया है। एक पक्षीय प्रणय को कैक्किणैं व अनुचित प्रणय को पेरून्दिणैं कहा गया है।
- संगम काल में चावल मुख्य खाद्यान्न था। इसे दूध में मिलाकर सांभर नामक खाद्यान्न तैयार किया जाता था।
- नर्तक, नर्तकियों व गायकों के दल धूम-धूम कर लोगों का मनोरजन किया करते थे। संगम साहित्य में इन्हें पाणर व विडैलियर कहा गया है।
- तमिल साहित्य में मच्चेलियर तथा ओवैयर जैसी कवियित्रियों की चर्चा हुई है जिससे स्पष्ट है कि इस काल की स्त्रियाँ सुशिक्षिता होती थीं।
- संगम काल के लोग कौवे को शुभ पक्षी मानते थो जो अतिथियों के आगमन की सूचना देता था। कौवे नाविकों को सही दिशा का भी बोध कराते थे। इस कारण सागर के मध्य चलने वाले जहाजों के साथ उन्हें ले जाया जाता था।
- संगम काल में समाधियों के स्थान पर पत्थर गाड़ने की प्रथा थी। इन्हें वीरगल अथवा वीरप्रस्तर कहा जाता था। इनकी पूजा भी होती थी। प्रायः युद्ध में वीरगति प्राप्त सैनिकों के सम्मान में खड़े किए जाते थे।
- संगम काल में किसानों को वेल्लार तथा उनके प्रमुखों को वेलिर कहा जाता था।
- संगम साहित्य से पता चलता है कि समाज के निम्न वर्ग की महिलाएँ ही मुख्यतः खेती का कार्य किया करती थी। इने कडैसिवर कहा गया है।
- संगम काल में चोलों की समृद्धि का मुख्य कारण उनका सुविकसित वस्त्रोद्योग था।
- पाण्ड्य राज्य में कोर्कई, शालियूर एवं चेर राज्य में बन्दर प्रमुख बन्दरगाह था। कोर्कई मोती खोजने का प्रमुख पत्तन था।
- कोरोमण्डल समुद्रतट पर पदुचेरी से तीन किमी दक्षिण में स्थित अरिकमेडु चोल वंश का एक प्रमुख बन्दरगाह था। इस बन्दरगाह से रोम के साथ व्यापार होता था। 1945 ई. में हुई यहाँ की खुदाई से एक विशाल रोमन बस्ती का पता चला है। यहाँ मनकों के निर्माण का कारखाना भी था। पेरिप्लस में अरिकमेडु को पेडोक कहा गया है।

नोट : *संगम काल में ही मिस्र के एक नाविक हिप्पोलस ने मानसूनी हवाओं के सहारे बड़े जहाजों से सीधे समुद्र पार कर सकने की विधि खोजी।*

- तमिल देश का प्राचीन देवता मुरुगन था। कालान्तर में उसका नाम सुब्रह्मण्य हो गया और स्कन्द-कार्तिकेय के साथ उसका तादात्म्य स्थापित कर दिया गया। हिन्दू धर्म में स्कन्द-कार्तिकेय को शिव-पार्वती का पुत्र माना गया है। स्कन्द का एक नाम कुमार भी है और तमिल भाषा में मुरुगन शब्द का यही अर्थ होता है। मुरुगन का प्रतीक मुर्गा माना जाता था तथा उसके विषय में यह मान्यता थी कि उसे पर्वत पर क्रीड़ा करना अत्यधिक प्रिय है। उसका अस्त्र बर्छा था। कुरवस नामक एक पर्वतीय जनजाति की स्त्री को मुरुगन की पत्नियों में माना गया है।

21. गुप्त साम्राज्य

- गुप्त साम्राज्य का उदय तीसरी शताब्दी के अन्त में प्रयाग के निकट कौशाम्बी में हुआ।
- गुप्त वंश का संस्थापक श्रीगुप्त *(240-280 ई.)* था।
- श्रीगुप्त का उत्तराधिकारी घटोत्कच *(280-320 ई.)* हुआ।
- गुप्त वंश का प्रथम महान सम्राट् चन्द्रगुप्त प्रथम था। यह 320 ई. में गद्दी पर बैठा। इसने लिच्छवि राजकुमारी कुमार देवी से विवाह किया। इसने 'महाराजाधिराज' की उपाधि धारण की।
- गुप्त संवत् *(319-320 ई.)* की शुरुआत चन्द्रगुप्त प्रथम ने की।
- चन्द्रगुप्त प्रथम का उत्तराधिकारी समुद्रगुप्त हुआ, जो 335 ई. में राजगद्दी पर बैठा। इसने आर्यावर्त के 9 शासकों और दक्षिणावर्त के 12 शासकों को पराजित किया। इन्हीं विजयों के कारण इसे भारत का नेपोलियन कहा जाता है। इसने अश्वमेधकर्त्ता, विक्रमंक एवं परमभागवत की उपाधि धारण की। इसे कविराज भी कहा जाता है।

नोट : *परमभागवत की उपाधि धारण करने वाला प्रथम गुप्त शासक समुद्रगुप्त था।*

- समुद्रगुप्त विष्णु का उपासक था।
- समुद्रगुप्त संगीत-प्रेमी था। ऐसा अनुमान उसके सिक्कों पर उसे वीणा-वादन करते हुए दिखाया जाने से लगाया गया है।
- समुद्रगुप्त का दरबारी कवि हरिषेण था, जिसने इलाहाबाद प्रशस्ति लेख की रचना की।
- समुद्रगुप्त का उत्तराधिकारी चन्द्रगुप्त-II हुआ, जो 380 ई. में राजगद्दी पर बैठा।
- चन्द्रगुप्त-II के शासनकाल में चीनी बौद्ध यात्री फाहियान भारत आया।
- शकों पर विजय के उपलक्ष्य में चन्द्रगुप्त-II ने चाँदी के सिक्के चलाए।
- शाब चन्द्रगुप्त II का राजकवि था। चन्द्रगुप्त II के समय में पाटलिपुत्र एवं उज्जयिनी विद्या के प्रमुख केन्द्र थे।
- अनुश्रुति के अनुसार चन्द्रगुप्त II के दरबार में नौ विद्वानों की एक मंडली निवास करती थी जिसे नवरत्न कहा गया है। महाकवि कालिदास संभवतः इनमें अग्रगण्य थे। कालिदास के अतिरिक्त इनमें धन्वंतरि, क्षपणक *(फलित-ज्योतिष के विद्वान)*, अमरसिंह *(कोशकार)*, शंकु *(वास्तुकार)*, वेतालभट्ट, घटकर्पर, वाराहमिहिर *(खगोल विज्ञानी)* एवं वररूचि जैसे विद्वान थे।
- चन्द्रगुप्त II का सान्धिविग्रहिक सचिव वीरसेन शैव मतालंबी था जिसने शिव की पुजा के लिए उदयगिरि पहाड़ी पर एक गुफा का निर्माण करवाया था। वीरसेन व्याकरण, न्यायमीमांसा एवं शब्द का प्रकाण्ड पंडित तथा एक कवि भी था।
- चन्द्रगुप्त-II का उत्तराधिकारी कुमारगुप्त-I या गोविन्दगुप्त *(415 ई.–454 ई.)* हुआ।
- नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना कुमारगुप्त ने की थी।
- कुमारगुप्त-I का उत्तराधिकारी स्कन्धगुप्त *(455–467 ई.)* हुआ।
- स्कन्धगुप्त ने गिरनार पर्वत पर स्थित सुदर्शन झील का पुनरुद्धार किया।
- स्कन्धगुप्त ने पर्णदत्त को सौराष्ट्र का गवर्नर नियुक्त किया।
- स्कन्धगुप्त के शासनकाल में ही हूणों का आक्रमण शुरू हो गया।
- अंतिम गुप्त शासक विष्णुगुप्त था।
- गुप्त साम्राज्य की सबसे बड़ी प्रादेशिक इकाई 'देश' थी, जिसके शासक को गोप्ता कहा जाता था। एक दूसरी प्रादेशिक इकाई भूक्ति थी, जिसके शासक उपरिक कहलाते थे।
- भूक्ति के नीचे विषय नामक प्रशासनिक इकाई होती थी, जिसके प्रमुख विषयपति कहलाते थे।
- पुलिस विभाग का मुख्य अधिकारी दण्डपाशिक कहलाता था।
- पुलिस विभाग के साधारण कर्मचारियों को चाट एवं भाट कहा जाता था।
- प्रशासन की सबसे छोटी इकाई ग्राम थी। ग्राम का प्रशासन ग्राम-सभा द्वारा संचालित होता था। ग्राम-सभा का मुखिया ग्रामीक कहलाता था एवं अन्य सदस्य महत्तर कहलाते थे।
- ग्राम-समूहों की छोटी इकाई को पेठ कहा जाता था।
- गुप्त शासक कुमारगुप्त के दामोदरपुर ताम्रपत्र में भूमि बिक्री सम्बन्धी अधिकारियों के क्रियाकलापों का उल्लेख है।
- भू-राजस्व कुल उत्पादन का $\frac{1}{4}$ भाग से $\frac{1}{6}$ भाग हुआ करता था।
- आर्थिक उपयोगिता के आधार पर निम्न प्रकार की भूमि थी—

1. क्षेत्र : कृषि करने योग्य भूमि।
2. वास्तु : वास करने योग्य भूमि।
3. चरागाह भूमि : पशुओं के चारा योग्य भूमि।
4. सिल : ऐसी भूमि जो जोतने योग्य नहीं होती थी।
5. अप्रहत : ऐसी भूमि जो जंगली होती थी।

गुप्तकालीन प्रसिद्ध मंदिर

मंदिर	स्थान
विष्णु मंदिर	तिगवा *(जबलपुर, मध्य प्रदेश)*
शिव मंदिर	भूमरा *(नागौदा, मध्य प्रदेश)*
पार्वती मंदिर	नयना कुठार, *(मध्य प्रदेश)*
दशावतार मंदिर	देवगढ़ *(ललितपुर, उत्तर प्रदेश)*
शिव मंदिर	खोह *(नागौद, मध्य प्रदेश)*
भीतर गाँव मंदिर लक्ष्मण मंदिर *(ईंटों द्वारा निर्मित)*	भीतर गाँव कानपुर *(उत्तर प्रदेश)*

- सिंचाई के लिए रहट या घंटी यंत्र का प्रयोग होता था।
- श्रेणी के प्रधान को ज्येष्ठक कहा जाता था।
- गुप्तकाल में उज्जैन सर्वाधिक महत्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र था।
- गुप्त राजाओं ने सर्वाधिक स्वर्ण मुद्राएँ जारी कीं। इनकी स्वर्ण मुद्राओं को अभिलेखों में दीनार कहा गया है।
- कायस्थों का सर्वप्रथम वर्णन याज्ञवल्क्य स्मृति में मिलता है। जाति के रूप में कायस्थों का सर्वप्रथम वर्णन ओशनम् स्मृति में मिलता है।
- विंध्य जंगल में शबर जाति के लोग अपने देवताओं को मनुष्य का मांस चढ़ाते थे।
- पहली बार किसी के सती होने का प्रमाण 510 ई. के भानुगुप्त के एरण अभिलेख से मिलता है, जिसमें किसी भोजराज की मृत्यु पर उसकी पत्नी के सती होने का उल्लेख है।
- गुप्तकाल में वेश्यावृत्ति करने वाली महिलाओं को गणिका कहा जाता था। वृद्ध वेश्याओं को कुट्टनी कहा जाता था।
- गुप्त सम्राट् वैष्णव धर्म के अनुयायी थे तथा उन्होंने इसे राजधर्म बनाया था। विष्णु का वाहन गरुड़ गुप्तों का राजचिह्न था। गुप्तकाल में वैष्णव धर्म संबंधी सबसे महत्वपूर्ण अवशेष देवगढ़ *(जिला—ललितपुर)* का दशावतार मंदिर है। यह बेतवा नदी के तट पर स्थित है।
- अजन्ता में निर्मित कुल 29 गुफाओं में वर्तमान में केवल 6 ही शेष हैं, जिनमें गुफा संख्या 16 एवं 17 ही गुप्तकालीन हैं। इसमें गुफा संख्या 16 में उत्कीर्ण मरणासन्न राजकुमारी का चित्र प्रशंसनीय है।
- गुफा संख्या 17 के चित्र को चित्रशाला कहा गया है। इस चित्रशाला में बुद्ध के जन्म, जीवन, महाभिनिष्क्रमण एवं महापरिनिर्वाण की घटनाओं से संबंधित चित्र उद्धृत किये गये हैं।
- अजंता की गुफाएँ बौद्धधर्म की महायान शाखा से संबंधित हैं।
- गुप्तकाल में निर्मित अन्य गुफा बाघ की गुफा है, जो बाघ *(जिला–धार, मध्य प्रदेश)* नामक स्थान पर विंध्यपर्वत को काटकर बनायी गयी थी।
- गुप्तकाल में विष्णु शर्मा द्वारा लिखित पंचतंत्र *(संस्कृत)* को संसार का सर्वाधिक प्रचलित ग्रंथ माना जाता है। बाइबिल के बाद इसका स्थान दूसरा है। इसे पाँच भागों में बाँटा गया है—1. मित्रभेद, 2. मित्रलाभ, 3. संधि-विग्रह, 4. लब्ध-प्रणाश, 5. अपरीक्षाकारित्व।
- आर्यभट्ट ने आर्यभट्टीयम एवं सूर्यसिद्धान्त नामक ग्रंथ लिखे। उसने सूर्यग्रहण एवं चन्द्रग्रहण के वास्तविक कारण बताए। आर्यभट्ट पहला भारतीय नक्षत्र वैज्ञानिक थे जिसने घोषणा की कि पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है।

➢ वराहमिहिर की पुस्तक वृहत् संहिता में नक्षत्र विद्या, वनस्पतिशास्त्र, प्राकृतिक इतिहास और भौतिक भूगोल के विषयों पर चर्चा की गई है। वराहमिहिर ने पंचसिद्धांत बृहज्जाक और लघुजातक की रचना भी की।
➢ ब्रह्मगुप्त इस युग के महान नक्षत्र वैज्ञानिक एवं गणितज्ञ थे। उसने यह घोषणा करके न्यूटन के सिद्धांत की पूर्व कल्पना कर ली: ''प्रकृति के एक नियम के अनुसार सभी वस्तुएँ पृथ्वी पर गिरती हैं, क्योंकि पृथ्वी स्वभाव से ही सभी वस्तुओं को अपनी ओर आकर्षित करती हैं।''
➢ गुप्तकाल में पलकाप्य ने पशु-चिकित्सा पर हस्त्यायुर्वेद लिखा।
➢ नवनीतकम् की रचना गुप्तकाल में की गई है। इस पुस्तक में नुस्खे, सूत्र और उपचार-विधियाँ दी गई हैं।
➢ पुराणों की वर्तमान रूप में रचना गुप्तकाल में हुई। इसमें ऐतिहासिक परम्पराओं का उल्लेख है।
➢ संस्कृत गुप्त राजाओं की शासकीय भाषा थी।
➢ गुप्तकाल में चाँदी के सिक्कों को रूप्यका कहा जाता था।
➢ याज्ञवल्क्य, नारद, कात्यायन एवं बृहस्पति स्मृतियों की रचना गुप्तकाल में ही हुई।
➢ मंदिर बनाने की कला का जन्म गुप्तकाल में ही हुआ। त्रिमूर्ति की अवधारणा का विकास गुप्तकाल में ही हुआ।
➢ गुप्तवंश के शासकों ने मंदिरों एवं ब्राह्मणों को सबसे अधिक ग्राम अनुदान में दिया।
➢ गुप्तकाल लौकिक साहित्य की सर्जना के लिए स्मरणीय है। भास के तेरह नाटक इसी काल के हैं। शूद्रक का लिखा नाटक मृच्छकटिकम् या माटी की खिलौनागाड़ी जिसमें निर्धन ब्राह्मण के साथ वेश्या का प्रेम वर्णित है, प्राचीन नाटकों में सर्वोत्कृष्ट माना जाता है।
➢ कालिदास की कृति अभिज्ञान शाकुंतलम् *(राजा दुष्यंत एवं शकुंतला के प्रेम की कथा)* प्रथम भारतीय रचना है जिसका अनुवाद यूरोपीय भाषाओं में हुआ। ऐसी दूसरी रचना है भगवद्‌गीता।
➢ सांस्कृतिक उपलब्धियों के कारण गुप्तकाल को भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग कहा जाता है।

नोट : *नगरों का क्रमिक पतन गुप्तकाल की महत्वपूर्ण विशेषता थी।*

22. वाकाटक राजवंश

➢ वाकाटक राजवंश की स्थापना 255 ई. के लगभग विन्ध्यशक्ति नामक व्यक्ति ने की थी। इसके पूर्वज सातवाहनों के अधीन बरार *(विदर्भ)* के स्थानीय शासक थे।
➢ विन्ध्यशक्ति के पश्चात उसका पुत्र प्रवरसेन प्रथम *(275–335 ई.)* शासक हुआ। वाकाटक वंश का वह अकेला ऐसा शासक था जिसने सम्राट की उपाधि धारण की थी। पुराणों से पता चलता है कि इसने चार अश्वमेध यज्ञ किया था।
➢ प्रवरसेन के पश्चात वाकाटक साम्राज्य दो शाखाओ में विभक्त हो गया—प्रधान शाखा तथा बासीय *(वत्सगुल्म)* शाखा। दोनों शाखाएँ समानान्तर रूप से शासन किया।
➢ प्रधान शाखा के प्रमुख राजा—रूद्रसेन प्रथम *(335–360 ई.)*, प्रभावती गुप्ता का संरक्षण काल *(390–410)*, प्रवरसेन द्वितीय *(41–440 ई.)* नरेन्द्र सेन *(440–460 ई.)*, पृथ्वीसेन द्वितीय *(460–480 ई.)*
➢ गुप्त शासक चन्द्रगुप्त द्वितीय ने अपनी पुत्री प्रभावती गुप्ता का विवाह वाकाटक नरेश रूद्रसेन द्वितीय से किया। वाकाटकों का राज्य गुप्त एवं शक राज्यों के बीच था। राज्यों पर विजय प्राप्त करने के लिए चन्द्रगुप्त-II ने इस संबंध को स्थापित किया था। बिवाह के कुछ समय बाद रूद्रसेन द्वितीय की मृत्यु हो गई। चूँकि उसके दोनों पुत्र दिवाकर सेन एवं दमोदर सेन अवयस्क थे अतः प्रभावतीगुप्ता ने शासन संभाला। यह काल वाकाटक गुप्त संबंध का स्वर्णकाल रहा।
➢ प्रभावतीगुप्ता के संरक्षण काल के बाद उसका कनिष्ठ पुत्र दमोदर सेन प्रवरसेन द्वितीय के नाम से गद्दी पर बैठा।
➢ पृथ्वीसेन द्वितीय वाकाटकों की प्रधान शाखा का अंतिम शासक था। उसके बाद उसका राज्य बासीम शाखा के हरिषेण के हाथों में चला गया।

बासीम शाखा के वाकाटक

➢ वाकाटक वंश की इस शाखा की स्थापना 330 ई. में सम्राट प्रवरसेन के छोटे पुत्र सर्वसेन ने की थी। उसने वत्सगुल्म नामक स्थान पर एक स्वतंत्र राज्य की स्थापना की। वत्सगुल्म महाराष्ट्र के अकोला जिले में आधुनिक बासीम में स्थित था।
➢ बासीम शाखा के प्रमुख राजा : सर्वसेन, विन्ध्यशक्ति द्वितीय *(350–400 ई.)*, प्रवरसेन द्वितीय *(400–415 ई.)*, हरिषेण *(475–510 ई.)*
➢ हरिषेण बासीम शाखा का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक था। यह वाकाटक वंश का अंतिम ज्ञात शासक है।
➢ वाकाटक वंश के राजा प्रवरसेन द्वितीय ने मराठी प्राकृतकाव्य सेतुबन्ध की रचना की तथा सर्वसेन ने हरिविजय नामक प्राकृत काव्य-ग्रंथ लिखा।
➢ संस्कृत की वैदर्भी शैली का पूर्ण विकास वाकाटक नरेशों के दरबार में हुआ।
➢ कुछ विद्वानों का मत है कि चन्द्रगुप्त द्वितीय के राजकवि कालिदास ने कुछ समय तक प्रवरसेन द्वितीय की राजसभा में निवास किया था। वहाँ उन्होंने उसके सेतुबन्ध का संशोधन किया तथा वैदर्भी शैली में अपना काव्य मेघदूत लिखा।
➢ वाकाटक नरेश ब्राह्मण धर्मालंबी थे। वे शिव और विष्णु के अनन्य उपासक थे।
➢ वाकाटक नरेश पृथ्वीसेन द्वितीय के सामन्त व्याध्रदेव ने नचना के मंदिर का निर्माण करवाया।
➢ अजन्ता का सोलहवाँ तथा सत्रहवाँ गुहा विहार और उन्नीसवें गुहा चैत्य का निर्माण वाकटकों के शासन काल में हुआ।

23. पुष्यभूति वंश या वर्द्धन वंश

➢ गुप्त वंश के पतन के बाद जिन नये राजवंशों का उद्भव हुआ, उनमें मैत्रक, मौखरि, पुष्यभूति, परवर्ती गुप्त और गौड़ प्रमुख हैं। इन राजवंशों में पुष्यभूति वंश के शासकों ने सबसे विशाल साम्राज्य स्थापित किया।
➢ पुष्यभूति वंश के संस्थापक पुष्यभूति था। इनकी राजधानी थानेश्वर *(हरियाणा प्रांत के कुरुक्षेत्र जिले में स्थित वर्तमान थानेसर स्थान)* थी।
➢ प्रभाकरवर्द्धन इस वंश की स्वतंत्रता का जन्मदाता था तथा प्रथम प्रभावशाली शासक था, जिसने परमभट्टारक और महाराजाधिराज जैसी सम्मानजनक उपाधियाँ धारण की।
➢ प्रभाकरवर्द्धन की पत्नी यशोमती से दो पुत्र–राज्यवर्द्धन और हर्षवर्द्धन तथा एक कन्या राज्यश्री उत्पन्न हुई। राज्यश्री का विवाह कन्नौज के मौखरि राजा ग्रहवर्मा के साथ हुआ।
➢ मालवा के शासक देवगुप्त ने ग्रहवर्मा की हत्या कर दी और राज्यश्री को बंदी बनाकर कारागार में डाल दिया।
➢ राज्यवर्द्धन ने देवगुप्त को मार डाला, परंतु देवगुप्त के मित्र गौड़ नरेश शशांक ने धोखा देकर राज्यवर्द्धन की हत्या कर दी।

नोट : *शशांक शैव धर्म का अनुयायी था। इसने बोधिवृक्ष (बोधगया) को कटवा दिया।*

➢ राज्यवर्द्धन की मृत्यु के बाद 606 ई. में 16 वर्ष की अवस्था में हर्षवर्द्धन थानेश्वर की गद्दी पर बैठा। हर्ष को शिलादित्य के नाम से भी जाना जाता था। इसने परमभट्टारक नरेश की उपाधि धारण की थी।
➢ हर्ष ने शशांक को पराजित करके कन्नौज पर अधिकार कर लिया तथा उसे अपनी राजधानी बनाया।
➢ हर्ष और पुलकेशिन–II के बीच नर्मदा नदी के तट पर युद्ध हुआ, जिसमें हर्ष की पराजय हुई।
➢ चीनी यात्री ह्वेनसाँग हर्षवर्द्धन के शासनकाल में भारत आया।

नोट : *ह्वेनसाँग को यात्रियों में राजकुमार, नीति का पंडित एवं वर्तमान शाक्यमुनि कहा जाता है। वह नालंदा विश्वविद्यालय में पढ़ने एवं बौद्ध ग्रंथ संग्रह करने के उद्देश्य से भारत आया था।*

- हर्ष 641 ई. में अपने दूत चीन भेजे तथा 643 ई. एवं 645 ई. में दो चीनी दूत उसके दरबार में आए।
- हर्ष ने कश्मीर के शासक से बुद्ध के दंत अवशेष बलपूर्वक प्राप्त किए।
- हर्ष के पूर्वज भगवान शिव और सूर्य के अनन्य उपासक थे। प्रारंभ में हर्ष भी अपने कुलदेवता शिव का परम भक्त था। चीनी यात्री ह्वेनसाँग से मिलने के बाद उसने बौद्ध धर्म की महायान शाखा को राज्याश्रय प्रदान किया तथा वह पूर्ण बौद्ध बन गया।
- हर्ष के समय में नालंदा महाविहार महायान बौद्ध धर्म की शिक्षा का प्रधान केंद्र था।
- हर्ष के समय में प्रयाग में प्रति पाँचवें वर्ष एक समारोह आयोजित किया जाता था जिसे महामोक्षपरिषद कहा जाता था। ह्वेनसाँग स्वयं 6ठे समारोह में सम्मिलित हुआ।
- बाणभट्ट हर्ष के दरबारी कवि थे। उन्होंने हर्षचरित एवं कादम्बरी की रचना की।
- प्रियदर्शिका, रत्नावली तथा नागानन्द नामक तीन संस्कृत नाटक ग्रंथों की रचना हर्ष ने की थी। कहा जाता है कि धावक नामक कवि ने हर्ष से पुरस्कार लेकर उसके नाम से ये तीनों नाटक लिख दिए।
- हर्ष को भारत का अंतिम हिन्दू सम्राट् कहा गया है, लेकिन वह न तो कट्टर हिन्दू था और न ही सारे देश का शासक ही।
- हर्ष के अधीनस्थ शासक महाराज अथवा महासामन्त कहे जाते थे।
- हर्ष के मंत्रीपरिषद के मंत्री को सचिव या आमात्य कहा जाता था।
- प्रशासन की सुविधा के लिए हर्ष का साम्राज्य कई प्रांतों में विभाजित था। प्रांत को भूक्ति कहा जाता था। प्रत्येक भूक्ति का शासक राजस्थानीय, उपरिक अथवा राष्ट्रीय कहलाता था।

नोट : *हर्षचरित में प्रान्तीय शासक के लिए 'लोकपाल' शब्द आया है।*

- भूक्ति का विभाजन जिलों में हुआ था। जिले की संज्ञा थी विषय, जिसका प्रधान विषयपति होता था। विषय के अन्तर्गत कई पाठक *(आधुनिक तहसील)* होते थे।
- ग्राम, शासन की सबसे छोटी इकाई थी। ग्राम शासन का प्रधान ग्रामाक्षपटलिक कहा जाता था।

हर्षचरित के अनुसार हर्ष की मंत्रीपरिषद	
भण्डि	प्रधान सचिव
सिंहनाद	प्रधान सेनापति
कुन्तल	अश्व सेना का प्रधान
स्कन्दगुप्त	गज सेना का प्रमुख

- पुलिस कर्मियों को चाट या भाट कहा गया है। दण्डपाशिक तथा दाण्डिक पुलिस विभाग के अधिकारी होते थे।
- अश्व सेना के अधिकारियों को बृहदेश्वर, पैदल सेना के अधिकारियों को बलाधिकृत या महाबलाधिकृत कहा जाता था।
- हर्षचरित में सिंचाई के साधन के रूप में तुलायंत्र *(जलपंप)* का उल्लेख मिलता है।
- हर्ष के समय मथुरा सूती वस्त्रों के निर्माण के लिए प्रसिद्ध था।

24. दक्षिण भारत के प्रमुख राजवंश

पल्लव वंश

- पल्लव वंश का संस्थापक सिंहविष्णु *(575-600 ई.)* था। इसकी राजधानी काँची *(तमिलनाडु में काँचीपुरम)* थी। वह वैष्णव धर्म का अनुयायी था।
- किरातार्जुनीयम के लेखक भारवि सिंहविष्णु के दरबार में रहते थे।
- पल्लव वंश के प्रमुख शासक हुए : क्रमशः महेन्द्र वर्मन प्रथम *(600–630 ई.)*, नरसिंह वर्मन प्रथम *(630–668 ई.)*, महेन्द्र वर्मन द्वितीय *(668–670 ई.)*, परमेश्वर वर्मन प्रथम *(670–700 ई.)*, नरसिंहवर्मन-II *(700–728 ई.)*, नंदिवर्मन-II *(730–800 ई.)*।
- पल्लव वंश का अंतिम *(महत्वपूर्ण)* शासक अपराजितवर्मन *(880–903 ई.)* हुआ।
- मतविलास प्रहसन की रचना महेन्द्रवर्मन ने की थी।
- महेन्द्रवर्मन शुरू में जैन-मतावलंबी था, परन्तु बाद में तमिल संत अप्पर के प्रभाव में आकर शैव बन गया था।
- महाबलीपुरम् के एकाश्म मंदिर जिन्हें रथ कहा गया है, का निर्माण पल्लव राजा नरसिंह वर्मन प्रथम के द्वारा करवाया गया था। रथ मंदिरों की संख्या सात है। रथ मंदिरों में सबसे छोटा द्रोपदी रथ है जिसमें किसी प्रकार का अलंकरण नहीं मिलता है।
- वातपीकोण्ड और महामल्ल की उपाधि नरसिंहवर्मन प्रथम ने धारण की थी। इसी के शासन काल में चीनी यात्री हुएन-त्सांग काँची आया था।
- परमेश्वर वर्मन प्रथम शैवमतानुयायी था। उसने लोकादित्य, एकमल्ल, रणंजय, अत्यन्तकाम, उग्रदण्ड, गुणभाजन आदि की उपाधियाँ ग्रहण की थी। इसने मामल्लपुरम में गणेश मंदिर का निर्माण करवाया था।
- परमेश्वर वर्मन प्रथम विद्याप्रेमी भी था और उसने विद्याविनीत की उपाधि भी ली थी।
- अरबों के आक्रमण के समय पल्लवों का शासक नरसिंहवर्मन–II था। उसने 'राजासिंह' *(राजाओं में सिंह)*, 'आगमप्रिय' *(शास्त्रों का प्रेमी)* और शंकरभक्त *(शिव का उपासक)* की उपाधियाँ धारण की। उसने काँची के कैलाशनाथ मंदिर का निर्माण करवाया जिसे राजसिद्धेश्वर मंदिर भी कहा जाता है। इसी मंदिर के निर्माण से द्रविड़ स्थापत्य कला की शुरुआत हुई। *(महाबलिपुरम् में शोर मंदिर का निर्माण भी नरसिंहवर्मन-II ने किया)*
- काँची के कैलाशनाथ मंदिर में पल्लव राजाओं और रानियों की आदमकद तस्वीरें लगी हैं।
- दशकुमारचरित के लेखक दण्डी नरसिंहवर्मन *(द्वितीय)* के दरबार में रहते थे।
- काँची के मुक्तेश्वर मंदिर तथा बैकुण्ठ पेरूमाल मंदिर का निर्माण नन्दिवर्मन द्वितीय ने कराया।
- प्रसिद्ध वैष्णव संत तिरुमङ्गई अलवार नन्दिवर्मन द्वितीय के समकालीन थे।

चोल

- 9वीं शताब्दी में चोल वंश पल्लवों के ध्वंसावशेषों पर स्थापित हुआ। इस वंश के संस्थापक विजयालय *(850-87 ई.)* थे जिसकी राजधानी तांजाय *(तंजौर या तंजावूर)* था। तंजावूर का वास्तुकार कुंजरमल्लन राजराज पेरूथच्चन था।
- विजयालय ने नरकेसरी की उपाधि धारण की और निशुम्भसूदिनी देवी का मंदिर बनवाया।
- चोलों का स्वतंत्र राज्य आदित्य प्रथम ने स्थापित किया।
- पल्लवों पर विजय पाने के उपरान्त आदित्य प्रथम ने कोदण्डराम की उपाधि धारण की।
- चोल वंश के प्रमुख राजा थे—परांतक-I, राजराज-I, राजेन्द्र-I, राजेन्द्र-II एवं कुलोत्तुंग।
- तक्कोलम के युद्ध में राष्ट्रकूट नरेश कृष्ण-III ने परांतक-I को पराजित किया। इस युद्ध में परांतक-I का बड़ा लड़का राजादित्य मारा गया।
- राजराज प्रथम ने श्रीलंका पर आक्रमण किया। वहाँ के राजा महिम-V को भागकर श्रीलंका के दक्षिण जिला रोहण में शरण लेनी पड़ी।
- राजराज-I श्रीलंका के विजित प्रदेशों को चोल साम्राज्य का एक नया प्रांत मुम्डिचोलमंडलम बनाया और पोलन्नरुवा को इसकी राजधानी बनाया।
- राजराज-I शैव धर्म का अनुयायी था। इसने तंजौर में राजराजेश्वर का शिवमंदिर बनाया।
- चोल साम्राज्य का सर्वाधिक विस्तार राजेन्द्र प्रथम के शासनकाल में हुआ है। बंगाल के पाल शासक महिपाल को पराजित करने के बाद राजेन्द्र प्रथम ने गंगैकोडचोल की उपाधि धारण की और नवीन राजधानी गंगैकोड चोलपुरम् के निकट चोलगंगम नामक विशाल तालाब का निर्माण करवाया।

चोल काल में भूमि के प्रकार

वेल्लनवगाई : गैर ब्राह्मण किसान स्वामी की भूमि।

ब्रह्मदेय : ब्राह्मणों को उपहार में दी गई भूमि।

शालाभोग : किसी विद्यालय के रख-रखाव की भूमि।

देवदान या तिरुनमटइक्कनी : मंदिर को उपहार में दी गई भूमि।

पल्लिच्चंदम : जैन संस्थानों को दान दी गई भूमि।

नोट : *गजनी का सुल्तान महमूद राजेन्द्र प्रथम का समकालीन था।*

- राजेन्द्र-II ने प्रकेसरी की एवं वीर राजेन्द्र ने राजकेसरी की उपाधि धारण की। चोल वंश का अंतिम राजा राजेन्द्र-III था।
- चोलों एवं पश्चिमी चालुक्य के बीच शांति स्थापित करने में गोवा के कदम्ब शासक जयकेस प्रथम ने मध्यस्थ की भूमिका निभायी थी।
- विक्रम चोल अभाव एवं अकाल से ग्रस्त गरीब जनता से राजस्व वसूल कर चिदंबरम् मंदिर का विस्तार करवा रहा था।
- कलोतुंग-II ने चिदम्बरम् मंदिर में स्थित गोविन्दराज *(विष्णु)* की मूर्ति को समुद्र में फेंकवा दिया। कालान्तर में वैष्णव आचार्य रामानुजाचार्य ने उक्त मूर्ति का पुनरुद्धार किया और उसे तिरुपति के मंदिर में प्राण प्रतिष्ठित किया।
- चोल प्रशासन में भाग लेने वाले उच्च पदाधिकारियों को पेरुन्दरम् एवं निम्न श्रेणी के पदाधिकारियों को शेरुन्दरन कहा जाता था। लेखों में कुछ उच्चाधिकारियों को उडनकूटम् कहा गया है जिसका अर्थ है—सदा राजा के पास रहने वाला अधिकारी।
- सम्पूर्ण चोल साम्राज्य 6 प्रांतों में विभक्त था। प्रांत को मंडलम् कहा जाता था। मंडलम् कोट्टम् में, कोट्टम् नाडु में एवं नाडु कई कुर्रमों में विभक्त था।
- नाडु की स्थानीय सभा को नाटूर एवं नगर की स्थानीय सभा को नगरतार कहा जाता था।
- बेल्लाल जाति के धनी किसानों को केन्द्रीय सरकार की देख रेख में नाडु के काम-काज में अच्छा-खासा नियंत्रण हासिल था। उनमें से कई धनी भू-स्वामियों को चोल राजाओं के सम्मान के रूप में मुवेदवेलन *(तीन राजाओं को अपनी सेवाएँ प्रदान करने वाला वेलन या किसान)* अरइयार *(प्रधान)* जैसी उपाधियाँ दी उन्हें केन्द्र में महत्वपूर्ण राजकीय पद सौंपे।
- स्थानीय स्वशासन चोल प्रशासन की मुख्य विशेषता थी।
- उर सर्वसाधारण लोगों की समिति थी, जिसका कार्य होता था सार्वजनिक कल्याण के लिए तालाबों और बगीचों के निर्माण हेतु गाँव की भूमि का अधिग्रहण करना।
- सभा या महासभा : यह मूलतः अग्रहारों और ब्राह्मण बस्तियों की सभा थी, जिसके सदस्यों को पेरुमक्कल कहा जाता था। यह सभा वरियम नाम की समितियों के द्वारा अपने कार्य को संचालित करती थी। सभा की बैठक गाँव में मंदिर के निकट वृक्ष के नीचे या तालाब के किनारे होती थी। व्यापारियों की सभा को नगरम कहते थे।
- चोल काल में भूमिकर उपज का 1/3 भाग हुआ करता था।
- गाँव में कार्यसमिति की सदस्यता के लिए जो वेतनभोगी कर्मचारी रखे जाते थे, उन्हें मध्यस्थ कहते थे।

उत्तरमेरूर अभिलेख के अनुसार सभा की सदस्यता

1. सभा की सदस्यता के लिए इच्छुक लोगों को ऐसी भूमि का स्वामी होना चाहिए, जहाँ से भू-राजस्व वसूला जाता है।
2. उनके पास अपना घर होना चाहिए।
3. उनकी उम्र 35 से 70 के बीच होनी चाहिए।
4. उन्हें वेदों का ज्ञान होना चाहिए।
5. उन्हें प्रशासनिक मामलों की अच्छी जानकारी होनी चाहिए और ईमानदार होना चाहिए।
6. यदि कोई पिछले तीन सालों में किसी समिति का सदस्य रहा है तो वह किसी और समिति का सदस्य नहीं बन सकता।
7. जिसने अपने या अपने संबंधियों के खाते जमा नहीं कराए हैं, वह चुनाव नहीं लड़ सकता।

- ब्राह्मणों को दी गई करमुक्त भूमि को चतुर्वेदि मंगलम् एवं दान दी गयी भूमि ब्रह्मदेय कहलाती थी।
- चोल सेना का सबसे संगठित अंग था–पदाति सेना।
- चोल काल में कलंजु सोने के सिक्के थे।
- तमिल कवियों में जयन्गोंदर प्रसिद्ध कवि था, जो कुलोतुंग प्रथम का राजकवि था। उसकी रचना है—कलिंगतुपर्णि
- कंबन, औट्टक्कुट्टन और पुगलेंदि को तमिल साहित्य का त्रिरत्न कहा जाता है।
- पंप, पोन्न एवं रन्न कन्नड़ साहित्य के त्रिरत्न माने जाते हैं।
- पर्सी ब्राऊन ने तंजौर के बृहदेश्वर मंदिर के विमान को भारतीय वास्तुकला का निकष माना है। चोलकालीन नटराज प्रतिमा को चोल कला का सांस्कृतिक सार या निचोड़ कहा जाता है।
- चोल कांस्य प्रतिमाएँ संसार की सबसे उत्कृष्ट कांस्य प्रतिमाओं में गिनी जाती हैं।
- शैव सन्त इसानशिव पंडित राजेन्द्र-I के गुरु थे।
- चोलकाल *(10वीं शताब्दी)* का सबसे महत्वपूर्ण बन्दरगाह कावेरीपट्टनम था।
- बहुत बड़ा गाँव, जो एक इकाई के रूप में शासित किया जाता था, तनियर कहलाता था।
- उत्तरमेरूर शिलालेख, जो सभा-संस्था का विस्तृत वर्णन उपस्थित करता है, परांतक प्रथम के शासनकाल से संबंधित है।
- चोलों की राजधानी कालक्रम के अनुसार थी—उरैयूर, तंजौड़, गंगैकोंड, चोलपुरम् एवं काँची।
- चोल काल में सड़कों की देखभाल बगान समिति करती थी।
- चोलकाल में आम वस्तुओं के आदान-प्रदान का आधार धान था।
- चोल काल के विशाल व्यापारी-समूह निम्न थे—वलंजियार, नानादैसी एवं मनिग्रामम्।
- विष्णु के उपासक अलवार व शिव के उपासक नयनार संत कहलाते थे।

राष्ट्रकूट

- राष्ट्रकूट राजवंश का संस्थापक दन्तिदुर्ग *(752 ई.)* था। शुरुआत में वे कर्नाटक के चालुक्य राजाओं के अधीन थे। इसकी राजधानी मनकिर या मान्यखेत *(वर्तमान मालखेड़, शोलापुर के निकट)* थी।
- राष्ट्रकूट वंश के प्रमुख शासक थे : कृष्ण प्रथम, ध्रुव, गोविन्द तृतीय, अमोघवर्ष, कृष्ण-II, इन्द्र-III एवं कृष्ण-III।
- एलोरा के प्रसिद्ध कैलाश मंदिर का निर्माण कृष्ण प्रथम ने करवाया था।
- ध्रुव राष्ट्रकूट वंश का पहला शासक था, जिसने कन्नौज पर अधिकार करने हेतु त्रिपक्षीय संघर्ष में भाग लिया और प्रतिहार नरेश वत्सराज एवं पाल नरेश धर्मपाल को पराजित किया।
- ध्रुव को 'धारावर्ष' भी कहा जाता था।
- गोविन्द तृतीय ने त्रिपक्षीय संघर्ष में भाग लेकर चक्रायुद्ध एवं उसके संरक्षक धर्मपाल तथा प्रतिहार वंश के शासक नागभट्ट-II को पराजित किया।
- पल्लव, पाण्ड्य, केरल एवं गंग शासकों के संघ को गोविन्द-III ने नष्ट किया।
- अमोघवर्ष जैनधर्म का अनुयायी था। इसने कन्नड़ में कविराजमार्ग की रचना की। आदिपुराण के रचनाकार जिनसेन, गणितासार संग्रह के लेखक महावीराचार्य एवं अमोघवृत्ति के लेखक सक्तायना अमोघवर्ष के दरबार में रहते थे।
- अमोघवर्ष ने तुंगभद्रा नदी में जल-समाधि लेकर अपने जीवन का अंत किया।
- इन्द्र-III के शासन काल में अरब निवासी अलमसूदी भारत आया; इसने तत्कालीन राष्ट्रकूट शासकों को भारत का सर्वश्रेष्ठ शासक कहा।
- राष्ट्रकूट वंश का अंतिम महान शासक कृष्ण-III था। इसी के दरबार में कन्नड़ भाषा के कवि पोन्न रहते थे जिन्होंने शान्तिपुराण की रचना की।

- कल्याणी के चालुक्य तैलप-II ने 973 ई. में कर्क को हराकर राष्ट्रकूट राज्य पर अपना अधिकार कर लिया और कल्याणी के चालुक्य वंश की नींव डाली।
- एलोरा एवं एलिफेंटा *(महाराष्ट्र)* गुहामंदिरों का निर्माण राष्ट्रकूटों के समय ही हुआ। एलोरा में 34 शैलकृत गुफाएँ हैं। इसमें 1 से 12 तक बौद्धों, 13 से 29 तक हिन्दुओं एवं 30 से 34 तक जैनों की गुफाएँ हैं। बौद्ध गुफाओं में सबसे प्रसिद्ध विश्वकर्मा गुफा *(संख्या–10)* है। इसमें एक चैत्य है। वहाँ पर दो मंजिली और तीन मंजिली गुफाएँ भी हैं, जिन्हें दो थल तथा तीन थल नाम दिया गया है। एलोरा की गुफा 15 में विष्णु को नरसिंह अर्थात पुरुष-सिंह के रूप दिखलाया गया है।

नोट : *एलोरा गुफाओं का सर्वप्रथम उल्लेख फ्रांसीसी यात्री थेविनेट ने 17वीं शताब्दी में किया था।*

- राष्ट्रकूट शैव, वैष्णव, शाक्त सम्प्रदायों के साथ-साथ जैन धर्म के भी उपासक थे।
- राष्ट्रकूटों ने अपने राज्यों में मुसलमान व्यापारियों को बसने तथा इस्लाम के प्रचार की स्वीकृति दी थी।

चालुक्य वंश *(कल्याणी)*

- कल्याणी के चालुक्य वंश की स्थापना तैलप-II ने की थी। *(राजधानी–मान्यखेट)*
- चालुक्य वंश *(कल्याणी)* के प्रमुख शासक हुए—तैलप प्रथम, तैलप द्वितीय, विक्रमादित्य, जयसिंह, सोमेश्वर, सोमेश्वर-II, विक्रमादित्य-VI, सोमेश्वर-III एवं तैलप-III।
- सोमेश्वर प्रथम ने मान्यखेट से राजधानी हटाकर कल्याणी *(कर्नाटक)* को बनाया।
- इस वंश का सबसे प्रतापी शासक विक्रमादित्य-VI था।
- विल्हण एवं विज्ञानेश्वर विक्रमादित्य-VI के दरबार में ही रहते थे।
- मिताक्षरा *(हिन्दू विधि ग्रंथ, याज्ञवल्क्य स्मृति पर व्याख्या)* नामक ग्रंथ की रचना महान विधिवेत्ता विज्ञानेश्वर ने की थी।
- विक्रमांकदेवचरित की रचना विल्हण ने की थी। इसमें विक्रमादित्य-VI के जीवन पर प्रकाश डाला गया है।

चालुक्य वंश *(वातापी)*

- जयसिंह ने वातापी के चालुक्य वंश की स्थापना की, जिसकी राजधानी वातापी *(बीजापुर के निकट)* थी। इस वंश के प्रमुख शासक थे—पुलकेशिन प्रथम, कीर्तिवर्मन, पुलकेशिन-II, विक्रमादित्य, विनयादित्य एवं विजयादित्य। इनमें सबसे प्रतापी राजा पुलकेशिन-II था।
- महाकूट स्तम्भ लेख से प्रमाणित होता है कि पुलकेशिन-II बहु सुवर्ण एवं अग्निष्टोम यज्ञ सम्पन्न करवाया था। जिनेन्द्र का मेगुती मंदिर पुलकेशिन-II ने बनवाया था।
- पुलकेशिन-II ने हर्षवर्द्धन को हराकर परमेश्वर की उपाधि धारण की थी। इसने 'दक्षिणापथेश्वर' की उपाधि भी धारण की थी।
- पल्लववंशी शासक नरसिंह वर्मन प्रथम ने पुलकेशिन-II को लगभग 642 ई. में परास्त किया और उसकी राजधानी बादामी पर अधिकार कर लिया। संभवतः इसी युद्ध में पुलकेशिन-II मारा गया। इसी विजय के बाद नरसिंहवर्मन ने 'वातापिकोंड' की उपाधि धारण की।
- एहोल अभिलेख का संबंध पुलकेशिन-II से है। *(लेखक–रविकीर्ति)*
- अजन्ता के एक गुहाचित्र में फारसी दूत-मंडल को स्वागत करते हुए पुलकेशिन-II को दिखाया गया है।
- वातापी का निर्माणकर्त्ता कीर्तिवर्मन को माना जाता है।
- मालवा को जीतने के बाद विनयादित्य ने सकलोत्तरपथनाथ की उपाधि धारण की।
- विक्रमादित्य-II के शासनकाल में ही दक्कन में अरबों ने आक्रमण किया। इस आक्रमण का मुकाबला विक्रमादित्य के भतीजा पुलकेशी ने किया। इस अभियान की सफलता पर विक्रमादित्य-II ने इसे अवनिजनाश्रय की उपाधि प्रदान की।
- विक्रमादित्य-II की प्रथम पत्नी लोकमहादेवी ने पट्टदकल में विरूपाक्षमहादेव मंदिर तथा उसकी दूसरी पत्नी त्रैलोक्य देवी ने त्रैलोकेश्वर मंदिर का निर्माण करवायी।
- इस वंश का अंतिम राजा कीर्तिवर्मन द्वितीय था। इसे इसके सामंत दन्तिदुर्ग ने परास्त कर एक नये वंश *(राष्ट्रकूट वंश)* की स्थापना की।
- एहोल को मंदिरों का शहर कहा जाता है।

चालुक्य वंश *(बेंगी)*

- बेंगी के चालुक्य वंश का संस्थापक विष्णुवर्धन था। इसकी राजधानी बेंगी *(आन्ध्र प्रदेश)* में थी।
- इस वंश के प्रमुख शासक थे : जयसिंह प्रथम, इन्द्रवर्धन, विष्णुवर्धन द्वितीय, जयसिंह द्वितीय एवं विष्णुवर्धन-III.
- इस वंश के सबसे प्रतापी राजा विजयादित्य तृतीय था, जिसका सेनापति पंडरंग था।

यादव वंश

- देवगिरि के यादव वंश की स्थापना भिल्लम पंचम ने की। इसकी राजधानी देवगिरि थी।
- इस वंश का सबसे प्रतापी राजा सिंहण *(1210-1246 ई.)* था।
- इस वंश का अंतिम स्वतंत्र शासक रामचन्द्र था, जिसने अलाउद्दीन के सेनापति मलिक काफूर के सामने आत्मसमर्पण किया।

होयसल वंश

- द्वार समुद्र के होयसल वंश की स्थापना विष्णुवर्धन ने की थी।
- होयसल वंश, यादव वंश की एक शाखा थी।
- बेलूर में चेन्ना केशव मंदिर का निर्माण विष्णुवर्धन ने 1117 ई. में किया था।
- होयसल वंश का अंतिम शासक वीर बल्लाल तृतीय था, जिसे मलिक काफूर ने हराया था।
- होयसल वंश की राजधानी द्वार समुद्र *(आधुनिक हलेबिड)* था।

कदम्ब वंश

- कदम्ब वंश की स्थापना मयूर शर्मन ने की थी। कदम्ब वंश की राजधानी वनवासी था।

गंगवंश

- गंगवंश संस्थापक बज्रहस्त पंचम था।
- अभिलेखों के अनुसार गंगवंश के प्रथम शासक कोंकणी वर्मा था।
- गंगों की प्रारंभिक राजधानी कुवलाल *(कोलर)* थी, जो बाद में तलकाड हो गयी।
- 'दत्तकसूत्र' पर टीका लिखने वाला गंग शासक माधव प्रथम था।

काकतीय वंश

- काकतीय वंश का संस्थापक बीटा प्रथम था, जिसने नलगोंडा *(हैदराबाद)* में एक छोटे-से राज्य का गठन किया, जिसकी राजधानी अंमकोण्ड थी।
- इस वंश का सबसे शक्तिशाली शासक गणपति था। रुद्रमादेवी गणपति की बेटी थी, जिसने रुद्रदेव महाराज का नाम ग्रहण किया, जिसने 35 वर्ष तक शासन किया।
- गणपति ने अपनी राजधानी वारंगल में स्थानान्तरित कर ली थी।
- इस राजवंश का अंतिम शासक प्रताप रुद्र *(1295-1323 ई.)* था।

25. सीमावर्त्ती राजवंशों का अभ्युदय

पालवंश

- पालवंश का संस्थापक गोपाल *(750 ई.)* था। इस वंश की राजधानी मुंगेर थी।
- गोपाल बौद्ध धर्म का अनुयायी था। इसने ओदन्तपुरी विश्वविद्यालय की स्थापना की थी।
- पालवंश के प्रमुख शासक थे—धर्मपाल, देवपाल, नारायणपाल, महिपाल, नयपाल आदि।

- पालवंश का सबसे महान शासक धर्मपाल था जिसने विक्रमशिला विश्वविद्यालय की स्थापना की थी।
- कन्नौज के लिए त्रिपक्षीय संघर्ष पालवंश, गुर्जर प्रतिहार वंश एवं राष्ट्रकूट वंश के बीच हुआ। इसमें पालवंश की ओर से सर्वप्रथम धर्मपाल शामिल हुआ था।
- ग्यारहवीं सदी के गुजराती कवि सोड्ठल ने धर्मपाल को 'उत्तरापथ स्वामी' की उपाधि से संबोधित किया है। सोमपुर महाविहार का निर्माण धर्मपाल ने करवाया था।
- ओदन्तपुरी *(बिहार)* के प्रसिद्ध बौद्धमठ का निर्माण देवपाल ने करवाया था।
- जावा के शैलेन्द्रवंशी शासक बालपुत्र देव के अनुरोध पर देवपाल ने उसे नालंदा में एक बौद्धविहार बनवाने के लिए पाँच गाँव दान में दिए थे।
- गौड़ीरीति नामक साहित्यिक विद्या का विकास पाल शासकों के समय में हुआ।
- पाल शासक बौद्ध धर्म के अनुयायी थे।

सेनवंश

- सेनवंश की स्थापना सामन्त सेन ने राढ़ में की थी।
- इसकी राजधानी नदिया *(लखनौती)* थी।
- सेनवंश के प्रमुख शासक विजयसेन, बल्लाल सेन एवं लक्ष्मण सेन थे।
- सेनवंश का प्रथम स्वतंत्र शासक विजयसेन था, जो शैवधर्म का अनुयायी था।
- दानसागर एवं अद्भुत सागर नामक ग्रंथ की रचना सेन शासक बल्लालसेन ने की थी। अद्भुत सागर को लक्ष्मण सेन ने पूर्णरूप दिया था।
- लक्ष्मण सेन की राज्यसभा में गीतगोविन्द के लेखक जयदेव, पवनदूत के लेखक धोयी एवं ब्राह्मणसर्वस्व के लेखक हलायुद्ध रहते थे।
- हलायुद्ध लक्ष्मण सेन का प्रधान न्यायाधीश एवं मुख्यमंत्री था।
- विजयसेन ने देवपाड़ा में प्रद्युम्नेश्वर मंदिर *(शिव की विशाल मंदिर)* की स्थापना की।
- सेन राजवंश प्रथम राजवंश था, जिसने अपना अभिलेख सर्वप्रथम हिन्दी में उत्कीर्ण करवाया।
- लक्ष्मण सेन बंगाल का अंतिम हिन्दू शासक था।

कश्मीर के राजवंश

- कश्मीर पर शासन करनेवाले शासक वंश कालक्रम से इस प्रकार थे—कार्कोट वंश, उत्पल वंश, लोहार वंश।
- 627 ई. में दुर्लभवर्द्धन नामक व्यक्ति ने कश्मीर में कार्कोट वंश *(हिंदू वंश)* की स्थापना की थी। ह्वेनसांग ने उसके शासनकाल में कश्मीर की यात्रा की।
- कार्कोट वंश का सबसे शक्तिशाली राजा ललितादित्य मुक्तापीड था।
- कश्मीर का मार्त्तण्ड-मंदिर का निर्माण ललितादित्य मुक्तापीड के द्वारा करवाया गया था।
- कार्कोट वंश के बाद कश्मीर पर उत्पल वंश का शासन हुआ। इस वंश का संस्थापक अवन्तिवर्मन था। अवन्तिपुर नामक नगर की स्थापना अवन्तिवर्मन ने की थी।
- अवन्तिवर्मन के अभियन्ता सूय्य ने सिंचाई के लिए नहरों का निर्माण करवाया।
- 980 ई. में उत्पलवंश की रानी दिद्दा एक महत्वाकांक्षिणी शासिका हुई।
- उत्पल वंश के बाद कश्मीर पर लोहारवंश का शासन हुआ।
- लोहारवंश का संस्थापक संग्रामराज था। संग्रामराज के बाद अनन्त राजा हुआ। इसकी पत्नी सूर्यमती ने प्रशासन को सुधारने में उसकी सहायता की।
- लोहार वंश का शासक हर्ष विद्वान, कवि तथा कई भाषाओं का ज्ञाता था।
- कल्हण हर्ष का आश्रित कवि था।
- जयसिंह लोहार वंश का अन्तिम शासक था, जिसने 1128 ई. से 1155 ई. तक शासन किया। जयसिंह के शासन के साथ ही कल्हण की राजतरंगिणी का विवरण समाप्त हो जाता है।

कामरूप का वर्मन वंश

- चौथी शताब्दी के मध्य कामरूप में वर्मनवंश का उदय हुआ। इस वंश की प्रतिष्ठा का संस्थापक पुष्यवर्मन था। इसकी राजधानी प्राग्ज्योतिष नामक स्थान पर थी।
- कालान्तर में कामरूप पाल साम्राज्य का एक अंग बन गया।

26. राजपूत राजवंशों की उत्पत्ति

गुर्जर प्रतिहार वंश

- मालवा का शासक नागभट्ट प्रथम गुर्जर प्रतिहार वंश का संस्थापक था।
- नागभट्ट-II को राष्ट्रकूट सम्राट गोविन्द-III ने हराया था।
- प्रतिहार वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली एवं प्रतापी राजा मिहिरभोज था।
- मिहिरभोज ने अपनी राजधानी कन्नौज में बनाई थी। वह विष्णुभक्त था, उसने विष्णु के सम्मान में आदि वराह की उपाधि ग्रहण की।
- राजशेखर प्रतिहार शासक महेन्द्रपाल के दरबार में रहते थे।
- इस वंश का अंतिम राजा यशपाल *(1036 ई.)* था।
- दिल्ली नगर की स्थापना तोमर नरेश अनंगपाल ने ग्यारहवीं सदी के मध्य में की।

गहड़वाल *(राठौर)* राजवंश

- गहड़वाल वंश का संस्थापक चन्द्रदेव था। इसकी राजधानी वाराणसी थी।
- इस वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली राजा गोविन्दचन्द्र था। इसका मंत्री लक्ष्मीधर शास्त्रों का प्रकाण्ड पंडित था, जिसने कृत्यकल्पतरु नामक ग्रंथ लिखा था।
- गोविन्दचंद्र की एक रानी कुमारदेवी ने सारनाथ में धर्मचक्र-जिन विहार बनवायी।
- पृथ्वीराज-III ने स्वयंवर से जयचन्द की पुत्री संयोगिता का अपहरण कर लिया था।
- इस वंश का अंतिम शासक जयचन्द था, जिसे गोरी ने 1194 ई. के चन्दावर युद्ध में मार डाला।

चाहमान या चौहान वंश

- चौहान वंश का संस्थापक वासुदेव था। इस वंश की प्रारंभिक राजधानी अहिच्छत्र थी। बाद में अजयराज द्वितीय ने अजमेर नगर की स्थापना की और उसे राजधानी बनाया।
- इस वंश का सबसे शक्तिशाली शासक अर्णोराज के पुत्र विग्रहराज चतुर्थ वीसलदेव *(1153-1163 ई.)* हुआ, जिसने हरिकेलि नामक संस्कृत नाटक की रचना की।
- सोमदेव विग्रहराज-IV के राजकवि थे। इन्होंने ललित विग्रहराज नामक नाटक लिखा।
- अढ़ाई दिन का झोपड़ा नामक मस्जिद शुरू में विग्रहराज-IV द्वारा निर्मित एक विद्यालय था।
- पृथ्वीराज-III इस वंश का अंतिम शासक था।
- चन्दवरदाई पृथ्वीराज तृतीय का राजकवि था, जिसकी रचना पृथ्वीराजरासो है।
- रणथम्भौर के जैन मंदिर का शिखर पृथ्वीराज III ने बनवाया था।
- तराइन का प्रथम युद्ध 1191 ई. में हुआ, जिसमें पृथ्वीराज तृतीय की विजय एवं गौरी की हार हुई।
- तराइन के द्वितीय युद्ध 1192 ई. में हुआ, जिसमें गौरी की विजय एवं पृथ्वीराज तृतीय की हार हुई।

परमार वंश

- परमार वंश का संस्थापक उपेन्द्रराज था। इसकी राजधानी धारा नगरी थी। *(प्राचीन राजधानी–उज्जैन)* परमार वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक राजा भोज था।
- राजा भोज ने भोपाल के दक्षिण में भोजपुर नामक झील का निर्माण करवाया।
- नैषधीयचरित के लेखक श्रीहर्ष एवं प्रबन्धचिन्तामणि के लेखक मेरुतुंग थे।

➢ राजा भोज ने चिकित्सा, गणित एवं व्याकरण पर अनेक ग्रंथ लिखे। भोजकृत युक्तिकल्पतरु में वास्तुशास्त्र के साथ-साथ विविध वैज्ञानिक यंत्रों व उनके उपयोग का उल्लेख है।
➢ नवसाहसाङ्कचरित के रचयिता पद्मगुप्त, दशरूपक के रचयिता धनंजय, धनिक, हलायुध एवं अमितगति जैसे विद्वान वाक्पति मुंज के दरबार में रहते थे।
➢ कविराज की उपाधि से विभूषित शासक था—राजा भोज।
➢ भोज ने अपनी राजधानी में सरस्वती मंदिर का निर्माण करवाया था।
➢ इस मंदिर के परिसर में संस्कृत विद्यालय भी खोला गया था।
➢ राजा भोज के शासनकाल में धारा नगरी विद्या व विद्वानों का प्रमुख केन्द्र थी। इसने चित्तौड़ में त्रिभुवन नारायण मंदिर का निर्माण करवाया।
➢ भोजपुर नगर की स्थापना राजा भोज ने की थी।
➢ परमार वंश के बाद तोमर वंश का, उसके बाद चाहमान वंश का और अन्ततः 1297 ई. में अलाउद्दीन खिलजी के सेनापति नसरत खाँ और उलुग खाँ ने मालवा पर अधिकार कर लिया।

चन्देल वंश

➢ प्रतिहार साम्राज्य के पतन के बाद बुंदेलखंड की भूमि पर चन्देल वंश का स्वतंत्र राजनीतिक इतिहास प्रारंभ हुआ। बुंदेलखंड का प्राचीन नाम जेजाकभुक्ति है।
➢ चन्देल वंश का संस्थापक है—नन्नुक *(831 ई.)*।
➢ इसकी राजधानी खजुराहो थी। प्रारंभ में इसकी राजधानी कालिंजर *(महोबा)* थी। राजा धंग ने अपनी राजधानी कालिंजर से खजुराहो में स्थानान्तरित की थी।
➢ चंदेल वंश का प्रथम स्वतंत्र एवं सबसे प्रतापी राजा यशोवर्मन था।
➢ यशोवर्मन ने कन्नौज पर आक्रमण कर प्रतिहार राजा देवपाल को हराया तथा उससे एक विष्णु की प्रतिमा प्राप्त की, जिसे उसने खजुराहो के विष्णु मंदिर में स्थापित की।
➢ धंग ने जिन्ननाथ, विश्वनाथ एवं वैद्यनाथ मंदिर का निर्माण करवाया। कंदरिया महादेव मंदिर का निर्माण धंगदेव द्वारा 999 ई. में किया गया। धंग ने गंगा-जमुना के संगम में शिव की आराधना करते हुए अपने शरीर का त्याग किया।
➢ चंदेल शासक विद्याधर ने कन्नौज के प्रतिहार शासक राज्यपाल की हत्या कर दी, क्योंकि उसने महमूद के आक्रमण का सामना किए बिना ही आत्मसमर्पण कर दिया था।
➢ विद्याधर ही अकेला ऐसा भारतीय नरेश था जिसने महमूद गज़नी की महत्वाकांक्षाओं का सफलतापूर्वक प्रतिरोध किया।
➢ चंदेल शासक कीर्तिवर्मन की राज्यसभा में रहनेवाले कृष्ण मिश्र ने प्रबोध चन्द्रोदय की रचना की थी। इन्होंने महोबा के समीप कीर्तिसागर नामक जलाशय का निर्माण किया।
➢ आल्हा-उदल नामक दो सेनानायक परमर्दिदेव के दरबार में रहते थे, जिन्होंने पृथ्वीराज चौहान के साथ युद्ध करते हुए अपनी जान गँवायी थी।
➢ चंदेल वंश का अंतिम शासक परमर्दिदेव ने 1202 ई. में कुतुबुद्दीन ऐबक की अधीनता स्वीकार कर ली। इस पर उसके मंत्री अजयदेव ने उसकी हत्या कर दी।

सोलंकी वंश अथवा गुजरात के चालुक्य शासक

➢ सोलंकी वंश का संस्थापक मूलराज प्रथम था। इसकी राजधानी अन्हिलवाड़ थी। मूलराज प्रथम शैवधर्म का अनुयायी था।
➢ भीम प्रथम के शासनकाल में महमूद गज़नी ने सोमनाथ के मंदिर पर आक्रमण किया।
➢ भीम प्रथम के सामन्त विमल ने आबू पर्वत पर दिलवाड़ा का प्रसिद्ध जैन मंदिर बनवाया।
➢ सोलंकी वंश का प्रथम शक्तिशाली शासक जयसिंह सिद्धराज था।
➢ प्रसिद्ध जैन विद्वान हेमचन्द्र जयसिंह सिद्धराज के दरबार में था।
➢ माउण्ट आबू पर्वत *(राजस्थान)* पर एक मंडप बनाकर जयसिंह सिद्धराज ने अपने सातों पूर्वजों की गजारोही मूर्तियों की स्थापना की।
➢ मोढेरा के सूर्य मंदिर का निर्माण सोलंकी राजाओं के शासनकाल में हुआ था। सिद्धपुर में रुद्रमहाकाल के मंदिर का निर्माण जयसिंह सिद्धराज ने किया था।
➢ सोलंकी शासक कुमारपाल जैन-मतानुयायी था। वह जैन धर्म के अंतिम राजकीय प्रवर्तक के रूप में प्रसिद्ध है।
➢ सोलंकी वंश का अंतिम शासक भीम द्वितीय था।
➢ भीम-II के एक सामन्त लवण प्रसाद ने गुजरात में बघेल वंश की स्थापना की थी।
➢ बघेल वंश का कर्ण-II गुजरात का अंतिम हिन्दू शासक था, इसने अलाउद्दीन खिलजी की सेनाओं का मुकाबला किया था।

कलचुरी-चेदि राजवंश

➢ कलचुरी वंश का संस्थापक कोक्कल था। इसकी राजधानी त्रिपुरी थी।
➢ कलचुरी वंश का एक शक्तिशाली शासक गांगेयदेव था, जिसने 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण की। पूर्व-मध्यकाल में स्वर्ण सिक्कों के विलुप्त हो जाने के पश्चात् इन्होंने सर्वप्रथम इसे प्रारंभ करवाया।
➢ कलचुरी वंश चुरी सबसे महान शासक कर्णदेव था, जिसने कलिंग पर विजय प्राप्त की और त्रिकलिंगाधिपति की उपाधि धारण की।
➢ प्रसिद्ध कवि राजशेखर कलचुरी के दरबार में ही रहते थे।

सिसोदिया वंश

➢ सिसोदिया वंश के शासक अपने को सूर्यवंशी कहते थे, जो मेवाड़ पर शासन करते थे। मेवाड़ की राजधानी चित्तौड़ थी।
➢ अपनी विजयों के उपलक्ष्य में विजयस्तम्भ का निर्माण राणा कुम्भा ने चित्तौड़ में करवाया।
➢ खतोली का युद्ध 1518 ई. में राणा साँगा एवं इब्राहिम लोदी के बीच हुआ।

मध्यकालीन भारत

27. भारत पर अरबों का आक्रमण

➢ मुहम्मद बिन कासिम के नेतृत्व में अरबों ने भारत पर पहला सफल आक्रमण किया। अरबों ने सिन्ध पर 712 ई. में विजय पायी थी।
➢ अरब आक्रमण के समय सिन्ध पर दाहिर का शासन था।
➢ भारत पर अरबवासियों के आक्रमण का मुख्य उद्देश्य धन-दौलत लूटना तथा इस्लाम धर्म का प्रचार-प्रसार करना था।

28. महमूद गज़नी

➢ 932 ई. में अलप्तगीन नामक एक तुर्क सरदार गजनी साम्राज्य की स्थापना की, जिसकी राजधानी गजनी थी।
➢ अलप्तगीन की मृत्यु के पश्चात् कुछ समय तक ग़ज़नी में पिरीतिगीन ने शासक किया। इसी के शासनकाल (972–977 ई.) में सर्वप्रथम भारत पर आक्रमण किया गया।
➢ प्रथम तुर्क आक्रमण के समय पंजाब में शाही वंश का शासक जयपाल शासन कर रहा था।
➢ अलप्तगीन का गुलाम तथा दामाद सुबुक्तगीन 977 ई. में गज़नी की गद्दी पर बैठा। महमूद गज़नी सुबुक्तगीन का पुत्र था, जिसका जन्म 1 नवम्बर, 971 ई. में हुआ था।
➢ अपने पिता के काल में महमूद गज़नी खुरासान का शासक था।
➢ महमूद गज़नी 27 वर्ष की अवस्था में 998 ई. में गद्दी पर बैठा।
➢ बगदाद का खलीफा अल-आदिर बिल्लाह ने महमूद गज़नी के पद को मान्यता प्रदान करते हुए उसे 'यमीन-उद्-दौला' तथा 'यमीन-ऊल-मिल्लाह' की उपाधि दी।
➢ महमूद गज़नी ने भारत पर 17 बार आक्रमण किया।
➢ महमूद के भारतीय आक्रमण का वास्तविक उद्देश्य धन की प्राप्ति था।
➢ महमूद गज़नी एक मूर्तिभंजक आक्रमणकारी था।
➢ महमूद गज़नी ने भारत पर प्रथम आक्रमण 1000 ई. में किया तथा पेशावर के कुछ भागों पर अधिकार करके वह अपने देश लौट गया।
➢ महमूद गज़नी ने 1001 ई. में शाही राजा जयपाल के विरुद्ध आक्रमण किया था। इसमें जयपाल की पराजय हुई थी।

➢ महमूद गज़नी का 1008 ई. में नगरकोट के विरुद्ध हमले को मूर्तिवाद के विरुद्ध पहली महत्वपूर्ण जीत बतायी जाती है।
➢ महमूद गज़नी ने थानेसर के चक्रस्वामिन की कांस्य निर्मित आदमकद प्रतिमा को गज़नी भेजकर रंगभूमि में रखवाया।
➢ महमूद गज़नी का सबसे चर्चित आक्रमण 1025 ई. में सोमनाथ मंदिर *(सौराष्ट्र)* पर हुआ। इस मंदिर की लूट में उसे करीब 20 लाख दीनार की संपत्ति हाथ लगी। सोमनाथ की रक्षा में सहायता करने के कारण अन्हिलवाड़ा के शासक पर महमूद ने आक्रमण किया।
➢ सोमनाथ मंदिर लूट कर ले जाने के क्रम में महमूद पर जाटों ने आक्रमण किया था और कुछ सम्पत्ति लूट ली थी।
➢ महमूद गज़नी का अन्तिम भारतीय आक्रमण 1027 ई. में जाटों के विरुद्ध था। महमूद गज़नी की मृत्यु 1030 ई. में हो गयी।
➢ 'सुल्तान' की उपाधि धारण करने वाला प्रथम शासक महमूद गज़नी था। महमूद के सेना में सेवंदराय एवं तिलक जैसे हिन्दू उच्च पदों पर आसीन थे। अलबरूनी, फिरदौसी, उत्बी तथा फरूखी महमूद गज़नी के दरबार में रहते थे।

29. मुहम्मद गौरी

➢ गौर महमूद गज़नी के अधीन एक छोटा-सा राज्य था। 1173 ई. में शहाबुद्दीन मुहम्मद गौरी गौर का शासक बना। इसने भारत पर पहला आक्रमण 1175 ई. में मुल्तान के विरुद्ध किया था।
➢ मुहम्मद गौरी का दूसरा आक्रमण 1178 ई. में पाटन *(गुजरात)* पर हुआ। यहाँ का शासक भीम-II ने गौरी को बुरी तरह परास्त किया।

मुहम्मद गौरी द्वारा लड़ा गया प्रमुख युद्ध

युद्ध	वर्ष	पक्ष	परिणाम
तराइन का प्रथम युद्ध	1191	गौरी व पृथ्वीराज चौहान	चौहान विजयी
तराइन का द्वितीय युद्ध	1192	गौरी व पृथ्वीराज चौहान	गौरी विजयी
चन्दावर का युद्ध	1194	गौरी एवं जयचन्द	गौरी विजयी

➢ मुहम्मद गौरी भारत के विजित प्रदेशों पर शासन का भार अपने गुलाम सेनापतियों को सौंपते हुए गजनी लौट गया।
➢ मुहम्मद गौरी की हत्या 15 मार्च, 1206 ई. को कर दी गई।

30. सल्तनत काल

गुलाम वंश

➢ गुलाम वंश की स्थापना 1206 ई. में कुतुबुद्दीन ऐबक ने किया था। वह गौरी का गुलाम था।

नोट : *गुलामों को फारसी में बंदगॉं कहा जाता है तथा इन्हें सैनिक सेवा के लिए खरीदा जाता था।*

➢ कुतुबुद्दीन ऐबक ने अपना राज्याभिषेक 24 जून, 1206 को किया था। कुतुबुद्दीन ऐबक ने अपनी राजधानी लाहौर में बनायी थी।
➢ कुतुबमीनार की नींव कुतुबुद्दीन ऐबक ने डाली थी।
➢ दिल्ली का कुवत-उल-इस्लाम मस्जिद एवं अजमेर का ढाई दिन का झोपड़ा नामक मस्जिद का निर्माण ऐबक ने करवाया था। कुतुबुद्दीन ऐबक को लाख बख्श *(लाखों का दान देनेवाला)* भी कहा जाता था।

इल्तुतमिश के महत्वपूर्ण कार्य

1. कुतुबमीनार के निर्माण को पूर्ण करवाया।
2. सबसे पहले शुद्ध अरबी सिक्के जारी किए। *(चाँदी का टंका एवं ताँबा का जीतल)*
3. इक्ता प्रणाली चलाई।
4. चालीस गुलाम सरदारों का संगठन बनाया, जो तुर्कान-ए-चिहलगानी के नाम से जाना गया।
5. सर्वप्रथम दिल्ली के अमीरों का दमन किया।

➢ प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय को ध्वस्त करने वाला ऐबक का सहायक सेनानायक बख्तियार खिलजी था।
➢ ऐबक की मृत्यु 1210 ई. में चौगान खेलते समय घोड़े से गिरकर हो गयी। इसे लाहौर में दफनाया गया।
➢ ऐबक का उत्तराधिकारी आरामशाह हुआ, जिसने सिर्फ आठ महीनों तक शासन किया।
➢ आरामशाह की हत्या करके इल्तुतमिश 1211 ई. में दिल्ली की गद्दी पर बैठा।
➢ इल्तुतमिश तुर्किस्तान का इल्बरी तुर्क था, जो ऐबक का गुलाम एवं दामाद था। ऐबक की मृत्यु के समय वह बदायूँ का गवर्नर था।
➢ इल्तुतमिश लाहौर से राजधानी को स्थानान्तरित करके दिल्ली लाया। इसने हौज-ए-सुल्तानी का निर्माण देहली-ए-कुहना के निकट करवाया था।
➢ इल्तुतमिश पहला शासक था, जिसने 1229 ई. में बगदाद के खलीफा से सुल्तान पद की वैधानिक स्वीकृति प्राप्त की।
➢ इल्तुतमिश की मृत्यु अप्रैल, 1236 ई. में हो गयी।
➢ चंगेज खाँ से बचने के लिए ख्वारिज्म के सम्राट जलालुद्दीन को इल्तुतमिश ने अपने यहाँ शरण नहीं दी थी।
➢ इल्तुतमिश के बाद उसका पुत्र रुकनुद्दीन फिरोज गद्दी पर बैठा, वह एक अयोग्य शासक था। इसके अल्पकालीन शासन पर उसकी माँ शाह तुरकान छाई रही।

मंगोल

मंगोल चीन के उत्तर में गोबी के रेगिस्तान के निवासी थे। वह एक घूमने-फिरने वाली अर्द्धसभ्य जाति थी तथा उनका मुख्य पेशा घोड़ों और अन्य पशुओं का पालन करना था। वे बहुत गन्दे रहते थे तथा सभी प्रकार का माँस खाते थे। उनमें स्त्री-विषयक नैतिकता का सर्वथा अभाव था यद्यपि माँ का सम्मान करते थे। वे विभिन्न कबीलों में बँटे थे, उन्हीं कबीलों में से एक में 1163 ई. तेमूचिन उर्फ चंगेज खाँ का जन्म हुआ जिसे महान *(Chengiz the great)* और श्रापित *(The Accursed)* दोनों पुकारा गया। इसका पिता येसूगाई बहादुर था।

➢ शाह तुरकान के अवांछित प्रभाव से परेशान होकर तुर्की अमीरों ने रुकनुद्दीन को हटाकर रज़िया को सिंहासन पर आसीन किया। इस प्रकार रजिया बेगम प्रथम मुस्लिम महिला थी, जिसने शासन की बागडोर सँभाली।
➢ रजिया ने पर्दाप्रथा का त्यागकर तथा पुरुषों की तरह चोगा *(काबा)* एवं कुलाह *(टोपी)* पहनकर राजदरबार में खुले मुँह से जाने लगी।
➢ रज़िया ने मलिक जमालुद्दीन याकूत को अमीर-ए-अखूर *(घोड़े का सरदार)* नियुक्त किया।
➢ गैर तुर्कों को सामंत बनाने के रज़िया के प्रयासों से तुर्की अमीर विरुद्ध हो गए और उसे बंदी बनाकर दिल्ली की गद्दी पर मुइज़ुद्दीन बहरामशाह को बैठा दिया।
➢ रज़िया की शादी अल्तुनिया के साथ हुई। इससे शादी करने के बाद रज़िया ने पुनः गद्दी प्राप्त करने का प्रयास किया, लेकिन वह असफल रही। रज़िया की हत्या 13 अक्टूबर, 1240 ई. को डाकुओं के द्वारा कैथल के पास कर दी गई।
➢ बहराम शाह को बंदी बनाकर उसकी हत्या मई, 1242 ई. में कर दी गई। उसके बाद दिल्ली का सुल्तान अलाउद्दीन मसूद शाह बना।
➢ बलबन ने षड्यंत्र के द्वारा 1246 ई. में अलाउद्दीन मसूद शाह को सुल्तान के पद से हटाकर नासिरुद्दीन महमूद को सुल्तान बना दिया।
➢ नासिरुद्दीन महमूद ऐसा सुल्तान था जो टोपी सीकर अपना जीवन-निर्वाह करता था।
➢ बलबन ने अपनी पुत्री का विवाह नासिरुद्दीन महमूद के साथ किया था।
➢ बलबन का वास्तविक नाम बहाउद्दीन था। वह इल्तुतमिश का गुलाम था। तुर्कान-ए-चिहलगानी का विनाश बलबन ने किया था।
➢ बलबन 1266 ई. में गियासुद्दीन बलबन के नाम से दिल्ली की गद्दी पर बैठा। यह मंगोलों के आक्रमण से दिल्ली की रक्षा करने में सफल रहा।
➢ राजदरबार में सिजदा एवं पैबोस प्रथा की शुरुआत बलबन ने की थी।
➢ बलबन ने फारसी रीति-रिवाज पर आधारित नवरोज उत्सव को प्रारंभ करवाया।
➢ अपने विरोधियों के प्रति बलबन ने कठोर 'लौह एवं रक्त' की नीति का पालन किया।
➢ नासिरुद्दीन महमूद ने बलबन को उलूग खाँ की उपाधि प्रदान की।
➢ बलबन के दरबार में फारसी के प्रसिद्ध कवि अमीर खुसरो एवं अमीर हसन रहते थे।
➢ गुलाम वंश का अंतिम शासक शम्सुद्दीन कैमुर्स था।

खिलजी वंश : 1290 से 1320 ई.

- गुलाम वंश के शासन को समाप्त कर 13 जून, 1290 ई. को जलालुद्दीन फिरोज खिलजी ने खिलजी वंश की स्थापना की।
- इसने किलोखरी को अपनी राजधानी बनाया।
- जलालुद्दीन की हत्या 1296 ई.में उसके भतीजा एवं दामाद अलाउद्दीन खिलजी ने कड़ामानिकपुर *(इलाहाबाद)* में कर दी।
- 22 अक्टू., 1296 में अलाउद्दीन दिल्ली का सुल्तान बना।
- अलाउद्दीन के बचपन का नाम अली तथा गुरशास्प था।
- अलाउद्दीन खिलजी ने सेना को नकद वेतन देने एवं स्थायी सेना की नींव रखी। दिल्ली के शासकों में अलाउद्दीन खिलजी के पास सबसे विशाल स्थायी सेना थी।

अमीर खुसरो का मूल नाम मुहम्मद हसन था। उसका जन्म पटियाली *(पश्चिमी उत्तर प्रदेश में बदायूँ के पास)* में 1253 ई. में हुआ था। खुसरो प्रसिद्ध सूफी संत शेख निजामुद्दीन औलिया के शिष्य थे। वह बलबन से लेकर मुहम्मद तुगलक तक दिल्ली सुल्तानों के दरबार में रहे। इन्हें तुतिए हिन्द *(भारत का तोता)* के नाम से भी जाना जाता है। सितार एवं तबले के आविष्कार का श्रेय अमीर खुसरो को ही दिया जाता है।

- घोड़ा दागने एवं सैनिकों का हुलिया लिखने की प्रथा की शुरुआत अलाउद्दीन खिलजी ने की।
- अलाउद्दीन ने भूराजस्व की दर को बढ़ाकर उपज का 1/2 भाग कर दिया।
- इसने खम्स *(लूट का धन)* में सुल्तान का हिस्सा 1/4 भाग के स्थान पर 3/4 भाग कर दिया।
- इसने व्यापारियों में बेईमानी रोकने के लिए कम तौलने वाले व्यक्ति के शरीर से मांस काट लेने का आदेश दिया। इसने अपने शासनकाल में 'मूल्य नियंत्रण प्रणाली' को दृढ़ता से लागू किया।
- दक्षिण भारत की विजय के लिए अलाउद्दीन ने मलिक काफूर को भेजा।
- जमैयत खाना मस्जिद, अलाई दरवाजा, सीरी का किला तथा हजार खम्भा महल का निर्माण अलाउद्दीन खिलजी ने करवाया था।
- अलाई दरवाजा को इस्लामी वास्तुकला का रत्न कहा जाता है।
- दैवी अधिकार के सिद्धान्त को अलाउद्दीन ने चलाया था।
- सिकन्दर-ए-सानी की उपाधि से स्वयं को अलाउद्दीन खिलजी ने विभूषित किया।

बाजार-नियंत्रण करने के लिए अलाउद्दीन खिलजी द्वारा बनाए जाने वाले नवीन पद *(क्रमानुसार)*

दीवान-ए-रियासत : यह व्यापारियों पर नियंत्रण रखता था। यह बाजार-नियंत्रण की पूरी व्यवस्था का संचालन करता था।

शहना-ए-मंडी : प्रत्येक बाजार में बाजार का अधीक्षक।

बरीद : बाजार के अन्दर घूमकर बाजार का निरीक्षण करता था।

मुनहियान व गुप्तचर : गुप्त सूचना प्राप्त करता था।

- अलाउद्दीन ने मलिक याकूब को दीवान-ए-रियासत नियुक्त किया था।
- अलाउद्दीन द्वारा नियुक्त परवाना-नवीस नामक अधिकारी वस्तुओं की परमिट जारी करता था।
- शहना-ए-मंडी—यहाँ खाद्यान्नों को बिक्री हेतु लाया जाता था। सराए-ए-अदल—यहाँ वस्त्र, शक्कर, जड़ी-बूटी, मेवा, दीपक का तेल एवं अन्य निर्मित वस्तुएँ बिकने के लिए आती थीं।
- अलाउद्दीन खिलजी की आर्थिक नीति की व्यापक जानकारी जियाउद्दीन बरनी की कृति तारीखे फिरोजशाही से मिलती है।
- खजाइनुल-फतूह-अमीर खुसरो, रिहला-इब्न बतूता एवं फुतूहस्सलातीन-इसामी की कृति है।
- मूल्य-नियंत्रण को सफल बनाने में मुहतसिब *(सेंसर)* एवं नाजिर *(नाप-तौल अधिकारी)* की महत्वपूर्ण भूमिका थी।
- राजस्व सुधारों के अन्तर्गत अलाउद्दीन ने सर्वप्रथम मिल्क, इनाम एवं वक्फ के अन्तर्गत दी गयी भूमि को वापस लेकर उसे खालसा भूमि में बदल दिया।
- अलाउद्दीन खिलजी के द्वारा लगाये जानेवाले दो नवीन कर थे—1. चराई कर : दुधारू पशुओं पर लगाया जाता था, 2. गढ़ी कर : घरों एवं झोपड़ी पर लगाया जाता था।
- अलाउद्दीन खिलजी के शासन काल में 1297 से 1306 ई. तक मंगोलों के छः आक्रमण हुए। प्रथम आक्रमण 1297 ई.में कादर खाँ के नेतृत्व में, दूसरा आक्रमण 1298 ई.में सल्दी के नेतृत्व में, तीसरा आक्रमण 1299 ई.में कुतलुग ख्वाजा के नेतृत्व में, चौथा आक्रमण 1303 ई. में तार्गी के नेतृत्व में, पाँचवां आक्रमण 1305 ई. में अलीबेग और तार्ताक के नेतृत्व में एवं छठा आक्रमण 1306 ई. में कबक एवं इकबालमन्द के नेतृत्व में हुआ।
- अलाउद्दीन खिलजी की मृत्यु 5 जनवरी, 1316 ई. को हो गयी।
- कुतुबुद्दीन मुबारक खिलजी 1316 ई. को दिल्ली के सिंहासन पर बैठा। इसे नग्न स्त्री, पुरुष की संगत पसन्द थी।
- मुबारक खिलजी कभी-कभी राजदरबार में स्त्रियों का वस्त्र पहनकर आ जाता था। बरनी के अनुसार मुबारक कभी-कभी नग्न होकर दरबारियों के बीच दौड़ा करता था।
- मुबारक खाँ ने खलीफा की उपाधि धारण की थी।
- मुबारक के वजीर खुशरों खाँ ने 15 अप्रैल, 1320 ई. को इसकी हत्या कर दी और स्वयं दिल्ली के सिंहासन पर बैठा।
- खुशरों खाँ ने पैगम्बर के सेनापति की उपाधि धारण की।

तुगलक वंश : 1320-1398 ई.

- 5 सितम्बर, 1320 ई. को खुशरों खाँ को पराजित करके गाजी मलिक या तुगलक गाजी गयासुद्दीन तुगलक के नाम से 8 सितम्बर, 1320 ई. को दिल्ली के सिंहासन पर बैठा।
- गयासुद्दीन ने अलाउद्दीन के समय में लिए गए अमीरों की भूमि को पुनः लौटा दिया।
- इसने सिंचाई के लिए कुएँ एवं नहरों का निर्माण करवाया। संभवतः नहरों का निर्माण करने वाला गयासुद्दीन प्रथम शासक था।

मुहम्मद बिन तुगलक द्वारा क्रियान्वित क्रमशः चार योजनाएँ

1. दोआब क्षेत्र में कर-वृद्धि *(1326-1327 ई.)*।
2. राजधानी-परिवर्तन *(1326-27 ई.)*।
3. सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन *(1329-30 ई.)*।
4. खुरासन एवं कराचिल का अभियान।

- गयासुद्दीन तुगलक ने दिल्ली के समीप स्थित पहाड़ियों पर तुगलकाबाद नाम का एक नया नगर स्थापित किया। रोमन शैली में निर्मित इस नगर में एक दुर्ग का निर्माण भी हुआ। इस दुर्ग को छप्पनकोट के नाम से भी जाना जाता है।
- गयासुद्दीन तुगलक की मृत्यु 1325 ई. में बंगाल के अभियान से लौटते समय जूना खाँ द्वारा निर्मित लकड़ी के महल में दबकर हो गयी।
- गयासुद्दीन के बाद जूना खाँ मुहम्मद बिन तुगलक के नाम से दिल्ली के सिंहासन पर बैठा।
- मध्यकालीन सभी सुल्तानों में मुहम्मद तुगलक सर्वाधिक शिक्षित, विद्वान एवं योग्य व्यक्ति था।
- मुहम्मद बिन तुगलक को अपनी सनक भरी योजनाओं, क्रूर कृत्यों एवं दूसरे के सुख-दुख के प्रति उपेक्षा भाव रखने के कारण स्वप्नशील, पागल एवं रक्तपिपासु कहा गया।
- मुहम्मद बिन तुगलक ने कृषि के विकास के लिए 'अमीर-ए-कोही' नामक एक नवीन विभाग की स्थापना की।
- मुहम्मद बिन तुगलक ने अपनी राजधानी दिल्ली से देवगिरि में स्थानान्तरित की और इसका नाम दौलताबाद रखा।
- सांकेतिक मुद्रा के अन्तर्गत मुहम्मद बिन तुगलक ने काँसा *(फरिश्ता के अनुसार)*, ताँबा *(बरनी के अनुसार)* धातुओं के सिक्के चलवाए, जिनका मूल्य चाँदी के रुपए टंका के बराबर होता था। एडवर्ड थॉमस ने मुहम्मद बिन तुगलक को 'प्रिंस आफ मनीअर्स' की संज्ञा दी।
- अफ्रीकी *(मोरक्को)* यात्री इब्न बतूता लगभग 1333 ई. में भारत आया। सुल्तान ने इसे दिल्ली का काजी नियुक्त किया। 1342 ई. में सुल्तान ने इसे अपने राजदूत के रूप में चीन भेजा।

- ➢ इब्नबतूता की पुस्तक रेहला में मुहम्मद तुगलक के समय की घटनाओं का वर्णन है। इसने अपनी पुस्तक में विदेशी व्यापारियों के आवागमन, डाक चौकियों की स्थापना यानी डाक व्यवस्था एवं गुप्तचर व्यवस्था के बारे में लिखा है।
- ➢ मुहम्मद तुगलक ने जिन प्रभा सूर नामक जैन-साधु के साथ विचार-विमर्श किया था।
- ➢ मुहम्मद बिन तुगलक की मृत्यु 20 मार्च, 1351 ई. को सिन्ध जाते समय थट्टा के निकट गोडाल में हो गयी।
- ➢ मुहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल में दक्षिण में हरिहर एवं बुक्का नामक दो भाइयों ने 1336 ई. में स्वतंत्र राज्य विजयनगर की स्थापना की।
- ➢ महाराष्ट्र में अलाउद्दीन बहमन शाह ने 1347 ई. में स्वतंत्र बहमनी राज्य की स्थापना की।
- ➢ मुहम्मद बिन तुगलक की मृत्यु पर इतिहासकार बदायूँनी लिखता है, ''अंततः लोगों को उससे मुक्ति मिली और उसे लोगों से''।
- ➢ मुहम्मद बिन तुगलक शेख अलाउद्दीन का शिष्य था। वह सल्तनत का पहला शासक था, जो अजमेर में शेख मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह और बहराइच में सालार मसूद गाजी के मकबरे में गया।
- ➢ मुहम्मद बिन तुगलक ने बदायूँ में मीरन मुलहीम, दिल्ली में शेख निज़ामुद्दीन औलिया, मुल्तान में शेख रुकनुद्दीन, अजुधन में शेख मुल्तान आदि संतों की कब्र पर मकबरे बनवाए।
- ➢ फिरोज तुगलक का राज्याभिषेक थट्टा के नजदीक 20 मार्च,1351 का हुआ, पुनः फिरोज का राज्याभिषेक दिल्ली में अगस्त, 1351 को हुआ। खलीफा द्वारा इसे कासिम अमीर उल मोममीन की उपाधि दी गई।
- ➢ राजस्व व्यवस्था के अन्तर्गत फिरोज ने अपने शासनकाल में 24 कष्टदायक करों को समाप्त कर केवल चार कर–खराज *(लगान)*, खुम्स *(युद्ध में लूट का माल)*, जजिया एवं जकात को वसूल करने का आदेश दिया।
- ➢ फिरोज तुगलक ब्राह्मणों पर जज़िया लागू करने वाला पहला मुसलमान शासक था।
- ➢ फिरोज तुगलक ने एक नया कर सिंचाई-कर भी लगाया, जो उपज का 1/10 भाग था।
- ➢ फिरोज तुगलक ने 5 बड़ी नहरों का निर्माण करवाया।
- ➢ फिरोज तुगलक ने 300 नये नगरों की स्थापना की। इनमें हिसार, फिरोजाबाद *(दिल्ली)* फतेहाबाद, जौनपुर, फिरोजपुर प्रमुख हैं।
- ➢ इसके शासनकाल में खिज्राबाद *[टोपरा गाँव]* एवं मेरठ से अशोक के दो स्तम्भों को लाकर दिल्ली में स्थापित किया गया।
- ➢ सुल्तान फिरोज तुगलक ने अनाथ मुस्लिम महिलाओं, विधवाओं एवं लड़कियों की सहायता के लिए एक नए विभाग दीवान-ए-खैरात की स्थापना की।
- ➢ सल्तनतकालीन सुल्तानों के शासनकाल में सबसे अधिक दासों की संख्या *(करीब—1,80,000)* फिरोज तुगलक के समय थी।
- ➢ दासों की देखभाल के लिए फिरोज ने एक नए विभाग दीवान-ए-बंदगान की स्थापना की।
- ➢ इसने सैन्य पदों को वंशानुगत बना दिया।
- ➢ इसने अपनी आत्मकथा फतूहात-ए-फिरोजशाही की रचना की।
- ➢ इसने जियाउद्दीन बरनी एवं शम्स-ए-शिराज अफीफ को अपना संरक्षण प्रदान किया।
- ➢ इसने ज्वालामुखी मंदिर के पुस्तकालय से लूटे गए 1,300 ग्रंथों में से कुछ को फारसी में विद्वान अपाउद्दीन द्वारा 'दलायते–फिरोजशाही' नाम से अनुवाद करवाया।
- ➢ इसने चाँदी एवं ताँबे के मिश्रण से निर्मित सिक्के भारी संख्या में जारी करवाए, जिसे अद्धा एवं विख कहा जाता था।
- ➢ फिरोज तुगलक की मृत्यु सितम्बर, 1388 ई. में हो गयी।
- ➢ फिरोज काल में निर्मित खान-ए-जहाँ तेलंगानी के मकबरा की तुलना जेरुसलम में निर्मित उमर के मस्जिद से की जाती है।
- ➢ सुल्तान फिरोज तुगलक ने दिल्ली में कोटला फिरोजशाह दुर्ग का निर्माण करवाया।
- ➢ तुगलक वंश का अंतिम शासक नासिरुद्दीन महमूद तुगलक था। इसका शासन दिल्ली से पालम तक ही रह गया था।
- ➢ तैमूरलंग ने सुल्तान नासिरुद्दीन महमूद तुगलक के समय 1398 ई. में दिल्ली पर आक्रमण किया।
- ➢ नासिरुद्दीन के समय में ही मलिकुशर्शक *(पूर्वाधिपति)* की उपाधि धारण कर एक हिजड़ा मलिक सरवर ने जौनपुर में एक स्वतंत्र राज्य की स्थापना की।

सैय्यद वंश : 1414 से 1451 ई.

- ➢ सैय्यद वंश का संस्थापक था—खिज्र खाँ।
- ➢ इसने सुल्तान की उपाधि न धारण कर अपने को रैयत-ए-आला की उपाधि से ही खुश रखा।
- ➢ खिज्र खाँ तैमूरलंग का सेनापति था। भारत से लौटते समय तैमूरलंग ने खिज्र खाँ को मुल्तान, लाहौर एवं दिपालपुर का शासक नियुक्त किया।
- ➢ खिज्र खाँ नियमित रूप से तैमूर के पुत्र शाहरुख को कर भेजा करता था।
- ➢ खिज्र खाँ की मृत्यु 20 मई, 1421 ई. में हो गयी।
- ➢ खिज्र खाँ के पुत्र मुबारक खाँ ने शाह की उपाधि धारण की थी।
- ➢ याहिया बिन अहमद सरहिन्दी को मुबारक शाह का संरक्षण प्राप्त था। इसकी पुस्तक तारीख-ए-मुबारक शाही में सैय्यद वंश के विषय में जानकारी मिलती है।
- ➢ यमुना के किनारे मुबारकाबाद की स्थापना मुबारक शाह ने की थी।
- ➢ सैय्यद वंश का अंतिम सुल्तान अलाउद्दीन आलम शाह था।
- ➢ सैय्यद वंश का शासन करीब 37 वर्षों तक रहा।

लोदी वंश : 1451 से 1526 ई.

- ➢ लोदी वंश का संस्थापक बहलोल लोदी था। वह 19 अप्रैल, 1451 को 'बहलोल शाहगाजी' की उपाधि से दिल्ली के सिंहासन पर बैठा।
- ➢ दिल्ली पर प्रथम अफगान राज्य की स्थापना का श्रेय बहलोल लोदी को दिया जाता है।
- ➢ बहलोल लोदी ने बहलोल सिक्के का प्रचलन करवाया।
- ➢ वह अपने सरदारों को 'मकसद-ए-अली' कहकर पुकारता था।
- ➢ वह अपने सरदारों के खड़े रहने पर स्वयं भी खड़ा रहता था।
- ➢ बहलोल लोदी का पुत्र निजाम खाँ 17 जुलाई, 1489 ई, में 'सुल्तान सिकन्दर शाह' की उपाधि से दिल्ली के सिंहासन पर बैठा।
- ➢ 1504 ई. में सिकन्दर लोदी ने आगरा शहर की स्थापना की।
- ➢ भूमि के लिए मापन के प्रामाणिक पैमाना गजे सिकन्दरी का प्रचलन सिकन्दर लोदी ने किया।
- ➢ 'गुलरुखी' शीर्षक से फारसी कविताएँ लिखने वाला सुल्तान सिकन्दर लोदी था।
- ➢ सिकन्दर लोदी ने आगरा को अपनी नई राजधानी बनाया। इसके आदेश पर संस्कृत के एक आयुर्वेद ग्रंथ का फारसी में फरहंगे सिकन्दरी के नाम से अनुवाद हुआ। इसने नगरकोट के ज्वालामुखी मंदिर की मूर्ति को तोड़कर उसके टुकड़ों को कसाइयों को मांस तौलने के लिए दे दिया था। इसने मुसलमानों को ताजिया निकालने एवं मुसलमान स्त्रियों को पीरों तथा संतों के मजार पर जाने पर प्रतिबंध लगा दिया।
- ➢ गले की बीमारी के कारण सिकन्दर लोदी की मृत्यु 21 नवम्बर, 1517 ई. को हो गयी। इसी दिन इसका पुत्र इब्राहिम 'इब्राहिम शाह' की उपाधि से आगरा के सिंहासन पर बैठा।
- ➢ 21 अप्रैल, 1526 ई. को पानीपत के प्रथम युद्ध में इब्राहिम लोदी बाबर से हार गया। इस युद्ध में वह मारा गया।
- ➢ बाबर को भारत पर आक्रमण के लिए निमंत्रण पंजाब के शासक दौलत खाँ लोदी एवं इब्राहिम लोदी के चाचा आलम खाँ ने दिया था।
- ➢ मोठ की मस्जिद का निर्माण सिकन्दर लोदी के वजीर द्वारा करवाया गया था।

सल्तनतकालीन शासन-व्यवस्था :

- केन्द्रीय प्रशासन का मुखिया—सुल्तान।
- बलबन एवं अलाउद्दीन के समय अमीर प्रभावहीन हो गए।
- अमीरों का महत्त्व चरमोत्कर्ष पर था—लोदी वंश के शासनकाल में।
- सल्तनतकाल में मंत्रिपरिषद को मजलिस-ए-खलवत कहा गया।
- मजलिस-ए-खास में मजलिस-ए-खलवत की बैठक होती थी।
- बार-ए-खास : इसमें सुल्तान सभी दरबारियों, खानों, अमीरों, मालिकों और अन्य रइसों को बुलाता था।
- बार-ए-आजम : सुल्तान राजकीय कार्यों का अधिकांश भाग पूरा करता था।

मंत्री एवं उससे संबंधित विभाग

1. वजीर *(प्रधानमंत्री)* : राजस्व विभाग का प्रमुख।
2. मुशरिफ-ए-मुमालिक *(महालेखाकार)* : प्रांतों एवं अन्य विभागों से प्राप्त आय एवं व्यय का लेखा-जोखा।
3. मजमुआदर : उधार दिए गए धन का हिसाब रखना।
4. खजीन : कोषाध्यक्ष।
5. आरिज-ए-मुमालिक : दीवान-ए-अर्ज अथवा सैन्य विभाग का प्रमुख अधिकारी।
6. सद्र-उस-सुदूर : धर्म विभाग एवं दान विभाग का प्रमुख।
7. काजी-उल्-कजात : सुल्तान के बाद न्याय का सर्वोच्च अधिकारी।
8. बरीद-ए-मुमालिक : गुप्तचर विभाग का प्रमुख अधिकारी।
9. वकील-ए-दर : सुल्तान की व्यक्तिगत सेवाओं की देखभाल करता था।
10. दीवान-ए-खैरात : दान विभाग।
11. दीवान-ए-बंदगान : दास विभाग।
12. दीवान-ए-इस्तिहाक : पेंशन विभाग।

विभाग	बनाने वाला सुल्तान
दीवान-ए-मुस्तखराज *(वित्त विभाग)*	अलाउद्दीन खिलजी
दीवान-ए-कोही *(कृषि विभाग)*	मुहम्मद बिन तुगलक
दीवान-ए-अर्ज *(सैन्य विभाग)*	बलबन
दीवान-ए-बंदगान	फिरोजशाह तुगलक
दीवान-ए-खैरात	फिरोजशाह तुगलक
दीवान-ए-इस्तिहाक	फिरोजशाह तुगलक

- दिल्ली सल्तनत अनेक प्रांतों में बँटा हुआ था, जिसे इक्ता या सुबा कहा जाता था। यहाँ का शासन नायब या वली या मुक्ति द्वारा संचालित होता था।
- इक्ताओं को शिको *(जिलों)* में विभाजित किया गया था। जहाँ का प्रमुख अधिकारी शिकदार होता था जो एक सैनिक अधिकारी था।

राजस्व (कर) व्यवस्था
उश्र : मुसलमानों से लिया जाने वाला भूमि कर।
खराज : गैर-मुसलमानों से लिया जाने वाला भूमि कर।
जकात : मुसलमानों पर धार्मिक कर *(सम्पत्ति का 40वाँ हिस्सा)*
जजिया : गैर-मुसलमानों पर धार्मिक कर।

नोट : खम्स : *यह लूटे हुए धन, खानों अथवा भूमि में गड़े हुए खजानों से प्राप्त सम्पत्ति का 1/5 भाग था जिसपर सुल्तान का अधिकार था तथा शेष 4/5 भाग पर उसके सैनिकों अथवा खजाने को प्राप्त करने वाले व्यक्ति का अधिकार होता था, परंतु फिरोज तुगलक को छोड़कर अन्य सभी शासकों ने 4/5 हिस्सा स्वयं अपने लिये रखा। सुल्तान सिकन्दर लोदी ने गड़े हुए खजानों में से कोई हिस्सा नहीं लिया।*

- शिकों को परगनों में विभाजित किया गया था। आमिल परगने का मुख्य अधिकारी था और मुशरिफ लगान को निश्चित करने वाला अधिकारी।
- एक शहर या 100 गाँवों के शासन की देख-रेख अमीर-ए-सदा नामक अधिकारी करता था।
- प्रशासन की सबसे छोटी इकाई ग्राम होता था।
- सुल्तान की स्थायी सेना को खासखेल नाम दिया गया था।
- मंगोल सेना के वर्गीकरण की दशमलव प्रणाली को सल्तनतकालीन सैन्य व्यवस्था का आधार बनाया गया था।

दस अश्वारोही	= 1 सर-ए-खेल
दस सर-ए-खेल	= 1 सिपहसालार
दस सिपहसालार	= 1 अमीर
दस अमीर	= 1 मलिक
दस मलिक	= 1 खान

- सल्तनत काल में बारूद की सहायता से गोला फेंकने वाली मशीन को 'मंगलीक' तथा 'अर्राद' कहा जाता था।
- अलाउद्दीन खिलजी ने इक्ता प्रथा को समाप्त किया था।
- इक्ता प्रथा की दुबारा शुरुआत फिरोज तुगलक ने की थी।
- सल्तनत काल में अच्छी नस्ल के घोड़े तुर्की, अरब एवं रूस से मँगाए जाते थे। हाथी मुख्यतः बंगाल से मँगाए जाते थे।
- सल्तनतकालीन कानून शरीयत, कुरान एवं हदीस पर आधारित था।
- मुस्लिम कानून के चार महत्वपूर्ण स्रोत थे—कुरान, हदीस, इजमा एवं कयास।
- सुल्तान सप्ताह में दो बार दरबार में न्याय करने के लिए उपस्थित होता था।
- सल्तनत काल में लगान निर्धारित करने की मिश्रित प्रणाली को मुक्ताई कहा गया है।
- भूमि की नाप-जोख करने के बाद क्षेत्रफल के आधार पर लगान का निर्धारण मसाहत कहलाता था। इसकी शुरुआत अलाउद्दीन ने की।

स्थान	प्रसिद्धि के कारण
सरसुती	अच्छी किस्म के चावल के लिए।
अन्हिवाड़ा	व्यापारियों का तीर्थ-स्थल के रूप में।
सतगाँव	रेशमी रजाइयों के लिए।
आगरा	नीलउत्पादन के लिए।
बनारस	सोने-चाँदी व जड़ी काम के लिए।

- पूर्णतः केन्द्र के नियंत्रण में रहने वाली भूमि खालसा भूमि कहलाती थी।
- अलाउद्दीन ने दान दी गई अधिकांश भूमि को छीनकर खालसा भूमि में परिवर्तित कर दिया।
- देवल सल्तनत काल में अन्तरराष्ट्रीय बन्दरगाह के रूप में प्रसिद्ध था।

31. विजयनगर साम्राज्य

- विजयनगर साम्राज्य की स्थापना 1336 ई. में हरिहर एवं बुक्का नामक दो भाइयों ने की थी, जो पाँच भाइयों के परिवार के अंग थे। विजयनगर का शाब्दिक अर्थ है—जीत का शहर।
- हरिहर एवं बुक्का ने विजयनगर की स्थापना विद्यारण्य सन्त से आशीर्वाद प्राप्त कर की थी।
- हरिहर एवं बुक्का ने अपने पिता संगम के नाम पर संगम राजवंश की स्थापना की।
- विजयनगर साम्राज्य की राजधानी हम्पी थी। विजयनगर साम्राज्य के खण्डहर तुंगभद्रा नदी पर स्थित है। इसकी राजभाषा तेलगू थी।

संगम वंश के प्रमुख शासक	
हरिहर	1336–1356 ई.
बुक्का-I	1356–1377 ई.
हरिहर-II	1377–1404 ई.
देवराय-I	1406–1422 ई.
देवराय-II	1422–1446 ई.
मल्लिकार्जुन	1446–1465 ई.
विरूपाक्ष-II	1465–1485 ई.

- हरिहर एवं बुक्का पहले वारंगल के काकतीय शासक प्रताप रुद्रदेव के सामंत थे।
- विजयनगर साम्राज्य पर क्रमशः निम्न वंशों ने शासन किया—संगम, सलुव, तुलुव एवं अरावीडू वंश।
- बुक्का-I ने वेदमार्ग प्रतिष्ठापक की उपाधि धारण की।
- हरिहर-II ने संगम शासकों में सबसे पहले महाराजाधिराज की उपाधि धारण की थी।
- इटली का यात्री निकोलो काण्टी विजयनगर की यात्रा पर देवराय प्रथम के शासन काल में आया।
- देवराय प्रथम ने तुंगभद्रा नदी पर एक बाँध बनवाया ताकि जल की कमी दूर करने के लिए नगर में नहरें ला सकें। सिंचाई के लिए उसने हरिद्र नदी पर भी बाँध बनवाया।
- संगम वंश का सबसे प्रतापी राजा देवराय द्वितीय था। इसे इमाडिदेवराय भी कहा जाता था।
- फारसी राजदूत अब्दुल रज्जाक देवराय-II के शासनकाल में विजयनगर आया था। इसके अनुसार विजयनगर में पुलिसवालों का वेतन वेश्यालय की आय से दी जाती थी।

- तेलगू कवि श्रीनाथ कुछ दिनों तक देवराय-II के दरबार में रहे।
- फरिश्ता के अनुसार देवराय-II ने अपनी सेना में दो हजार मुसलमानों को भर्ती किया था एवं उन्हें जागीरें दी थीं।
- एक अभिलेख में देवराय-II को जगबेटकर *(हाथियों का शिकारी)* कहा गया है।
- देवराय-II ने संस्कृत ग्रंथ महानाटक सुधानिधि एवं ब्रह्मसूत्र पर भाष्य लिखा।
- मल्लिकार्जुन को प्रौढ़ देवराय भी कहा जाता था।
- सालुव नरसिंह ने विजयनगर में दूसरे राजवंश सालुव वंश *(1485-1506 ई.)* की स्थापना की।
- सालुव वंश के बाद विजयनगर पर तुलुव वंश का शासन स्थापित हुआ।
- तुलुव वंश *(1505–1565 ई.)* की स्थापना वीर नरसिंह ने की थी।
- तुलुव वंश का महान शासक कृष्णदेव राय था। वह 8 अगस्त, 1509 ई. को शासक बना। सालुव तिम्मा कृष्णदेवराय का योग्य मंत्री एवं सेनापति था। बाबर ने अपनी आत्मकथा बाबरनामा में कृष्णदेव राय को भारत का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक बताया।
- कृष्णदेव राय के शासनकाल में पुर्तगाली यात्री डोमिंगोस पायस विजयनगर आया था।
- कृष्णदेव राय के दरबार में तेलगू साहित्य के आठ सर्वश्रेष्ठ कवि रहते थे, जिन्हें अष्ट दिग्गज कहा जाता था। उसके शासनकाल को तेलगू साहित्य का 'क्लासिक युग' कहा गया है।
- कृष्णदेव राय ने तेलगू में अमुक्तमाल्याद् एवं संस्कृत में जाम्बवती कल्याणम् की रचना की।
- पाडुरंग महात्यम् की रचना तेनालीराम रामकृष्ण ने की थी।
- नागलपुर नामक नये नगर, हजारा एवं विट्ठलस्वामी मंदिर का निर्माण कृष्णदेव राय ने करवाया था। कृष्णदेव राय की मृत्यु 1529 ई. में हो गयी।
- कृष्णदेव राय ने आन्ध्रभोज, अभिनव भोज, आन्ध्र पितामह आदि उपाधि धारण की थी।
- तुलुव वंश का अन्तिम शासक सदाशिव था।
- राक्षसी-तंगड़ी या तालिकोटा या बन्नीहट्टी का युद्ध 23 जनवरी, 1565 ई. में हुआ। इसी युद्ध के कारण विजयनगर का पतन हुआ।
- विजयनगर के विरुद्ध बने दक्षिण राज्यों के संघ में शामिल था— बीजापुर, अहमदनगर, गोलकुण्डा एवं बीदर। इस संयुक्त मोर्चे का नेतृत्व अली आदिलशाह कर रहा था।
- तालिकोटा के युद्ध में विजयनगर का नेतृत्व राम राय कर रहा था।
- विजयनगर के राजाओं और बहमनी के सुल्तानों के हित तीन अलग-अलग क्षेत्रों में आपस में टकराते थे : तुंगभद्रा के दोआब में, कृष्णा-गोदावरी के कछार में और मराठ वाड़ा प्रदेश में।
- तालिकोटा युद्ध के बाद सदाशिव ने तिरुमल के सहयोग से पेनुकोंडा को राजधानी बनाकर शासन करना प्रारंभ किया।
- विजयनगर के चौथे राजवंश अरावीडू वंश *(1570–1672 ई.)* की स्थापना तिरुमल ने सदाशिव को अपदस्थ कर पेनुकोंडा में किया। अरावीडू वंश का अंतिम शासक रंग-III था।
- अरावीडू शासक वेंकट-II के शासनकाल में ही वोडेयार ने 1612 ई. में मैसूर राज्य की स्थापना की थी।
- विजयनगर साम्राज्य की प्रशासनिक इकाई का क्रम *(घटते हुए)* इस प्रकार था—प्रांत *(मंडल)*—कोट्टम या वलनाडू *(जिला)*—नाडू—मेलाग्राम *(50 ग्राम का समूह)*—ऊर *(ग्राम)*।
- विजयनगर-कालीन सेनानायकों को नायक कहा जाता था। ये नायक वस्तुतः भूसामंत थे, जिन्हें राजा वेतन के बदले अथवा उनकी अधीनस्थ सेना के रख-रखाव के लिए विशेष भू-खंड दे देता था जो अमरम् कहलाता था।
- आयंगर व्यवस्था : प्रशासन को सुचारु रूप से संचालित करने के लिए प्रत्येक ग्राम को एक स्वतंत्र इकाई के रूप में संगठित किया गया था। इन संगठित ग्रामीण इकाइयों पर शासन हेतु बारह प्रशासकीय अधिकारियों की नियुक्ति की जाती थी, जिनको सामूहिक रूप से आयंगर कहा जाता था। ये अवैतनिक होते थे इनकी सेवाओं के बदले सरकार इन्हें पूर्णतः लगानमुक्त एवं करमुक्त भूमि प्रदान करती थी। इनका पद आनुवंशिक होता था। वह इस पद को बेच या गिरवी रख सकता था। ग्राम-स्तर की कोई भी सम्पत्ति इन अधिकारियों की इजाजत के बगैर न तो बेची जा सकती थी और न ही दान में दी जा सकती थी।

विजयनगर आने वाला प्रमुख विदेशी यात्री

यात्री	देश	काल	शासक
निकोलो कोंटी	इटली	1420 ई.	देवराय-I
अब्दुर्रज्जाक	फारस	1442 ई.	देवराय-II
नूनिज	पुर्तगाल	1535 ई.	अच्युत राय
डोमिंग पायस	पुर्तगाल	1515 ई.	कृष्णदेव राय
बारबोसा	पुर्तगाल	1515-16 ई.	कृष्णदेव राय

- कर्णिक नामक आयंगर के पास जमीन के क्रय-विक्रय से संबंधित समस्त दस्तावेज होते थे।
- विजयनगर साम्राज्य की आय का सबसे बड़ा स्रोत लगान था। भू-राजस्व की दर उपज का 1/6वाँ भाग था।
- विवाह-कर, वर एवं वधू दोनों से लिया जाता था। विधवा से विवाह करने वाले इस कर से मुक्त थे।
- उंबलि : ग्राम में विशेष सेवाओं के बदले दी जाने वाली लगानमुक्त भूमि की भू-धारण पद्धति थी।
- रत्त कोड़गे : युद्ध में शौर्य का प्रदर्शन करनेवाले मृत लोगों के परिवार को दी गई भूमि को कहा जाता था।
- कुट्टगि : ब्राह्मण, मंदिर या बड़े भूस्वामी, जो स्वयं कृषि नहीं करते थे, किसानों को पट्टे पर भूमि दे देते थे, ऐसी भूमि को कुट्टगि कहा जाता था।
- वे कृषक मजदूर जो भूमि के क्रय-विक्रय के साथ ही हस्तांतरित हो जाते थे, कूदि कहलाते थे।
- विजयनगर का सैन्य विभाग कदाचार कहलाता था तथा इस विभाग का उच्च अधिकारी दण्डनायक या सेनापति होता था। टकसाल विभाग को जोरीखाना कहा जाता था।
- चेट्टियों की तरह व्यापार में निपुण दस्तकार वर्ग के लोगों को वीर पंजाल कहा जाता था।
- उत्तर भारत से दक्षिण भारत में आकर बसे लोगों को बड़वा कहा जाता था।
- विजयनगर में दास-प्रथा प्रचलित थी। मनुष्यों के क्रय-विक्रय को वेस-वग कहा जाता था।
- मंदिरों में रहनेवाली स्त्रियों को देवदासी कहा जाता था। इनको आजीविका के लिए भूमि या नियमित वेतन दिया जाता था।

नोट : *विजयनगर की मुद्रा पेगोडा तथा बहमनी राज्य की मुद्रा हूण थी।*

32. बहमनी राज्य

- मुहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल में 1347 ई. में हसनगंगू ने बहमनी राज्य की स्थापना की। वह अलाउद्दीन हसन बहमन शाह के नाम से सिंहासन पर बैठा और गुलबर्गा को अपनी राजधानी बनाया। इसकी राजभाषा मराठी थी।
- इसने अपने साम्राज्य को चार प्रान्तों में गुलबर्गा, दौलताबाद, बरार एवं बीदर में बाँटा।
- इसकी मृत्यु 11 फरवरी, 1358 ई. को हो गयी।
- अलाउद्दीन हसन के पश्चात उसका पुत्र मुहम्मदशाह प्रथम सुल्तान बना। इसके काल में ही सबसे पहले बारूद का प्रयोग *(बुक्का के विरुद्ध)* हुआ।
- भीमा नदी के तट पर फिरोजाबाद की स्थापना ताज-उद्दीन-फिरोज ने की थी। फिरोज खगोलिकी को प्रोत्साहन देता था और उसने दौलताबाद के पास एक वैधशाला बनवाई थी। फ़रिश्ता के अनुसार फिरोज फारसी, अरबी और तुर्की के अतिरिक्त तेलगू, कन्नड़ और मराठी भाषा का भी ज्ञाता था।
- शिहाबुद्दीन अहमद प्रथम ने अपनी राजधानी गुलबर्गा से हटाकर बीदर में स्थापित की। इसने बीदर का नया नाम मुहम्मदाबाद रखा।

बहमनी वंश के प्रमुख शासक	
मुहम्मद शाह प्रथम	1358–1375 ई.
अलाउद्दीन मुजाहिद शाह	1375–1378 ई.
दाउद प्रथम	1378 ई.
मुहम्मद शाह द्वितीय	1378–1397 ई.
ताज-उद्दीन-फिरोज	1397–1422 ई.
शिहाबुद्दीन अहमद प्रथम	1422–1436 ई.
अलाउद्दीन अहमद-II	1436–1458 ई.
सुल्तान शम्सुद्दीन मुहम्मद-III	1463–1482 ई.

- ➢ मुहम्मद-III के शासनकाल में 'ख्वाजा जहाँ' की उपाधि से महमूद गवाँ *(ईरानी)* को प्रधानमंत्री नियुक्त किया गया। मुहम्मद III के आदेश पर 1482 में 70 वर्ष की अवस्था में महमूद गवाँ को फाँसी दे दी गई।
- ➢ महमूद गवाँ ने बीदर में एक महाविद्यालय *(मदरसा)* की स्थापना कराई। इसका भवन तिमंजिला था। इसमें एक हजार अध्यापक और विद्यार्थी रह सकते थे। उन्हें भोजन और कपड़ा भी राज्य की ओर से मुफ्त दिया जाता था। रियाजुल इन्शा नाम से महमूद गवाँ के पत्रों का संग्रह किया गया।
- ➢ 1470 ई. में रूसी यात्री निकितन बहमनी साम्राज्य *(बीदर)* की यात्रा पर आया। इस समय बहमनी राज्य पर मुहम्मद-III का शासन था।
- ➢ बहमनी साम्राज्य के चारों प्रांतों *(तरफों या अतरफों)* के प्रांतपति *(तरफदार)* उसके विरुद्ध विशेष से जाने जाते थे—1. दौलताबाद का तरफ़दार : मसनद-ए-आली, 2. बरार का तरफ़दार : मजलिस-ए-आली, 3. बीदर का तरफ़दार : अजाम-ए-हुमायूँ एवं 4. गुलबर्गा का तरफ़दार : मालिक नायब
- ➢ बीजापुर गुलबर्गा तराफ़ *(सबसे महत्वपूर्ण)* में शामिल था।
- ➢ कलीमउल्लाह बहमनी वंश का अंतिम शासक था। इसकी मृत्यु के समय बहमनी राज्य पाँच स्वतंत्र राज्यों में बँट गया। इन स्वतंत्र राज्यों से संबंधित विवरण इस प्रकार है—

क्र	राज्य	वंश	संस्थापक	स्थापना वर्ष
1.	बीजापुर	आदिलशाही	युसुफ आदिल शाह	1489 ई.
2.	अहमदनगर	निजामशाही	मलिक अहमद	1490 ई.
3.	बरार	इमादशाही	फतेहउल्लाह इमादशाह	1490 ई.
4.	गोलकुण्डा	कुतुबशाही	कुलीकुतुबशाह	1512 ई.
5.	बीदर	बरीदशाही	अमीर अली बरीद	1526 ई.

- ➢ मुहम्मद प्रथम के मंत्री सैफुद्दीन गौरी ने केन्द्रीय शासन का कार्य कई विभागों में विभक्त किया और उसने आठ मंत्रियों को नियुक्त किया, जो इस प्रकार थे—

1. वकील-ए-सल्तनत : दिल्ली के मलिक नायब के समान।
2. वकील-ए-कुल : सभी मंत्रियों के कार्यों का निरीक्षण *(वकील को छोड़कर)*।
3. अमीर-ए-जुमला : अर्थ विभाग का अध्यक्ष।
4. वजीर-ए-अशरफ : विदेश नीति एवं दरबार संबंधी कार्यों का निष्पादन करता था।
5. नाजिर : वह अर्थ विभाग से संबंधित था।
6. पेशवा : वकील-ए-सल्तनत का सहायक था।
7. कोतवाल : नगर का मुख्य पुलिस अधिकारी था।
8. सद्रे-ए-जहाँ : न्याय विभाग, धर्म तथा दान विभाग का अध्यक्ष।

- ➢ सुल्तान के महल तथा दरबार की सुरक्षा के लिए विशेष अंगरक्षक सैनिक दल था, जिसे साख-ए-खेल कहा जाता था। यह चार भागों या नौबत में विभाजित थे, जिसके मुख्य अधिकारी सर-ए-नौबत होता था।
- ➢ बहमनी राज्य में कुल 18 शासक हुए, जिन्होंने कुल मिलाकर 175 वर्ष शासन किया।

33. स्वतंत्र प्रान्तीय राज्य

जौनपुर

- ➢ जौनपुर की स्थापना फिरोजशाह तुगलक ने अपने भाई जौना खाँ की स्मृति में की थी।
- ➢ जौनपुर में स्वतंत्र शर्की राजवंश की स्थापना मलिक सरवर *(ख्वाजा जहान)* ने की थी।
- ➢ ख्वाजा जहान को मलिक-उस-शर्क *(पूर्व का स्वामी)* की उपाधि 1394 ई. में फिरोजशाह तुगलक के पुत्र सुल्तान महमूद ने दी थी।
- ➢ जौनपुर के अन्य प्रमुख शासक थे : मुबारकशाह *(1399–1402 ई.)*, शम्सुद्दीन इब्राहिमशाह *(1402–1436 ई.)*, महमूद शाह *(1436–51 ई.)* एवं अंतिम शासक हुसैनशाह *(1458–1500 ई.)*।
- ➢ लगभग 75 वर्ष तक स्वतंत्र रहने के बाद जौनपुर पर बहलोल लोदी ने कब्जा कर लिया।
- ➢ शर्की शासन के अन्तर्गत, विशेषकर इब्राहिमशाह के समय में, जौनपुर में साहित्य एवं स्थापत्यकला के क्षेत्र में हुए विकास के कारण जौनपुर को भारत के सिराज के नाम से जाना गया।
- ➢ अटालादेवी की मस्जिद का निर्माण 1408 ई. में शर्की सुल्तान इब्राहिम शाह द्वारा किया गया था।
- ➢ अटाला देवी मस्जिद का निर्माण कन्नौज के राजा विजयचन्द्र द्वारा निर्मित अटाला देवी के मंदिर को तोड़कर किया गया था।
- ➢ जामा मस्जिद का निर्माण 1470 ई. में हुसैनशाह शर्की के द्वारा किया गया था।
- ➢ झँझरी मस्जिद 1430 ई. में इब्राहिम शर्की के द्वारा एवं लाल दरवाजा मस्जिद का निर्माण मुहम्मदशाह के द्वारा 1450 ई. में किया गया था।

कश्मीर

- ➢ सूहादेव नामक एक हिन्दू ने 1301 ई. में कश्मीर में हिन्दू राज्य की स्थापना की थी।
- ➢ 1339-40 ई. में कश्मीर में शाहमीर के द्वारा प्रथम मुस्लिम वंश की स्थापना की गयी। कश्मीर का प्रथम मुस्लिम शासक शाहमीर था, जो शम्सुद्दीन शाह मीर के नाम से गद्दी पर बैठा।
- ➢ इसने अपनी राजधानी इन्द्रकोट में स्थापित की।
- ➢ अलाउद्दीन ने राजधानी इन्द्रकोट से हटाकर अलाउद्दीनपुर *(श्रीनगर)* में स्थापित की।
- ➢ हिन्दू मंदिरों एवं मूर्तियों को तोड़ने के कारण सुल्तान सिकन्दर शाह को बुतशिकन कहा गया।
- ➢ 1420 ई. में जैन-उल-आबदीन सिंहासन पर बैठा। इसकी धार्मिक सहिष्णुता के कारण इसे 'कश्मीर का अकबर' कहा गया।
- ➢ जैन-उल-आबदीन फारसी, संस्कृत, कश्मीरी, तिब्बती आदि भाषाओं का ज्ञाता था। इसने महाभारत एवं राजतरंगिणी को फारसी में अनुवाद करवाया।
- ➢ 1588 ई. में अकबर ने कश्मीर को मुगल साम्राज्य में मिला लिया।

बंगाल

- ➢ इख्तियारुद्दीन मुहम्मद बिन बख्तियार खिलजी ने बंगाल को दिल्ली सल्तनत में मिलाया।
- ➢ गयासुद्दीन तुगलक ने बंगाल को तीन भागों में विभाजित किया—लखनौती *(उ. बंगाल)*, सोनारगाँव *(पू. बंगाल)* व सतगाँव *(द. बंगाल)*।
- ➢ 1345 ई. में हाजी इलियास बंगाल के विभाजन को समाप्त कर शम्सुद्दीन इलियास शाह के नाम से बंगाल का शासक बना।
- ➢ पांडुआ में अदीना मस्जिद का निर्माण 1364 ई. में सुल्तान सिकन्दर शाह ने करवाया था।
- ➢ बंगाल का शासक गयासुद्दीन आजमशाह *(1389–1409 ई.)* अपनी न्यायप्रियता के लिए प्रसिद्ध था।
- ➢ अलाउद्दीन हुसैन शाह *(1493-1518 ई.)* ने राजधानी को पांडुआ से गौड़ स्थानान्तरित किया।
- ➢ महाप्रभु चैतन्य अलाउद्दीन के समकालीन थे। अलाउद्दीन ने सत्यपीर नामक आन्दोलन की शुरुआत की।

- मालाधर बसु ने अलाउद्दीन के शासनकाल में ही श्रीकृष्ण विजय की रचना कर गुणराजखान की उपाधि धारण की। इनके बेटे को सत्यराजखान की उपाधि दी गई।
- नासिरुद्दीन नुसरत शाह ने गौड़ में बड़ासोना एवं कदम रसूल मस्जिद का निर्माण करवाया।
- बाबर के आक्रमण के समय बंगाल का शासक नुसरत शाह था।

मालवा

- दिलावर खाँ ने 1401 ई. में मालवा को स्वतंत्र घोषित किया।
- दिलावर का पुत्र अलप खाँ, हुशंगशाह की उपाधि धारण कर 1405 ई. में मालवा का शासक बना। इसने अपनी राजधानी को धारा से मांडू स्थानान्तरित किया।
- मालवा में खिलजी वंश की स्थापना महमूद शाह ने की।
- गुजरात के शासक बहादुरशाह ने महमूद शाह II को युद्ध में परास्त कर उसकी हत्या कर दी और मालवा को गुजरात में मिला लिया।
- मांडू के किले, हिंडोला भवन या दरबार हॉल का निर्माण हुशंगशाह ने करवाया था। इस किले में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है—दिल्ली दरवाजा।
- बाजबहादुर एवं रूपमती का महल का निर्माण सुल्तान नासिरुद्दीन शाह द्वारा करवाया गया था।
- जहाजमहल का निर्माण गयासुद्दीन खिलजी ने मांडू में करवाया था।
- कुश्कमहल को महमूद खिलजी ने फतेहाबाद नामक स्थान पर बनवाया था।

गुजरात

- गुजरात के शासक राजाकर्ण को पराजित कर अलाउद्दीन ने 1297 ई. में इसे दिल्ली-सल्तनत में मिला लिया था।
- 1391 ई. में मुहम्मदशाह तुगलक द्वारा नियुक्त गुजरात का सूबेदार जफर खाँ ने 'सुल्तान मुजफ्फरशाह' की उपाधि ग्रहण कर 1407 ई. में गुजरात का स्वतंत्र सुल्तान बना।
- गुजरात के प्रमुख शासक थे : अहमदशाह *(1411–52 ई.)*, महमूदशाह बेगड़ा *(1458–1511 ई.)* और बहादुर शाह *(1526–1537 ई.)*।
- अहमदशाह ने असावल के निकट साबरमती नदी के किनारे अहमदाबाद नामक नगर बसाया और पाटन से राजधानी हटाकर अहमदाबाद को राजधानी बनाया।
- गुजरात का सबसे प्रसिद्ध शासक महमूद बेगड़ा था।
- महमूद बेगड़ा ने गिरनार के निकट मुस्तफाबाद नामक नगर और चम्पानेर के निकट मुहम्मदाबाद नगर बसाया।
- 1572 ई. में अकबर ने गुजरात को मुगल साम्राज्य में मिला लिया।

मेवाड़

- अलाउद्दीन खिलजी ने 1303 ई. में मेवाड़ के गुहिलौत राजवंश के रत्नसिंह को पराजित कर मेवाड़ को दिल्ली सल्तनत में मिला लिया।
- गुहिलौत वंश की एक शाखा सिसोदिया वंश के हम्मीरदेव ने मुहम्मद तुगलक को हराकर पूरे मेवाड़ को स्वतंत्र करा लिया।
- राणा कुम्भा ने 1448 ई. में चित्तौड़ में एक विजय-स्तंभ की स्थापना की।
- खानवा का युद्ध 1527 ई. में राणा साँगा एवं बाबर के बीच हुआ, जिसमें बाबर विजयी हुआ।
- 1576 ई. में हल्दीघाटी का युद्ध राणा प्रताप एवं अकबर के बीच हुआ, जिसमें अकबर विजयी हुआ।
- मेवाड़ की राजधानी चित्तौड़गढ़ थी। जहाँगीर ने मेवाड़ को मुगल साम्राज्य में मिला लिया।

खानदेश

- तुगलक वंश के पतन के समय फिरोजशाह तुगलक के सूबेदार मलिक अहमद राजा फारूकी ने नर्मदा एवं ताप्ती नदियों के बीच 1382 ई. में खानदेश की स्थापना की।
- खानदेश की राजधानी बुरहानपुर थी। इसका सैनिक मुख्यालय असीरगढ़ था।
- 1601 ई. में अकबर ने खानदेश को मुगल साम्राज्य में मिला लिया।

34. सूफी आन्दोलन

- जो लोग सूफी संतों से शिष्यता ग्रहण करते थे, उन्हें मुरीद कहा जाता था। सूफी जिन आश्रमों में निवास करते थे, उन्हें खानकाह या मठ कहा जाता था।
- सूफियों के धर्मसंघ बा-शारा *(इस्लामी सिद्धान्त के समर्थक)* और बे-शारा *(इस्लामी सिद्धान्त से बँधे नहीं)* में विभाजित थे।
- भारत में चिश्ती एवं सुहरावर्दी सिलसिले की जड़ें काफी गहरी थीं।
- ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती ने भारत में चिश्ती सिलसिला की शुरुआत की। चिश्ती सिलसिला का मुख्य केन्द्र अजमेर था।
- चिश्ती सिलसिला के कुछ अन्य महत्वपूर्ण संत थे—निजामुद्दीन औलिया, बाबा फरीद, बख्तियार काकी एवं शेख बुरहानुद्दीन गरीब। बाबा फरीद बख्तियार काकी के शिष्य थे।
- बाबा फरीद की रचनाएँ गुरुग्रंथ साहिब में शामिल हैं।
- बाबा फरीद के दो महत्वपूर्ण शिष्य थे—निजामुद्दीन औलिया एवं अलाउद्दीन साबिर।
- हजरत निजामुद्दीन औलिया ने अपने जीवनकाल में दिल्ली के सात सुल्तानों का शासन देखा था। इनके प्रमुख शिष्य थे—शेख सलीम चिश्ती, अमीर खुसरो, अमीर हसन देहलवी।
- शेख बुरहानुद्दीन गरीब ने 1340 ई. में दक्षिण भारत के क्षेत्रों में चिश्ती सम्प्रदाय की शुरुआत की और दौलताबाद को मुख्य केन्द्र बनाया।
- सूफियों के सुहरावर्दी धर्मसंघ या सिलसिला की स्थापना शेख शिहाबुद्दीन उमर सुहरावर्दी ने की, किन्तु 1262 ई. में इसके सुदृढ़ संचालन का श्रेय शेख बदरुद्दीन जकारिया को है। इन्होंने सिंध एवं मुल्तान को मुख्य केन्द्र बनाया। सुहरावर्दी धर्मसंघ के अन्य प्रमुख संत थे—जलालुद्दीन तबरीजी, सैय्यद सुर्ख जोश, बुरहान आदि। *सुहरावर्दी सिलसिला ने राज्य के संरक्षण को स्वीकार किया था।*
- शेख अब्दुल्ला सत्तारी ने सत्तारी सिलसिले की स्थापना की थी। इसका मुख्य केन्द्र बिहार था।
- कादरी धर्मसंघ या सिलसिला की स्थापना सैय्यद अबुल कादिर अल जिलानी ने बगदाद में की थी। भारत में इस सिलसिला के प्रवर्तक मुहम्मद गौस थे। इस सिलसिले के अनुयायी गाने-बजाने के विरोधी थे। ये लोग शिया मत के विरुद्ध थे।
- राजकुमार दारा *(शाहजहाँ का ज्येष्ठ पुत्र)* कादिरी सिलसिला के मुल्लाशाह का शिष्य था।
- नक्शबन्दी धर्मसंघ या सिलसिला की स्थापना ख्वाजा उबेदुल्ला ने की थी। भारत में इस सिलसिला की स्थापना ख्वाजा बकी बिल्लाह ने की थी। भारत में इसके व्यापक प्रचार का श्रेय बकी बिल्लाह के शिष्य अकबर के समकालीन 'शेख अहमद' सरहिन्दी को था।
- फिरदौसी, सुहरावर्दी सिलसिला की ही एक शाखा थी, जिसका कार्य-क्षेत्र बिहार था। इस सिलसिले को शेख शरीफउद्दीन याह्या ने लोकप्रिय बनाया। याह्या ख्वाजा निजामुद्दीन के शिष्य थे।

35. भक्ति आन्दोलन

- छठी शताब्दी में भक्ति आन्दोलन का शुरुआत तमिल क्षेत्र से हुई जो कर्नाटक और महाराष्ट्र में फैल गई।
- भक्ति आन्दोलन का विकास बारह अलवार वैष्णव संतों और तिरसठ नयनार शैव संतों ने किया। शैव नयनार और वैष्णव अलवार जैनियों और बौद्धों के अपरिग्रह को अस्वीकार का ईश्वर के प्रति व्यक्तिगत भक्ति को ही मुक्ति का मार्ग बताते थे।
- शैव संत अप्पार ने पल्लव राजा महेन्द्रवर्मन को शैवधर्म स्वीकार करवाया।
- भक्ति कवि-संतों को संत कहा जाता था और उनके दो समूह थे। प्रथम समूह वैष्णव संत थे जो महाराष्ट्र में लोकप्रिय हुए। वे भगवान विठोबा के भक्त थे। विठोबा पंथ के संत और उनके अनुयायी वरकरी या तीर्थयात्री-पंथ कहलाते थे, क्योंकि हर वर्ष पंढरपुर की तीर्थयात्रा पर जाते थे। दूसरा समूह पंजाब एवं राजस्थान के हिन्दी भाषी क्षेत्रों में सक्रिय था और इसकी निर्गुण भक्ति *(हर विशेषता से परे भगवान की भक्ति)* में आस्था थी।

➢ भक्ति आन्दोलन को दक्षिण भारत से उत्तर भारत में रामानन्द के द्वारा लाया गया।
➢ बंगाल में कृष्ण भक्ति की प्रारंभिक प्रतिपादकों में विद्यापति ठाकुर और चंडीदास थे।
➢ रामानंद की शिक्षा से दो संप्रदायों का प्रादुर्भाव हुआ, सगुण जो पुनर्जन्म में विश्वास रखता है और निर्गुण जो भगवान के निराकर रूप को पूजता है।
➢ सगुण संप्रदाय के सबसे प्रसिद्ध व्याख्याताओं में थे–तुलसीदास और नाभादास जैसे रामभक्त और निम्बार्क, वल्लभाचार्य, चैतन्य, सूरदास और मीराबाई जैसे कृष्णभक्त।
➢ निर्गुण सम्प्रदाय के सबसे प्रसिद्ध प्रतिनिधि थे कबीर, जिन्हें भावी उत्तर भारतीय पंथों का आध्यात्मिक गुरु माना गया है।
➢ शंकराचार्य के अद्वैतदर्शन के विरोध में दक्षिण में वैष्णव संतों द्वारा चार मतों की स्थापना की गयी थी।

दक्षिण में वैष्णव संतों द्वारा स्थापित चार मत		
श्री सम्प्रदाय	रामानुजाचार्य	विशिष्टाद्वैतवाद
ब्रह्म-सम्प्रदाय	माधवाचार्य	द्वैतवाद
रुद्र-सम्प्रदाय	विष्णुस्वामी	शुद्धद्वैतवाद
सनकादि सम्प्रदाय	निम्बार्काचार्य	द्वैताद्वैतवाद

भक्ति आन्दोलन के सन्त

रामानुजाचार्य : *(11वीं शताब्दी)* इन्होंने राम को अपना आराध्य माना। इनका जन्म 1017 ई. में मद्रास के निकट पेरुम्बर नामक स्थान पर हुआ था। 1137 ई. में इनकी मृत्यु हो गयी। रामानुज ने वेदान्त में प्रशिक्षण अपने गुरु, कांचीपुरम के यादव प्रकाश से प्राप्त किया था।

रामानंद : रामानंद का जन्म 1299 ई. में प्रयाग में हुआ था। इनकी शिक्षा प्रयाग तथा वाराणसी में हुई। इन्होंने अपना सम्प्रदाय सभी जातियों के लिए खोल दिया। रामानुज की भाँति इन्होंने भी भक्ति को मोक्ष का एकमात्र साधन स्वीकार किया। इन्होंने मर्यादा पुरुषोत्तम राम एवं सीता की आराधना को समाज के समक्ष रखा। रामानंद के 12 शिष्यों में दो स्त्रियाँ पद्मावती एवं सुरसरी थी। इनके प्रमुख शिष्य थे—रैदास *(हरिजन)*, कबीर *(जुलाहा)*, धन्ना *(जाट)*, सेना *(नाई)*, पीपा *(राजपूत)*, सधना *(कसाई)*।

कबीर : कबीर का जन्म 1440 ई. *(विवादास्पद)* में वाराणसी में एक विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से *(लोक श्रुतियों अनुसार)* हुआ था। लोक-लज्जा के भय से उसने नवजात शिशु को वाराणसी में लहरतारा के पास एक तालाब के समीप छोड़ दिया। जुलाहा नीरु तथा उसकी पत्नी नीमा इस नवजात शिशु को अपने घर ले आये। इस बालक का नाम कबीर रखा गया। कबीर की शादी लोई से हुई, उनके दो बच्चे हुए और उनकी जिंदगी आम गृहस्थ जैसी ही थी। इन्होंने राम, रहीम, हजरत, अल्लाह आदि को एक ही ईश्वर के अनेक रूप माने। इन्होंने जाति-प्रथा, धार्मिक कर्मकांड, बाह्य आडम्बर, मूर्तिपूजा, जप-तप, अवतारवाद आदि का घोर विरोध करते हुए एकेश्वरवाद में आस्था व्यक्त की एवं निराकार ब्रह्म की उपासना को महत्व दिया। निर्गुण भक्ति धारा से जुड़े कबीर ऐसे प्रथम भक्त थे, जिन्होंने संत होने के बाद भी पूर्णतः गृहस्थ जीवन का निर्वाह किया। इनके अनुयायी 'कबीरपंथी' कहलाए। कबीर के उपदेश सबद सिक्खों के आदिग्रंथ में संगृहीत हैं। कबीर की वाणी का संग्रह 'बीजक' *(शिष्य धर्मदास द्वारा संकलित)* नाम से प्रसिद्ध है। बीजक में तीन भाग हैं—रमैनी, सबद और साखी। उनकी भाषा को सधुक्कड़ी कहा गया है। इसमें ब्रजभाषा, अवधी एवं राजस्थानी भाषा के शब्द पाये जाते हैं। कबीरदास की मृत्यु 1510 ई. में मगहर में हुई।

नोट : *कबीर सुल्तान सिकंदर लोदी के समकालीन थे।*

गुरु नानक : गुरु नानक का जन्म 1469 ई. अविभाजित पंजाब के राबी नदी के तट पर स्थित तलवण्डी नामक ग्राम में हुआ था, जो अब ननकाना साहिब के नाम से विख्यात है। उनकी माता का नाम तृप्ता देवी तथा पिता का नाम कालूराम था। बटाला के मूलराज खत्री की बेटी, सुलक्षणी से उनका विवाह हुआ, जिससे उन्हें दो पुत्र हुए। उन्होंने देश का पाँच बार चक्कर लगाया, जिसे उदासीस कहा जाता है। उन्होंने कीर्तनों के माध्यम से उपदेश दिए। वे काव्य रचना करते थे और रबाब के संगीत के साथ गाया करते थे। सारंगी उनका स्वामी भक्ति शिष्य मरदाना बजाया करता था। अपने जीवन के अंतिम क्षणों में उन्होंने रावी नदी के किनारे करतारपुर में अपना डेहरा *(मठ)* स्थापित किया। अपने जीवन काल में ही उन्होंने आध्यात्मिक आधार पर अपने पुत्रों की जगह, अपने शिष्य भाई लहना *(अगंद)* को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया। इनकी मृत्यु 1538 ई. में करतारपुर में हुई। नानक ने सिक्ख धर्म की स्थापना की। नानक सूफी संत बाबा फरीद से प्रभावित थे।

चैतन्य स्वामी : चैतन्य का जन्म 1486 ई. में नवदीप *(Navadvipa)* *(बंगाल)* के मायापुर गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम जगन्नाथ मिश्र एवं माता का नाम शची देवी था। पाठशाला में चैतन्य को निमाई पंडित या गौरांग कहा जाता था। चैतन्य का वास्तविक नाम विश्वम्भर था। इन्होंने गोसाई संघ की स्थापना की और साथ ही संकीर्तन प्रथा को जन्म दिया। इनके दार्शनिक सिद्धान्त को अचिंत्य भेदाभेदवाद के नाम से जाना जाता है। संन्यासी बनने के बाद बंगाल छोड़कर पुरी *(उड़ीसा)* चले गये, जहाँ उन्होंने दो दशक तक भगवान जगन्नाथ की उपासना की। इसकी मृत्यु 1533 ई. में हो गयी।

श्री मद्वल्लभाचार्य : श्री मद्वल्लभाचार्य का जन्म 1479 ई. में चम्पारण्य *(वाराणसी)* में हुआ था। इनके पिता का नाम लक्ष्मण भट्ट तथा माता का नाम यल्लमगरु था। इनका विवाह महालक्ष्मी के साथ हुआ। इनके दो पुत्र थे—गोपीनाथ *(जन्म 1511 ई.)* तथा विट्ठलनाथ *(जन्म 1516 ई.)* थे। इन्होंने गंगा-यमुना संगम के समीप अरैल नामक स्थान पर अपना निवास-स्थान बनाया। बल्लभाचार्य ने भक्तिसाधना पर विशेष जोर दिया। इन्होंने भक्ति को मोक्ष का साधन बताया। इनके भक्तिमार्ग को पुष्टिमार्ग कहते हैं। सूरदास वल्लभाचार्य के शिष्य थे।

गोस्वामी तुलसीदास : इनका जन्म उत्तर प्रदेश के बाँदा जिले में राजापुर गाँव में 1532 ई. में हुआ था। इन्होंने रामचरितमानस की रचना की। इनकी मृत्यु 1623 ई. में हुई थी। तुलसीदास मुगल शासक अकबर एवं मेवाड़ के शासक राणाप्रताप के समकालीन थे।

धन्ना : धन्ना का जन्म 1415 ई. में एक जाट परिवार में हुआ था। राजपुताना से बनारस आकर ये रामानन्द के शिष्य बन गए। कहा जाता है कि इन्होंने भगवान की मूर्ति को हठात् भोजन कराया था।

मीराबाई : मीराबाई का जन्म 1498 ई. में मेड़ता जिले के चौकारी *(Chaukari)* ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम रत्न सिंह राठौर था। इनका विवाह 1516 ई. में राणा सांगा के बड़े पुत्र और युवराज भोजराज से हुआ था। अपने पति के मृत्यु के उपरांत ये पूर्णतः धर्मपरायण जीवन व्यतीत करने लगीं। इन्होंने कृष्ण की उपासना प्रेमी एवं पति के रूप में की। इनके भक्ति गीत मुख्यतः ब्रजभाषा और आंशिक रूप से राजस्थानी में लिखे गये हैं तथा इनकी कुछ कविताएँ राजस्थानी में भी हैं। इनकी मृत्यु 1546 ई. में हो गयी।

रैदास : ये जाति से चमार थे और बनारस के रहने वाले थे। ये रामानंद के बारह शिष्यों में एक थे। इनके पिता का नाम रघु तथा माता का नाम घुरबिनिया था। ये जूता बनाकर जीविकोपार्जन करते थे। इन्होंने रायदासी सम्प्रदाय की स्थापना की।

दादू-दयाल : ये कबीर के अनुयायी थे। इनका जन्म 1544 ई. में अहमदाबाद में हुआ था। इनका संबंध धुनिया जाति से था। साँभर में आकर इन्होंने ब्रह्म सम्प्रदाय की स्थापना की। अकबर ने धार्मिक चर्चा के लिए इन्हें एक बार फतेहपुर सीकरी बुलाया था। इन्होंने 'निपख' नामक आन्दोलन की शुरुआत की। इनकी मृत्यु 1603 ई. में हो गयी। सुन्दरदास *(Sundaradasa) (1596–1689 ई.)* दादू के शिष्य थे।

शंकरदेव *(1449–1569 ई.)* : इन्होंने भक्ति आन्दोलन का प्रचार-प्रसार असम में किया। ये चैतन्य के समकालीन थे।

36. मुगल साम्राज्य

➢ मुगल वंश का संस्थापक बाबर था। बाबर एवं उत्तरवर्ती मुगल शासक तुर्क एवं सुन्नी मुसलमान थे। बाबर ने मुगल वंश की स्थापना के साथ ही पद-पादशाही की स्थापना की, जिसके तहत शासक को बादशाह कहा जाता था।

बाबर *(1526 – 1530 ई.)*

➢ बाबर का जन्म फरवरी, 1483 ई. में हुआ था। इसके पिता उमरशेख मिर्जा फरगाना नामक छोटे राज्य के शासक थे। बाबर फरगाना की गद्दी पर 8 जून, 1494 ई. में बैठा।

➢ बाबर ने 1507 ई. में बादशाह की उपाधि धारण की, जिसे अब तक किसी तैमूर शासक ने धारण नहीं की थी। बाबर के चार पुत्र थे—हुमायूँ, कामरान, असकरी तथा हिंदाल।

➢ बाबर ने भारत पर पाँच बार आक्रमण किया। बाबर का भारत के विरुद्ध किया गया प्रथम अभियान 1519 ई. में युसूफ जाई जाति के विरुद्ध था। इस अभियान में बाबर ने बाजौर और भेरा को अपने अधिकार में कर लिया।

➢ पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर ने पहली बार तुगलमा युद्ध नीति एवं तोपखाने का प्रयोग किया था। उस्ताद अली एवं मुस्तफा बाबर के दो प्रसिद्ध निशानेबाज थे, जिसने पानीपत के प्रथम युद्ध में भाग लिया था।

बाबर द्वारा लड़े गए प्रमुख युद्ध

युद्ध	वर्ष	पक्ष	परिणाम
पानीपत का प्रथम युद्ध	21 अप्रैल, 1526	इब्राहिम लोदी व बाबर	बाबर विजयी
खानवा का युद्ध	17 मार्च, 1527	राणा साँगा एवं बाबर	बाबर विजयी
चन्देरी का युद्ध	29 जन., 1528	मेदनी राय एवं बाबर	बाबर विजयी
घाघरा का युद्ध	6 मई, 1529	अफगानों एवं बाबर	बाबर विजयी

➢ इब्राहिम लोदी मध्यकाल का प्रथम शासक था जो युद्धस्थल में मारा गया। इसके साथ उसका मित्र ग्वालियर के राजा विक्रमजीत भी युद्धस्थल में मारा गया।

नोट : *हुमायूँ ने कोहिनूर हीरा ग्वालियर के दिवंगत राजा विक्रमजीत के परिवार से प्राप्त किया था।*

➢ बाबर को अपनी उदारता के लिए कलन्दर की उपाधि दी गयी।

➢ खानवा युद्ध में बाबर ने राणा साँगा के खिलाफ जिहाद का नारा दिया और युद्ध में विजय के बाद गाजी की उपाधि धारण की।

➢ 30 जनवरी, 1528 ई. को जहर दे देने के कारण राणा साँगा की मृत्यु हो गई।

➢ बाबर ने बंगाल के शासक नुसरतशाह के साथ 6 मई, 1529 को एक दूसरे की संप्रभुता का सम्मान करने का वादा करते हुए एक संधि की जिसके अनुसार नुसरतशाह ने अफगान विद्रोहियों को शरण न देने का वचन दिया।

➢ करीब 48 वर्ष की आयु में 26 दिसम्बर, 1530 ई. को आगरा में बाबर की मृत्यु हो गयी।

➢ प्रारंभ में बाबर के शव को आगरा के आरामबाग में दफनाया गया, बाद में काबुल में उसके द्वारा चुने गए स्थान पर दफनाया गया।

➢ बाबर की मातृभाषा तुर्की थी लेकिन वह अरबी और फारसी का भी अच्छा ज्ञाता था। बाबर ने अपनी आत्मकथा बाबरनामा *(तुर्की में)* की रचना की, जिसका अनुवाद बाद में फारसी भाषा में अब्दुल रहीम खानखाना ने किया। अपनी आत्मकथा में बाबर ने औपचारिक बागों की योजनाओं और उनके बनाने में अपनी रुचि का वर्णन किया है। अकसर ये बाग दीवार से घिरे होते थे तथा कृत्रिम नहरों द्वारा चार भागों में विभाजित आयताकार अहाते में स्थित थे। चार समान हिस्सों में बँटे होने के कारण ये चार बाग कहलाते थे।

नोट : *चार बाग बनाने की परम्परा की शुरुआत अकबर के समय से हुई।*

➢ बाबर को मुबईयान नामक पद्यशैली का भी जन्मदाता माना जाता है।

➢ बाबर प्रसिद्ध नक्शबन्दी सूफी ख्वाजा उबैदुल्ला अहरार का अनुयायी था। बाबर का उत्तराधिकारी हुमायूँ हुआ।

हुमायूँ *(1530–1556 ई.)*

➢ नसीरुद्दीन हुमायूँ, 29 दिसम्बर, 1530 ई. को आगरा में 23 वर्ष की अवस्था में सिंहासन पर बैठा। गद्दी पर बैठने से पहले हुमायूँ बदख्शाँ का सूबेदार था।

➢ अपने पिता के निर्देश के अनुसार हुमायूँ ने अपने राज्य का बँटवारा अपने भाइयों में कर दिया। इसने कामरान को काबुल और कंधार, मिर्जा असकरी को सँभल, मिर्जा हिंदाल को अलवर एवं मेवाड़ की जागीरें दीं। अपने चचेरे भाई सुलेमान मिर्जा को हुमायूँ ने बदख्शाँ प्रदेश दिया।

➢ 1533 ई. में हुमायूँ ने दीनपनाह नामक नए नगर की स्थापना की थी।

➢ चौसा का युद्ध 25 जून, 1539 ई. में शेर खाँ एवं हुमायूँ के बीच हुआ। इस युद्ध में शेर खाँ विजयी रहा। इसी युद्ध के बाद शेर खाँ ने शेरशाह की पदवी ग्रहण कर ली।

➢ बिलग्राम या कन्नौज युद्ध 17 मई, 1540 ई. में शेर खाँ एवं हुमायूँ के बीच हुआ। इस युद्ध में भी हुमायूँ पराजित हुआ। शेर खाँ ने आसानी से आगरा एवं दिल्ली पर कब्जा कर लिया।

➢ बिलग्राम युद्ध के बाद हुमायूँ सिन्ध चला गया, जहाँ उसने 15 वर्षों तक घुमक्कड़ों जैसा निर्वासित जीवन व्यतीत किया।

➢ निर्वासन के समय हुमायूँ ने हिन्दाल के आध्यात्मिक गुरु फारसवासी शिया मीर बाबा दोस्त उर्फ मीर अली अकबर जामी की पुत्री हमीदा बानू बेगम से 29 अगस्त, 1541 ई. को निकाह कर लिया। कालान्तर में हमीदा से ही अकबर जैसे महान सम्राट् का जन्म हुआ।

➢ 1555 ई. में हुमायूँ ने पंजाब के शूरी शासक सिकन्दर को पराजित कर पुनः दिल्ली की गद्दी पर बैठा।

➢ हुमायूँ द्वारा लड़े गए चार प्रमुख युद्धों का क्रम है : देवरा *(1531 ई.)*, चौसा *(1539)*, बिलग्राम *(1540)* एवं सरहिन्द का युद्ध *(1555 ई.)*।

➢ 1 जनवरी, 1556 ई. को दीन पनाह भवन में स्थित पुस्तकालय *(शेर मंडल)* की सीढ़ियों से गिरने के कारण हुमायूँ की मृत्यु हो गयी।

➢ हुमायूँ के बारे में इतिहासकार लेनपूल ने कहा है कि "हुमायूँ गिरते-पड़ते इस जीवन से मुक्त हो गया ठीक उसी तरह जिस तरह तमाम जिन्दगी वह गिरते-पड़ते चलता रहा था।"

➢ हुमायूँनामा की रचना गुल-बदन बेगम ने की थी।

➢ हुमायूँ ज्योतिष में विश्वास करता था, इसलिए इसने सप्ताह के सातों दिन सात रंग के कपड़े पहनने के नियम बनाए।

शेरशाह *(1540 – 1545 ई.)*

➢ सूर साम्राज्य का संस्थापक अफगान वंशीय शेरशाह सूरी था।

➢ डॉ. के.आर. कानूनगो के अनुसार हरियाणा प्रान्त के नारनौल *(महेन्द्रगढ़)* स्थान पर इब्राहीम के पुत्र हसन के घर वर्ष 1486 में शेरशाह का जन्म हुआ था। परमात्मा शरण का विचार है कि शेरशाह का जन्म वर्ष 1472 ई. में हुआ था।

➢ इनके बचपन का नाम फरीद खाँ था। यह सूर वंश से संबंधित था।

➢ इनके पिता हसन खाँ जौनपुर राज्य के अन्तर्गत सासाराम के जमींदार थे।

➢ फरीद ने एक शेर को तलवार के एक ही वार से मार दिया था। उसकी इस बहादुरी से प्रसन्न होकर बिहार के अफगान शासक सुल्तान मुहम्मद बहार खाँ लोहानी ने उसे शेर खाँ की उपाधि प्रदान की।

➢ शेरशाह बिलग्राम युद्ध *(1540 ई.)* के बाद दिल्ली की गद्दी पर बैठा।

➢ शेरशाह की मृत्यु कालिंजर के किले को जीतने के क्रम में 22 मई, 1545 ई. को हो गयी। मृत्यु के समय वह उक्का नामक आग्नेयास्त्र चला रहा था। कालिंजर का शासक कीरत सिंह था।

➢ हिन्द तथा ईरानी वास्तुकला के समन्वय का प्रथम उदाहरण है शेरशाह का मकबरा जिसे सासाराम में झील के बीच ऊँचे टीले पर निर्मित किया गया है।

➢ रोहतासगढ़ किला, किला-ए-कुहना *(दिल्ली)* नामक मस्जिद का निर्माण शेरशाह के द्वारा किया गया था।

➢ शेरशाह का उत्तराधिकारी उसका पुत्र इस्लाम शाह था।

- शेरशाह ने भूमि की माप के लिए 32 अंकवाला सिकन्दरी गज एवं सन की डंडी का प्रयोग किया। इसने 178 ग्रेन चाँदी का रुपया व 380 ग्रेन ताँबे के दाम चलवाया।
- शेरशाह ने रोहतासगढ़ के दुर्ग एवं कन्नौज के स्थान पर शेरसूर नामक नगर बसाया।
- शेरशाह के समय पैदावार का लगभग 1/3 भाग सरकार लगान के रूप में वसूल करती थी।
- कबूलियत एवं पट्टा प्रथा की शुरुआत शेरशाह ने की।
- शेरशाह ने 1541 ई. में पाटलिपुत्र को पटना के नाम से पुनः स्थापित किया। इसने ग्रैंड ट्रंक रोड की मरम्मत करवायी। डाक-प्रथा का प्रचलन शेरशाह के द्वारा ही किया गया।
- मलिक मुहम्मद जायसी शेरशाह के समकालीन थे।

अकबर के समकालीन शासक		
1. रानी एलिजाबेथ	1558–1603 ई.	इंग्लैंड
2. शाह अब्बास	1588–1629 ई.	ईरान
3. जार ईवान IV बेसिलयेविच*	1530–1584 ई.	रूस

** जार ईवान IV बेसिलयेविच ईवान दि टेरिबल नाम से कुख्यात था।*

अकबर *(1556 – 1605 ई.)*

- सम्राट् अकबर का जन्म 15 अक्टूबर, 1542 ई. को हमीदा बानू बेगम के गर्भ से अमरकोट के राणा वीर साल के महल में हुआ।
- अकबर के बचपन का नाम जलाल था। उसका राज्याभिषेक 14 फरवरी, 1556 ई. को पंजाब के कलानौर नामक स्थान पर हुआ।
- अकबर का शिक्षक अब्दुल लतीफ ईरानी विद्वान था।
- वह जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर बादशाही गाजी की उपाधि से राजसिंहासन पर बैठा।
- बैरम खाँ *(शिया मतावलम्बी)* 1556 से 1560 ई. तक अकबर का संरक्षक रहा। वह बदख्शाँ का निवासी था। उसे प्यार से 'खानी-बाबा' कहा जाता था।
- पानीपत की दूसरी लड़ाई 5 नवम्बर, 1556 ई. को अकबर और हेमू के बीच हुई थी। इस युद्ध में अकबर की विजय हुई थी।
- 31 जनवरी, 1561 को मक्का की तीर्थ-यात्रा के दौरान पाटन नामक स्थान पर मुबारक खाँ नामक युवक ने बैरम खाँ की हत्या कर दी।
- मई, 1562 में अकबर ने हरम-दल से अपने को पूर्णतः मुक्त कर लिया।
- हल्दीघाटी का युद्ध 18 जून, 1576 ई. को मेवाड़ के शासक महाराणा प्रताप एवं अकबर के बीच हुआ। इस युद्ध में अकबर विजयी हुआ। इस युद्ध में मुगल सेना का नेतृत्व मान सिंह एवं आसफ खाँ ने किया था। अकबर का सेनापति मान सिंह था।
- हल्दीघाटी युद्ध के समय कुम्भलगढ़ राणा प्रताप का राजधानी थी। राणा की ओर से इस युद्ध में हाकिम खाँ सूर के नेतृत्व में एक अफ़गान फौजी टुकड़ी एवं भीलों की एक छोटी-सी सेना ने भाग लिया था।
- महाराणा प्रताप की मृत्यु 19 जनवरी, 1597 ई. में एक सख्त धनुष की प्रत्यंचा चढ़ाते समय अन्दरुनी चोट लग जाने के कारण हो गयी। हल्दीघाटी के युद्ध के बाद राणा प्रताप ने डुंगरपुर के निकट चॉवड़ में नई राजधानी बनाई।
- दीन-ए-इलाही धर्म का प्रधान पुरोहित अकबर था।
- दीन-ए-इलाही धर्म स्वीकार करने वाला प्रथम एवं अन्तिम हिन्दू शासक राजा बीरबल था। महेशदास नामक ब्राह्मण को राजा बीरबल की पदवी दी गयी थी जो हमेशा अकबर के साथ रहता था।
- अकबर ने जैनधर्म के जैनाचार्य हरिविजय सूरी को जगतगुरु की उपाधि प्रदान की थी।
- अकबर ने शाही दरबार में एक अनुष्ठान के रूप में सूर्योपासना शुरू करवाई।
- राजस्व प्राप्ति की जब्ती प्रणाली अकबर के शासनकाल में प्रचलित थी।
- अकबर के दीवान राजा टोडरमल *(खत्री जाति)* ने 1580 ई. में दहसाल बन्दोबस्त व्यवस्था लागू की।

अकबर द्वारा जीते गए प्रदेश

क्र.	प्रदेश	शासक	वर्ष	मुगल सेनापति
1.	मालवा	बाज बहादुर	1561	आधम खाँ, पीर मुहम्मद
2.	चुनार	अफगानों का शासन	1562	अब्दुल्ला खाँ
3.	गोंडवाना	वीरनारायण एवं दुर्गावती	1564	आसफ खाँ
4.	आमेर	भारमल	1562	स्वेच्छा से अधीनता स्वीकारी
5.	मेड़ता	जयमल	1562	सरफुद्दीन
6.	मेवाड़	उदय सिंह एवं	1568	स्वयं अकबर
		राणा प्रताप	1576	मान सिंह एवं आसफ खाँ
7.	रणथम्भौर	सुरजनहाड़ा	1569	भगवान दास एवं अकबर
8.	कालिंजर	रामचन्द्र	1569	मजनू खाँ काकशाह
9.	मारवाड़	राव चन्द्रसेन	1570	स्वेच्छा से अधीनता स्वीकारी
10.	जैसलमेर	रावल हरिराय	1570	स्वेच्छा से अधीनता स्वीकारी
11.	बीकानेर	कल्याणमल	1570	स्वेच्छा से अधीनता स्वीकारी
12.	गुजरात	मुजफ्फर खाँ–III	1571	सम्राट् अकबर
13.	बिहार व बंगाल	दाउद खाँ	1574-76	मुनीम खाँ खानखाना
14.	काबुल	हकीम मिर्जा	1581	मानसिंह एवं अकबर
15.	कश्मीर	युसुफ याकूब खाँ	1586	भगवान दास व कासिम खाँ
16.	उड़ीसा	निसार खाँ	1592	मान सिंह
17.	सिन्ध	जानी बेग	1593	अब्दुर्रहीम खानखाना
18.	बलूचिस्तान	पन्नी अफगान	1595	मीर मासूम
19.	कन्धार	मुजफ्फर हुसैन	1595	शाह बेग

दक्षिण भारत

क्र.	प्रदेश	शासक	वर्ष	मुगल सेनापति
1.	खानदेश	अली खाँ	1591	स्वेच्छा से अधीनता स्वीकारी
2.	दौलताबाद	चाँद बीबी	1599	मुराद, अब्दुर्रहीम खानखाना अबुल फजल, अकबर
3.	अहमदनगर	बहादुर शाह चाँद बीबी	1600	
4.	असीरगढ़	मीरन बहादुर	1601	अकबर *(यह अकबर का अंतिम अभियान था)*

- अकबर के दरबार का प्रसिद्ध संगीतकार तानसेन था।
- गुजरात-विजय के दौरान अकबर सर्वप्रथम पुर्त्तगालियों से मिला और यहीं उसने सर्वप्रथम समुद्र को देखा।

नोट : *गुजरात अभियान को इतिहासकार स्मिथ ने संसार के इतिहास का सर्वाधिक द्रुतगामी आक्रमण कहा है।*

अकबर के कुछ महत्वपूर्ण कार्य	
कार्य	वर्ष
दासप्रथा का अन्त	1562
अकबर को हरमदल से मुक्ति	1562
तीर्थयात्रा कर समाप्त	1563
जजिया-कर समाप्त	1564
फतेहपुरसीकरी की स्थापना एवं राजधानी का आगरा से फतेहपुर सीकरी स्थानान्तरण	1571
इबादतखाने की स्थापना	1575
इबादतखाने में सभी धर्मों के लोगों के प्रवेश की अनुमति	1578
मजहर की घोषणा	1579
दीन-ए-इलाही की स्थापना	1582
इलाही संवत् की शुरुआत	1583
राजधानी लाहौर स्थानांतरित	1585

- अकबर के दरबार के प्रसिद्ध चित्रकार अब्दुर समद था।
- दसवंत एवं बसावन अकबर के दरबार के चित्रकार थे।
- अकबर के शासनकाल के प्रमुख गायक तानसेन, बाज बहादुर, बाबा रामदास एवं बैजू बाबरा थे।
- अकबर की शासन-प्रणाली की प्रमुख विशेषता मनसबदारी प्रथा थी।
- अकबर के समकालीन प्रसिद्ध सूफी सन्त शेख सलीम चिश्ती थे।

- अकबर की मृत्यु 16 अक्टूबर, 1605 ई. को हुई। इसे आगरा के निकट सिकन्दरा में दफनाया गया।
- स्थापत्यकला के क्षेत्र में अकबर की महत्वपूर्ण कृतियाँ हैं—दिल्ली में हुमायूँ का मकबरा, आगरा का लालकिला, फतेहपुर सीकरी में शाहीमहल, दीवाने खास, पंचमहल, बुलंद दरवाजा, जोधाबाई का महल, इबादतखाना, इलाहाबाद का किला और लाहौर का किला।
- अकबर के दरबार को सुशोभित करने वाले नौ रत्न थे—1. अबुल फजल *(1551–1602)*, 2. फैजी *(1547–1595)*, 3. तानसेन, 4. बीरबल *(1528–1583)*, 5. टोडरमल, 6. राजा मान सिंह, 7. अब्दुल रहीम खान-ए-खाना, 8. फकीर अज़ीउद्दीन, 9. मुल्ला दो प्याज़ा।
- अबुल-फजल का बड़ा भाई **फैजी** अकबर के दरबार में राजकवि के पद पर आसीन था।
- अबुल-फजल ने **अकबरनामा** ग्रंथ की रचना की। वह दीन-ए-इलाही धर्म का मुख्य पुरोहित था।
- संगीत सम्राट् तानसेन का जन्म 1506 ई. में ग्वालियर में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनका असली नाम रामतनु पांडेय था। इनकी प्रमुख कृतियाँ थीं—मियाँ की टोड़ी, मियाँ का मल्हार, मियाँ का सारंग, दरबारी कान्हरा आदि।
- **कण्ठाभरण वाणीविलास** की उपाधि अकबर ने तानसेन को दी थी।
- तानसेन, अकबर के दरबार में आने से पूर्व रीवाँ के राजा रामचन्द्र के राजाश्रय में थे।
- अकबर के काल में स्वामी हरिदास भी एक महान संगीतज्ञ थे। ये वृंदावन में रहकर भगवान की उपासना करते थे। एक मत के अनुसार हरिदास तानसेन के गुरु थे जबकि कुछ विद्वान हरिदास एवं तानसेन दोनों को मानसिंह तोमर का शिष्य बतलाते हैं। यह भी प्रचलित है कि हरिदास का गाना सुनने के लिए अकबर को इनकी कुटिया पर जाना पड़ा, क्योंकि इन्होंने अकबर के दरबार में जाने से मना कर दिया था। इनका कहना था कि वे केवल अपने भगवान के लिए ही गाते हैं, दरबार से उनका कोई सरोकार नहीं।
- अकबर ने भगवान दास *(आमेर के राजा भारमल के पुत्र)* को **अमीर-ऊल-ऊमरा** की उपाधि दी।
- युसुफजाइयों के विद्रोह को दबाने के दौरान **बीरबल** की हत्या हो गयी।
- 1602 ई. में **सलीम** *(जहाँगीर)* के निर्देश पर दक्षिण से आगरा की ओर आ रहे अबुल-फजल को रास्ते में **वीर सिंह बुन्देला** नामक सरदार ने हत्या कर दी।
- मुगल सम्राट् अकबर ने **'अनुवाद विभाग'** की स्थापना की। नकीब खाँ, अब्दुल कादिर बदायूंनी तथा शेख सुल्तान ने रामायण एवं महाभारत का फारसी अनुवाद किया व महाभारत का नाम 'रज्मनामा' *(युद्धों की पुस्तक)* रखा।
- पंचतंत्र का फारसी भाषा में अनुवाद **अबुल फजल** ने **अनवर-ए-सादात** नाम से तथा **मौलाना हुसैन फैज** ने **यार-ए-दानिश** नाम से किया। हाजी इब्राहिम सरहदी ने अथर्ववेद का, मुल्लाशाह मोहम्मद ने राजतरंगिणी का, अब्दुर्रहीम खानखाना ने **'तुजुक-ए-बाबरी'** का तथा फैजी ने लीलावती का फारसी में अनुवाद किया। फैजी ने नल दमयन्ती *(सूरदास द्वारा रचित)* कथा का फारसी में अनुवाद कर उसका नाम **'सहेली'** रखा।
- अकबर के काल को **हिन्दी साहित्य** का स्वर्णकाल कहा जाता है।
- अकबर ने **बीरबल** को **कविप्रिय** एवं **नरहरि** को **महापात्र** की उपाधि प्रदान की।
- **बुलन्द दरवाजा** का निर्माण अकबर ने गुजरात-विजय के उपलक्ष्य में करवाया था।
- चार बाग बनाने की परंपरा अकबर के समय शुरू हुई।
- अकबर ने **शीरी कलम** की उपाधि **अब्दुस्समद** को एवं **जड़ी कलम** की उपाधि **मुहम्मद हुसैन कश्मीरी** को दिया।

नोट : *मुगलों की राजकीय भाषा फारसी थी।*

- अकबर नक्कारा *(नगाड़ा)* नामक वाद्ययंत्र बजाता था।

जहाँगीर *(1605 – 1627 ई.)*

- अकबर का उत्तराधिकारी **सलीम** हुआ, जो 24 अक्टूबर, 1605 ई. को **नूरुद्दीन मुहम्मद जहाँगीर बादशाही गाजी** की उपाधि धारण कर गद्दी पर बैठा।
- जहाँगीर का जन्म 30 अगस्त, 1569 ई. में हुआ था।
- अकबर ने अपने पुत्र का नाम सलीम सूफी संत शेख सलीम चिश्ती के नाम पर रखा।
- जहाँगीर को **न्याय की जंजीर** के लिए याद किया जाता है। यह जंजीर सोने की बनी थी, जो आगरा के किले के शाहबुर्ज एवं यमुना-तट पर स्थित पत्थर के खम्भे में लगवाई हुई थी।
- जहाँगीर द्वारा शुरू की गई **'तुजुक-ए-जहाँगीरी'** नामक आत्मकथा को पूरा करने का श्रेय **मौतबिंद खाँ** को है।
- जहाँगीर के सबसे बड़े पुत्र खुसरो ने 1606 ई. में अपने पिता के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। खुसरो और जहाँगीर की सेना के बीच युद्ध जालंधर के निकट **भैरावल** नामक मैदान में हुआ। खुसरो को पकड़कर कैद में डाल दिया गया।
- खुसरो की सहायता देने के कारण जहाँगीर ने सिक्खों के 5वें गुरु **अर्जुनदेव** को फाँसी दिलवा दी। खुसरो गुरु से गोइंदवाल में मिला था।
- अहमदनगर के वजीर **मलिक अम्बर** के विरुद्ध सफलता से खुश होकर जहाँगीर ने **खुर्रम** को **शाहजहाँ** की उपाधि प्रदान की।
- 1622 ई. में कंधार मुगलों के हाथ से निकल गया। शाह अब्बास ने इस पर अधिकार कर लिया।
- **नूरजहाँ** : ईरान निवासी मिर्जा गयास बेग की पुत्री नूरजहाँ का वास्तविक नाम **मेहरुन्निसा** था। 1594 ई. में नूरजहाँ का विवाह अलीकुली बेग से सम्पन्न हुआ। जहाँगीर ने एक शेर मारने के कारण अली कुली वेग को शेर अफगान की उपाधि प्रदान की। 1607 ई. में शेर अफगान की मृत्यु के बाद मेहरुन्निसा अकबर की विधवा सलीमा बेगम की सेवा में नियुक्त हुई। सर्वप्रथम जहाँगीर ने नवरोज त्योहार के अवसर पर मेहरुन्निसा को देखा और उसके सौंदर्य पर मुग्ध होकर जहाँगीर ने मई, 1611 ई. में उससे विवाह कर लिया। विवाह के पश्चात् जहाँगीर ने उसे नूरमहल एवं नूरजहाँ की उपाधि प्रदान की। नूरजहाँ के सम्मान में जहाँगीर ने चाँदी के सिक्के जारी किए।
- जहाँगीर ने गियास बेग को शाही दीवान बनाया एवं **इतमाद-उद-दौला** की उपाधि दी। जहाँगीर के शासनकाल में ईरानियों को उच्च पद प्राप्त हुए।
- **लाडली बेगम** शेर अफगान एवं मेहरुन्निसा की पुत्री थी, जिसकी शादी जहाँगीर के पुत्र **शहरयार** के साथ हुई थी।
- नूरजहाँ की माँ **अस्मत बेगम** ने **गुलाब से इत्र** निकालने की विधि खोजी थी।
- **महावत खाँ** ने झेलम नदी के तट पर 1626 ई. में जहाँगीर, नूरजहाँ एवं उसके भाई आसफ खाँ को बन्दी बना लिया था।
- जहाँगीर के पाँच पुत्र थे—1. खुसरो, 2. परवेज, 3. खुर्रम, 4. शहरयार, 5. जहाँदार।
- 28 अक्टूबर, 1627 को **भीमवार** नामक स्थान पर जहाँगीर की मृत्यु हो गयी। उसे **शहादरा** *(लाहौर)* में रावी नदी के किनारे दफनाया गया।
- मुगल चित्रकला अपने चरमोत्कर्ष पर **जहाँगीर** के शासनकाल में पहुँची।
- जहाँगीर के दरबार के प्रमुख चित्रकार थे—आगा रजा, अबुल हसन, मुहम्मद नासिर, मुहम्मद मुराद, उस्ताद मंसूर, विशनदास, मनोहर एवं गोवर्धन, फारुख बेग, दौलत।
- जहाँगीर ने आगा रजा के नेतृत्व में आगरा में एक **चित्रणशाला** की स्थापना की।

नोट : *हमजा नामा का विषय चित्रकला है।*

- उस्ताद मंसूर एवं अबुल हसन को जहाँगीर ने क्रमशः **नादिर-अल-उस** एवं **नादिरुज्जमा** की उपाधि प्रदान की। इसने संस्कृत के कवि जगन्नाथ को **'पंडितराज'** की उपाधि दी।

- जहाँगीर ने अपनी आत्मकथा में लिखा कि कोई भी चित्र चाहे वह किसी मृतक व्यक्ति या जीवित व्यक्ति द्वारा बनाया गया हो, मैं देखते ही तुरन्त बता सकता हूँ कि यह किस चित्रकार की कृति है। यदि किसी चेहरे पर आँख किसी एक चित्रकार ने, भौंह किसी और ने बनाई हो, तो भी यह जान लेता हूँ कि आँख किसने और भौंह किसने बनायी है।
- जहाँगीर के समय को **चित्रकला का स्वर्णकाल** कहा जाता है।
- इतमाद-उद-दौला का मकबरा 1626 ई. में नूरजहाँ बेगम ने बनवाया। मुगलकालीन वास्तुकला के अन्तर्गत निर्मित यह प्रथम ऐसी इमारत है, जो पूर्णरूप से बेदाग सफेद संगमरमर से निर्मित है। सर्वप्रथम इसी इमारत में **पितरा दुरा** नामक जड़ाऊ काम किया गया।
- अशोक के कौशाम्बी स्तम्भ *(वर्तमान में प्रयाग)* पर समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति तथा जहाँगीर का लेख उत्कीर्ण है।
- जहाँगीर के मकबरा का निर्माण **नूरजहाँ** ने करवाया था।
- जहाँगीर के शासनकाल में कैप्टन **हॉकिन्स**, *(प्रथम अंग्रेज)* **सर टॉमस रो**, **विलियम फिंच** एवं **एडवर्ड टैरी** जैसे यूरोपीय यात्री आए थे।

शाहजहाँ *(1627 – 1657 ई.)*

- जहाँगीर के बाद सिंहासन पर शाहजहाँ बैठा।
- जोधपुर के शासक मोटा राजा उदय सिंह की पुत्री **जगत गोसाई** के गर्भ से 5 जनवरी, 1592 ई. को खुर्रम *(शाहजहाँ)* का जन्म लाहौर में हुआ था। 1612 ई. में खुर्रम का विवाह आसफ खाँ की पुत्री **अरजुमन्द बानो बेगम** से हुआ, जिसे शाहजहाँ ने मलिका-ए-जमानी की उपाधि प्रदान की। 7 जून, 1631 ई. में प्रसव-पीड़ा के कारण उसकी मृत्यु हो गयी।
- 4 फरवरी, 1628 ई. को शाहजहाँ आगरा में अबुल मुजफ्फर शहाबुद्दीन मुहम्मद साहिब किरन-ए-सानी की उपाधि प्राप्त कर सिंहासन पर बैठा।
- शाहजहाँ ने आसफ खाँ को **वजीर** पद एवं महावत खाँ को **खानखाना** की उपाधि प्रदान की।
- इसने नूरजहाँ को दो लाख रुपये प्रतिवर्ष की पेंशन देकर लाहौर जाने दिया, जहाँ 1645 ई. में उसकी मृत्यु हो गयी।
- अपनी बेगम मुमताज महल की याद में शाहजहाँ ने ताजमहल का निर्माण आगरा में उसकी कब्र के ऊपर करवाया। **उस्ताद ईशा** ने ताजमहल की रूप-रेखा तैयार की थी।
- ताजमहल का निर्माण करनेवाला मुख्य स्थापत्य कलाकार **उस्ताद अहमद लाहौरी** था।
- मयूर सिंहासन का निर्माण शाहजहाँ ने करवाया था। इसका मुख्य कलाकार **बे बादल खाँ** था। बादशाह के सिंहासन के पीछे **पितरा-दुरा** के जड़ाऊ काम की एक शृंखला बनाई गयी थी, जिससे पौराणिक यूनानी देवता आर्फियस को वीणा बजाते हुए चित्रित किया गया है।
- शाहजहाँ के शासनकाल को **स्थापत्यकला का स्वर्णयुग** कहा जाता है। शाहजहाँ द्वारा बनवायी गयी प्रमुख इमारतें हैं—दिल्ली का लाल किला, दीवाने आम, दीवाने खास, दिल्ली का जामा मस्जिद आगरा का मोती मस्जिद, ताजमहल एवं लाहौर किला स्थित शीश महल आदि।

नोट : *हुमायूँ के मकबरा को ताजमहल का पूर्ववर्ती माना जाता है।*

- शाहजहाँ ने 1632 ई. में अहमदनगर को मुगल साम्राज्य में मिला लिया।
- शाहजहाँ ने 1638 ई. में अपनी राजधानी को **आगरा** से **दिल्ली** लाने के लिए यमुना नदी के दाहिने तट पर **शाहजहाँनाबाद** की नींव डाली।
- आगरे के जामा मस्जिद का निर्माण शाहजहाँ की पुत्री जहाँआरा ने करवाई।
- शाहजहाँ के दरबार के प्रमुख चित्रकार **मुहम्मद फकीर** एवं **मीर हासिम** थे।
- शाहजहाँ के दरबार में वंशीधर मिश्र एवं हरिनारायण मिश्र नाम के दो संस्कृत के कवि थे।
- शाहजहाँ ने संगीतज्ञ **लाल खाँ** को **'गुण समन्दर'** की उपाधि एवं संगीतज्ञ **जगन्नाथ** जो हिन्दी का कवि भी था, को महाकविराय की उपाधि से सम्मानित किया।
- शाहजहाँ के पुत्रों में दारा शिकोह सर्वाधिक विद्वान था। इसने भगवद्गीता, योगवशिष्ठ, उपनिषद् एवं रामायण का अनुवाद फारसी में करवाया। इसने **सर्र-ए-अकबर** *(महान रहस्य)* नाम से **उपनिषदों** का अनुवाद करवाया था। दारा शिकोह कादिरी सिलसिले के मुल्ला शाह बदख्शी का शिष्य था।
- शाहजहाँ ने दिल्ली में एक कॉलेज का निर्माण एवं दार्रुल बका नामक कॉलेज की मरम्मत करायी।
- सितम्बर, 1657 ई. में शाहजहाँ के गंभीर रूप से बीमार पड़ने और मृत्यु का अफवाह फैलने के कारण उसके पुत्रों के बीच उत्तराधिकार का युद्ध प्रारंभ हुआ। उस समय शूजा बंगाल, मुराद गुजरात एवं औरंगजेब दक्कन में था।
- 15 अप्रैल, 1658 ई. में दारा एवं औरंगजेब के बीच **धरमट का युद्ध** हुआ। इस युद्ध में दारा की पराजय हुई।
- **सामूगढ़ का युद्ध** 29 मई, 1658 ई. को दारा एवं औरंगजेब के बीच हुआ। इस युद्ध में भी दारा की हार हुई। उत्तराधिकार का अन्तिम युद्ध **देवराई की घाटी** में मार्च, 1659 ई. को हुआ। इस युद्ध में दारा के पराजित होने पर उसे इस्लाम धर्म की अवहेलना करने के अपराध में 30 अगस्त, 1659 ई. को हत्या कर दी गई। दारा शिकोह ने अपना निर्वासित जीवन अलवर *(राजस्थान)* के कंकबाड़ी किला में बिताया। इस किला का निर्माण जय सिंह-II ने किया था।
- **शाह बुलंद इकबाल** *(king of Lofty fortune)* के रूप में दारा शिकोह जाना जाता है।
- 8 जून, 1658 को औरंगजेब ने शाहजहाँ को बंदी बना लिया। आगरा के किले में अपने कैदी जीवन के आठवें वर्ष अर्थात् 22 जनवरी, 1666 को 74 वर्ष की अवस्था में शाहजहाँ की मृत्यु हो गयी।

औरंगजेब *(1658–1707 ई.)*

- औरंगजेब का जन्म 24 अक्टूबर, 1618 ई. को **दोहाद** *(गुजरात)* नामक स्थान पर हुआ था।
- औरंगजेब के बचपन का अधिकांश समय **नूरजहाँ** के पास बीता। 18 मई, 1637 को फारस के राजघराने की **'दिलरास बानो बेगम'** के साथ औरंगजेब का निकाह हुआ।
- आगरा पर कब्जा कर जल्दबाजी में औरंगजेब ने अपना राज्याभिषेक **'अबुल मुजफ्फर मुहउद्दीन मुजफ्फर औरंगजेब बहादुर आलमगीर'** की उपाधि से 31 जुलाई, 1658 ई. को करवाया। देवराई के युद्ध में सफल होने के बाद 15 मई, 1659 को औरंगजेब ने दिल्ली में प्रवेश किया और शाहजहाँ के शानदार महल में 5 जून, 1659 ई. को दूसरी बार राज्याभिषेक करवाया।
- औरंगजेब के गुरु थे—**मीर मुहम्मद हकीम**।
- औरंगजेब **सुन्नी धर्म** को मानता था, उसे **जिन्दा पीर** कहा जाता था।
- जय सिंह एवं शिवाजी के बीच पुरन्दर की संधि 22 जून, 1665 ई. को सम्पन्न हुई।
- मई, 1666 ई. को आगरा के किले के दीवान-ए-आम में औरंगजेब के समक्ष शिवाजी उपस्थित हुए। यहाँ शिवाजी को कैद कर **जयपुर भवन** में रखा गया। इस्लाम नहीं स्वीकार करने के कारण सिक्खों के 9वें **गुरु तेगबहादुर की हत्या** औरंगजेब ने 1675 ई. में दिल्ली में करवा दी थी।
- औरंगजेब ने 1679 ई. में **जजिया-कर** को पुनः लागू किया।
- औरंगजेब ने बीबी का मकबरा का निर्माण 1679 ई. में औरंगाबाद *(महाराष्ट्र)* में करवाया।
- 1685 ई. में **बीजापुर** एवं 1687 ई. में **गोलकुण्डा** को औरंगजेब ने मुगल साम्राज्य में मिला लिया।
- **मदन्ना** एवं **अकन्ना** नामक ब्राह्मणों का संबंध **गोलकुण्डा** के शासक **अबुल हसन** से था।

➢ औरंगजेब के समय हुए जाट विद्रोह का नेतृत्व गोकुला एवं राजाराम ने किया था। 1670 ई. में तिलपत की लड़ाई में जाट परास्त हुए। गोकुल को मौत के घाट उतार दिया गया। इसके बावजूद जाटों ने 1685 ई. में राजाराम के नेतृत्व में पुनः विद्रोह किया। इन जाटों ने सिकन्दरा में स्थित अकबर के मकबरे को भी लूटा। भरतपुर राजवंश की नींव औरंगजेब के शासनकाल में जाट नेता एवं राजाराम के भतीजा चूरामन ने डाली।

➢ औरंगजेब के समय में हिन्दू मनसबदारों की संख्या लगभग 337 थी, जो अन्य मुगल सम्राटों की तुलना में अधिक थी। औरंगजेब सर्वाधिक हिन्दू अधिकारियों की नियुक्ति करने वाला मुगल सम्राट था।

➢ औरंगजेब का पुत्र अकबर ने दुर्गादास के बहकावे में आकर अपने पिता के खिलाफ विद्रोह किया।

➢ औरंगजेब ने कुरान को अपने शासन का आधार बनाया। इसने सिक्के पर कलमा खुदवाना, नवरोज का त्योहार मनाना, भाँग की खेती करना, गाना-बजाना, झरोखा दर्शन, तुलादान प्रथा *(इस प्रथा में सम्राट को उसके जन्म-दिन पर सोने, चाँदी तथा अन्य वस्तुओं से तौलने की प्रथा थी। यह अकबर के जमाने में प्रारंभ हुई थी।)* आदि पर प्रतिबंध लगा दिया।

➢ औरंगजेब ने दरबार में संगीत पर पाबन्दी लगा दी तथा सरकारी संगीतज्ञों को अवकाश दे दिया गया। भारतीय शास्त्रीय संगीत पर फारसी में सबसे अधिक पुस्तकें औरंगजेब के ही शासनकाल में लिखी गयीं। औरंगजेब स्वयं वीणा बजाने में दक्ष था।

➢ औरंगजेब ने 1665 ई. में हिन्दू मंदिरों को तोड़ने का आदेश दिया। इसके शासनकाल में तोड़े गए मंदिरों में सोमनाथ का मंदिर, बनारस का विश्वनाथ मंदिर एवं वीर सिंह देव द्वारा जहाँगीर काल में मथुरा में निर्मित केशव राय मंदिर थे।

➢ औरंगजेब की मृत्यु 20 फरवरी, 1707 ई. को हुई। इसे खुलदाबाद *(Khuldabad)* जो अब रोजा *(Roza)* कहलाता है, में दफनाया गया। औरंगजेब के समय सूबों की संख्या 20 थी।

➢ औरंगजेब दारुल हर्ब *(काफिरों का देश)* को दारुल इस्लाम *(इस्लाम का देश)* में परिवर्तित करने को अपना महत्वपूर्ण लक्ष्य मानता था।

नोट : *औरंगजेब के शासनकाल में मुगल सेना में सर्वाधिक हिन्दू सेनापति थे।*

➢ फ्रांसीसी यात्री फ्रांकोइस बरनीयर औरंगजेब के चिकित्सक थे।

37. मुगल शासन व्यवस्था

➢ मंत्रिपरिषद् को विजारत कहा जाता था।

➢ बाबर के शासनकाल में वजीर पद काफी महत्वपूर्ण था।

➢ सम्राट् के बाद शासन के कार्यों को संचालित करने वाला सबसे महत्वपूर्ण अधिकारी वकील था जिसके कर्तव्यों को अकबर ने दीवान, मीरबख्शी, सद्र-उस-सद्र एवं मीर समन में विभाजित कर दिया।

➢ औरंगजेब के समय में असद खान ने सर्वाधिक 31 वर्षों तक दीवान के पद पर कार्य किया।

➢ मीरबख्शी द्वारा 'सरखत' नाम के पत्र पर हस्ताक्षर के बाद ही सेना को हर महीने वेतन मिल पाता था।

➢ जब कभी सद्र न्याय विभाग के प्रमुख का कार्य करता था, तब उसे काजी कहा जाता था।

➢ लगानहीन भूमि *(मदद-ए-माश)* का निरीक्षण सद्र करता था।

➢ सम्राट् के घरेलू विभागों का प्रधान मीर समा कहलाता था।

➢ सूचना एवं गुप्तचर विभाग का प्रधान दरोगा-ए-डाक चौकी कहलाता था।

➢ शरियत के प्रतिकूल कार्य करनेवालों को रोकना, आम जनता के दुश्चरित्रता से बचाने का कार्य मुहतसिब नामक अधिकारी करता था।

➢ प्रशासन की दृष्टि से मुगल साम्राज्य का बँटवारा सूबों में, सूबों का सरकार में, सरकार का परगना या महाल में, महाल का जिला या दस्तूर में और दस्तूर ग्राम में बँटे थे।

➢ प्रशासन की सबसे छोटी इकाई ग्राम थी, जिसे मावदा या दीह कहते थे। मावदा के अन्तर्गत छोटी-छोटी बस्तियों को नागला कहा जाता था।

मुगल काल के प्रमुख अधिकारी एवं कार्य

पद	कार्य
सूबेदार	प्रांतों में शान्ति स्थापित करना *(प्रांत कार्यकारिणी का प्रधान)*
दीवान	प्रांतीय राजस्व का प्रधान *(सीधे शाही दीवान के प्रति जवाबदेह)*
बख्शी	प्रांतीय सैन्य प्रधान
फौजदार	जिले का प्रधान फौजी अधिकारी
आमिल या अमलगुजार	जिले का प्रमुख राजस्व अधिकारी
कोतवाल	नगर प्रधान
शिकदार	परगने का प्रमुख अधिकारी
आमिल	ग्राम के कृषकों से प्रत्यक्ष संबंध बनाना एवं लगान निर्धारित करना

➢ शाहजहाँ के शासनकाल में सरकार एवं परगना के मध्य चकला नाम की एक नई इकाई की स्थापना की गयी थी।

➢ भूमिकर के विभाजन के आधार पर मुगल साम्राज्य की समस्त भूमि 3 वर्गों में विभाजित थी—

1. खालसा भूमि : प्रत्यक्ष रूप से बादशाह के नियंत्रण में।
2. जागीर भूमि : तनख्वाह के बदले दी जाने वाली भूमि।
3. सयूरगल या मदद-ए-माश : अनुदान में दी गई लगानहीन भूमि। इसे मिल्क भी कहा जाता था।

➢ शेरशाह द्वारा भू-राजस्व हेतु अपनायी जानेवाली पद्धति राई का उपयोग अकबर ने भी किया था।

➢ अकबर के द्वारा करोड़ी नामक अधिकारी की नियुक्ति 1573 ई. में की गयी थी। इसे अपने क्षेत्र से एक करोड़ दाम वसूल करना होता था।

➢ 1580 ई. में अकबर ने दहसाला नाम की नवीन कर प्रणाली प्रारंभ की। इस व्यवस्था को 'टोडरमल बन्दोबस्त' भी कहा जाता है। इस व्यवस्था के अन्तर्गत भूमि को चार भागों में विभाजित किया गया—

1. पोलज : इसमें नियमित रूप से खेती होती थी। *(वर्ष में दो बार फसल)*
2. परती : इस भूमि पर एक या दो वर्ष के अन्तराल पर खेती की जाती थी।
3. चाचर : इस पर तीन से चार वर्ष के अन्तराल पर खेती की जाती थी।
4. बंजर : यह खेती योग्य भूमि नहीं थी, इस पर लगान नहीं वसूला जाता था।

➢ 1570-71 ई. में टोडरमल ने खालसा भूमि पर भू-राजस्व की नवीन प्रणाली जब्ती प्रारंभ की। इसमें कर-निर्धारण की दो श्रेणी थी, एक को तखशीस एवं दूसरे को तहसील कहते थे।

➢ औरंगजेब ने अपने शासनकाल में नस्क प्रणाली को अपनाया और भू-राजस्व की राशि को उपज का आधा कर दिया।

➢ मुगल काल में कृषक तीन वर्गों में विभाजित थे—

1. खुदकाश्त : ये किसान उसी गाँव की भूमि पर खेती करते थे, जहाँ के वे निवासी थे।
2. पाही काश्त : ये दूसरे गाँव जाकर कृषि-कार्य करते थे।
3. मुजारियन : खुदकाश्त कृषकों से भूमि किराये पर लेकर कृषि-कार्य करते थे।

➢ मुगल काल में रुपये की सर्वाधिक ढलाई औरंगजेब के समय में हुई।

➢ आना सिक्के का प्रचलन शाहजहाँ ने करवाया।

➢ जहाँगीर ने अपने समय में सिक्कों पर अपनी आकृति बनवायी, साथ ही उस पर अपना एवं नूरजहाँ का नाम अंकित करवाया।

मुगलकालीन लगान वसूल करने की व्यवस्थाएँ

गल्ला बख्शी	इसमें फसल का कुछ भाग सरकार द्वारा ले लिया जाता था।
नसक	इसमें खड़ी फसल के आधार पर लगान का अनुमान लगाकर फसल कटने पर उसे ले लिया जाता था। यह व्यवस्था बंगाल में थी।
जब्ती	इसमें बोयी गयी फसल के आधार पर लगान का निश्चय किया जाता था, जो नकद लिया जाता था।

➢ सबसे बड़ा सिक्का शंसब सोना का था। स्वर्ण का सबसे प्रचलित सिक्का इलाही था।

➢ मुगलकालीन अर्थव्यवस्था का आधार चाँदी का रुपया था।

- दैनिक लेन-देन के लिए ताँबे के दाम का प्रयोग होता था। एक रुपया में 40 दाम होते थे।
- मुगल सेना चार भागों में विभक्त थी—
  1. पैदल सेना, 2. घुड़सवार सेना, 3. तोपखाना और 4. हाथी सेना।
- मुगलकालीन सैन्य व्यवस्था पूर्णतः मनसबदारी प्रथा पर आधारित थी। इसे अकबर ने प्रारंभ किया था।
- 10 से 500 तक मनसब प्राप्त करनेवाले मनसबदार, 500 से 2500 तक मनसब प्राप्त करनेवाले उमरा एवं 2500 से ऊपर तक मनसब प्राप्त करनेवाले अमीर-ए-आजम कहलाते थे।
- जात से व्यक्ति के वेतन एवं प्रतिष्ठा का ज्ञान होता था, सवार पद से घुड़सवार दस्तों की संख्या का ज्ञान होता था।

नोट : *अकबर के शासनकाल में 29 ऐसे मनसबदार थे जो 5000 जात की पदवी के थे। औरंगजेब के शासनकाल तक ऐसे मनसबदारों की संख्या 79 थी।*

- जहाँगीर ने सवार पद में दो-अस्पा एवं सिह-अस्पा की व्यवस्था की। सर्वप्रथम यह पद महाबत खाँ को दिया गया।

38. मराठों का उत्कर्ष

- मराठा साम्राज्य का संस्थापक शिवाजी थे। शिवाजी का जन्म 6 अप्रैल, 1627 ई. में शिवनेर दुर्ग *(जुन्नार के समीप)* में हुआ था।*
- शिवाजी के पिता का नाम शाहजी भोंसले एवं माता का नाम जीजाबाई था।
- शाहजी भोंसले की दूसरी पत्नी का नाम तुकाबाई मोहिते था।
- शिवाजी के गुरु कोंडदेव थे।
- आध्यात्मिक क्षेत्र में शिवाजी के आचरण पर गुरु रामदास का काफी प्रभाव था।
- शिवाजी का विवाह साइबाई निम्बालकर से 1640 ई. में हुआ।
- शाहजी ने शिवाजी को पूना की जागीर प्रदान कर स्वयं बीजापुर रियासत में नौकरी कर ली।
- अपने सैन्य अभियान के अन्तर्गत 1644 ई. में शिवाजी ने सर्वप्रथम बीजापुर के तोरण नामक पहाड़ी किले पर अधिकार किया।
- 1656 ई. में शिवाजी ने रायगढ़ को अपनी राजधानी बनाया।
- शिवाजी को राजा की उपाधि औरंगजेब ने दी थी
- बीजापुर के सुल्तान ने अपने योग्य सेनापति अफजल खाँ को सितम्बर, 1659 ई. में शिवाजी को पराजित करने के लिए भेजा। शिवाजी ने 10 नवम्बर, 1659 को अफ़जल खाँ की हत्या कर दी।
- शिवाजी ने सूरत को 1664 ई. एवं 1670 ई. में लूटा।
- पुरन्दर की संधि 1665 ई. में महाराजा जयसिंह एवं शिवाजी के मध्य सम्पन्न हुई।
- 1672 ई. में शिवाजी ने पन्हाला दुर्ग को बीजापुर से छीना।
- 5 जून, 1674 ई. को शिवाजी ने रायगढ़ में वाराणसी *(काशी)* के प्रसिद्ध विद्वान श्री गंगाभट्ट द्वारा अपना राज्याभिषेक करवाया। मूल रूप से गंगाभट्ट महाराष्ट्र का एक सम्मानित ब्राह्मण था, जो लंबे समय से वाराणसी में रह रहा था।
- शिवाजी को औरंगजेब ने मई, 1666 ई. में जयपुर भवन में कैद कर लिया, जहाँ से वे 16 अगस्त, 1666 ई. में भाग निकले।
- मात्र 53 वर्ष की आयु में 3 अप्रैल, 1680 को शिवाजी की मृत्यु हो गयी।
- शिवाजी के मंत्रीमंडल को अष्टप्रधान कहा जाता था। अष्टप्रधान में पेशवा का पद सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं सम्मान का होता था।
- शिवाजी ने दरबार में मराठी को भाषा के रूप में प्रयोग किया।
- शिवाजी की सेना तीन महत्वपूर्ण भागों में विभक्त थी—
  1. पागा सेना : नियमित घुड़सवार सैनिक।
  2. सिलहदार : अस्थायी घुड़सवार सैनिक।
  3. पैदल : पैदल सेना।
- शिवाजी को तोपें अंग्रेजों ने प्रदान की थी।

* *द गजेटियर ऑफ इंडिया (V–II) P. 334, , 335, कुछ अन्य स्रोतों में शिवाजी का जन्म 19 फरवरी 1630 में बताया गया है।*

महाराष्ट्र के प्रमुख संत

1. ज्ञानदेव या ज्ञानेश्वर *(1275–1296 ई.)* : महाराष्ट्र में भक्ति आंदोलन के जनक, मराठी भाषा और साहित्य के संस्थापक, भगवत्गीता पर भावार्थदीपिका नामक बृहत टीका लिखी, जिसे सामान्य रूप से ज्ञानेश्वरी के नाम से जाना जाता है।
2. नामदेव *(1270–1350 ई.)* : इनके आराध्य देव पंढरपुर के बिठोबा या विट्ठल *(विष्णु के रूप)* थे। बिठोबा या विट्ठल की उपासना को वरकरी संप्रदाय के नाम से जाना जाता है, जिसकी स्थापना नामदेव ने की थी। इनमें कुछ पद गुरुग्रन्थ साहिब में संकलित है।
3. एकनाथ *(1533–1599 ई.)* : इन्होंने रामायण पर भावार्थ रामायण नामक टीका लिखी।
4. तुकाराम *(1598–1650 ई.)* : इन्होंने भक्तिपरक कविताएँ लिखी जिन्हें अभंग कहा जाता है। ये अभंग भक्तिपरक काव्य के ज्योतिपुंज है।
5. रामदास *(1608–1681 ई.)* : महाराष्ट्र के अंतिम महान संत कवि। दशबोध उनकी रचनाओं और उपदेशों का संकलन है।

- मराठा राज्य के अंतर्गत दो प्रकार के क्षेत्र होते थे—
  1. स्वराज : जो क्षेत्र प्रत्यक्षतः मराठों के नियंत्रण में थे, उन्हें स्वराज क्षेत्र कहा जाता था।
  2. मुघतई *(मुल्क-ए-कदीम)* : यह वह क्षेत्र था जिसमें वे चौथ एवं सरदेशमुखी वसूल करते थे।

नोट : *चौथ एवं सरदेशमुखी स्वराज से नहीं लिए जाते थे बल्कि उन जगहों से लिए जाते थे जहाँ मुगल या दक्कनी राजाओं का शासन था। चौथ भूराजस्व का एक चौथाई था जो मराठों के उस क्षेत्र पर आक्रमण नहीं करने के लिए दिया जाता था। सरदेशमुखी 10% का अतिरिक्त अधिभार था जो उस क्षेत्र से लिया जाता था जो मुगलों के अधीन था पर मराठा उस पर दावा करते थे।*

- सरंजामी प्रथा का संबंध मराठा भूराजस्व व्यवस्था से है।

अष्टप्रधान	
पेशवा *(प्रधानमंत्री)*	राज्य का प्रशासन एवं अर्थव्यवस्था की देख-रेख
सरी-ए-नौबत *(सेनापति)*	सैन्य प्रधान
अमात्य *(राजस्व मंत्री)*	आय-व्यय का लेखा-जोखा
वाकयानवीस	सूचना, गुप्तचर एवं संधि-विग्रह के विभागों का अध्यक्ष
चिटनिस	राजकीय पत्रों को पढ़कर उसकी भाषा-शैली को देखना।
सुमन्त	विदेश मंत्री
पंडित राव	धार्मिक कार्यों के लिए तिथि का निर्धारण
न्यायाधीश	न्याय विभाग का प्रधान

- शिवाजी की कर-व्यवस्था मलिक अम्बर की कर-व्यवस्था पर आधारित थी। शिवाजी ने रस्सी द्वारा माप की व्यवस्था के स्थान पर काठी एवं मानक छड़ी के प्रयोग को आरंभ किया। शिवाजी ने 1679 में अन्नाजी दत्तो द्वारा व्यापक भूमि सर्वेक्षण करवाया।
- शिवाजी के समय कुल उपज का 33% भाग राजस्व के रूप में वसूला जाता था, जो बढ़ कर 40% हो गया था।
- शिवाजी ने मुगल व्यापारिक केन्द्र सूरत को दो बार *(1664 एवं 1670 ई.)* में लूटा।

शिवाजी के उत्तराधिकारी

- शिवाजी का उत्तराधिकारी शम्भाजी था। शम्भाजी ने उज्जैन के हिन्दी एवं संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान कवि कलश को अपना सलाहकार नियुक्त किया।
- मार्च, 1689 ई. को मुगल सेनापति मखर्रब खाँ ने संगमेश्वर में छिपे हुए शम्भाजी एवं कवि कलश को गिरफ्तार कर लिया और उसकी हत्या कर दी।
- शम्भाजी के बाद 1689 ई. में राजाराम को नए छत्रपति के रूप में राज्याभिषेक किया गया।
- राजाराम ने अपनी दूसरी राजधानी सतारा को बनाया।

शिवाजी के किले की सुरक्षा के लिए नियुक्तअधिकारी

हवलदार	किले की आंतरिक व्यवस्था की देख-रेख।
सरेनौबत	किले की सेना का नेतृत्व।
सबनिस	किले की अर्थव्यवस्था, पत्र-व्यवहार एवं भंडार की देख-रेख।

➢ राजाराम मुगलों से संघर्ष करता हुआ 2 मार्च, 1700 में मारा गया।
➢ राजाराम की मृत्यु के बाद उसकी विधवा पत्नी ताराबाई अपने 4 वर्षीय पुत्र शिवाजी-II का राज्याभिषेक करवाकर मराठा साम्राज्य की वास्तविक संरक्षिका बन गई।
➢ 1707 ई. में औरंगजेब की मृत्यु के बाद शम्भाजी के पुत्र साहू *(जो औरंगजेब के कब्जे में था)* भोपाल के निकट के मुगल शिविर से वापस महाराष्ट्र आया।
➢ साहू एवं ताराबाई के बीच 1707 ई. में खेड़ा का युद्ध हुआ, जिसमें साहू विजयी हुआ।
➢ साहू ने 22 जनवरी, 1708 ई. को सतारा में अपना राज्याभिषेक करवाया।
➢ साहू के नेतृत्व में नवीन मराठा साम्राज्यवाद के प्रवर्त्तक पेशवा लोग थे, जो साहू के पैतृक प्रधानमंत्री थे। पेशवा पद पहले पेशवा के साथ ही वंशानुगत हो गया था। पेशवा पुणे में रहता था।
➢ 1713 ई. में साहू ने बालाजी विश्वनाथ को पेशवा बनाया। इनकी मृत्यु 1720 ई. में हुई। इसके बाद पेशवा बाजीराव प्रथम हुए।
➢ पेशवा बाजीराव प्रथम ने मुगल साम्राज्य की कमजोर हो रही स्थिति का फायदा उठाने के लिए साहू को उत्साहित करते हुए कहा कि आओ, हम इस पुराने वृक्ष के खोखले तने पर प्रहार करें, शाखाएँ तो स्वयं गिर जायेगी, हमारे प्रयत्नों से मराठा पताका कृष्णा नदी से अटक तक फहराने लगेगी। उत्तर में साहू ने कहा—निश्चित रूप से ही आप इसे हिमालय के पार गाड़ देंगे, निःसन्देह आप योग्य पिता के योग्य पुत्र हैं।
➢ पालखेड़ा का युद्ध 7 मार्च, 1728 ई. बाजीराव प्रथम एवं निजामुल मुल्क के बीच हुआ जिसमें निजाम की हार हुई। निजाम के साथ मुंगी शिवागांव की संधि हुई।
➢ दिल्ली पर आक्रमण करने वाला प्रथम पेशवा बाजीराव प्रथम था, जिसने 29 मार्च, 1737 को दिल्ली पर धावा बोला था। उस समय मुगल बादशाह मुहम्मदशाह दिल्ली छोड़ने के लिए तैयार हो गया था।
➢ बाजीराव प्रथम मस्तानी नामक महिला से संबंध होने के कारण चर्चित रहा था।

अंग्रेज-मराठा संघर्ष के अन्तर्गत होनेवाली प्रमुख संधियाँ

संधियाँ	वर्ष
सूरत की संधि	1775
पुरन्दर की संधि	1776
बड़गाँव की संधि	1779
सालाबाई की संधि	1782
बसीन की संधि	1802
देवगाँव की संधि	1803
सुर्जी अर्जुनगाँव की संधि	1803
राजापुर घाट की संधि	1804
नागपुर की संधि	1816
ग्वालियर की संधि	1817
पूना की संधि	1817
मंदसौर की संधि	1818

➢ 1740 ई. में बाजीराव प्रथम की मृत्यु हो गयी।
➢ बाजीराव प्रथम की मृत्यु के बाद बालाजी बाजीराव 1740 ई. में पेशवा बना।
➢ 1750 ई. में संगोला संधि के बाद पेशवा के हाथ में सारे अधिकार सुरक्षित हो गए।
➢ बालाजी बाजीराव को नाना साहब के नाम से भी जाना जाता था।
➢ झलकी की संधि हैदराबाद के निजाम एवं बालाजी बाजीराव के मध्य हुई।
➢ बालाजी बाजीराव के समय में ही पानीपत का तृतीय युद्ध *(14 जनवरी, 1761)* हुआ, जिसमें मराठों की हार हुई। इस हार को नहीं सह पाने के कारण बालाजी की मृत्यु 1761 ई. में हो गयी।
➢ माधवराव नारायण प्रथम 1761 ई. में पेशवा बना। इसने मराठों की खोयी हुई प्रतिष्ठा को पुनः प्राप्त करने का प्रयास किया।
➢ माधवराव ने ईस्ट इंडिया कंपनी की पेंशन पर रह रहे मुगल बादशाह शाह आलम-II को पुनः दिल्ली की गद्दी पर बैठाया। मुगल बादशाह अब मराठों का पेंशनभोगी बन गया।
➢ पेशवा नारायण राव *(1772-73 ई.)* की हत्या उसके चाचा रघुनाथ राव के द्वारा कर दी गई।
➢ पेशवा माधवराव नारायण-II की अल्पायु के कारण मराठा राज्य की देख-रेख बारहभाई सभा नाम की 12 सदस्यों की एक परिषद् करती थी। इस परिषद् के दो महत्वपूर्ण सदस्य थे—महादजी सिंधिया एवं नाना फड़नबीस। नाना फड़नबीस का मूल नाम बालाजी जनार्दन भानु था। अंग्रेज जेम्स ग्रांट डफ ने इन्हें मराठों का मैकियावेली कहा था।
➢ अंतिम पेशवा राघोवा का पुत्र बाजीराव-II था, जो अंग्रेजों की सहायता से पेशवा बना था। मराठों के पतन में सर्वाधिक योगदान इसी का था। यह सहायक संधि स्वीकार करने वाला प्रथम मराठा सरदार था।
➢ 1776 ई. में पुरन्दर की संधि हुई। इसके तहत कंपनी ने रघुनाथ राव के समर्थन को वापस ले लिया।
➢ प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध : प्रथम युद्ध 1782 ई. में सालबाई संधि के साथ खत्म हुआ।
➢ द्वितीय आँग्ल-मराठा युद्ध : 1803-05 ई. में हुआ। इसमें भोंसले *(नागपुर)* ने अंग्रेजों को चुनौती दी। इसके फलस्वरूप 7 सितम्बर, 1803 ई. को देवगाँव की संधि हुई।
➢ तृतीय आँग्ल-मराठा युद्ध : 1817-19 ई. में हुआ। इस युद्ध के बाद मराठा शक्ति और पेशवा के वंशानुगत पद को समाप्त कर दिया गया।
➢ पेशवा बाजीराव-II ने कोरेगाँव एवं अष्टी के युद्ध में हारने के बाद फरवरी, 1818 ई. में मेल्कम के सम्मुख आत्मसमर्पण कर दिया। अंग्रेजों ने पेशवा के पद को समाप्त कर बाजीराव-II को पुणे से हटाकर कानपुर के निकट बिठूर में पेंशन पर जीने के लिए भेज दिया, जहाँ 1853 ई. में इसकी मृत्यु हो गयी।

आधुनिक भारत

39. उत्तरकालीन मुगल सम्राट्

➢ उत्तराधिकार युद्ध में गुरु गोविन्द सिंह ने बहादुरशाह का साथ दिया था।

मुगलों से स्वतंत्र होने वाले राज्य एवं संस्थापक

	राज्य	संस्थापक
1.	अवध	सआदत खाँ
2.	हैदराबाद	चिनकिलिच खाँ या निजाम-उल-मुल्क आसफ़ जाह
3.	रुहेलखंड	वीर दाऊद एवं अली मुहम्मद खाँ
4.	बंगाल	मुर्शिदकुली खाँ
5.	कर्नाटक	सादुतुल्ला खाँ
6.	भरतपुर	चूरामन एवं बदन सिंह

नोट : *मुगल सम्राट मुहम्मद शाह ने सआदत खाँ को बुरहान-उल-मुल्क की उपाधि दी। सआदत खाँ का असली नाम मीर मुहम्मद अमीन था।*

➢ बहादुरशाह का पूर्व नाम मुअज्जम था।
➢ बहादुरशाह को शाह-ए-खबर के उपनाम से पुकारा जाता था।
➢ जहाँदारशाह अपने शासन में लाल कुमारी नाम की वेश्या को हस्तक्षेप करने का आदेश दे रखा था।
➢ मुगलकालीन इतिहास में सैयद बन्धु हुसैन अली खाँ एवं अब्दुल्ला खाँ को शासक निर्माता के रूप में जाना जाता है।
➢ जहाँदार शाह को लम्पट मूर्ख भी कहा जाता था।
➢ फर्रुखशियर को मुगल वंश का घृणित कायर कहा गया है।
➢ सुन्दर युवतियों के प्रति अत्यधिक रुझान के कारण मुहम्मदशाह को रंगीला बादशाह कहा जाता था। एक संगीतकार के रूप में मोहम्मदशाह ने अनेक खयालों की रचना की।
➢ तुरानी सैनिक हैदर बेग ने 9 अक्टूबर, 1720 ई. को सैय्यद बन्धु हुसैन अली खाँ की हत्या कर दी।

- मोहम्मदशाह के शासनकाल में ही हैदराबाद के चिनकिलिच खाँ ने निजाम-उल-मुल्क की उपाधि धारण की और 1725 ई. में स्वतंत्र राज्य की स्थापना की।

नोट : *हैदराबाद की स्थापना तुरानियों ने एवं अवध की स्थापना ईरानियों ने की थी।*

- ईरान *(फ़ारस)* के सम्राट **नादिरशाह** ने 1739 ई. में दिल्ली पर आक्रमण किया। उस समय दिल्ली का शासक **मुहम्मदशाह** था। नादिरशाह को ईरान का नेपोलियन कहा जाता है।
- नादिर शाह लगभग 70 करोड़ रुपये की धनराशि और शाहजहाँ का बनवाया हुआ तख्ते ताऊस *(Peacock throne)* तथा कोहिनूर हीरा लेकर फ़ारस वापस लौटा।
- **तख्ते ताऊस** *(मयूर सिंहासन)* पर बैठने वाला अंतिम मुगल शासक **मुहम्मदशाह** था।
- शाह आलम-II *(अली गौहर)* के शासनकाल में 1803 ई. में अंग्रेजों ने **दिल्ली** पर कब्जा कर लिया।

उत्तरकालीन मुगल सम्राट्	
बहादुरशाह	1707–1712 ई.
जहाँदार शाह	1712–1713 ई.
फर्रुखशियर	1713–1719 ई.
मुहम्मदशाह	1719–1748 ई.
अहमदशाह	1748–1754 ई.
आलमगीर-II	1754–1759 ई.
शाह आलम-II	1759–1806 ई.
अकबर-II	1806–1837 ई.
बहादुरशाह जफर	1837–1857 ई.

- **पानीपत का तृतीय युद्ध** 1761 ई. में मराठा एवं अहमदशाह अब्दाली की सेना के बीच हुआ। इस युद्ध में मराठों की हार हुई थी।

नोट : *अहमदशाह अब्दाली का वास्तविक नाम **अहमद खाँ** था। इसने **आठ बार** भारत पर आक्रमण किया।*

- गुलाम कादिर खाँ ने 1806 में **शाह आलम-II** की हत्या करवा दी।
- बहादुरशाह-II *(जफर)* अंतिम मुगल सम्राट् था।
- 1857 ई. की क्रांति में भाग लेने के कारण अंग्रेजों द्वारा बहादुरशाह जफ़र को बंदी बना लिया गया एवं **रंगून** भेज दिया।
- लाल किला स्थित **हीरा महल** बहादुरशाह जफर ने बनवाया था।
- मशहूर शायर मिर्जा गालिब बहादुरशाह जफर के ही समय दिल्ली में रहते थे।
- **हयात बक्श बाग** लाल किला दिल्ली में स्थित है।

40. भारत में यूरोपीय व्यापारिक कम्पनियों का आगमन

- 17 मई, 1498 ई. में वास्को-डि-गामा ने भारत के पश्चिमी तट पर स्थित **कालीकट** बन्दरगाह पहुँचकर भारत एवं यूरोप के बीच नए समुद्री मार्ग की खोज की। इस यात्रा में वास्को-डि-गामा को भारतीय व्यापारी **अब्दुल मजीद** ने सहयोग किया था।
- 1505 ई. में **फ्रांसिस्को द अल्मेडा** भारत में प्रथम पुर्तगाली वायसराय बनकर आया।
- 1509 ई. में **अलफांसो द अल्बुकर्क** भारत में पुर्तगालियों का वायसराय बना। इसने 1510 ई. में बीजापुर के **युसुफ आदिल शाह** से गोवा को जीता।
- पुर्तगालियों ने अपनी पहली व्यापारिक कोठी **कोचीन** में खोली।
- दक्षिणी-पूर्वी तट पर पुर्तगालियों की एक मात्र बस्ती **सन-थोमे** थी।
- पुर्तगालियों के बाद भारत में डच लोग आए। पहला डच यात्री कार्नेलियन हाऊटमैन *(Cornelis de Houtman)* 1596 ई. में भारत के पूर्व सुमात्रा पहुँचा।
- डचों ने भारत में अपनी प्रथम व्यापारिक कोठी *(फैक्ट्री)* 1605 ई. में **मसूलीपट्टम** में स्थापित की। डचों की दूसरी व्यापारिक कोठी **पुलीकट** में स्थापित हुई जहाँ उन्होंने अपने स्वर्ण सिक्के *(पैगोडा)* को ढाला और पुलीकट को ही समस्त गतिविधियों का केन्द्र बनाया।

कम्पनी	स्थापना-वर्ष
पुर्तगाली ईस्ट इंडिया कम्पनी	1498 ई.
अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कम्पनी	1600 ई.
डच ईस्ट इंडिया कम्पनी	1602 ई.
डैनिश ईस्ट इंडिया कम्पनी	1616 ई.
फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कम्पनी	1664 ई.
स्वीडिश ईस्ट इंडिया कम्पनी	1731 ई.

- डचों ने भारत में प्रथम बार औद्योगिक वेतनभोगी रखे।
- डचों का भारत में अन्तिम रूप से पतन 1759 ई. को अंग्रेजों एवं डचों के मध्य हुए **बेदरा युद्ध** से हुआ।
- 31 दिसम्बर, 1600 ई. को इंग्लैंड की रानी एलिजाबेथ प्रथम ने ईस्ट इंडिया कम्पनी को अधिकार-पत्र प्रदान किया।
- प्रारंभ में ईस्ट इंडिया कम्पनी में 217 साझीदार थे और पहला गवर्नर **टॉमस स्मिथ** था।
- मुगल दरबार में जाने वाला प्रथम अंग्रेज **कैप्टन हॉकिन्स** था, जो **जेम्स प्रथम** के राजदूत के रूप में अप्रैल 1609 ई. में जहाँगीर के दरबार में गया था।

नोट : *भारत आने वाला पहला अंग्रेजी जहाज रेड ड्रैगन था।*

- 1611 ई. में द.-पू. समुद्रतट पर सर्वप्रथम अंग्रेजों ने मसूलीपट्टम में व्यापारिक कोठी की स्थापना की।
- जहाँगीर ने 1613 ई. में एक फरमान जारी कर अंग्रेजों को सूरत में थॉमस एल्डवर्थ *(Thomas Aldworth)* के अधीन व्यापारिक कोठी *(फैक्ट्री)* खोलने की इजाजत दी।

नोट : *पूर्वी तट पर अंग्रेजों ने अपना प्रथम व्यापारिक कोठी मसूलीपट्टम में 1611 ई. में खोला, जबकि पश्चिमी तट पर सूरत में 1613 ई. में व्यापारिक कोठी स्थापित किया। पहली बार सूरत में 1608 ई. में व्यापारिक कोठी स्थापित करने का प्रयास किया गया था।*

- 1615 ई. में सम्राट जेम्स–I ने **'सर टॉमस रो'** को अपना राजदूत बनाकर मुगल सम्राट जहाँगीर के दरबार में भेजा। रो फरवरी 1619 ई. तक भारत में रहा। रो जहाँगीर एवं खुर्रम *(शाहजहाँ)* से अंग्रेजों के लिए कुछ व्यापारिक छूट प्राप्त करने में सफल हुआ।
- 1632 ई. में गोलकुण्डा के सुल्तान ने अँग्रेजों को एक **सुनहला फरमान** *(Golden Farman)* दिया जिसके अनुसार अँग्रेज सुल्तान को 500 पैगोडा वार्षिक कर देकर गोलकुण्डा राज्य के बन्दरगाह पर स्वतंत्रतापूर्वक व्यापार कर सकते थे।
- 1639 ई. में अंग्रेज **फ्रांसिस डे** ने चन्द्रगिरि के राजा से मद्रास पट्टे पर लिया एवं वहीं एक किलाबन्द कोठी का निर्माण किया; इस कोठी का नाम **फोर्ड सेन्ट जार्ज** पड़ा और यही फोर्ड सेन्ट जार्ज कालान्तर में कोरोमंडल तट पर अंग्रेजी मुख्यालय बना।
- 1661 ई. में पुर्तगाली राजकुमारी 'कैथरीन ऑफ ब्रेगेन्जा *(Catharine of Braganza)* एवं ब्रिटेन के राजकुमार **'चार्ल्स द्वितीय'** का विवाह हुआ। इस अवसर पर दहेज के रूप में पुर्तगालियों ने चार्ल्स–II को बम्बई प्रदान किया।
- 1668 ई. में चार्ल्स–II ने बम्बई को 10 पौण्ड के वार्षिक किराये पर ईस्ट इंडिया को दे दिया।
- 1687 ई. में अंग्रेजों ने पश्चिमी तट का मुख्यालय सूरत से हटाकर बम्बई को बनाया।

नोट : *गेराल्ड औंगियर (1669–1677 ई.) (सूरत का **प्रेसीडेन्ट** एवं बम्बई का गवर्नर) ने बम्बई शहर की स्थापना की।*

- बंगाल के शासक शाहशुजा ने सर्वप्रथम 1651 ई. में अंग्रेजों को व्यापारिक छूट की अनुमति दी। इस अनुमति को **निशान** कहते थे।
- 1698 ई. में अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कम्पनी ने तीन गाँव—**सूतानुती, कालीकट** एवं **गोविन्दपुर** की जमींदारी 1200 रुपये भुगतान कर प्राप्त की और यहाँ पर फोर्ट विलियम का निर्माण किया। चार्ल्स आयर फोर्ट विलियम के प्रथम प्रेसीडेन्ट हुए। कालान्तर में यही कलकत्ता *(कोलकाता)* नगर कहलाया, जिसकी नींव **जॉर्ज चारनौक** ने रखी।
- भारत में फ्रांसीसियों की प्रथम कोठी **फ्रैंको कैरों** के द्वारा **सूरत** में 1668 ई. में स्थापित की गयी।
- 1674 ई. में फ्राँसीसी कम्पनी के निदेशक **फ्रेंक्विस मार्टिन** ने वालिकोंडापुर के सूबेदार शेर खाँ लोदी से **पुदुचेरी** नामक एक गाँव प्राप्त किया, जो कालान्तर में पाण्डिचेरी के नाम से जाना गया।
- प्रथम कर्नाटक युद्ध 1746-48 ई. में **आस्ट्रिया के उत्तराधिकार युद्ध** से प्रभावित था। 1748 ई. में हुई **एं-ला-शापल की संधि** के द्वारा आस्ट्रिया का उत्तराधिकार युद्ध समाप्त हो गया और इसी संधि के तहत प्रथम कर्नाटक युद्ध समाप्त हुआ।

➢ दूसरा कर्नाटक युद्ध 1749–1754 ई. में हुआ। इस युद्ध में फ्रांसीसी गवर्नर डूप्ले की हार हुई। उसे वापस बुला लिया गया और उसकी जगह पर गोडेहू को भारत में अगला फ्रांसीसी गवर्नर बनाया गया। पांडिचेरी की संधि *(जनवरी, 1755 ई.)* के साथ युद्ध-विराम हुआ।
➢ कर्नाटक का तीसरा युद्ध 1756–1763 ई. के बीच हुआ जो 1756 ई. में शुरू हुए सप्तवर्षीय युद्ध का ही एक अंश था। पेरिस की संधि होने पर यह युद्ध समाप्त हुआ।
➢ 1760 ई. में अंग्रेजी सेना ने सर आयरकूट के नेतृत्व में वांडिवाश की लड़ाई में फ्रांसीसियों को बुरी तरह हराया।
➢ 1761 ई. में अंग्रेजों ने पांडिचेरी को फ्रांसीसियों से छीन लिया।
➢ 1763 ई. में हुई पेरिस संधि के द्वारा अंग्रेजों ने चन्द्रनगर को छोड़कर शेष अन्य प्रदेशों को लौटा दिया, जो 1749 ई. तक फ्रांसीसी कब्जे में थे, ये प्रदेश भारत की आजादी तक फ्रांसीसियों के कब्जे में रहे।

41. बंगाल पर अंग्रेजों का आधिपत्य

➢ मुगल साम्राज्य के अन्तर्गत आनेवाले प्रांतों में बंगाल सर्वाधिक सम्पन्न राज्य था।
➢ मुर्शीद कुली खाँ स्वतंत्र शासक था, परन्तु वह नियमित रूप से मुगल बादशाह को राजस्व भेजता था।
➢ मुर्शीद कुली खाँ ने अपनी राजधानी ढाका से मुर्शिदाबाद *(भागीरथी नदी के तट पर)* स्थानान्तरित की। इसने इजारेदारी प्रथा प्रारंभ की तथा कृषकों को तकाबी ऋण *(खेती के लिए अग्रिम कर्ज)* प्रदान किया। इसका उत्तराधिकारी इसका दामाद शुजाउद्दीन हुआ।
➢ 1740 ई. के गिरिया के युद्ध में सरफराज को मारकर बिहार के सर सूबेदार अलीवर्दी खाँ बंगाल का नवाब बना। इसने अपने शासनकाल में मुगलों को राजस्व देना बंद कर दिया। इसके शासनकाल में बंगाल इतना समृद्धिशाली बन गया कि बंगाल को भारत का स्वर्ग कहा जाने लगा। इसका उत्तराधिकारी इसका दामाद सिराजुद्दौला हुआ।

बंगाल के नवाब	
1. मुर्शीद कुली खाँ	1713–1727 ई.
2. शुजाउद्दीन	1727–1739 ई.
3. सरफराज खाँ	1739–1740 ई.
4. अलीवर्दी खाँ	1740–1756 ई.
5. सिराजुद्दौला	1756–1757 ई.
6. मीर जाफर	1757–1760 ई.
7. मीर कासिम	1760–1763 ई.
8. मीर जाफर	1763–1765 ई.
9. निजाम-उद्दौला	1765–1766 ई.
10. शैफ-उद्दौला	1766–1770 ई.
11. मुबारक-उद्दौला	1770–1775 ई.

➢ 20 जून, 1756 ई. को कालकोठरी की त्रासदी *(Black Hole Tragedy)* नामक घटना घटी। इस घटना के रचयिता जेड. हॉलवेल के अनुसार नवाब सिराजुद्दौला ने 20 जून की रात में 146 अंग्रेज व्यक्तियों को एक छोटी-सी कोठरी में बंद कर दिया था। अगले दिन सुबह 146 में से केवल 23 व्यक्ति जिन्दा बचे थे।
➢ पलासी का युद्ध 23 जून, 1757 ई. को अंग्रेजों के सेनापति रॉबर्ट क्लाइव एवं बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला के बीच हुआ जिसमें नवाब अपने सेनापति मीर जाफर की धोखाधड़ी करने के कारण पराजित हुआ। अंग्रेजों ने मीर जाफर को बंगाल का नवाब बनाया।

नोट : *पलासी की लड़ाई में मोहनलाल एवं मीर मदान के नेतृत्व में एक छोटी सेना नवाब के वफादार रही। मीर मदान लड़ते हुए मारा गया। पलासी भागीरथी नदी के किनारे है।*

➢ क्लाइव के हाथों की कठपुतली नवाब मीर जाफर को अंग्रेजों ने 1760 ई. में हटाकर उसके दामाद मीर कासिम को बंगाल का नवाब बनाया। मीर कासिम ने अपनी राजधानी को मुर्शिदाबाद से मुंगेर *(मुग्दलपुर)* स्थानान्तरित किया।

नोट : *बंगाल के राजधानी का क्रम है—ढाका, मुर्शिदाबाद एवं मुंगेर।*

➢ बक्सर का युद्ध 1764 ई. में अंग्रेजों एवं मीर कासिम, अवध के नवाब शुजाउद्दौला एवं मुगल सम्राट् शाह आलम द्वितीय के बीच हुआ। इस युद्ध में भी अंग्रेज विजयी हुए। इस युद्ध में अंग्रेज सेनापति हेक्टर मुनरो था।

42. अंग्रेजों के मैसूर से संबंध

➢ 1761 ई. में हैदर अली मैसूर का शासक बना।
➢ हैदर अली की मृत्यु 1782 ई. में द्वितीय आँग्ल-मैसूर युद्ध के दौरान हो गयी।
➢ हैदर अली का उत्तराधिकारी उसका पुत्र टीपू सुल्तान हुआ।
➢ 1787 ई. में टीपू ने अपनी राजधानी श्रीरंगपट्टनम में 'पादशाह' की उपाधि धारण की।
➢ टीपू ने अपनी राजधानी श्रीरंगपट्टनम में स्वतंत्रता का वृक्ष लगवाया और साथ ही जैकोबिन क्लब का सदस्य बना।

प्रमुख युद्ध	वर्ष	गवर्नर जनरल
प्रथम आंग्ल-मैसूर युद्ध	1767 – 69 ई.	—
द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध	1780 – 84 ई.	वारेन हेस्टिंग्स
तृतीय आंग्ल-मैसूर युद्ध*	1790 – 92 ई.	कार्नवालिस
चतुर्थ आंग्ल-मैसूर युद्ध	1799 ई.	लॉर्ड वेलेजली

* *इस युद्ध में मराठा, हैदराबाद के निजाम एवं अंग्रेजों की संयुक्त सेना मैसूर के खिलाफ लड़ रही थी।*

➢ टीपू की मृत्यु श्रीरंगपट्टम की आखिरी युद्ध यानी चतुर्थ आँग्ल-मैसूर युद्ध के दौरान 1799 ई. में हो गयी। टीपू सुल्तान को शेर-ए-मैसूर कहा जाता था।
➢ टीपू सुल्तान के राजसी झंडे पर शेर की तस्वीर होती थी।

नोट : *1760 ई. में वांडीवास का युद्ध हुआ, जिसमें अंग्रेजों ने सर आयरकूट के नेतृत्व में, लाली के नेतृत्व वाली फ्रांसीसी सेना को पराजित किया।*

महत्वपूर्ण संधियाँ		
प्रथम आँग्ल-मैसूर युद्ध	मद्रास की संधि	1769 ई.
द्वितीय आँग्ल-मैसूर युद्ध	मंगलोर की संधि	1784 ई.
तृतीय आँग्ल-मैसूर युद्ध	श्रीरंगपट्टनम की संधि	1792 ई.

43. सिक्ख एवं अंग्रेज

➢ सिक्ख सम्प्रदाय की स्थापना का श्रेय गुरु नानक *(प्रथम गुरु)* को है। गुरु नानक के अनुयायी ही सिक्ख कहलाए। ये बादशाह बाबर एवं हुमायूँ के समकालीन थे।
➢ सन् 1469 ई. की कार्तिक पूर्णिमा को नानक को आध्यात्मिक पुनर्जीवन का आभास हुआ।
➢ गुरुनानक ने गुरु का लंगर नामक निःशुल्क सहभागी भोजनालय स्थापित किए।
➢ गुरुनानक ने अनेक स्थानों पर संगत *(धर्मशाला)* और पंगत *(लंगर)* स्थापित किए।
➢ संगत और पंगत ने गुरुनानक के अनुयायियों के लिए एक संस्था का कार्य किया, जहाँ वे प्रतिदिन मिलते थे।
➢ गुरु नानक की 1538 ई. में करतारपुर में मृत्यु हो गयी।
➢ गुरु अंगद *(1539–52 ई.)* सिक्खों के दूसरे गुरु थे। इनका प्रारम्भिक नाम लहना था।
➢ इन्होंने नानक द्वारा शुरू की गई लंगर-व्यवस्था को स्थायी बना दिया।
➢ गुरुमुखी लिपि का आरंभ गुरु अंगद ने किया।
➢ सिक्खों के तीसरे गुरु अमरदास *(1552–1574 ई.)* थे।
➢ गुरु अमरदास ने हिन्दुओं से पृथक् होनेवाले कई कार्य किए। हिन्दुओं से अलग विवाह पद्धति लवन को प्रचलित किया।
➢ अकबर ने गुरु अमरदास से गोविन्दवाल जाकर भेंट की और गुरु-पुत्री बीबी भानी को कई गाँव दान में दिए।
➢ अमरदास ने 22 गद्दियों की स्थापना की और प्रत्येक पर एक महन्त की नियुक्ति की।
➢ बीबी के पति रामदास *(1574–1581 ई.)* सिक्खों के चौथे गुरु हुए। अकबर ने बीबी भानी को 500 बीघा भूमि दी। गुरु रामदास ने इसी भूमि पर अमृतसर नामक जलाशय खुदवाया और अमृतसर नगर की स्थापना की। गुरु रामदास ने अपने तीसरे पुत्र अर्जुन को गुरु का पद सौंपा। इस प्रकार इन्होंने गुरु-पद को पैतृक बनाया।

- गुरु अर्जुन *(1581–1606 ई.)* सिक्खों के पाँचवें गुरु हुए। इन्होंने सिक्खों के धार्मिक ग्रंथ आदिग्रंथ की रचना की। इसमें गुरु नानक की प्रेरणाप्रद प्रार्थनाएँ और गीत संकलित हैं।

नोट : *गुरु ग्रंथ साहिब यानी आदिग्रंथ में सिक्ख गुरुओं के साथ-साथ कबीर, नामदेव एवं रैदास की रचनाओं को भी सम्मिलित किया गया है।*

- गुरु अर्जुन ने अमृतसर जलाशय के मध्य में हरमन्दर साहब का निर्माण कराया।
- राजकुमार खुसरो की सहायता करने के कारण जहाँगीर ने 1606 ई. में गुरु अर्जुन को मरवा दिया।
- सिक्खों के छठे गुरु हरगोविन्द *(1606–1645 ई.)* हुए। इन्होंने सिक्खों को सैन्य संगठन का रूप दिया तथा अकाल तख्त या ईश्वर के सिंहासन का निर्माण करवाया।
- ये दो तलवार बाँधकर गद्दी पर बैठते थे एवं दरबार में नगाड़ा बजाने की व्यवस्था की। इन्होंने अमृतसर की किलेबंदी की।
- सिक्खों के सातवें गुरु हरराय *(1645–61 ई.)* हुए। इन्होंने दारा शिकोह को मिलने आने पर आशीर्वाद दिया।
- सिक्खों के आठवें गुरु हरकिशन *(1661–64 ई.)* हुए। इनकी मृत्यु चेचक से हो गयी। इन्हें दिल्ली जाकर गुरुपद के बारे में औरंगजेब को समझाना पड़ा था।
- सिक्खों के नौवें गुरु तेगबहादुर *(1664–75 ई.)* हुए। इस्लाम स्वीकार नहीं करने के कारण औरंगजेब ने इन्हें वर्तमान शीशगंज में गुरुद्वारा के निकट मरवा दिया।
- सिक्खों के दसवें एवं अंतिम गुरु, गुरु गोविन्द सिंह *(1675–1708 ई.)* हुए। इनका जन्म 1666 ई. में पटना में हुआ था।
- गुरुगोविन्द सिंह अपने को सच्चा पादशाह कहा। इन्होंने सिक्खों के लिए पाँच 'ककार' अनिवार्य किया अर्थात् प्रत्येक सिक्ख को केश, कंघा, कृपाण, कच्छा और कड़ा रखने की अनुमति दी और सभी लोगों को अपने नाम के अन्त में 'सिंह' शब्द जोड़ने के लिए कहा।
- गुरुगोविन्द सिंह का निवास-स्थान आनंदपुर साहिब था एवं कार्यस्थली पाओता थी।
- इनके दो पुत्र फतह सिंह एवं जोरावर सिंह को सरहिंद के मुगल फौजदार वजीर खाँ ने दीवार में चिनवा दिया।
- 1699 ई. में वैशाखी के दिन गुरुगोविन्द सिंह ने खालसा पंथ की स्थापना की। पाहुल प्रणाली की शुरुआत भी गुरुगोविन्द सिंह ने की।
- गुरुगोविन्द सिंह ने सिक्खों के धार्मिक ग्रंथ आदिग्रंथ को वर्तमान रूप दिया और कहा कि अब 'गुरुवाणी' सिक्ख सम्प्रदाय के गुरु का कार्य करेगी।
- गुरुगोविन्द सिंह की हत्या 1708 ई. में नांदेड़ नामक स्थान पर गुल खाँ नामक पठान ने कर दी।
- बन्दा बहादुर : इनका जन्म 1670 ई. में पुँछ जिले के रजौली गाँव में हुआ था। इसके बचपन का नाम लक्ष्मणदास था। इनके पिता रामदेव भारद्वाज राजपूत थे।
- बन्दा का उद्देश्य पंजाब में एक सिक्ख राज्य स्थापित करने का था। इसके लिए इन्होंने लौहगढ़ को राजधानी बनाया। इन्होंने गुरुनानक एवं गुरुगोविन्द सिंह नाम के सिक्के चलवाए।
- बन्दा ने सरहिन्द के मुगल फौजदार वजीर खाँ की हत्या कर दी।
- मुगल बादशाह फर्रुखशियर के आदेश पर 1716 ई. में बन्दा सिंह को गुरुदासपुर नांगल नामक स्थान पर पकड़कर मौत के घाट उतार दिया गया।
- शहादरा कत्लगढ़ी के नाम से विख्यात है जहाँ बन्दा ने हजारों मुगल सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया था।
- बन्दा की मृत्यु के बाद सिक्ख कई छोटे-छोटे टुकड़ों में बँट गए थे, 1748 ई. में नवाब कपूर सिंह की पहल पर, सभी सिक्ख टुकड़ियों का दल खालसा में विलय हुआ।
- दल खालसा को जस्सा सिंह आहलूवालिया के नेतृत्व में रखा गया, जिसे बाद में बारह दलों में विभाजित किया गया। इसे मिसल कहा गया।
- मिसल अरबी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ 'समान' होता है।
- रणजीत सिंह : रणजीत सिंह का जन्म गुजराँवाला में 2 नवम्बर, 1780 ई. को सुकरचकिया मिसल के मुखिया महासिंह के यहाँ हुआ था। इनके दादा चरतसिंह ने 12 मिसलों में सुकरचकिया मिसल को प्रमुख स्थान दिला दिया।
- 1798–99 ई. में रणजीत सिंह लाहौर का शासक बना। 25 अप्रैल, 1809 ई. को चार्ल्स मेटकाफ और महाराजा रणजीत सिंह के बीच अमृतसर की संधि हुई।
- रणजीत सिंह का राज्य चार सूबों में बँटा था—पेशावर, कश्मीर, मुल्तान एवं लाहौर।
- महाराजा रणजीत सिंह का विदेश मंत्री फकीर अज़ीज़ुद्दीन एवं वित्त मंत्री दीनानाथ था।
- 7 जून, 1839 ई. में रणजीत सिंह की मृत्यु हो गयी।
- प्रथम आँग्ल-सिक्ख युद्ध 1845–46 ई. में एवं द्वितीय आँग्ल-सिक्ख युद्ध 1849 ई. में हुआ।

अंग्रेजों एवं सिक्खों के मध्य हुई संधि :

1. लाहौर की संधि : 9 मार्च, 1846 ई.।
2. भैरोंवाल की संधि : 22 दिसम्बर, 1846 ई.। इस संधि के तहत राजा दलीप सिंह के संरक्षण हेतु अंग्रेजी सेना का प्रवास पंजाब में मान लिया गया।

- 20 अगस्त, 1847 ई. को महारानी जिंदा को राजा दलीप सिंह से अलग कर ₹ 48,000 वार्षिक पेंशन देकर शेखपुरा भेज दिया गया।
- द्वितीय आँग्ल-सिक्ख युद्ध के दौरान पहली लड़ाई चिलियानवाला की लड़ाई सिक्ख नेता शेर सिंह एवं अंग्रेज कमांडर गफ के मध्य लड़ी गयी। दूसरी लड़ाई गुजरात के चिनाब नदी के किनारे चार्ल्स नेपियर के नेतृत्व में अंग्रेजों ने 21 फरवरी, 1849 को लड़ी। इस युद्ध में सिक्ख बुरी तरह पराजित हुए।
- लार्ड डलहौजी की 29 मार्च, 1849 की घोषणा द्वारा संपूर्ण पंजाब का विलय अंग्रेजी राज्य में कर लिया। महाराजा दलीप सिंह को 50,000 पौंड की वार्षिक पेंशन दे दी गयी और उसे शिक्षा प्राप्त करने के लिए इंग्लैंड भेज दिया गया। सिक्ख राज्य का प्रसिद्ध हीरा कोहिनूर को महारानी विक्टोरिया को भेज दिया गया।

44. कम्पनी के अधीन गवर्नर-जेनरल

बंगाल के गवर्नर

राबर्ट क्लाइव *(1757–60 ई. एवं पुनः 1765–67 ई.)*

- इसने बंगाल में द्वैध शासन की व्यवस्था की, जिसके तहत राजस्व वसूलने, सैनिक संरक्षण एवं विदेशी मामले कम्पनी के अधीन थे, जबकि शासन चलाने की जिम्मेवारी नवाब के हाथों में थी।
- इसने मुगल सम्राट् शाह आलम द्वितीय को इलाहाबाद की द्वितीय संधि *(1765 ई.)* के द्वारा कम्पनी के संरक्षण में ले लिया।
- राबर्ट क्लाइव ने बंगाल के समस्त क्षेत्र के लिए दो उप-दीवान, बंगाल के लिए मुहम्मद रजा खाँ और बिहार के लिए राजा शिताब राय को नियुक्त किया।
- अन्य गवर्नर बरेलास्ट *(1767–69 ई.)*, कार्टियर *(1769–72 ई.)*, वारेन हेस्टिंग्स *(1772–74 ई.)*

कम्पनी के अधीन गवर्नर-जेनरल

- रेग्यूलेटिंग एक्ट 1773 ई. के अनुसार बंगाल के गवर्नर को अब अंग्रेजी क्षेत्रों का गवर्नर-जेनरल कहा जाने लगा, जिसका कार्यकाल 5 वर्षों का निर्धारित किया गया। मद्रास एवं बम्बई के गवर्नर को इसके अधीन कर दिया गया। इस प्रकार भारत में कम्पनी के अधीन प्रथम गवर्नर-जेनरल वारेन हेस्टिंग्स *(1774–85 ई.)* हुआ।
- वारेन हेस्टिंग्स 1750 ई. में कम्पनी के एक क्लर्क के रूप में कलकत्ता आया था और अपनी कार्यकुशलता के कारण कासिम बाजार का अध्यक्ष, बंगाल का गवर्नर एवं कम्पनी का गवर्नर-जेनरल बना।

वारेन हेस्टिंग्स *(1774-85 ई.)*

➢ इसने राजकीय कोषागार को **मुर्शिदाबाद** से हटाकर **कलकत्ता** लाया।

➢ 1772 ई. में इसने प्रत्येक जिले में एक फौजदारी तथा दीवानी अदालतों की स्थापना की। फौजदारी अदालतें सदर निजामत अदालत द्वारा निरीक्षित होती थी। नाजिम द्वारा नियुक्त दरोगा अदालत की अध्यक्षता करता था। दीवानी अदालत में कलक्टर मुख्य न्यायाधीश होता था। जिला फौजदारी अदालत एक भारतीय अधिकारी के अधीन होती थी जिसकी सहायता के लिए एक मुफ्ती और एक काजी होता था। कलक्टर इस न्यायालय के कार्य की देखभाल करता था।

➢ कलकत्ता में एक सदर दीवानी अदालत और एक सदर फौजदारी अदालत की स्थापना की गयी। सदर दीवानी अदालत में कलकता कौंसिल का सभापति और उसी कौंसिल का दो सदस्य राय रायन और मुख्य कानूनगो की सलाह से न्याय करते थे। सदर फौजदारी अदालत में **नाइब-निजाम**, मुख्य काजी, मुफ्ती और तीन मौलवियों की सलाह से न्याय करते थे। जिले की दीवानी और फौजदारी अदालतों के मुकदमे अन्तिम निर्णय के लिए सदर अदालतों में भेजे जाते थे।

➢ दीवानी मुकदमों में जातीय कानून अर्थात हिन्दुओं के संबंध में हिन्दू-कानून और मुसलमान के लिए मुस्लिम कानून लागू किया जाता था, जबकि **फौजदारी** मुकदमों में मुस्लिम कानून लागू किया जाता था।

➢ 1772 में कोर्ट ऑफ डाइरेक्टर्स ने द्वैध प्रणाली को समाप्त करने तथा कम्पनी को बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा प्रान्त की शासन व्यवस्था का उत्तरदायित्व संभालने का आदेश दिया। वारेन हेस्टिंग्स ने दोनों उपदीवानों, मुहम्मद रजाखाँ तथा राजा शिताबराय को पद से हटा दिया गया।

➢ हेस्टिंग्स ने नवाब की देखभाल के लिए मीरजाफर की विधवा मुन्नी बेगम को उसका संरक्षक नियुक्त किया। 1775 में मुन्नी बेगम को हटाकर मुहम्मद रजा खाँ को नवाब का संरक्षक नियुक्त किया गया।

➢ इसने 1781 ई. में कलकत्ता में मुस्लिम शिक्षा के विकास के लिए **प्रथम मदरसा** स्थापित किया।

➢ इसी के समय 1782 ई. में **जोनाथन डंकन** ने बनारस में संस्कृत विद्यालय की स्थापना की।

➢ गीता के अंग्रेजी अनुवादकार **विलियम विलकिन्स** *(चार्ल्स)* को हेस्टिंग्स ने आश्रय प्रदान किया।

➢ इसी के समय में सर विलियम जोंस ने 1784 ई. में द एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल की स्थापना की।

➢ इसने मुगल सम्राट् को मिलने वाला 26 लाख रुपये की वार्षिक पेंशन बन्द करवा दी।

➢ इसी के समय में 1780 ई. में भारत का पहला समाचार-पत्र **'द बंगाल गजट'** का प्रकाशन **'जेम्स ऑगस्टस हिक्की'** ने किया था।

➢ इसी के समय में रेग्यूलेटिंग एक्ट के तहत 1774 ई. में कलकत्ता में एक उच्चतम न्यायालय की स्थापना की गयी, जिसका अधिकार-क्षेत्र कलकत्ता तक था; कलकत्ता के बाहर का मुकदमा तभी सुना जाता था जब दोनों पक्ष सहमत हों। इस न्यायालय में अंग्रेजी कानून लागू होता था। इसका मुख्य न्यायाधीश **एलिजा इम्पे** था, जिसे 1782 में इस्तीफा देना पड़ा। हेस्टिंग्स ने बंगाली ब्राह्मण नंद कुमार पर झूठा आरोप लगाकर न्यायालय से फाँसी की सजा दिलवा दी थी।

➢ प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध *(1775–1782 ई.)* एवं द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध *(1780–1784 ई.)* वारेन हेस्टिंग्स के समय में ही लड़े गये। प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध सलबाई की संधि *(1782 ई.)* एवं द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध मंगलोर की संधि *(1784 ई.)* के द्वारा समाप्त हुए।

➢ पिट्स इंडिया एक्ट *(1784 ई.)* वारेन हेस्टिंग्स के समय ही पारित हुआ।

➢ इसी के काल में **'बोर्ड ऑफ रेवेन्यू'** की स्थापना हुई।

➢ हेस्टिंग्स ने सम्पूर्ण लगान के हिसाब की देखभाल के लिए एक भारतीय अधिकारी **राय रायन** की नियुक्ति की। इस पद को प्राप्त करने वाला पहला भारतीय दुर्लभराय का पुत्र राजा **राजबल्लभ** था।

➢ पिट्स इंडिया एक्ट *(1784 ई.)* के विरोध में इस्तीफा देकर जब वारेन हेस्टिंग्स फरवरी, 1785 ई. में इंग्लैंड पहुँचा **तो बर्क** द्वारा उसके ऊपर **महाभियोग** लगाया गया। परन्तु 1795 ई. में इसे आरोपों से मुक्त कर दिया गया।

नोट : *1786 में हेस्टिंग्स के जाने के पश्चात लगान परिषद का पुनर्गठन किया गया और एक नवीन अधिकारी **मुख्य सारिस्तादार** की नियुक्ति की गयी जिसका कार्य सभी कानूनगोओं के कागजों की देखभाल करना था। इस पद पर प्रथम नियुक्ति जेम्स ग्रांट की हुई।*

➢ सुरक्षा प्रकोष्ठ की नीति *(Ring fence policy)* **वारेन हेस्टिंग्स** से संबंधित है।

सर जॉन मैकफरसन *(1785–1786 ई.)*

➢ इसे अस्थायी गवर्नर-जेनरल नियुक्त किया गया था।

लॉर्ड कॉर्नवालिस *(1786–1793 और 1805 ई.)*

➢ इसके समय में जिले के समस्त अधिकार कलेक्टर के हाथों में दे दिए गए।

➢ इसने भारतीय न्यायाधीशों से युक्त जिला फौजदारी अदालतों को समाप्त कर उसके स्थान पर चार भ्रमण करने वाली अदालतें, जिनमें तीन बंगाल के लिए और एक बिहार के लिए, नियुक्त कीं।

➢ कॉर्नवालिस ने 1793 ई. में प्रसिद्ध कॉर्नवालिस कोड का निर्माण करवाया, जो शक्तियों के पृथक्कीकरण सिद्धान्त पर आधारित था।

➢ पुलिस कर्मचारियों के वेतन में वृद्धि के साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में पुलिस अधिकार प्राप्त जमींदारों को इस अधिकार से वंचित कर दिया।

➢ कम्पनी के कर्मचारियों के व्यक्तिगत व्यापार पर प्रतिबंध लगा दिया।

➢ जिला में पुलिस थाना की स्थापना कर एक दारोगा को इसका इंचार्ज बनाया।

➢ भारतीयों के लिए सेना में सूबेदार, जमादार, प्रशासनिक सेवा में मुंसिफ, सदर, अमीन या डिप्टी कलेक्टर से ऊँचा पद नहीं दिया जाता था।

➢ इसने 1793 ई. में स्थायी बन्दोबस्त की पद्धति लागू की, जिसके तहत जमींदारों को अब भू-राजस्व का लगभग 90% $\left(\frac{10}{11}\text{ भाग}\right)$ कम्पनी को तथा लगभग 10% $\left(\frac{1}{11}\text{ भाग}\right)$ अपने पास रखना था।

➢ स्थायी बंदोबस्त की योजना जॉन शोर ने बनाई थी। इसे बंगाल, बिहार, उड़ीसा, बनारस एवं मद्रास के उत्तरी जिलों में लागू की गई थी। इसमें जमींदार भू-राजस्व की दर तय करने के लिए स्वतंत्र थे।

➢ कॉर्नवालिस को भारत में **नागरिक सेवा** का **जनक** माना जाता है।

सर जॉन शोर *(1793–98 ई.)*

➢ इसने अहस्तक्षेप नीति अपनाई।

लार्ड वेलेजली *(1798–1805 ई.)*

➢ इसने **सहायक संधि** की पद्धति शुरू की। भारत में सहायक संधि का प्रयोग वेलेजली से पूर्व फ्रांसीसी गवर्नर डूप्ले ने किया था।

➢ सहायक संधि करनेवाले राज्य थे—हैदराबाद *(1798 ई.)*, मैसूर *(1799 ई.)*, तंजौर *(अक्टूबर, 1799 ई.)*, अवध *(1801 ई.)*, पेशवा *(दिसम्बर, 1802 ई.)*, बरार एवं भोंसले *(दिसम्बर, 1803 ई.)*, सिंधिया *(1804 ई.)* एवं अन्य सहायक संधि करनेवाले राज्य जोधपुर, जयपुर, मच्छेड़ी, बूँदी तथा भरतपुर।

नोट : *इंदौर के होल्करों ने सहायक संधि स्वीकार नहीं की थी।*

➢ टीपू सुल्तान चौथे आँग्ल-मैसूर युद्ध *(1799 ई.)* में मारा गया।

➢ इसी ने *(1800 ई.)* कलकत्ता में नागरिक सेवा में भर्त्ती किए गए युवकों को प्रशिक्षित करने के लिए **फोर्ट विलियम कॉलेज** की स्थापना की, जो 1854 तक अंग्रेजों को भारतीय भाषाओं की शिक्षा देने के लिए चलता रहा।

नोट : *1806 में भारत भेजे जाने वाले प्रशासकीय अधिकारियों की शिक्षा और प्रशिक्षण के लिए इंग्लैंड में **हेलेबरी में एक ईस्ट इंडिया कॉलेज** खोला गया जहाँ नवयुवक प्रशासकीय अधिकारियों को दो वर्ष का प्रशिक्षण देने की व्यवस्था की गयी।*

- यह स्वयं को **बंगाल का शेर** कहा करता था।
- लॉर्ड कार्नवालिस का *(1805 ई.)* दूसरा कार्यकाल शुरू हुआ, परन्तु शीघ्र ही इसकी मृत्यु हो गयी।

सर जार्ज वार्लो *(1805–1807 ई.)*

- 1806 ई. में वेल्लोर में हुई सिपाही विद्रोह इसके काल की महत्वपूर्ण घटना है।

लार्ड मिन्टो प्रथम *(1807–1813 ई.)*

- इसके काल में रणजीत सिंह एवं अंग्रेजों के बीच 25 अप्रैल, 1809 को अमृतसर की संधि *(मध्यस्थता चार्ल्स मेटकॉफ)* हुई। इसी के समय चार्टर एक्ट 1813 ई. पास हुआ।

लॉर्ड हेस्टिंग्स *(1813–1823 ई.)*

- इसी के समय आंग्ल-नेपाल युद्ध 1814-16 ई. में हुई; इसमें नेपाल के अमर सिंह थापा को आत्मसमर्पण करना पड़ा। मार्च, 1816 ई. में अंग्रेजों एवं गोरखों के बीच **संगोली की संधि** के द्वारा आंग्ल-नेपाल युद्ध का अंत हुआ।
- इसके समय में पिंडारियों का दमन कर दिया गया। पिंडारियों के प्रमुख नेताओं में वासिल मुहम्मद, चीतू एवं करीम खाँ थे।
- इसने मराठों की शक्ति को अंतिम रूप से नष्ट कर दिया।
- इसने प्रेस पर लगे प्रतिबंध को समाप्त कर प्रेस के मार्गदर्शन के लिए नियम बनाए।
- इसी के समय 1822 ई. का **टैनेन्सी एक्ट** या काश्तकारी अधिनियम लागू किया गया।

लॉर्ड एमहर्स्ट *(1823–1828 ई.)*

- इसके समय में प्रथम आंग्ल-बर्मा युद्ध *(1824–1826 ई.)* लड़ा गया।
- 1826 ई. में बर्मा एवं अंग्रेजों के बीच यान्डबू की संधि हुई।
- 1824 ई. में बैरकपुर का **सैन्य विद्रोह** भी इसी के समय में हुआ।

लॉर्ड विलियम बेंटिक *(1828–1835 ई.)*

- 1803 ई. में यह मद्रास का गवर्नर था; इसी के समय 1806 ई. में माथे पर जातीय चिह्न न लगाने तथा कानों में बालियाँ न पहनने देने पर वेल्लोर के सैनिकों ने विद्रोह कर दिया।
- 1833 ई. के 'चार्टर एक्ट' द्वारा बंगाल के गवर्नर-जेनरल को भारत का गवर्नर-जेनरल बना दिया गया। इस प्रकार **भारत का पहला गवर्नर-जेनरल लॉर्ड विलियम बेंटिक हुआ।**

नोट : *बंगाल का प्रथम गवर्नर जेनरल वारेन हेस्टिंग्स था।*

- राजा राममोहन राय के सहयोग से बेंटिक ने 1829 ई. में सती-प्रथा को समाप्त कर दिया। बेंटिक ने इस प्रथा के खिलाफ कानून बनाकर 1829 ई. में धारा 17 के द्वारा विधवाओं के सती होने को अवैध घोषित कर दिया।

नोट : *अकबर और मराठा पेशवाओं ने भी सती-प्रथा पर रोक लगाने का प्रयास किया था।*

- बेंटिक ने कर्नल स्लीमैन की सहायता से 1830 ई. तक ठगी प्रथा को समाप्त कर दिया। ठग **देवी काली** की पूजा करते थे।
- सन् 1835 ई. में बेंटिक ने कलकत्ता में कलकत्ता मेडिकल कॉलेज की स्थापना की।
- इसी के समय **मैकाले की अनुशंसा** पर अंग्रेजी को शिक्षा का माध्यम बनाया गया। मैकाले द्वारा कानून का वर्गीकरण भी किया गया।
- बेंटिक ने 1831 ई. में मैसूर तथा 1834 ई. में कुर्ग एवं मध्यकचेर को हड़प लिया।
- इसने भारतीयों को उत्तरदायी पदों पर नियुक्त किया। इसके समय में भारतीयों को प्रदान किया गया उच्चतम पद **सदर अमीन** का था जिसे 700 रु. प्रति माह तनख्वाह मिलती थी।
- इसके समय कम्पनी के 1833 के चार्टर एक्ट द्वारा यह निश्चित किया गया कि धर्म, जाति; रंग अथवा जन्म के आधार पर किसी व्यक्ति को कंपनी की सेवा में प्रवेश करने से नहीं रोका जाएगा।
- इसने शिशु बालिका की हत्या पर भी प्रतिबंध लगा दिया।

चार्ल्स मेटकॉफ *(1835–1836 ई.)*

- इसने अपने एक वर्ष के कार्यकाल में प्रेस पर से नियंत्रण हटाया। इसीलिए इसे भारतीय प्रेस का **मुक्तिदाता** कहा जाता है।

लॉर्ड ऑकलैण्ड *(1836–1842 ई.)*

- इसके समय की सबसे महत्वपूर्ण घटना है—प्रथम आंग्ल-अफगान युद्ध *(1839-42 ई.)*।
- 1839 ई. में इसने कलकत्ता से दिल्ली तक ग्रैंड ट्रंक रोड का मरम्मत करवाया।
- इसी के समय में भारतीय विद्यार्थियों को डॉक्टरी की शिक्षा हेतु विदेश जाने की अनुमति ब्रिटिश संसद ने प्रदान की।

लॉर्ड एलिनबरो *(1842–1844 ई.)*

- प्रथम आंग्ल-अफगान युद्ध समाप्त हुआ।
- सिन्ध को अगस्त, 1843 ई. में पूर्ण रूप से ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया गया। सिन्ध विजय के विषय में **नेपियर** का कथन है कि—'वह अफगानी तूफान की पूँछ थी।'
- दास-प्रथा का उन्मूलन इसी के समय में हुआ। *(1843 के एक्ट–V के द्वारा)*

नोट : *रविवार की छुट्टी की शुरुआत 1843 ई. से हुई।*

लॉर्ड हार्डिंग *(1844–1848 ई.)*

- इसके काल की सबसे महत्वपूर्ण घटना थी—प्रथम आंग्ल-सिक्ख युद्ध *(1845–1846 ई.)*। इसमें अंग्रेज विजयी हुए।
- इसने **नरबलि-प्रथा** पर प्रतिबंध लगाया।

लॉर्ड डलहौजी *(1848–1856 ई.)*

- द्वितीय आँग्ल-सिक्ख युद्ध *(1848–1849 ई.)* तथा पंजाब का ब्रिटिश शासन में विलय *(29 मार्च, 1849 ई.)*। जगतप्रसिद्ध सिक्ख राज्य का प्रसिद्ध हीरा कोहिनूर महारानी विक्टोरिया को भेज दिया गया।
- द्वितीय आँग्ल-सिक्ख युद्ध के दौरान तीन युद्ध लड़े गये—**प्रथम** रामनगर का युद्ध–16 नवम्बर, 1848 अनिर्णित, **दूसरा** चिलियावाला का युद्ध–13 जनवरी, 1849 अनिर्णित, **तीसरा** युद्ध **गुजरात** *(चिनाव नदी के किनारे)* नामक स्थान पर 12 मार्च, 1849 का हुआ, जिसमें सिक्ख बुरी तरह पराजित हुए।
- द्वितीय आंग्ल-बर्मा युद्ध, और 1852 ई. में **लोअर बर्मा** एवं **पीगू** को अंग्रेजी राज्य में मिला लिया गया।
- डलहौजी ने सिक्किम पर दो अंग्रेज डॉक्टरों के साथ दुर्व्यवहार का आरोप लगाकर सन् 1850 ई. में उस पर अधिकार कर लिया।
- 1852 ई. में एक **इनाम कमीशन** की स्थापना की गई। इसका उद्देश्य भूमिकर रहित जागीरों का पता करके उन्हें छीनना था।
- डलहौजी का शासनकाल उसके **व्यपगत सिद्धान्त** *(Doctrine of Lapse)* के कारण अधिक याद किया जाता है। इस नीति के तहत अंग्रेजी साम्राज्य में विलय किए गए राज्य थे—
  सर्वप्रथम सतारा 1848 ई. में, जैतपुर *(बुंदेलखंड)* और संभलपुर *(उड़ीसा)* 1849 ई. में, बघाट *(हिमाचल प्रदेश)* 1850 ई. में, उदेपुर *(मध्य प्रदेश)* 1852 ई. में, झाँसी 1853 ई. में, नागपुर 1854 ई. में।
- 1856 ई. में अवध को कुशासन का आरोप लगाकर अंग्रेजी राज्य में मिला लिया गया। उस समय अवध का नवाब **वाजिद अली शाह** था।

नोट : *18वीं शताब्दी में अवध राज्य का संस्थापक सआदत खाँ था।*

- 1856 ई. में इसने तोपखाने के मुख्यालय को **कलकत्ता** से **मेरठ** स्थानान्तरित किया और सेना का मुख्यालय **शिमला** में स्थापित किया।
- शिक्षा संबंधी सुधारों में डलहौजी ने 1854 ई. के **वुड डिस्पैच** को लागू किया। इसके अनुसार जिलों में ऐंग्लो-वर्नाक्यूलर स्कूल, प्रमुख नगरों में सरकारी कॉलेजों तथा 1857 ई. में तीनों प्रेसीडेंसियों कलकत्ता, मद्रास एवं बम्बई में एक-एक विश्वविद्यालय स्थापित किए गए और साथ ही प्रत्येक प्रदेश में एक शिक्षा निदेशक नियुक्त किया गया।
- डलहौजी को भारत में रेलवे का जनक माना जाता है। इसी के समय भारत में पहली बार 16 अप्रैल, 1853 ई. में बम्बई से थाणे के बीच *(34 किमी.)* प्रथम रेल चलायी गयी।

- सन् 1854 ई. में नया पोस्ट ऑफिस एक्ट पारित हुआ और भारत में पहली बार डाक टिकट का प्रचलन प्रारंभ हुआ।
- इसने पृथक् रूप से भारत में पहली बार सार्वजनिक निर्माण विभाग की स्थापना की।
- इसने सन् 1854 ई. में एक स्वतंत्र विभाग के रूप में लोक सेवा विभाग की स्थापना की।
- इसी के समय में 1853 ई. में कलकत्ता एवं आगरा के बीच पहली बार बिजली से संचालित तार-सेवा शुरू हुई।
- इसने शिमला को ग्रीष्मकालीन राजधानी बनाया।
- 1853 ई. के चार्टर ऐक्ट के द्वारा कंपनी के संचालक मंडल से कंपनी के प्रशासनिक अधिकारियों की नियुक्ति का अधिकार वापस ले लिया गया और 1853 ई. से ही अधिकारियों की नियुक्ति के लिए प्रतियोगिता परीक्षा की व्यवस्था की गयी जिसके लिए उम्र सीमा 18 से 23 वर्ष रखी गयी।

नोट : 1. *सत्येन्द्रनाथ टैगोर पहले भारतीय थे जिन्होंने 1863 ई. में लंदन में हुई सिविल सेवा परीक्षा में सफलता प्राप्त की थी।*
2. *1922 ई. मे इलाहाबाद (भारत) एवं लंदन दोनों स्थानों पर साथ-साथ सिविल सेवा परीक्षा का आयोजन किया जाने लगा।*

- डलहौजी ने नर-बलि प्रथा को रोकने का भी प्रयास किया।

लॉर्ड कैनिंग *(1856–1862 ई.)*

- यह भारत में कम्पनी द्वारा नियुक्त अन्तिम गवर्नर-जेनरल तथा ब्रिटिश सम्राट् के अधीन नियुक्त भारत का प्रथम वायसराय था।
- इसके समय की सबसे महत्वपूर्ण घटना थी सन् 1857 ई. का ऐतिहासिक विद्रोह। इसी विद्रोह के बाद प्रशासनिक सुधार के अन्तर्गत भारत का शासन कम्पनी के हाथों से सीधे ब्रिटिश सरकार के नियंत्रण में ले लिया गया।
- कैनिंग के समय 1861 में उच्च न्यायालय अधिनियम बनाया गया जिसके अनुसार पुरानी सुप्रीम कोर्ट और सदर अदालतों को समाप्त कर दिया गया तथा कलकत्ता, मद्रास तथा मुम्बई में एक-एक उच्च न्यायालय की स्थापना की गई।

नोट : *1866 में आगरा में एक उच्च न्यायालय की स्थापना की गई जिसे 1875 में इलाहाबाद स्थानान्तरित कर दिया गया।*

- कैनिंग के समय में ही 1856 ई. में विधवा पुनर्विवाह अधिनियम स्वतंत्र रूप से लागू हुआ। भारत में पहला कानूनी विधवा विवाह कलकत्ता में 7 दिसम्बर, 1856 ई. को ईश्वरचन्द्र विद्यासागर की प्रेरणा और देख-रेख में सम्पन्न हुआ।
- 1856 में पैतृक सम्पत्ति से संबंधित जो कानून बनाया गया उसके अनुसार यह निश्चित किया गया कि धर्म परिवर्तन करने पर किसी व्यक्ति को उसकी पैतृक सम्पत्ति से वंचित नहीं किया जाएगा।
- 1857 ई. में कैनिंग के समय ही महालेखा परीक्षक पद का सृजन किया गया जो स्वतंत्रता के बाद नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक कहलाया।
- भारत शासन अधिनियम-1858 ई. के तहत मुगल सम्राट के पद को समाप्त कर दिया गया।
- मैकाले द्वारा प्रारूपित दंड-संहिता को 1858 ई. में कानून बना दिया गया तथा 1859 ई. में अपराध विधान संहिता लागू की गयी।
- व्यपगत सिद्धांत *(Doctrine of Lapase)* यानी राज्य-विलय की नीति को समाप्त कर दिया गया।
- 1861 ई. में इंडियन कौंसिल एक्ट पारित हुआ तथा पोर्टफोलियो-प्रणाली लागू की गयी।

लॉर्ड एल्गिन *(1862–1863 ई.)*

- इसने वहाबी आन्दोलन का दमन किया। 1863 ई. में धर्मशाला *(हिमाचल प्रदेश)* में इसकी मृत्यु हो गयी।

लॉर्ड लारेंस *(1864–1869 ई.)*

- 1865 ई. में भूटान ने ब्रिटिश साम्राज्य पर आक्रमण किया।
- अफगानिस्तान के संबंध में इसने अहस्तक्षेप की नीति अपनाई, जिसे 'शानदार निष्क्रियता' के नाम से जाना जाता है।
- इसी के समय में उड़ीसा में सन् 1866 ई. में तथा बुन्देलखण्ड एवं राजपुताना में 1868–1869 ई. में भीषण अकाल पड़ा।
- इसने हेनरी कैम्पबेल के नेतृत्व में एक अकाल आयोग का गठन किया।
- सन् 1865 ई. में इसके द्वारा भारत एवं यूरोप के बीच प्रथम समुद्री टेलीग्राफ सेवा शुरू की गयी।

लॉर्ड मेयो *(1869–1872 ई.)*

- लॉर्ड मेयो ने अजमेर में 1872 ई. में मेयो कॉलेज की स्थापना की।
- इसने सन् 1872 ई. में एक कृषि विभाग की स्थापना की।
- एक अफगान शेर अली अफरीदी ने 8 फरवरी, 1872 ई. में चाकू मार कर इसकी हत्या कर दी।
- भारत में अंग्रेजों के समय में प्रथम जनगणना 1872 ई. में लार्ड मेयो के कार्यकाल में ही हुआ।

लॉर्ड नार्थब्रुक *(1872–1876 ई.)*

- इसके समय में बंगाल में भयानक अकाल पड़ा।
- इसने बड़ौदा के मल्हारराव गायकवाड़ को भ्रष्टाचार के आरोप में पदच्युत कर मद्रास भेज दिया।
- लॉर्ड नार्थब्रुक ने यह घोषणा की—"मेरा उद्देश्य करों को हटाना तथा अनावश्यक वैधानिक कार्रवाइयों को बन्द करना है।"
- पंजाब का प्रसिद्ध कूका आन्दोलन इसी के समय में हुआ।
- इसी के समय में स्वेज नहर खुल जाने से भारत एवं ब्रिटेन के बीच व्यापार में वृद्धि हुई।

लॉर्ड लिटन *(1876–1880 ई.)*

- यह एक प्रसिद्ध उपन्यासकार, निबंध-लेखक एवं साहित्यकार था। साहित्याकाश में इसे ओवन मैरिडिथ के नाम से जाना जाता था।
- इसके समय में बम्बई, मद्रास, हैदराबाद, पंजाब, मध्य भारत आदि में भयानक अकाल पड़ा।
- लिटन ने रिचर्ड स्ट्रैची की अध्यक्षता में 1878 में एक अकाल आयोग की नियुक्ति की।
- 1 जनवरी, 1877 ई. को ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया को कैसर-ए-हिन्द की उपाधि से सम्मानित करने के लिए दिल्ली दरबार का आयोजन किया गया।
- मार्च, 1878 ई. में लिटन ने भारतीय समाचारपत्र अधिनियम *(वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट)* पारित कर भारतीय समाचारपत्रों पर कठोर प्रतिबंध लगा दिए। *(विशेषकर राष्ट्रवादी समाचार-पत्र 'सोम प्रकाश' को प्रतिबन्धित करने के लिए)* इस कानून में प्रावधान था कि अगर किसी अखबार में कोई आपत्तिजनक चीज छपती है तो सरकार उसकी प्रिंटिंग प्रेस सहित सारी सम्पत्ति जब्त कर सकती है।

नोट : *पायनियर अखबार ने वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट-1878 का समर्थन किया।*

- इसी के समय में सन् 1878 ई. को भारतीय शस्त्र अधिनियम पारित हुआ, जिसके तहत शस्त्र रखने एवं व्यापार करने के लिए लाइसेंस को अनिवार्य बना दिया गया।
- इसने सिविल सेवा परीक्षाओं में प्रवेश की अधिकतम आयु सीमा 21 से घटाकर 19 वर्ष कर दी।

नोट : *1857 में सिविल सेवा परीक्षा में सम्मलित होने की आयु 23 वर्ष निर्धारित की गयी थी। 1859 में आयु सीमा को घटाकर 22 वर्ष और 1866 में इसको घटाकर 21 वर्ष किया गया था।*

- लिटन ने अलीगढ़ में एक मुस्लिम-ऐंग्लो प्राच्य महाविद्यालय की स्थापना की।

लॉर्ड रिपन *(1880–1884 ई.)*

- प्रधानमंत्री ग्लैडस्टोन के परामर्श पर रिपन ने सर्वप्रथम समाचारपत्रों की स्वतंत्रता को बहाल करते हुए सन् 1882 ई. में वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट को समाप्त कर दिया और भारतीय भाषाओं में प्रकाशित होने वाले समाचार पत्रों को भी वही सुविधाएँ दी गई जो अन्य समाचार-पत्रों को प्राप्त थी।
- इसने सिविल सेवा में प्रवेश की अधिकतम आयु सीमा को 19 वर्ष से बढ़ाकर 21 वर्ष कर दिया।

- इसने स्थानीय स्वशासन की शुरुआत की। 18 मई, 1882 को स्थानीय स्वशासन संबंधी एक कानून बनाया जिसके आधार पर विभिन्न प्रांतों में 1883 से 1885 के मध्य स्थानीय स्वशासन सम्बन्धी कानून बनाए गये।
- इसके समय में ही भारत में सन् 1881 ई. में सर्वप्रथम नियमित जनगणना करवायी गयी। तब से लेकर अब तक प्रत्येक 10 वर्ष के अन्तराल पर जनगणना की जाती है। 1881 की जनगणना में हैदराबाद और राजपूताने को नहीं जोड़ा गया था।

नोट : *भारत में पहली बार जनगणना सन् 1872 ई. में हुई, परन्तु इसमें भारत के सम्पूर्ण भागों का प्रतिनिधित्व नहीं हुआ। लगभग 20% भारत का भाग इसमें छूट गया।*

- रिपन के द्वारा ही सन् 1881 ई. में प्रथम कारखाना अधिनियम लाया गया। इसमें 7 वर्ष से कम आयु के बच्चों को काम करने पर प्रतिबंध लगा दिया गया और 7 से 12 वर्ष के श्रमिकों के लिए 9 घंटे से अधिक कार्य कराया जाना प्रतिबंधित कर दिया गया। यह एक्ट चाय, कॉफी एवं नील की खेती पर लागू नहीं थी।
- रिपन के समय में शैक्षिक सुधारों के अन्तर्गत विलियम हण्टर की अध्यक्षता में एक आयोग गठित किया गया।
- 2 फरवरी, 1883 को यूरोपियों के विरुद्ध भारतीय न्यायाधीशों द्वारा मुकदमे की सुनवाई के लिए इल्बर्ट विधेयक प्रस्तुत किया गया, लेकिन यूरोपवासियों के प्रबल विरोध के कारण इसे वापस लेना पड़ा। अंग्रेजों द्वारा इस विधेयक के विरोध में किए विद्रोह को श्वेत विद्रोह के नाम से जाना जाता है।
- फ्लोरेंस नाइटिंगेल ने रिपन को 'भारत के उद्धारक' की संज्ञा दी।

लॉर्ड डफरिन *(1884–1888 ई.)*

- इसके समय तृतीय आंग्ल-बर्मा युद्ध *(1885–88 ई.)* हुआ और बर्मा को अन्तिम रूप से अंग्रेजी राज्य में मिला लिया गया।
- इसी समय बंगाल टेनेन्सी एक्ट, अवध टेनेन्सी एक्ट तथा पंजाब टेनेन्सी एक्ट पारित हुआ।
- इसके समय की सबसे महत्वपूर्ण घटना थी—28 दिस., 1885 को बम्बई में ए.ओ. ह्यूम के नेतृत्व में भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस की स्थापना।

लॉर्ड लैन्सडाऊन *(1888–1894 ई.)*

- भारत और अफगानिस्तान के मध्य सीमा-रेखा *(डूरण्ड रेखा)* का निर्धारण इसी समय हुआ।
- 1891 ई. में दूसरा कारखाना अधिनियम लाया गया, जिसमें स्त्रियों को 11 घंटे प्रतिदिन से अधिक काम करने पर प्रतिबंध लगाया गया। साथ ही सप्ताह में एक दिन छुट्टी की व्यवस्था की गयी।

लॉर्ड एल्गिन द्वितीय *(1894–1899 ई.)*

- ''भारत को तलवार के बल पर विजित किया गया है और तलवार के बल पर ही इसकी रक्षा की जाएगी'' यह कथन—लॉर्ड एल्गिन द्वितीय का है।
- 1895–1898 ई. के मध्य उत्तर प्रदेश, बिहार, पंजाब एवं मध्य प्रदेश में भयंकर अकाल पड़ा।

लॉर्ड कर्जन *(1899–1905 ई.)*

- 1899 में कर्जन ने भारतीय टंकण और पत्र-मुद्रा अधिनियम पारित कराकर अंग्रेजी स्वर्ण-मुद्रा को भारत की कानूनी मुद्रा घोषित कर दिया।
- शासन की कार्यक्षमता के आधार पर लॉर्ड कर्जन ने रिपन द्वारा स्थापित स्थानीय स्वशासन की प्रणाली पर आघात किया और 1899 में कलकत्ता कॉरपोरेशन अधिनियम बनाया।
- कर्जन ने सन् 1901 ई. में सर कॉलिन स्कॉट मॉनक्रीफ की अध्यक्षता में एक सिंचाई आयोग, टॉमस रॉबर्टसन की अध्यक्षता में एक रेलवे आयोग 1902 ई. में सर एण्ड्रयू फ्रेजर की अध्यक्षता में एक पुलिस आयोग एवं सर टामस रैले की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय आयोग की स्थापना की।
- 1904 ई. में भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम पास किया गया।
- इसने सर एण्टनी मैकडॉनल की अध्यक्षता में एक अकाल आयोग का गठन किया एवं सैन्य अधिकारियों के प्रशिक्षण के लिए क्वेटा में एक कॉलेज की स्थापना की।
- प्राचीन स्मारक परीक्षण अधिनियम 1904 ई. के द्वारा कर्जन ने भारत में पहली बार ऐतिहासिक इमारतों की सुरक्षा एवं मरम्मत की ओर ध्यान दिया। इस कार्य के लिए कर्जन ने भारतीय पुरातत्व विभाग की स्थापना की।
- कर्जन के समय 1904 में सहकारी उधार समिति अधिनियम बनाया गया जिसके द्वारा सहकारी-समितियों की स्थापना करके किसानों को उचित ब्याज पर रुपया कर्ज देने की व्यवस्था की गयी।
- इसने कृषि बैंक भी खुलवाए।
- इसने 1901 में कृषि इंस्पेक्टर-जनरल की नियुक्ति की।
- इसके समय 1905 में पूसा में एक कृषि-अनुसंधान संस्था खोली गयी।
- कर्जन के समय ही पहली बार प्रत्येक प्रांत और केन्द्र स्तर पर एक निदेशक के अधीन एक पृथक गुप्तचर विभाग की स्थापना की गयी।
- लॉर्ड कर्जन के समय में किचनर-परीक्षा को सैनिक-प्रशिक्षण में शामिल करके सेना की युद्ध-क्षमता को बढ़ाया गया।
- इसी के कार्यकाल के दौरान कलकत्ता में विक्टोरिया मेमोरियल हॉल का निर्माण हुआ।
- कर्जन के भारत विरोधी कार्यों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य था—1905 ई. में बंगाल का विभाजन। 19 जुलाई, 1905 ई. को बंगाल विभाजन के निर्णय की घोषणा शिमला में की गयी और इसका प्रारूप प्रकाशित किया गया। सितम्बर, 1905 में उसे सम्राट ने भी स्वीकृति दे दी। 16 अक्टूबर, 1905 को इस बंगाल विभाजन की योजना को लागू किया गया। बंगाल को दो प्रान्तों में बाँट दिया गया-एक-पूर्वी बंगाल और असम प्रांत, दूसरा–पश्चिमी बंगाल। पूर्वी बंगाल का मुख्यालय ढाका में बनाया गया और लेफ्टिनेंट गवर्नर सर एण्ड्रयु फ्रेजर को बनाया गया।
- गर्वनर-जनरल की कार्य कारिणी के सैनिक-सदस्य के अधिकारों के प्रश्न पर कर्जन का प्रधान सेनापति किचनर से मतभेद हो गया जिसमें भारत सचिव ने किचनर का पक्ष लिया। इससे असंतुष्ट होकर अगस्त 1905 में लॉर्ड कर्जन ने त्यागपत्र दे दिया।

लॉर्ड मिन्टो द्वितीय *(1905–1910 ई.)*

- इसके समय में आगा खाँ एवं सलीम उल्ला खाँ के द्वारा ढाका में 1906 ई. में मुस्लिम लीग की स्थापना की गयी।
- 1907 के काँग्रेस के सूरत अधिवेशन में काँग्रेस का विभाजन हो गया।
- इसके शासनकाल में 1907 ई. में आँग्ल एवं रूसी प्रतिनिधिमंडलों के बीच बैठक हुई।
- मुसलमानों के लिए अलग निर्वाचन व्यवस्था मार्ले-मिन्टो सुधार अधिनियम-1909 ई. के द्वारा किया गया।

लॉर्ड हार्डिंग द्वितीय *(1910–1916 ई.)*

- इसके समय में ब्रिटेन के राजा जॉर्ज पंचम भारत आए। 12 दिसम्बर, 1911 ई. में दिल्ली में एक भव्य दरबार का आयोजन हुआ। यहाँ पर बंगाल-विभाजन को रद्द करने की घोषणा की गयी एवं भारत की राजधानी कलकत्ता से दिल्ली स्थानान्तरित करने की घोषणा की गयी। 1912 ई. में दिल्ली भारत की राजधानी बनी।
- 23 दिसम्बर, 1912 ई. को लॉर्ड हार्डिंग पर दिल्ली में बम फेंका गया। इस कांड में भाई बालमुकुन्द को फाँसी की सज़ा दी गई।
- इसी के समय 28 जुलाई, 1914 को प्रथम विश्वयुद्ध प्रारंभ हुआ।
- इसी के शासनकाल में फिरोजशाह मेहता ने 'बाम्बे क्रोनिकल' एवं गणेश शंकर विद्यार्थी ने 'प्रताप' का प्रकाशन किया।
- 1916 ई. में लॉर्ड हार्डिंग को बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय का कुलाधिपति नियुक्त किया गया।

लॉर्ड चेम्सफोर्ड *(1916–1921 ई.)*

- काँग्रेस के लखनऊ अधिवेशन *(1916 ई.)* में काँग्रेस का एकीकरण हुआ एवं मुस्लिम लीग के साथ समझौता हुआ।

- 1916 ई. में पूना में महिला विश्वविद्यालय की स्थापना हुई।
- इसके काल में 1917 ई. में शिक्षा पर सैडलर आयोग का गठन हुआ।
- इसी के काल में 1919 ई. में रौलेट एक्ट पारित हुआ।
- इसी के काल में 13 अप्रैल, 1919 ई. को जालियाँवाला बाग *(अमृतसर)* हत्याकांड हुआ।
- खिलाफत आन्दोलन एवं गाँधीजी का असहयोग आन्दोलन इसी के समय प्रारंभ हुआ।
- तृतीय अफगान युद्ध इसी के समय हुआ।

लॉर्ड रीडिंग *(1921–1926 ई.)*

- 1921 ई. में मोपला विद्रोह हुआ।
- 1921 में एम.एन. राय द्वारा भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का गठन किया गया।
- इसके काल में ही प्रिंस ऑफ वेल्स ने नवम्बर, 1921 ई. में भारत की यात्रा की। इस दिन पूरे भारत में हड़ताल का आयोजन किया गया।
- 5 फरवरी, 1922 को घटी चौरी-चौरा काण्ड *(उ. प्र. के गोरखपुर जिले में)* के बाद गाँधी जी ने अपना असहयोग आन्दोलन वापस ले लिया।
- भारत में 1922 से इलाहाबाद में सिविल सेवा परीक्षा की शुरुआत हुई।
- 1922 ई. में विश्वभारती विश्वविद्यालय ने कार्य करना प्रारंभ किया।
- 1923 ई. में चित्तरंजन दास एवं मोतीलाल नेहरू ने इलाहाबाद में काँग्रेस के अंतर्गत स्वराज्य पार्टी की स्थापना की। 1923 ई. के चुनाव में इस दल को मध्य प्रांत एवं बंगाल में पूर्ण बहुमत मिला।
- 1925 ई. में प्रसिद्ध आर्यसमाजी राष्ट्रवादी नेता स्वामी श्रद्धानन्द की हत्या कर दी गयी।

लॉर्ड इरविन *(1926–1931 ई.)*

- 3 फरवरी, 1928 ई. साइमन कमीशन बम्बई पहुँचा।
- लाला लाजपत राय की मृत्यु के बदले में भारतीय चरमपंथियों द्वारा दिल्ली के असेम्बली हॉल में 1929 ई. में बम फेंका गया।
- लाहौर जेल में जतिनदास ने 13 जुलाई, 1929 को भूख हड़ताल शुरू की व भूख-हड़ताल के 64वें दिन 13 सितम्बर, 1929 को उनकी मृत्यु हो गई। भूख हड़ताल का कारण भारतीय एवं अंग्रेज कैदियों के बीच व्यवहार में किया जाने वाला भेद-भाव था।
- 1929 ई. में काँग्रेस के लाहौर अधिवेशन में 'पूर्ण स्वराज' का लक्ष्य निर्धारित किया गया और 26 जनवरी, 1930 को स्वतंत्रता दिवस मनाने की घोषणा की गयी।
- सविनय अवज्ञा आन्दोलन के दौरान—महात्मा गाँधी को 5 मई, 1930 ई. को गिरफ्तार कर लिया गया। 25 जनवरी, 1931 ई. को वायसराय इरविन बिना कोई शर्त्त के उन्हें रिहा कर दिया।
- 12 नवम्बर, 1930 ई. में लंदन में प्रथम गोलमेज सम्मेलन हुआ। इस सम्मेलन में काँग्रेस ने भाग नहीं लिया।
- 4 मार्च, 1931 ई. को गाँधी-इरविन समझौते पर हस्ताक्षर किया गया और साथ ही 'सविनय अवज्ञा आन्दोलन' को स्थगित किया गया।*

लॉर्ड वेलिंगटन *(1931–1936 ई.)*

- इसके समय में लंदन में 7 सितम्बर से 1 दिसम्बर, 1931 तक द्वितीय गोलमेज सम्मेलन का आयोजन हुआ। इस सम्मेलन में काँग्रेस ने भी भाग लिया। काँग्रेस का प्रतिनिधित्व गाँधी जी ने किया। दूसरे गोलमेज सम्मेलन की असफलता के बाद गाँधी जी ने 3 जनवरी, 1932 ई. को दुबारा सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारंभ किया।
- 16 अगस्त, 1932 में रैम्जे मैकडोनाल्ड ने विवादास्पद 'साम्प्रदायिक पंचाट' की घोषणा की। इसके अनुसार दलितों को हिन्दुओं से अलग मानकर उन्हें अलग प्रतिनिधित्व देने को कहा गया और दलित वर्गों के लिए अलग निर्वाचन मंडल का प्रावधान किया गया। इससे गाँधीजी बहुत दुखी हुए और उन्होंने इसे हटाने के लिए आमरण उपवास आरंभ कर दिया; अंत में एक समझौता, जिसे प्रायः 'पूना समझौता' कहते हैं, किया गया जिसमें दलित वर्गों के लिए साधारण वर्गों में ही सीटों का आरक्षण किया गया। पूना समझौता 24 सितम्बर, 1932 ई. को हुआ।
- 17 नवम्बर से 24 दिसम्बर, 1932 ई. तक लंदन में तृतीय गोलमेज सम्मेलन का आयोजन हुआ। काँग्रेस ने इसमें भाग नहीं लिया।
- बिहार में 1934 ई. में भयंकर भूकम्प आया।
- भारत सरकार अधिनियम-1935 पास किया गया।
- लॉर्ड वेलिंगटन ने काँग्रेस के बम्बई अधिवेशन-1915 ई. में हिस्सा लिया था। इस अधिवेशन की अध्यक्षता सर सत्येन्द्र प्रसन्न सिन्हा ने की थी।

लॉर्ड लिनलिथगो *(1936–1943 ई.)*

- इसके समय में पहली बार चुनाव कराए गए। काँग्रेस ने ग्यारह में से आठ प्रान्तों *(1. बॉम्बे 2. मद्रास 3. बिहार, 4. संयुक्त प्रांत 5. मध्य प्रांत 6. उड़ीसा 7. उ.-प. सीमान्त प्रांत 8. असम)* में अपनी सरकारें बनाईं। प्रथम छह प्रान्तों में काँग्रेस को स्पष्ट बहुमत मिली थी। बंगाल, असम, उत्तर-पश्चिम सीमा प्रान्त, पंजाब और सिन्ध में काँग्रेस को पूर्ण बहुमत नहीं मिली थी।
- 1 सितम्बर, 1939 ई. को द्वितीय विश्वयुद्ध प्रारंभ हुआ। ब्रिटिश सरकार ने बिना भारतीयों से पूछे भारत को भी युद्ध में झोंक दिया। काँग्रेस ने इसका विरोध करते हुए नारा दिया, 'न कोई भाई, न कोई पाई' और इसने अपने द्वारा शासित प्रांतों के सभी मंत्रीमंडलों से त्यागपत्र दे दिया।
- 1 मई, 1939 ई. में सुभाष चन्द्र बोस ने फारवर्ड ब्लॉक नाम की एक नयी पार्टी बनाई।
- मार्च, 1940 ई. में लीग के लाहौर अधिवेशन में पहली बार पाकिस्तान की माँग की गयी। इस प्रस्ताव का प्रारूप सिकंदर हयात खान ने बनाया था और फजलुल हक ने प्रस्तुत किया था। खलीकुज्जमाँ ने उसका समर्थन किया था।
- 8 अगस्त, 1940 ई. को अगस्त प्रस्ताव अंग्रेजों के द्वारा लाया गया।
- मार्च, 1942 ई. में क्रिप्स मिशन भारत आया। कांग्रेस और मुस्लिम लीग दोनों ने क्रिप्स प्रस्तावों को अस्वीकार कर दिया। पंडित जवाहर लाल नेहरू एवं मौलाना आजाद क्रिप्स मिशन के साथ कांग्रेस के आधिकारिक वार्ताकार थे।
- 9 अगस्त, 1942 को काँग्रेस ने 'भारत छोड़ो' आन्दोलन प्रारंभ किया। भारत छोड़ो आन्दोलन को अगस्त क्रांति के नाम से भी जानते हैं।
- 1943 ई. में बंगाल में भयानक अकाल पड़ा।

लॉर्ड वेवेल *(1944–1947 ई.)*

- वायसराय वेवेल ने 25 जून, 1945 ई. को शिमला में एक सम्मेलन बुलाया। इस सम्मेलन में कांग्रेस प्रतिनिधिमण्डल का नेतृत्व अबुल कलाम आजाद ने किया था। गाँधी जी ने सम्मेलन में भाग नहीं लिया, यद्यपि वे शिमला में उपस्थित रहे। सम्मेलन के दौरान मुस्लिम लीग द्वारा यह शर्त रखी गई कि वायसराय की कार्यकारिणी परिषद् में नियुक्त होने वाले सभी मुस्लिम सदस्यों का चयन वह स्वयं करेगी। मुस्लिम लीग का यह अड़ियल रूख 14 जुलाई तक बना रहा अतः वेवेल 14 जुलाई, 1945 को सम्मेलन के विफलता की घोषणा की।
- 1945 में बनी क्लीमेन्ट एटली की अध्यक्षता वाली लेबर पार्टी की सरकार द्वारा की गई प्रथम कार्यवाही के अन्तर्गत भारत में आम चुनाव करवाना था। दिसम्बर, 1945 ई. में घोषित चुनाव परिणामों में केन्द्रीय विधान सभा तथा प्रांतीय विधान मंडलों में काँग्रेस को पर्याप्त बहुमत मिला। केन्द्रीय विधान सभा में काँग्रेस को निर्वाचन क्षेत्रों में 91.3 प्रतिशत मत मिले। मुस्लिम लीग ने सभी मुस्लिम सीटें जीत लीं। प्रांतीय विधान मंडल में कांग्रेस को बम्बई, मद्रास, संयुक्त प्रांत बिहार, उड़ीसा और मध्य प्रांत में पूर्ण बहुमत मिला। मुस्लिम लीग को बंगाल तथा सिंध में बहुमत मिला। पंजाब में कांग्रेस, अकालियों और यूनियनिस्ट पार्टी की साझा सरकार बनी।

---
* *द गजेटियर ऑफ इंडिया (V–II) P. 577*

- कैबिनेट मिशन 1946 ई. में भारत आया। इस मिशन के सदस्य थे—स्टेफोर्ड क्रिप्स, पैथिक लारेंस, ए. बी. अलेक्जेंडर।
- 20 फरवरी, 1947 ई. में प्रधानमंत्री लार्ड क्लीमेंट एटली *(लेबर पार्टी)* ने हाउस ऑफ कॉमंस में यह घोषणा की कि जून, 1948 ई. तक प्रभुसत्ता भारतीयों के हाथ में दे देंगे।

लॉर्ड माउण्टबेटन *(मार्च, 1947 से जून, 1948 ई.)*

- सत्ता हस्तांतरण के लिए 24 मार्च, 1947 ई. को भारत का गवर्नर-जेनरल लार्ड माउण्ट बेटन को बनाया गया। 3 जून, 1947 ई. को माउण्ट बेटन योजना घोषित, इसमें भारत विभाजन शामिल था।
- 4 जुलाई, 1947 ई. को ब्रिटिश संसद में एटली द्वारा भारतीय स्वतंत्रता विधेयक प्रस्तुत किया गया, जिसे 18 जुलाई, को स्वीकृति मिली। विधेयक के अनुसार भारत और पाकिस्तान दो स्वतंत्र राष्ट्रों की घोषणा की गयी।
- 15 अगस्त, 1947 ई. को भारत स्वतंत्र हुआ।
- स्वतंत्र भारत का प्रथम गवर्नर-जेनरल लॉर्ड माउण्टबेटन हुए।

नोट : *स्वतंत्र भारत के प्रथम एवं अंतिम भारतीय गवर्नर-जेनरल चक्रवर्त्ती राजगोपालाचारी हुए।*

45. अंग्रेजी शासन के विरुद्ध महत्वपूर्ण विद्रोह

क्र.	आन्दोलन *(विद्रोह)*	प्रभावित क्षेत्र	संबंधित नेता, नेतृत्व	समय
1.	संन्यासी विद्रोह	बिहार, बंगाल	केना सरकार, दिर्जिनारायण	1760-1800 ई.
2.	फकीर विद्रोह	बंगाल	मजनुनशाह एवं चिराग अली	1776-77 ई.
3.	पहाड़िया विद्रोह	बिहार *(भागलपुर)*	तिलका मांझी	1779 ई.
4.	चुआरो विद्रोह	बाँकुड़ा *(बंगाल)*	करणगढ़ की रानी सिरोमणी एव दुर्जन सिंह	1798 ई.
5.	चेरो विद्रोह	झारखंड *(पलामू)*	भूषण सिंह	1800 ई.
6.	पॉलीगरों का विद्रोह	तमिलनाडु	वीर. पी. काट्टावाम्मान	1799-01 ई.
7.	वेलाटम्पी विद्रोह	ट्रावणकोर	मेलुथाम्पी	1808-09 ई.
8.	भील विद्रोह	पश्चिमी घाट	सेवाराम	1825-31 ई.
9.	रामोसी विद्रोह	पश्चिमी घाट	चित्तर सिंह	1822-29 ई.
10.	पागलपंथी विद्रोह	असम	टीपू	1825-27 ई.
11.	अहोम विद्रोह	असम	गोमधर कुँवर	1828 ई.
12.	बहावी आन्दोलन	बिहार, उत्तर प्रदेश	सैय्यद अहमद तुतीमीर	1831 ई.
13.	कोल आन्दोलन	छोटानागपुर *(झारखंड)*	गोमधर कुँवर	1831-32 ई.
14.	भूमिज विद्रोह	झारखंड *(राँची)*	गंगा नारायण हंगामा	1832 ई.
15.	खासी विद्रोह	असम	तीरत सिंह	1833 ई.
16.	कंध विद्रोह	उड़ीसा	चक्र बिसोई	1837 ई.
17.	फरायजी आन्दोलन	बंगाल	शरीयातुल्ला टूटू मियां	1838-48 ई.
18.	नील विद्रोह	बंगाल, बिहार	तिरुत सिंह	1854-62 ई.
19.	संथाल विद्रोह	बंगाल एवं बिहार	सिद्धू-कान्हू	1855-56 ई.
20.	मुंडा विद्रोह	झारखंड	बिरसा मुंडा	1899-1900 ई.
21.	पाइक विद्रोह	उड़ीसा	बख्शी जगबन्धु	1817-1825 ई.
22.	नील आन्दोलन	बंगाल	दिगम्बर	1859-60 ई.
23.	पाबना विद्रोह	पावना *(बंगाल)*	ईशानचन्द्र राय एवं शंभूपाल	1873-76 ई.
24.	दक्कन विद्रोह	महाराष्ट्र	....	1874-75 ई.
25.	मोपला विद्रोह	मालाबार *(केरल)*	अली मुसलियार	1920-22 ई.
26.	कूका आन्दोलन	पंजाब	भगत जवाहर मल	....
27.	रंपाओ का विद्रोह	आन्ध्र प्रदेश	सीताराम राजू	1879-1922 ई.
28.	ताना भगत आन्दोलन	बिहार	जतरा भगत	1914 ई.
29.	तेंभागा आन्दोलन	बंगाल	कम्पाराम सिंह एवं भवन सिंह	1946 ई.
30.	तेलंगाना आन्दोलन	आन्ध्र प्रदेश	....	1946 ई.

- तिलका मांझी ने भागलपुर के प्रथम कलक्टर अगस्टस क्लेबलैंड को 1784 ई. में तीर एवं धनुष से जख्मी कर दिया था जिससे उसकी मृत्यु हो गयी। इसी कारण उसे गिरफ्तार कर 1785 ई. में भागलपुर के बीच चौराहे पर बरगद के पेड़ से लटकाकर फाँसी दे दी गई।
- भागलपुर से राजमहल के बीच का क्षेत्र, जो दामन-ए-कोह के नाम से जाना जाता था, संथाल बहुल क्षेत्र था। गैर आदिवासी एवं अंग्रेजों के अत्याचार से तंग आकर यहाँ के संथालों ने अपने आपको संगठित कर लिया। संथालों को उत्प्रेरित करने का कार्य भगनाडीह गाँव के चुलू संथाल के चार पुत्र-सिद्धू, कान्हू, चाँद और भैरव ने किया। सिद्धू ने अपने आप को ठाकुर का अवतार घोषित किया। जुलाई 1855 में संथाल विद्रोह प्रारंभ हुआ। सशस्त्र विद्रोह के प्रारंभ दीसी नामक स्थान में अत्याचारी दरोगा महेश लाल की हत्या से हुआ।
- बिरसा मुंडा का जन्म 15 नवम्बर, 1875 ई. को पलामू जिले के तमाड़ के निकट उलीहातू नामक गाँव में हुआ था। 1895 में बिरसा ने अपने आप को ईश्वर का दूत घोषित किया।
- उड़ीसा के कंध आदिवासियों के बीच मारियाह प्रथा *(मानव बलि प्रथा)* का प्रचलन था।

नोट : *भगत जवाहर मल के शिष्य राम सिंह ने 1872 ई. में अंग्रेजों का कड़ाई से सामना किया; बाद में इन्हें कैद कर रंगून भेज दिया गया जहाँ 1885 ई. में इनकी मृत्यु हो गयी।*

46. 1857 ई. की महान क्रांति

- 1856 में अंग्रेजों ने पुरानी बंदूक ब्राऊन बैस के स्थान पर नई एनफील्ड राइफल को प्रयोग करने का निर्णय लिया। उसके लिए जो कारतूस बनाए गए उन्हें राइफल में भरने से पहले मुँह से खोलना पड़ता था। इन कारतूसों में गाय और सुअर की चर्बी का प्रयोग किया गया था। यह चर्बी वाला कारतूस ही 1857 की क्रांति का प्रमुख कारण बना।
- 29 मार्च, 1857 ई. को मंगल पांडे नामक एक सैनिक ने बैरकपुर में गाय की चर्बी मिले कारतूसों को मुँह से काटने से स्पष्ट मना कर दिया था, फलस्वरूप उसे गिरफ्तार कर 8 अप्रैल, 1857 को

फाँसी दे दी गई। मंगल पांडे का संबंध 34वाँ बंगाल नेटिव इन्फैन्ट्री *(BNI)* से था।

- 10 मई, 1857 के दिन मेरठ की पैदल टुकड़ी 20 N.I. से 1857 ई. की क्रांति की शुरुआत हुई।
- 1857 ई. में क्रांति के समय भारत का गवर्नर जेनरल लॉर्ड कैनिंग एवं इंग्लैड के प्रधानमंत्री पार्मस्टेन *(लिबरल)* थे।

नोट : *अंग्रेजी भारतीय सेना का निर्माण 1748 ई. में आरंभ हुआ। उस समय मेजर स्ट्रिंजर लॉरेंस को अंग्रेजी भारतीय सेना का जनक पुकारा गया।*

- 1857 की क्रांति के असफलता के उपरान्त सेना में अंग्रेज सैनिकों और पदाधिकारियों की संख्या में वृद्धि की गयी। बंगाल की सेना में भारतीयों और अंग्रेज सैनिकों का अनुपात 2 : 1 का रखा गया, बम्बई और मद्रास की सेनाओं में यह अनुपात 5 : 2 का रखा गया।
- 1857 के मामले की जाँच हेतु पील कमीशन को नियुक्त किया गया था।
- बिहार, अवध तथा अन्य उन स्थानों के व्यक्तियों को, जिन्होंने 1857 ई. के क्रांति में भाग लिया था, गैर लड़ाकू घोषित किया गया और सेना में उनकी संख्या कम कर दी गई तथा सिख, गोरखा और पठानों को जिन्होंने 1857 के क्रांति को दबाने में अंग्रेजों की मदद की थी, लड़ाकू जातियाँ घोषित की गयी और उन्हें बड़ी संख्या में सेना में भर्ती किया गया।

नोट : *भारतीय को सेना में ऊँचे से ऊँचा प्राप्त होने वाला पद सूबेदार का था।*

- ह्यूरोज ने लक्ष्मीबाई की वीरता से प्रभावित होकर कहा था कि क्रांतिकारियों में वह एक अकेली मर्द थी।

1857 ई. की क्रांति के बारे में इतिहासकारों का मत

क्र	मत	इतिहासकार
1.	यह भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम था	बी. डी. सावरकर
2.	यह राष्ट्रीय विद्रोह था	डिजरायली
3.	यह पूर्णतया सिपाही विद्रोह था	सर जॉन लॉरेन्स एवं सीले
4.	यह अंग्रेजों के विरुद्ध हिन्दू एवं मुसलमानों का षड्यंत्र था	जेम्स आउट्रम, डब्ल्यू. टेलर
5.	बर्बरता तथा सभ्यता के बीच युद्ध था	टी. आर होम्स
6.	यह धर्मान्धों का ईसाइयों के विरुद्ध युद्ध था	एल. ई. आर. रीज़

1857 ई. की महान क्रांति के प्रमुख केन्द्र

केन्द्र	भारतीय नायक	विद्रोह की तिथि	ब्रिटिश नायक *(विद्रोह दबाने वाला)*	तिथि *(विद्रोह दबाने का)*
दिल्ली	बहादुरशाह जफर, बख्त खाँ *(सैन्य नेतृत्व)*	11, 12 मई, 1857 ई.	निकलसन *(मारा गया)* एवं हडसन	21 सितम्बर, 1857 ई.
कानपुर	नाना साहब *(धुन्धु पंत)*, तात्या टोपे *(सैन्य नेतृत्व)*	5 जून, 1857 ई.	कैंपबेल	6 सितम्बर, 1857 ई.
लखनऊ	बेगम हजरत महल	4 जून, 1857 ई.	हेनरी लॉरेन्स *(मारा गया)*, कैंपबेल	मार्च, 1858 ई.
झाँसी	रानी लक्ष्मीबाई	जून, 1857 ई.	ह्यूरोज*	3 अप्रैल, 1858 ई.
इलाहाबाद	लियाकत अली	1857 ई.	कर्नल नील	1858 ई.
जगदीशपुर	कुँअर सिंह	अगस्त, 1857 ई.	विलियम टेलर एवं विंसेट आयर	1858 ई.
बरेली	खान बहादुर खाँ	1857 ई.	हडसन	1858 ई.
फैजाबाद	मौलवी अहमद उल्ला	1857 ई.	कर्नल नील	1858 ई.
फतेहपुर	अजीमुल्ला	1857 ई.	जेनरल रेनर्ड	1858 ई.

नोट : *तात्या टोपे का वास्तविक नाम रामचन्द्र पांडुरंग था। 18 अप्रैल, 1859 को शिवपुरी में अंग्रेजों द्वारा इन्हें फाँसी पर लटका दिया गया था।*

47. भारत का स्वतंत्रता-संघर्ष : महत्वपूर्ण तथ्य

- पहला अंग्रेज विरोधी संघर्ष संन्यासियों के द्वारा शुरू किया गया।
- संन्यासी-विद्रोह का उल्लेख बंकिमचन्द्र चटर्जी के उपन्यास आनन्दमठ में किया गया है।
- 1887 ई. में दादा भाई नौरोजी ने इंग्लैंड में भारतीय सुधार समिति की स्थापना की।
- 1887 ई. के बाद ब्रिटिश सरकार का रुख काँग्रेस के प्रति कठोर होता चला गया।

काँग्रेस पर कुछ विशेष टिप्पणीयाँ

डफरिन	काँग्रेस केवल सूक्ष्मदर्शी अल्पसंख्या का प्रतिनिधित्व करती है।
कर्जन	काँग्रेस अपने पतन की ओर लड़खड़ाती हुई जा रही है।
अरविन्द घोष	काँग्रेस क्षयरोग से मरने ही वाली है।
बंकिमचंद्र चटर्जी	काँग्रेस के लोग पदों के भूखे राजनीतिज्ञ हैं।

- नौरोजी, दत्त एवं वाचा ने धन निकास के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। दादा भाई नौरोजी ने धन का पलायन सिद्धान्त का वर्णन अपनी पुस्तक पॉवर्टी एण्ड अन-ब्रिटिश रूल इन इंडिया में किया है।
- ब्रिटिश हाउस ऑफ कॉमन्स का चुनाव लड़ने वाले सर्वप्रथम भारतीय दादाभाई नौरोजी थे। इन्होंने लिबरल पार्टी के उम्मीदवार के रूप में फिंसवरी से, 1892 ई. में चुनाव जीता था।
- लॉर्ड कर्जन ने 20 जुलाई, 1905 ई. को बंगाल-विभाजन के निर्णय की घोषणा की।
- बंगाल-विभाजन के विरोध में 7 अगस्त, 1905 को कलकत्ता के टाऊन हॉल में स्वदेशी आन्दोलन की घोषणा की गयी। बंगाल-विभाजन 16 अक्टूबर, 1905 को प्रभावी हुआ। इस दिन पूरे बंगाल में शोक दिवस मनाया गया। स्वदेशी आन्दोलन में वन्दे मातरम्, विभाजन नहीं चाहिए एवं बंगाल एक है आदि नारे लगाये गये।

नोट : *स्वदेशी आन्दोलन का विचार सर्वप्रथम कृष्ण कुमार मित्र के पत्र संजीवनी में 1905 ई. में प्रस्तुत किया गया था।*

- आन्ध्र के डेल्टा इलाकों में स्वदेशी आन्दोलन को वंदे मातरम् आन्दोलन के नाम से जाना जाता था।
- 1906 में कलकत्ता में हुए काँग्रेस के अधिवेशन की अध्यक्षता करते हुए दादाभाई नौरोजी ने पहली बार स्वराज्य की माँग प्रस्तुत की।
- स्वदेशी आन्दोलन चलाने के तरीके को लेकर ही काँग्रेस 1907 ई. के सूरत अधिवेशन में उग्रवादी *(गरम दल)* एवं उदारवादी *(नरम दल)* नामक दो दलों में विभाजित हो गयी। इस सम्मेलन की अध्यक्षता रासबिहारी बोस ने की थी।
- स्वदेशी आन्दोलन के अवसर पर ही रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने अपना प्रसिद्ध गीत आमार सोनार बंगला लिखा। बाद में यही गीत बांग्लादेश का राष्ट्रीय गीत बना।
- बाल गंगाधर तिलक पहले काँग्रेसी नेता थे, जिन्होंने देश के लिए कई बार जेल की यात्रा की। 1897 में राजद्रोह के आरोप में 18 माह की कारावास हुई। फिर 1908 में राजद्रोह के आरोप में 6 वर्ष की कारावास हुई। 1908 से 1914 तक वर्मा के मॉडले जेल में 6 वर्ष काटने पड़े।
- प्लेग के समय की ज्यादतियों से प्रभावित होकर पूना के चापेकर बन्धुओं *(दामोदर एवं बालकृष्ण)* ने प्लेग अधिकारी रैंड एवं एयर्स्ट की हत्या कर दी।
- बंगाल में क्रांतिकारी विचारधारा को वारिन्द्र कुमार घोष एवं भूपेन्द्रनाथ दत्त ने फैलाया। 1905 ई. में वारिन्द्र कुमार घोष ने 'भवानी मंदिर' नाम की पुस्तिका लिखी; जिसमें क्रांतिकारी कार्यों को संगठित करने के लिए केंद्र बनाने के लिए जानकारी दी गई थी। 1906 ई. में इन दोनों ने मिलकर 'युगांतर' नामक समाचार-पत्र का प्रकाशन किया।

1893 ई. का वर्ष : एक परिवर्तन बिन्दु

★ 1893 ई. में स्वामी विवेकानंद *(1863-1902 ई.)* अमेरिका के शिकागो नगर पहुँचे। सितम्बर, 1893 ई. में वहाँ पर हो रहे सर्व-धर्म सम्मेलन में पहले ही दिन उन्हें दो मिनट बोलने का समय दिया गया था। जैसे ही उन्होंने अपने वक्तव्य का संबोधन 'अमेरिका के भाइयों और बहनों' के साथ शुरू किया, तालियों की गड़गड़ाहट ने न केवल उन्हें, बल्कि भारत को विश्व के सर्वोच्च देशों में लाकर खड़ा कर दिया। उन्हें 'तुफानी हिन्दू' कहा जाने लगा।

★ 1893 ई. में 14 वर्ष के बाद योगीराज अरविन्द घोष *(1872-1950 ई.)* की भारत भूमि पर वापसी हुई। 1893 ई. में उन्होंने एक लेखमाला 'न्यू लैंप फॉर ओल्ड' प्रकाशित किया।

★ 16 नवम्बर, 1893 को एनी बेसेंट *(1847-1933 ई.)* भारत आई। वे वाराणसी शहर में रहने लगीं। उन्होंने भारतीयों से कहा कि, ''मैं हृदय से तुम्हारे साथ हूँ और संस्कृति से भी मैं तुम्हीं लोगों में से एक हूँ।''

★ 1893 ई. में महात्मा गाँधी *(1869-1948 ई.)* अब्दुल्ला सेठ नामक व्यापारी के मुकदमे में दक्षिण अफ्रीका गए।

★ क्रांतिकारी गतिविधियों की दृष्टि से भी 1893 ई. का वर्ष महत्वपूर्ण है। नासिक में चापेकर बंधुओं ने एक गुप्त संस्था 'सोसायटी फॉर दी रिमूवल ऑफ ऑब्स्टेकल्स टू दी हिन्दू रिलीजन' स्थापित की।

➢ बंगाल में पी. मित्रा ने 'अनुशीलन समिति' का गठन किया, जिसका उद्देश्य था—खून का बदला खून। अनुशीलन समिति की 500 शाखाएँ खोली गयीं। अनुशीलन समिति ने हेमचन्द्र दास कानूनगो को पेरिस भेजा, जिसने रूसी क्रांतिकारी निकोलस सफ्रांस्की से बम बनाना सीखा।

➢ महाराष्ट्र में विनायक दामोदर सावरकर ने 1904 ई. में 'अभिनव भारत' नामक संस्था स्थापित की। अभिनव भारत संगठन के सदस्य पी.एन. वापट बम बनाने की कला सीखने के लिए पेरिस गये।

➢ महाराष्ट्र में क्रांतिकारी आन्दोलन उभारने का श्रेय तिलक के पत्र 'केसरी' *(मराठी में)* को जाता है।

➢ तिलक ने 1893 ई. में गणपति एवं 1895 ई. में शिवाजी उत्सव मनाना प्रारंभ किया।

➢ वेलेन्टाइल शिरॉले ने बाल गंगाधर तिलक को भारतीय असन्तोष का जनक कहा था।

➢ महाराष्ट्र से महत्वपूर्ण क्रांतिकारी पत्र 'काल' का सम्पादन परांजपे ने किया।

➢ प्रफुल्ल चाकी और खुदीराम बोस ने 30 अप्रैल, 1908 ई. को मुजफ्फरपुर के जज किंग्सफोर्ड की हत्या का प्रयत्न किया। गलती से बम केनेडी की गाड़ी पर गिरा दिया गया, जिससे दो महिलाओं *(प्रिंगले की पत्नी एवं बेटी)* की मृत्यु हो गयी। चाकी ने आत्महत्या कर ली और खुदीराम बोस को लगभग 18 वर्ष की अवस्था में 11 अगस्त, 1908 ई. को फाँसी दे दी गयी।

खुदीराम बोस

जन्म : 1889

ग्राम : हबीबपुर *(जि. मिदनापुर, पं. बंगाल)*

पकड़ने वाली पुलिस : फतह सिंह एवं शिव प्रसाद मिश्र

खुदीराम बोस के मुकदमें में जज : कर्नडफ

सरकारी वकील : मानुक व विनोद मजुमदार

खुदीराम बोस की ओर से वकील : कालीदास बोस

फाँसी की तारीख : 11 अगस्त, 1908 *(एक हाथ में गीता लेकर खुदीराम बोस फाँसी के तख्ते पर जा खड़े हुए।)*

➢ खुदीराम बोस बंगाल के क्रांतिकारियों के युगान्तर दल के सक्रिय सदस्य थे। युगान्तर दल के नेता बारीन्द्र कुमार घोष थे।

➢ 1905 ई. में लन्दन में श्याम जी कृष्ण वर्मा ने इंडियन होमरूल सोसायटी की स्थापना की।

➢ 30 दिसम्बर, 1906 ई. को ढाका के नवाब सलीम उल्ला खाँ के निमंत्रण पर सम्मेलन हुआ। नवाब वकारुल मुल्क इसके अध्यक्ष थे। इसी सम्मेलन में अखिल भारतीय मुस्लिम लीग का उदय हुआ। लीग का संविधान 1907 ई. में कराची में बना और इस संविधान के अनुसार प्रथम अधिवेशन 1908 ई. में अमृतसर में हुआ जहाँ आगा खाँ को इसका अध्यक्ष बना दिया गया। मुस्लिम लीग ने बंगाल-विभाजन का समर्थन किया।

➢ भीकाजी रूसतम कामा भारतीय मूल की फ्रांसीसी नागरिक थी, जो जर्मनी के स्टुटगार्ड शहर में 22 अगस्त, 1907 को आयोजित सातवीं अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस में तिरंगा फहराने के लिए जानी जाती है। इनके माता-पिता पारसी थे। इन्होंने दादा भाई नौरोजी के निजी सचिव के रूप में भी काम की थी।

➢ 1 जुलाई, 1909 को मदन लाल ढींगरा ने विलियम कर्ज़न वाइली को गोली मारकर हत्या कर दी। 16 अगस्त, 1909 ई. को मदन लाल ढींगरा को मृत्युदंड दिया गया।

➢ 21 दिसम्बर, 1909 को अनंत कान्हरे ने जैक्सन को गोली मार दी।

➢ वायसराय लॉर्ड हार्डिंग ने 1911 ई. में दिल्ली में भव्य दरबार का आयोजन इंग्लैंड के सम्राट् जॉर्ज पंचम एवं मेरी के स्वागत में किया। इस दरबार में निम्न घोषणाएँ हुईं—

1. बंगाल-विभाजन को रद्द किया गया।
2. बंगाली भाषी क्षेत्रों को मिलाकर अलग एक प्रांत बनाया गया।
3. बिहार एक अलग राज्य बना, जिसमें उड़ीसा भी शामिल था।
4. राजधानी को कलकत्ता से दिल्ली स्थानान्तरित करने की घोषणा हुई। 1912 ई. में दिल्ली, भारत की राजधानी बनी।

➢ 23 दिसम्बर, 1912 ई. को रासबिहारी बोस ने दिल्ली में वायसराय लॉर्ड हार्डिंग पर बम फेंका। इसके परिणामस्वरूप 13 व्यक्ति गिरफ्तार किये गये। इसमें प्रमुख थे—मास्टर अमीचन्द, दीनानाथ, अवधबिहारी लाल, बाल मुकुंद, बसंत कुमार विश्वास, हनुमंत सहाय एवं बलराज। दीनानाथ दबाव में आकर सरकारी गवाह बन गये और मास्टर अमीचन्द, अवधबिहारी लाल, बाल मुकुंद एवं बसंत कुमार विश्वास को फाँसी दे दी गयी।

➢ 1 नवम्बर, 1913 में अनेक भारतीयों ने लाला हरदयाल के नेतृत्व में सैन फ्रांसिस्को *(अमेरिका)* में गदर पार्टी की स्थापना की, सोहनसिंह भाक्खना इसके प्रथम अध्यक्ष, लाला हरदयाल इसके प्रथम मंत्री एवं काशीराम कोषाध्यक्ष चुने गये थे। 1 नवम्बर 1913 को गदर अखबार का पहला अंक प्रकाशित हुआ, जो उर्दू में था। 9 दिसम्बर, 1913 से यह गुरुमुखी में छपने लगा। इसके प्रत्येक अंक के पहले पृष्ठ पर छपता था—'अंग्रेजी राज का कच्चा चिट्ठा'।

➢ कोमागातामारु जापानी जहाज को बाबा गुरुदत्त सिंह *(1914 ई.)* ने किराया पर लिया था। यह जलयान 351 यात्रियों के साथ 26 सितम्बर, 1914 ई. को हुगली पहुँचा। बजबज नामक बंदरगाह पर जहाज पहुँचने पर तलाशी हुई और संघर्ष हुआ। 18 यात्री मार दिये गये और लगभग 25 यात्री घायल हुए।

➢ 1915 ई. में अंग्रेज सरकार ने कैसर-ए-हिन्द की उपाधि से महात्मा गाँधी को सम्मानित किया।

➢ काँग्रेस के लखनऊ अधिवेशन *(1916 ई.)* में काँग्रेस के दोनों दलों में एकता हो गयी। इसी अधिवेशन में मुस्लिम लीग ने भी काँग्रेस से मिलकर एक संयुक्त समिति की स्थापना की।

➢ बाल गंगाधर तिलक ने स्वशासन प्राप्ति हेतु 28 अप्रैल, 1916 ई. को पूना में होमरूल लीग की स्थापना की।

➢ एनी बेसेन्ट ने सितम्बर, 1916 ई. में मद्रास में होमरूल लीग की स्थापना की। जॉर्ज अरुण्डेल को लीग का सचिव बनाया।

➢ गाँधीजी ने प्रथम विश्वयुद्ध के समय लोगों को सेना में भर्ती होने के लिए प्रोत्साहित किया; इसलिए लोग इन्हें भर्ती कराने वाला सार्जेन्ट कहने लगे।

➢ 1916 ई. में गाँधीजी ने अहमदाबाद के करीब साबरमती आश्रम की स्थापना की।

➢ बिहार के एक किसान नेता राजकुमार शुक्ल ने गाँधीजी को चम्पारण आने को प्रेरित किया। चम्पारण आन्दोलन के इस सूत्रधार की 20 मई, 1929 को 54 वर्ष की आयु में मृत्यु हो गयी। अंग्रेज अधिकारी एमन जिससे शुक्ल जी 25 वर्षों तक लड़ते रहे थे, उनके श्राद्ध कर्म के लिए 300 रुपए भेजा एवं कहा कि वह चम्पारण का अकेला मर्द था।

- गाँधीजी ने 'सत्याग्रह' का सर्वप्रथम प्रयोग द. अफ्रीका में किया। भारत में 'सत्याग्रह' का पहला प्रयोग 1917 ई. में चम्पारण *(बिहार)* में किया गया।
- चम्पारण विद्रोह के कारण अंग्रेजों को तीनकठिया प्रथा को समाप्त करना पड़ा।
- बेसेन्ट ने 20 अगस्त, 1917 ई. को होमरूल लीग को समाप्त करने की घोषणा की।
- 1918 में महात्मा गाँधी ने अहमदाबाद टेक्सटाइल्स लेबर एशोसिएशन की स्थापना की। यह उस समय की सबसे बड़ी ट्रेड यूनियन थी। यही गाँधी जी ने ट्रस्टीशिप का सिद्धान्त दिया। इसमें इन्होंने बताया कि पूँजीपति, मजदूरों के हितों की रक्षा करने वाले ट्रस्टी होते हैं।

नोट : *31 अक्टूबर, 1920 को एन.एम. जोशी ने ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस (AITUC) की स्थापना की। इसके प्रथम अध्यक्ष लाला लाजपत राय थे।*

- महात्मा गाँधी ने पहली बार भूख हड़ताल अहमदाबाद मिल मजदूरों के हड़ताल *(1918 ई.)* के समर्थन में की थी।
- गाँधीजी ने 1918 ई. में गुजरात के खेड़ा जिले में 'कर नहीं आन्दोलन' चलाया।
- 19 मार्च, 1919 ई. को रौलेट एक्ट लागू किया गया। इसके अनुसार किसी भी संदेहास्पद व्यक्ति को बिना मुकदमा चलाये गिरफ्तार किया जा सकता था, परन्तु उसके विरुद्ध 'न कोई अपील, न कोई दलील और न कोई वकील' किया जा सकता था।
- गाँधी ने इस कानून के विरुद्ध 6 अप्रैल, 1919 ई. को देशव्यापी हड़ताल करवायी।
- 13 अप्रैल, 1919 ई. को अमृतसर में जालियाँवाला बाग हत्याकांड हुआ। डॉ. सतपाल और सैफुद्दीन किचलू की गिरफ्तारी के विरोध में हो रही जनसभा पर जेनरल R.E.H डायर ने अंधाधुंध गोलियाँ चलवायी। सरकारी रिपोर्ट के अनुसार इसमें 379 व्यक्ति एवं काँग्रेस समिति के अनुसार लगभग 1000 व्यक्ति मारे गये। उस समय पंजाब का लेफ्टिनेंट गवर्नर सर माइकल ओ डायर था।
- जालियाँवाला बाग हत्याकांड में हंसराज नामक भारतीय ने डायर का सहयोग किया था।
- शंकरन नायर ने जालियाँवाला बाग हत्याकांड के विरोध में वायसराय की कार्यकारिणी परिषद् के सदस्यता से इस्तीफा दे दिया।
- जालियाँवाला बाग हत्याकांड के विरोध में महात्मा गाँधी ने 'कैसर-ए-हिन्द' की उपाधि, जमनालाल बजाज ने 'राय बहादुर' की उपाधि एवं रवीन्द्र नाथ टैगोर ने 'सर' की उपाधि वापस लौटा दी।
- जालियाँवाला बाग हत्याकांड की जाँच के लिए सरकार ने 19 अक्टूबर, 1919 ई. में लार्ड हंटर की अध्यक्षता में एक कमेटी का गठन किया। इसमें पाँच अंग्रेज एवं तीन भारतीय *(सर चिमन लाल शीतलवाड़, साहबजादा सुल्तान अहमद एवं जगत नारायण)* सदस्य थे।
- काँग्रेस ने जालियाँवाला बाग हत्याकांड की जाँच के लिए मदन मोहन मालवीय के नेतृत्व में एक आयोग नियुक्त किया। इसके अन्य सदस्यों में मोतीलाल नेहरू और गाँधीजी थे।
- जालियाँवाला बाग कभी जल्ली नामक व्यक्ति की संपत्ति थी।
- खिलाफत आंदोलन भारतीय मुसलमानों का मित्र राष्ट्रों के विरुद्ध विशेषकर ब्रिटेन के खिलाफ टर्की के खलीफा के समर्थन में आंदोलन था।
- 19 अक्टूबर, 1919 को समूचे देश में 'खिलाफत दिवस' मनाया गया।
- 23 नवम्बर, 1919 ई. को हिन्दू और मुसलमानों की एक संयुक्त कांफ्रेंस हुई, जिसकी अध्यक्षता महात्मा गाँधी ने की।
- रौलेट एक्ट, जालियाँवाला बाग हत्याकांड और खिलाफत आंदोलन के उत्तर में गाँधीजी ने 1 अगस्त, 1920 ई. को असहयोग आंदोलन प्रारंभ किया। असहयोग आन्दोलन की पुष्टि भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस ने दिसम्बर, 1920 ई. के नागपुर अधिवेशन में की।
- मुहम्मद अली को सर्वप्रथम असहयोग आन्दोलन में गिरफ्तार किया गया।
- मुहम्मद अली जिन्ना, एनी बेसेंट तथा विपिनचन्द्र पाल काँग्रेस के असहयोग आन्दोलन से सहमत नहीं थे, अतः उन्होंने काँग्रेस छोड़ दी।

चंद्रशेखर आजाद (पंडित जी)
पूरा नाम : चंद्रशेखर सीताराम तिवारी
जन्म-स्थान : भावरा, झाबुआ जिला *(वर्तमान में जिला अलीराजपुर, म.प्र.)*
जन्म तिथि : 23 जुलाई, 1906 ई.
पिता : पं. सीताराम तिवारी
माता : जगरानी देवी
शहीद स्थल : अल्फ्रेड पार्क, इलाहाबाद
शहीद तिथि : 27 फरवरी, 1931 ई.
संबंधित संगठन : नौजवान सभा, कृति किसान पार्टी, हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन

- 5 फरवरी, 1922 ई. को गोरखपुर जिले के चौरी-चौरा नामक स्थान पर असहयोग आन्दोलनकारियों ने क्रोध में आकर थाने में आग लगा दी, जिससे एक थानेदार एवं 21 सिपाहियों की मृत्यु हो गयी। इस घटना से दुखित होकर गाँधीजी ने 11 फरवरी, 1922 ई. को असहयोग आन्दोलन स्थगित कर दिया।
- 13 मार्च, 1922 ई. को गाँधीजी को गिरफ्तार कर 6 वर्ष की कड़ी कारावास की सजा सुनाई गयी। स्वास्थ्य संबंधी कारणों से गाँधी को 5 फरवरी, 1924 ई. को रिहा कर दिया गया।
- 1922 ई. के मेवाड़ भील आन्दोलन का नेता मोतीलाल तेजावत था।
- 1923 ई. में इलाहाबाद में चित्तरंजनदास एवं मोतीलाल नेहरू ने काँग्रेस के अंतर्गत स्वराज पार्टी की स्थापना की।
- महात्मा गाँधी सिर्फ एक बार काँग्रेस के बेलगाँव अधिवेशन *(1924 ई.)* में इसके अध्यक्ष चुने गये।
- शचीन्द्र सान्याल ने 1924 ई. में कानपुर में 'हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन' की स्थापना की। भगत सिंह ने 1928 ई. में दिल्ली स्थित फिरोजशाह कोटला में 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन' की स्थापना की।
- 9 अगस्त, 1925 ई. को 10 व्यक्तियों ने सहारनपुर से लखनऊ की ओर जा रही 8 डाउन ट्रेन से रेल विभाग का खजाना काकोरी नामक स्थान पर लूट लिया। इसे ही काकोरी कांड कहा गया। सरकारी खज़ाना लूटने का विचार राम प्रसाद बिस्मिल का था। इसमें राम प्रसाद बिस्मिल, राजेन्द्र लाहिड़ी, रोशन सिंह एवं अशफ़ाकउल्ला खाँ को दिसम्बर, 1927 ई. में फाँसी दे दी गई एवं शचीन्द्र सान्याल को आजीवन कारावास की सजा मिली। मन्मथनाथ गुप्त को 14 वर्ष की कैद हुई। राम प्रसाद बिस्मिल यह कहते हुए कि "मैं राज्य के पतन की इच्छा करता हूँ" फाँसी पर लटक गए।
- संभवतः अशफ़ाकउल्ला खाँ पहले भारतीय क्रांतिकारी मुसलमान थे, जो देश की स्वतंत्रता के लिए फाँसी के तख्ते पर लटके थे।
- स्त्रियों ने स्वयं अपने अधिकारों के लिए आंदोलन करने के उद्देश्य से 1926 ई. में अखिल भारतीय महिला संघ स्थापित किया।
- साइमन कमीशन 3 फरवरी, 1928 ई. को भारत आया। इसे वाइट मैन कमीशन भी कहते हैं।
- नेहरु रिपोर्ट को अंतिम रूप से अगस्त, 1928 में आयोजित सर्वदलीय सम्मेलन में स्वीकार किया गया था, इस सम्मेलन की अध्यक्षता डॉ. अंसारी ने की थी।
- 30 अक्टूबर, 1928 ई. को लाहौर में साइमन आयोग के विरुद्ध प्रदर्शन करते समय पुलिस की लाठी से लाला लाजपत राय घायल हो गये और बाद में उनकी मृत्यु हो गयी।
- साइमन कमीशन का बहिष्कार न करने वाले दो दल थे—जस्टिस पार्टी एवं पंजाब यूनियनिस्ट पार्टी।
- भगत सिंह के नेतृत्व में पंजाब के क्रांतिकारियों ने 17 दिसम्बर, 1928 को लाहौर के तत्कालीन सहायक पुलिस कप्तान सॉण्डर्स को गोली मार दी।

- 'पब्लिक सेफ्टी बिल' पास होने के विरोध में 8 अप्रैल, 1929 ई. को बटुकेश्वर दत्त एवं भगत सिंह ने दिल्ली में सेन्ट्रल लेजिस्लेटिव असेम्बली में खाली बेंचों पर बम फेंका। 'क्रांतिकारियों ने अपने पर्चे में कहा था कि उनका मकसद किसी की जान लेना नहीं बल्कि बहरे कानों तक अपनी आवाज पहुँचाने के लिए है।'

नोट : *भगत सिंह एवं बटुकेश्वर दत्त के बम फेंकने के समय असेम्बली के अध्यक्ष बिट्ठलभाई पटेल सदारत कर रहे थे।*

- काँग्रेस के 1929 ई. के लाहौर अधिवेशन में 'पूर्ण स्वराज' का अपना लक्ष्य घोषित किया था। इस अधिवेशन की अध्यक्षता जवाहरलाल नेहरू कर रहे थे। 31 दिसम्बर, 1929 ई. को रात के 12 बजे जवाहरलाल नेहरू ने रावी नदी के तट पर नवगृहीत तिरंगे झण्डे को फहराया। इसी अधिवेशन में 26 जनवरी, 1930 ई. को 'प्रथम स्वाधीनता दिवस' के रूप में मनाने का निश्चय किया गया। इसी के साथ प्रत्येक वर्ष 26 जनवरी को स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाये जाने की परम्परा शुरू हुई थी।
- 12 मार्च, 1930 को गाँधीजी ने अपने 79 समर्थकों के साथ साबरमती स्थित अपने आश्रम से लगभग 322 किमी.* दूर डाण्डी के लिए प्रस्थान किया। लगभग 24 दिनों बाद 6 अप्रैल, 1930 को डाण्डी पहुँचकर गाँधीजी ने नमक कानून तोड़ा और सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरुआत की। सुभाष चन्द्र बोस ने गाँधीजी के नमक सत्याग्रह की तुलना नेपोलियन के एल्बा से पेरिस यात्रा से की।
- 4 मार्च, 1931 ई. को गाँधी-इरविन पैक्ट हुआ,* इसके बाद गाँधीजी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन स्थगित कर दिया। गाँधी-इरविन समझौता को दिल्ली समझौता के नाम से भी जाना जाता है।
- 1931 में सरदार बल्लभभाई पटेल की अध्यक्षता में हुई काँग्रेस के करॉची अधिवेशन में पंडित जवाहर लाल नेहरू ने मूल अधिकारों व आर्थिक कार्यक्रम पर संकल्प प्रारूपित किया। इस प्रस्ताव को बनाने में एम.एन.राय ने नेहरू की मदद की थी। इसी अधिवेशन में गाँधी इरविन पैक्ट को स्वीकार किया गया एवं गाँधी जी को द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने की अनुमति प्रदान कर दी गई। इसी समय गाँधी ने कहा था कि ''गाँधी मर सकते हैं, परन्तु गाँधीवाद नहीं।''
- दूसरा गोलमेज सम्मेलन 7 सितम्बर, 1931 ई. को हुआ। महात्मा गाँधी ने काँग्रेस के प्रतिनिधि के रूप में इसमें भाग लिया; परन्तु यह सम्मेलन साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्व के कारण असफल रहा।

नोट : *प्रथम गोलमेज सम्मेलन 12 नवम्बर, 1930 ई. एवं तृतीय गोलमेज सम्मेलन 17 नवम्बर, 1932 ई. में हुआ।*

- तीनों गोलमेज सम्मेलन के समय इंग्लैंड का प्रधानमंत्री जेम्स रैम्जे मैकडोनाल्ड था।
- डॉ. भीमराव अम्बेदकर को लंदन में हुई तीनों गोलमेज सभाओं में अछूतों के प्रतिनिधि के रूप में बुलाया गया।
- दूसरे गोलमेज सम्मेलन की असफलता के बाद गाँधी ने 3 जनवरी, 1932 पुनः सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारंभ कर दिया। सविनय अवज्ञा आन्दोलन अंतिम रूप से 7 अप्रैल, 1934 को वापस लिया गया।
- सविनय अवज्ञा आन्दोलन में पठान सत्याग्रहियों पर गोली चलाने से गढ़वाल राइफल्स ने इनकार कर दिया।
- 23 मार्च, 1931 ई. को सुखदेव, भगत सिंह एवं राजगुरु को फाँसी पर लटका दिया गया।
- मई, 1934 ई. काँग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना हुई।
- अखिल भारतीय किसान सभा का प्रथम सम्मेलन अप्रैल, 1936 ई. में लखनऊ में हुआ। इसके अध्यक्ष स्वामी सहजानंद तथा महासचिव एन. जी. रंगा चुने गये। स्वामी सहजानन्द सरस्वती ने हुंकार नामक पत्रिका का पटना से प्रकाशन किया। यह किसान आन्दोलन की पत्रिका थी। राहुल सांस्कृत्यायन इस साप्ताहिक पत्रिका के 1942 में संपादक बने।

नोट : *अखिल भारतीय किसान सभा का गठन 11 अप्रैल, 1936 को लखनऊ में हुआ था।*

* *द गजेटियर ऑफ इंडिया (V–II) P. 576 , 577*

- 1939 ई. में महात्मा गाँधी द्वारा प्रस्तावित प्रत्याशी पट्टाभि सीतारमैय्या को हराकर सुभाष चन्द्र बोस काँग्रेस के अध्यक्ष चुने गये।
- 1 मई, 1939 ई. को सुभाष चंद्र बोस ने काँग्रेस के भीतर ही एक नये गुट का गठन किया, जिसे फॉरवर्ड ब्लाक *(Forward Block)* कहा गया। सुभाष चन्द्र बोस ने स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान फ्री इण्डियन लीजन नामक सेना बनायी थी।
- 13 मार्च, 1940 ई. को लंदन में पंजाब के सुनाम नामक स्थान के सरदार ऊधम सिंह ने पंजाब के भूतपूर्व लेफ्टिनेंट गवर्नर माइकल ओ डायर की गोली मारकर हत्या कर दी।
- गाँधीजी ने 17 अक्टूबर, 1940 को पावनार में व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन शुरू किया। इस आन्दोलन के प्रथम सत्याग्रही विनोबा भावे, दूसरे सत्याग्रही जवाहरलाल नेहरू एवं तीसरे सत्याग्रही ब्रह्मदत्त थे। इस आन्दोलन को 'दिल्ली चलो' आन्दोलन भी कहा गया।
- 24 मार्च, 1940 को मुस्लिम लीग के लाहौर अधिवेशन में अध्यक्षता करते हुए मुहम्मद अली जिन्ना ने भारत से अलग मुस्लिम राष्ट्र पाकिस्तान की माँग की। मुस्लिम लीग के 1940 ई. के दिल्ली अधिवेशन *(अध्यक्ष अल्ला बक्श)* में खलीकुज्जमान ने पाकिस्तान नाम से अलग राष्ट्र का प्रस्ताव रखा।
- 1942 में वर्धा में काँग्रेस ने 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' प्रस्ताव पारित किया।
- 7 अगस्त, 1942 को काँग्रेस की बैठक बम्बई के ऐतिहासिक ग्वालिया टैंक में हुई। इसकी अध्यक्षता अबुल कलाम आजाद ने की थी।
- गाँधी के भारत छोड़ो प्रस्ताव को काँग्रेस कार्यसमिति ने 8 अगस्त, 1942 ई. को स्वीकार कर लिया। भारत छोड़ो आन्दोलन की शुरुआत 9 अगस्त, 1942 ई. को हुई। इसी आन्दोलन में गाँधीजी ने 'करो या मरो' का नारा दिया।
- 9 अगस्त, 1942 ई. को प्रातःकाल *(ऑपरेशन जीरो आवर)* ही गाँधीजी एवं काँग्रेस के अन्य सभी महत्वपूर्ण नेता गिरफ्तार कर लिये गये। गाँधीजी को पूना के आगा खाँ महल में तथा काँग्रेस कार्यकारिणी के अन्य सदस्यों को अहमदनगर के दुर्ग में रखा गया था। सरोजनी नायडू एवं कस्तुरवा गाँधी को भी आगा खाँ पैलेस में रखा गया था। जवाहर लाल नेहरू को अल्मोड़ा जेल में, राजेन्द्र प्रसाद को बाँकीपुर जेल में और मौलाना अबुल कलाम अजाद को बाकुड़ा जेल में रखा गया। 6 मई, 1944 ई. को गाँधीजी को जेल से छोड़ा गया।
- उषा मेहता भारत छोड़ो आन्दोलन के समय खुफिया रेडियो चलाने के कारण पूरे देश में विख्यात हुई।
- भारत छोड़ो आन्दोलन के उपरांत मुस्लिम लीग एवं काँग्रेस के बीच संवैधानिक गतिरोध को दूर करने के लिए सी. राजगोपालाचारी ने 1944 में दी वे-आऊट नामक पैम्फलेट जारी किया।
- आज़ाद हिन्द फौज की स्थापना का विचार सर्वप्रथम कैप्टन मोहन सिंह के मन में आया।
- आज़ाद हिन्द फौज की प्रथम डिविजन का गठन 1 सितम्बर, 1942 को कैप्टन मोहन सिंह के द्वारा किया गया परन्तु वह असफल रहा।
- आज़ाद हिन्द फौज का सफलतापूर्वक स्थापना का श्रेय रासबिहारी बोस को दिया जाता है।
- भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई में सुभाष चन्द्र बोस अग्रणी क्रांतिकारी थे। भारत की स्वतंत्रता हेतु विदेशी सहायता प्राप्त करने के लिए बोस 1941 में जर्मनी पहुँचे। वहाँ जर्मन विदेश मंत्रालमय की सहायता से उन्होंने 'द फ्री इंडिया सेंटर' का गठन किया, जहाँ से वे आजादी के पक्ष में पर्चे छपवाते थे तथा भाषण देते थे।
- 1942 में बोस ने उत्तरी अफ्रीका से पकड़े गए भारतीय युद्ध बंदियों को भर्ती कर 10 हजार सैनिकों का दल गठित किया, जिसे फ्री इंडियन लीजन कहा गया।
- सुभाष चन्द्र बोस ने 21 अक्टूबर, 1943 को सिंगापुर में स्वतंत्र भारत की अस्थायी सरकार का गठन किया, जिसका जर्मनी व जापान ने समर्थन किया।

- अक्टूबर, 1943 ई. में सुभाष चन्द्र बोस को आजाद हिन्द फौज का सर्वोच्च सेनापति बनाया गया था। आज़ाद हिन्द फौज के तीन ब्रिगेडों के नाम सुभाष ब्रिगेड, गाँधी ब्रिगेड एवं नेहरू ब्रिगेड एवं महिलाओं के ब्रिगेड का नाम 'लक्ष्मीबाई रेजीमेंट' था। आज़ाद हिन्द फौज का झंडा काँग्रेस के तिरंगे झंडे की भाँति था, जिस पर दहाड़ते हुए शेर का चिह्न था।
- 8 नवम्बर, 1943 ई. को जापान ने अंडमान और निकोबार द्वीप सुभाष चन्द्र बोस को सौंप दिये। नेताजी ने इनका नाम क्रमशः 'शहीद द्वीप' और 'स्वराज द्वीप' रखा।
- टोकियो जाते हुए फार्मूसा द्वीप के बाद अचानक हवाई जहाज में आग लग जाने से सुभाष चन्द्र बोस 18 अगस्त, 1945 को मारे गये, परन्तु इस दुर्घटना को अभी तक प्रमाणिक नहीं माना गया है।

नोट : *सुभाष चन्द्र बोस का जन्म 23 जनवरी, 1897 ई. को कटक (ओडिशा) में हुआ था।*

- आज़ाद हिन्द फौज के गिरफ्तार अधिकारी पी. के. सहगल, कर्नल गुरुदयाल ढिल्लन एवं मेजर शाहनवाज खाँ पर राजद्रोह का आरोप लगाकर दिल्ली के लाल किले पर नवम्बर, 1945 ई. में मुकदमा चलाया गया। वायसराय ने इनकी सजा माफ कर दी।
- आजाद हिन्द फौज के अभियुक्तों की तरफ से तेजबहादुर सप्रू, जवाहरलाल नेहरू, भोला भाई देसाई *(नेतृत्व)* एवं के.एन. काटजू ने पैरवी की।
- कराची में 20 फरवरी, 1946 ई. वायुसेना के कुछ सैनिकों ने ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध हड़ताल कर दी। बम्बई, लाहौर, दिल्ली में भी यह शीघ्र ही फैल गयी। इसमें लगभग 5,200 सैनिकों ने भाग लिया। इनकी प्रमुख माँग थी कि भारतीय और अंग्रेज सैनिकों में बराबरी का व्यवहार किया जाय।
- नौसेना विद्रोह 19 फरवरी, 1946 ई. को बम्बई में आई. एन. एस. तलवार नामक जहाज के नौसैनिकों के द्वारा किया गया। 5,000 सैनिकों ने आज़ाद हिन्द फौज के बिल्ले लगाये। इन्होंने भी बराबरी की माँग की। 25 फरवरी, 1946 ई. को नौसेना के विद्रोहियों ने सरदार पटेल के दबाव में आकर समर्पण कर दिया।
- कैबिनेट मिशन-1946 : प्रधानमंत्री एटली ने 15 फरवरी, 1946 ई. को भारतीय संविधान सभा की स्थापना एवं तत्कालीन ज्वलंत समस्याओं पर भारतीयों से विचार-विमर्श के लिए कैबिनेट मिशन को भारत भेजने की घोषणा की। 24 मार्च, 1946 ई. को कैबिनेट मिशन दिल्ली पहुँचा। इस शिष्टमंडल के सदस्य थे—स्टेफोर्ड क्रिप्स *(अध्यक्ष, बोर्ड ऑफ ट्रेड)*, पैथिक लॉरेंस *(भारत सचिव)* एवं ए.वी. अलेक्जेंडर *(नौसेना मंत्री)*। कैबिनेट मिशन पैथिक लॉरेंस के नेतृत्व में आया था।
- कैबिनेट मिशन योजना को मुस्लिम लीग ने 6 जून, 1946 ई. को और काँग्रेस ने 25 जून, 1946 ई. को स्वीकार कर लिया।
- कैबिनेट मिशन योजना को स्वीकार किये जाने के पश्चात् संविधान सभा के निर्माण के लिए हुए चुनाव *(जुलाई, 1946 ई.)* में काँग्रेस ने 214 सामान्य स्थानों में से 205 स्थान प्राप्त किये और मुस्लिम लीग ने 78 मुस्लिम स्थानों में से 73 स्थान प्राप्त किये। काँग्रेस को 4 सिक्ख सदस्यों का भी समर्थन प्राप्त था।
- मुस्लिम लीग ने 16 अगस्त, 1946 ई. को सीधी अथवा प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस *(Direct Action Day)* मनाया। सर्वप्रथम 'प्रत्यक्ष कार्यवाई दिवस' कलकत्ता में मनाया गया। उस समय बंगाल में मुस्लिम लीग की सरकार थी। बंगाल के मुख्यमंत्री शहीद सुहरावर्दी थे।
- 3 जून, 1947 ई. को भारत विभाजन की माउंटबेटन योजना प्रकाशित की गई।
- माउंटबेटन योजना को काँग्रेस कार्य समिति की 3 जून, 1947 ई. की बैठक में स्वीकार कर लिया गया था।
- 14 जून, 1947 ई. को काँग्रेस महासमिति की बैठक में गोविन्द बल्लभ पंत ने देश के विभाजन की माउंटबेटन योजना को स्वीकार करने का प्रस्ताव पेश किया। इस प्रस्ताव का समर्थन अबुल कलाम आजाद ने किया, जो बँटवारे का विरोध करते आ रहे थे। आजाद ने कहा "काँग्रेस कार्य समिति का फैसला सही फैसला नहीं है, लेकिन काँग्रेस के सामने कोई और रास्ता नहीं है।"
- गाँधी, नेहरु और पटेल के समर्थन के बावजूद काँग्रेस कार्य समिति का देश विभाजन का प्रस्ताव अखिल भारतीय काँग्रेस समिति में सर्वसम्मति से पास न हो सका। 161 सदस्यों ने उनके खिलाफ वोट दिया या वे तटस्थ रहे।
- प्रस्ताव का विरोध करने वालों में सिंध काँग्रेस के नेता चौथराम मिडवानी, पंजाब काँग्रेस के अध्यक्ष डॉ. किचलू, पुरुषोत्तम दास टंडन, मौलाना हफीज़ुर्रहमान आदि थे।
- मुस्लिम लीग की कौंसिल की बैठक माउंटबेटन योजना पर विचार करने के लिए 10 जून, 1947 को नई दिल्ली में बुलाई गई। लीग ने भारी बहुमत से इस योजना को स्वीकार किया। लीग की बैठक में उपस्थित 400 सदस्यों में से सिर्फ 10 सदस्यों ने इसका विरोध किया।
- 4 जुलाई, 1947 को ब्रिटिश संसद में भारतीय स्वाधीनता विधेयक पेश किया गया। 15 जुलाई को बिना किसी संशोधन के हाउस ऑफ कॉमंस द्वारा और 16 जुलाई को हाउस ऑफ लॉर्ड्स द्वारा पास कर दिया गया। 18 जुलाई, 1947 ई. को उस पर ब्रिटिश सम्राट् के हस्ताक्षर हो गए। इसके अनुसार देश को 15 अगस्त, 1947 ई. को दो डोमिनियनों—भारत और पाकिस्तान में बाँट दिया जाएगा। दोनों डोमिनियनों को पूरी स्वतंत्रता तथा प्रभुसत्ता सौंप दी जाएगी। 14 अगस्त को पाकिस्तान अधिराज्य और 15 अगस्त को भारतीय अधिराज्य की स्थापना होगी।

नोट : *भारत की आजादी के समय इंग्लैंड का सम्राट् जार्ज षष्ट्म (VI) था। यह भारत का अंतिम सम्राट एवं कॉमन वेल्थ नेशन का प्रथम प्रधान (Head) था।*

- जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में अन्तरिम सरकार का गठन 2 सितम्बर, 1946 ई. को हुआ। 26 अक्टूबर, 1946 ई. को मुस्लिम लीग *(पाँच सदस्य)* अंतरिम सरकार में सम्मिलित हुई।
- 27 मार्च, 1947 ई. को मुस्लिम लीग ने पाकिस्तान दिवस के रूप में मनाया।
- स्वतंत्रता-प्राप्ति के समय काँग्रेस के अध्यक्ष जे. बी. कृपलानी एवं ब्रिटेन के प्रधानमंत्री क्लीमेन्ट एटली *(लेबर पार्टी)* थे।
- भगत सिंह के विरुद्ध मुखबिरी करने के कारण फणीन्द्र घोष की हत्या बैकुण्ठ शुक्ल ने की थी।
- महात्मा गाँधी द्वारा स्थापित हरिजन सेवक संघ के संस्थापक अध्यक्ष घनश्याम दास बिड़ला थे।
- गाँधीजी ने काँग्रेस की सदस्यता से दो बार त्यागपत्र दिया–1925 ई. में और 1930 ई. में।
- 'बाँटो और छोड़ो' का नारा लीग ने दिसम्बर, 1943 ई. के कराची अधिवेशन में दिया।
- काँग्रेस का प्रथम ब्रिटिश अध्यक्ष जॉर्ज यूल थे।
- मैं देश के बालू से ही काँग्रेस से भी बड़ा आन्दोलन खड़ा कर दूँगा—महात्मा गाँधी ने कहा।
- डंडा फौज का गठन पंजाब में चमनदीव ने किया।
- दीनबंधु मित्र का नाटक 'नील दर्पण' में नील की खेती करनेवाले पर हुए अत्याचार का उल्लेख है।
- राष्ट्रवादी अहरार आंदोलन 'मजहर-उल-हक' ने प्रारंभ किया।
- आत्मसम्मान आंदोलन की शुरुआत 'रामस्वामी नायकर' ने की।
- निरंकारी आंदोलन की शुरुआत 'दयाल दास' ने की।
- ब्रह्मसमाज का प्रतिज्ञा-पत्र 'देवेन्द्रनाथ ठाकुर' ने तैयार किया।
- देवसमाज के संस्थापक 'शिव नारायण अग्निहोत्री' थे।
- तरुण स्त्री-सभा की स्थापना कलकत्ता में की गयी।

- 'भारत, भारतीयों के लिए'—यह नारा आर्यसमाज ने दिया।
- स्वामी विवेकानन्द ने 1893 ई. में शिकागो में विश्व धर्म सम्मेलन को संबोधित किया।
- दिल्ली षड्यंत्र केस में दीनानाथ के द्वारा मुखबिरी की गयी थी।
- अलीपुर केस में सरकारी गवाह नरेन्द्र गोसाई बन गया था।
- सबसे कम उम्र में फाँसी की सजा पानेवाला क्रान्तिकारी खुदीराम बोस था।
- 'इन्कलाब जिन्दाबाद' का नारा भगत सिंह ने दिया। शहीद-ए-आजम के नाम से भगत सिंह को जाना जाता है। भगत सिंह को फाँसी की सजा सुनानेवाला न्यायाधीश जी. सी. हिल्टन था।
- सबके लिए एक जाति, एक धर्म, एक ईश्वर का नारा श्री नारायण गुरु ने दिया।
- सवर्ण हिन्दुओं की फासीवादी काँग्रेस कहकर काँग्रेस का चरित्र-निरूपण मोहम्मद अली जिन्ना ने किया।
- 'मैं एक क्रांतिकारी के रूप में कार्य करता हूँ।' यह कथन है—जवाहरलाल नेहरू का।
- महात्मा गाँधी को रवीन्द्र नाथ टैगोर ने सर्वप्रथम 'महात्मा' कहा।
- महात्मा गाँधी को सर्वप्रथम 'राष्ट्रपिता' कहकर संबोधित सुभाष चन्द्र बोस ने किया।
- बल्लभ भाई पटेल को 'सरदार की उपाधि' वारदोली सत्याग्रह की सफलता के बाद वहाँ की महिलाओं की ओर से गाँधीजी ने प्रदान की।
- सुभाष चन्द्र बोस को सर्वप्रथम 'नेताजी' एडोल्फ हिटलर ने कहा था।
- गोखले के आध्यात्मिक एवं राजनीतिक गुरु एम. जी. रानाडे थे।
- महात्मा गाँधी के राजनीतिक गुरु गोपाल कृष्ण गोखले थे।
- सुभाष चन्द्र बोस के राजनीतिक गुरु देशबन्धु चित्तरंजन दास थे।
- भारत का बिस्मार्क सरदार बल्लभ भाई पटेल को कहा जाता है।
- शुद्धि आंदोलन के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती थे।
- 19वीं शताब्दी के भारतीय पुनर्जागरण का पिता राजा राममोहन राय को कहा जाता है।
- अखिल भारतीय हरिजन संघ की स्थापना महात्मा गाँधी ने की थी।
- फ्रैंक मोरिस ने महात्मा गाँधी को अर्धनग्न फकीर कहा था।
- राष्ट्रीय युवा दिवस स्वामी विवेकानंद से संबंधित है।
- यंग बंगाल आंदोलन का प्रवर्तक विवियन डेरीजियो था।
- काँग्रेस ने मौलाना अबुल कलाम आजाद की अध्यक्षता में भारत छोड़ो प्रस्ताव को पारित किया।
- भारत के पितामह *(ग्रैंड ओल्ड मैन ऑफ इंडिया)* दादाभाई नौरोजी को कहा जाता है।
- गोपाल हरिदेशमुख को लोकहितवादी के नाम से भी जाना जाता है।
- बिना ताज का बादशाह सुरेन्द्रनाथ बनर्जी को कहा जाता है।
- ए.ओ. ह्यूम को 'हरमिट ऑफ शिमला' कहा जाता है।
- ए.ओ. ह्यूम 1885-1907 ई. तक काँग्रेस के महामंत्री रहे।
- काँग्रेस के प्रथम मुस्लिम अध्यक्ष बदरुद्दीन तैयबजी थे।
- रौलेट एक्ट को बिना अपील, बिना वकील तथा बिना दलील का कानून कहा गया।
- मुहम्मद अली एवं शौकत अली ने 1919 ई. में खिलाफत आंदोलन की शुरुआत की।
- तीनों गोलमेज सम्मेलनों में भाग लेने वाले भारतीय नेता थे—डॉ. भीमराव अम्बेदकर।
- 22 दिसम्बर, 1939 को काँग्रेस मंत्रीमंडल ने सामूहिक रूप से त्यागपत्र दिया। इस दिन को मुस्लिम लीग ने 'मुक्ति दिवस' के रूप में मनाया।
- पाकिस्तान शब्द का जन्मदाता चौधरी रहमत अली थे।
- गाँधीजी ने क्रिप्स प्रस्ताव पर कहा—यह एक आगे की तारीख का चेक है, जिसका बैंक नष्ट होने वाला है। *("It is a post dated cheque on a failing bank")*
- इण्डिपेण्डेंस फॉर इंडिया लीग की स्थापना जवाहरलाल नेहरू और सुभाष चन्द्र बोस ने की थी।
- इण्डिया इण्डिपेण्डेंस लीग की स्थापना रासबिहारी बोस ने की थी।
- राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान कुख्यात सेलुलर जेल अण्डमान में स्थित है।
- आर्य महिला सभा की स्थापना पंडिता रमाबाई ने की।

48. भारतीय धार्मिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय आन्दोलन से सम्बन्धित महत्वपूर्ण संगठन एवं संस्थाएँ

क्र.	संस्थाएँ	स्थापना वर्ष	संस्थापक
1.	एशियाटिक सोसाइटी	1784	विलियम जोन्स
2.	आत्मीय सभा	1815	राजा राममोहन राय
3.	वेदान्त कॉलेज	1825	राजा राममोहन राय
4.	युवा बंगाल आन्दोलन	1826	हेनरी लुई विवियन डिरोजियो
5.	ब्रह्म समाज	1828	राजा राममोहन राय
6.	तत्वबोधिनी सभा	1839	देवेन्द्रनाथ ठाकुर
7.	ब्रिटिश सार्वजनिक सभा	1843	दादाभाई नौरोजी
8.	परमहंस मंडली	1840	गोपाल हरिदेशमुख
9.	रहनुमाई माजदायान सभा	1851	दादाभाई नौरोजी
10.	बालिका विद्यालय	1851	ज्योतिबा फुले
11.	मोहम्मडन एंग्लो लिटरेरी सोसाइटी	1863	अब्दुल लतीफ
12.	साइंटिफिक सोसाइटी	1864	सर सैय्यद अहमद खाँ
13.	ईस्ट इंडियन एसोसिएशन	1866	दादाभाई नौरोजी
14.	पूना सार्वजनिक सभा	1867	एम. जी. रानाडे
15.	प्रार्थना समाज	1867	केशवचन्द्र के सहयोग से एम. जी. रानाडे, आत्माराम पांडुकर, देवेन्द्रनाथ ठाकुर आदि
16.	वेद समाज	1867	आचार्य केशवचन्द्र सेन
17.	सत्यशोधक समाज	1873	ज्योतिबा फुले
18.	अलीगढ़ मोहम्मडन एंग्लो ओरिएन्टल कॉलेज	1875	सर सैय्यद अहमद खाँ
19.	इंडियन लीग	1875	शिशिर कुमार घोष
20.	आर्यसमाज	1875	स्वामी दयानन्द सरस्वती
21.	थियोसोफिकल सोसाइटी	1875	मैडम ब्लाट्स्की व कर्नल अल्काट
22.	इंडियन एसोसिएशन	1876	आनंदमोहन बोस, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी
23.	युनाइटेड इंडियन कमेटी	1883	व्योमेशचन्द्र बनर्जी
24.	भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस	1885	ए.ओ. ह्यूम
25.	बॉम्बे प्रेसीडेन्सी एसोसिएशन	1885	फिरोजशाह मेहता, तैलंग तथा तैय्यबजी
26.	देव समाज	1887	पं. शिव नारायण अग्निहोत्री
27.	वेलूर मठ	1887	स्वामी विवेकानन्द
28.	इण्डियन नेशनल सोशल कॉफ्रेंस	1887	महादेव गोविन्द रानाडे
29.	शारदा सदन	1889	रमाबाई
30.	रामकृष्ण मिशन	1897	स्वामी विवेकानन्द
31.	अभिनव भारत संस्था	1904	विनायक दामोदर सावरकर
32.	सर्वेन्ट्स ऑफ इण्डिया सोसाइटी	1905	गोपाल कृष्ण गोखले
33.	मुस्लिम लीग	1906	आगा खाँ एवं सलीम उल्ला
34.	अनुशीलन समिति	1907	श्री वारीन्द्र घोष, भूपेन्द्र दत्त
35.	सोशल सर्विस लीग	1911	श्री नारायण मल्हार जोशी
36.	विश्व भारती	1912	रवीन्द्र नाथ ठाकुर
37.	गदर पार्टी	1913	लाला हरदयाल, काशीराम
38.	हिन्दू महासभा	1915	मदन मोहन मालवीय
39.	होमरूल लीग	1916	तिलक एवं एनी बेसेन्ट*
40.	वीमेन्स इण्डिया एसो.	1917	लेडी सदाशिव अय्यर
41.	खिलाफत आन्दोलन	1919	अली बन्धु

क्र.	संस्थाएँ	स्थापना वर्ष	संस्थापक
42.	अखिल भारतीय ट्रेड यू.	1920	एन.एम. जोशी
43.	स्वराज पार्टी	1923	मोती लाल नेहरू व चित्तरंजन दास
44.	हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन	1924	शचीन्द्र सान्याल
45.	बहिष्कृत हितकारिणी सभा	1924	बी.आर. अम्बेदकर
46.	राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ	1925	डॉ. हेडगवार
47.	नौजवान सभा	1926	भगत सिंह, छबील दास व यशपाल
48.	हिन्दु. सोश. रिप. एसोसिएशन	1928	भगत सिंह
49.	खुदाई खिदमतगार	1930	अब्दुल गफ्फार खाँ
50.	हरिजन सेवक संघ *(पुणे)*	1932	महात्मा गाँधी
51.	स्वतंत्र श्रमिक पार्टी	1936	बी. आर. अम्बेदकर
52.	फॉरवर्ड ब्लॉक	1939	सुभाष चन्द्र बोस
53.	आजाद हिन्द फौज	1942	रासबिहारी बोस
54.	आजाद हिन्द सरकार	1943	सुभाष चन्द्र बोस

***** *होमरूल लीग (1873-82) एक राजनैतिक दल था। जिसने आयरलैंड में स्वशासन (होमरूल) के लिए आंदोलन चलाया। भारत में तिलक द्वारा 28 अप्रैल, 1916 को बेलगाँव (पूना) में होमरूल कि स्थापना की गयी एवं सितम्बर, 1916 में एनीबेसेंट के द्वारा मद्रास में होमरूल लीग की स्थापना की गयी।*

➢ राजा राममोहन राय का जन्म 1774 ई. में राधानगर नामक बंगाल के एक गाँव में हुआ। उन्होंने अपने जीवन में अरबी, फारसी, अंग्रेजी, ग्रीक, हिब्रू आदि भाषाओं का अध्ययन किया।

➢ राजा राममोहन राय की मृत्यु के पश्चात् ब्रह्म-समाज धीरे-धीरे कई शाखाओं में विभक्त हो गया। महर्षि देवेन्द्रनाथ टैगोर ने आदि-ब्रह्म समाज की स्थापना की, श्री केशवचन्द्र सेन ने भारतीय ब्रह्म समाज स्थापित किया व उनके पश्चात साधारण ब्रह्म समाज की स्थापना हुई।

➢ राजा राममोहन राय के नेतृत्व में ब्रह्म समाज ने अंग्रेजी भाषा और पश्चिमी शिक्षा का समर्थन किया। 1817 ई. में हिन्दु कॉलेज की स्थापना कलकत्ता में की गयी। 1822 ई. में उन्होंने ऐंग्लो-हिन्दु स्कूल स्थापित किया। 1825 ई. में उन्होंने वेदान्त कॉलेज की स्थापना की। ब्रह्म समाज ने ब्रह्म बालिका स्कूल एवं सिटी कॉलेज ऑफ कलकत्ता की नींब डाली। राजा राममोहन राय ने 1826 के जूरी विधेयक का घोर विरोध किया।

➢ जवान बंगाल आन्दोलन का नेतृत्व एक ऐंग्लो-इण्डियन हेनरी विलिमय डेराजिओं ने किया।

➢ ईश्वर चन्द्र विद्यासागर (1820-1891) एवं कुण्डूकुरी वीरेसलिंगम (1848–1919) ने विधवा-विवाह को प्रोत्साहित किया।

➢ दयानन्द का बचपन का नाम मूलशंकर था। इनका जन्म गुजरात के टंकारा नामक छोटे से नगर में हुआ था। इन्होंने मथुरा के स्वामी विरजानंद को अपना गुरू बनाया। 1874 ई. में दयानन्द ने सत्यार्थ-प्रकाश की रचना की जो मूलतः हिन्दी भाषा में लिखी गयी।

➢ संसार के लिए स्वामी रामकृष्ण की सबसे बड़ी देन अध्यात्मवाद है। उनका कहना था कि मनुष्य का मूल लक्ष्य ईश्वर की प्राप्ति होना चाहिए जो अध्यात्मवाद से ही संभव है।

➢ स्वामी रामकृष्ण के शिष्य विवेकानन्द थे। जिन्होंने 1893 ई. में अमरीका के शिकागो नगर में आयोजित सर्व-धर्म सम्मेलन में भाग लेने गए। स्वामी विवेकानन्द का बचपन का नाम नरेन्द्रनाथ था। स्वामी विवेकानन्द ने ज्ञान योग, कर्मयोग तथा राजयोग नामक पुस्तिकाएँ लिखीं।

नोट : *स्वामी विवेकानन्द के भाषणों का संकलन 'लेक्चर्स फ्रॉम कोलम्बो टू अल्मोड़ा' नामक पुस्तक में है।*

➢ कन्याकुमारी का रॉक मेमोरियल स्वामी विवेकानंद को समर्पित है।

➢ महादेव गोविन्द रानाडे ने 1887 में राष्ट्रीय समाज-सुधार समिति की स्थापना की। 1887 से 1895 ई. तक राष्ट्रीय समाज-सुधार समिति का अधिवेशन कांग्रेस अधिवेशन के तुरन्त बाद उसी पंडाल में होता था।

➢ 1861 ई. में आगरा में श्री शिवदयाल खत्री ने राधास्वामी सत्संग की स्थापना की। इनके समर्थकों ने दयालबाग में एक मंदिर का निर्माण किया है फलस्वरूप दयालबाग इस सत्संग का तीर्थ स्थल बन गया है।

➢ शिव नारायण अग्निहोत्री ने 2 फरवरी, 1887 को लाहौर में देव समाज की स्थापना की थी।

➢ पंजाब के मिर्जा गुलाम अहमद ने अहमदिया आन्दोलन की शुरुआत की। उन्होंने अपने आपको पैगम्बर बताया जिसका उद्देश्य भारत में शुद्ध इस्लाम की स्थापना था।

➢ मुसलमानों को अंग्रेजी शिक्षा और आधुनिकीकरण की ओर ले जाने का श्रेय सर सैयद अहमद खाँ को है और उनका अलीगढ़ आन्दोलन इसका केन्द्र बिन्दु रहा।

➢ सर सैयद अहमद खाँ ने 1877 ई. में अलीगढ़ में ऐंग्लो-ओरिएण्टल कॉलेज की स्थापना की जो बाद में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय कहलाया। इस कॉलेज के प्रथम प्रिन्सिपल थियोडोर बैक थे।

49. भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन से संबंधित महत्वपूर्ण आन्दोलन एवं घटनाएँ

क्र.	आन्दोलन एवं घटनाएँ	वर्ष	सम्बन्धित विषय एवं व्यक्ति
1.	भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस की स्थापना	1885	ए. ओ. ह्यूम *(बम्बई)*
2.	बंग-भंग आन्दोलन *(स्वदेशी आंदोलन)*	1905	बंगाल के विभाजन के विरुद्ध
3.	मुस्लिम लीग की स्थापना	1906	आगा खाँ एवं सलीम उल्ला खाँ *(ढाका)*
4.	काँग्रेस का विभाजन	1907	नरम एवं गरम दल में विभाजित *(सूरत फूट)*
5.	होमरूल आन्दोलन	1916	तिलक एवं एनी बेसेन्ट
6.	लखनऊ पैक्ट	दिसम्बर, 1916	काँग्रेस तथा मुस्लिम लीग के बीच समझौता
7.	मांटेग्यू घोषणा	20 अगस्त, 1917	भारत मंत्री लॉर्ड मांटेग्यू की घोषणा
8.	रौलेट ऐक्ट	19 मार्च, 1919	काला कानून, जिसके अंतर्गत किसी भी व्यक्ति को संदेह के आधार पर गिरफ्तार किया जा सकता था।
9.	जालियाँवाला बाग हत्याकाण्ड	13 अप्रैल, 1919	जेनरल डायर *(अमृतसर)*
10.	खिलाफत आन्दोलन	1919	शौकत अली, मोहम्मद अली
11.	हण्टर कमेटी की रिपोर्ट प्रकाशित	28 मई, 1920	जालियाँवाला बाग से संबंधित
12.	काँग्रेस का नागपुर अधिवेशन	दिसम्बर, 1920	असहयोग आन्दोलन का प्रस्ताव पारित
13.	असहयोग आंदोलन का आरंभ	1 अगस्त, 1920	महात्मा गाँधी
14.	चौरी-चौरा काण्ड	5 फरवरी, 1922	गोरखपुर जिले *(उ.प्र.)* की इस घटना के बाद असहयोग आंदोलन स्थगित
15.	स्वराज पार्टी की स्थापना	1 जनवरी, 1923	मोतीलाल नेहरू एवं चित्तरंजन दास
16.	हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन	अक्टूबर, 1924	शचीन्द्र सान्याल
17.	साइमन कमीशन की नियुक्ति	8 नवम्बर, 1927	जॉन साइमन की अध्यक्षता में सात सदस्यीय आयोग का गठन
18.	साइमन कमीशन का भारत आगमन	3 फरवरी, 1928	भारत में लाला लाजपत राय के नेतृत्व में विरोध एवं उनपर लाठी प्रहार
19.	नेहरू रिपोर्ट	अगस्त, 1928	पं. मोतीलाल नेहरू अध्यक्ष

क्र.	आन्दोलन एवं घटनाएँ	वर्ष	सम्बन्धित विषय एवं व्यक्ति
20.	बारदोली सत्याग्रह	अक्टूबर, 1928	गुजरात के किसानों का लगान-वृद्धि के विरोध में सरदार बल्लभ भाई के नेतृत्व में आन्दोलन
21.	लाहौर षड्यंत्र केस	8 अप्रैल, 1929	भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त द्वारा ब्रिटिश असेम्बली में बम फेंकना
22.	काँग्रेस का लाहौर अधिवेशन	दिसम्बर, 1929	पूर्ण स्वाधीनता का प्रस्ताव
23.	स्वाधीनता दिवस की घोषणा	2 जनवरी, 1930	26 जनवरी को स्वाधीनता दिवस के रूप में मनाने की घोषणा
24.	नमक सत्याग्रह	12 मार्च, 1930 से 5 अप्रैल, 1930	महात्मा गाँधी के द्वारा साबरमती आश्रम से डांडी जाकर नमक बनाकर 'नमक कानून' का उल्लंघन करना
25.	सविनय अवज्ञा आन्दोलन	6 अप्रैल, 1930	सविनय अवज्ञा आन्दोलन की शुरुआत
26.	प्रथम गोलमेज सम्मेलन	12 नवम्बर, 1930	प्रधानमंत्री मैकडोनाल्ड की अध्यक्षता में लंदन में आयोजित
27.	गाँधी-इरविन समझौता	4 मार्च, 1931	* महात्मा गाँधी और वायसराय इरविन के मध्य सम्पन्न तथा सविनय अवज्ञा आंदोलन स्थगित करने की घोषणा
28.	द्वितीय गोलमेज सम्मेलन	7 सितम्बर, 1931	गाँधीजी ने सम्मेलन में भाग लिया
29.	कम्युनल अवार्ड *(साम्प्रदायिक पंचाट)*	16 अगस्त, 1932	मैकडोनाल्ड द्वारा पृथक् प्रतिनिधित्व प्रदान करना
30.	पूना पैक्ट *(येरवादा सेन्ट्रल जेल में)*	24 सितम्बर, 1932	गाँधीजी और डॉ. अम्बेदकर के बीच एक समझौता, जिसके सांप्रदायिक पंचाट में दलितों के लिए प्रांतीय विधान सभा में पृथक निर्वाचन प्रणाली को समाप्त कर उनके लिए 71 के बदले 148 स्थान सुरक्षित रखे गए।
31.	तृतीय गोलमेज सम्मेलन	17 नवम्बर, 1932	इसमें काँग्रेस ने भाग नहीं लिया
32.	काँग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का गठन	मई, 1934	जयप्रकाश नारायण, मीनू मसानी और एस. एम. जोशी
33.	फॉरवर्ड ब्लॉक का गठन	1 मई, 1939	सुभाष चन्द्र बोस
34.	मुक्ति दिवस	22 दिसम्बर, 1939	मुस्लिम लीग के द्वारा काँग्रेस मंत्रिमंडलों के त्यागपत्र पर मनाया गया
35.	पाकिस्तान की माँग	24 मार्च, 1940	मुस्लिम लीग के लाहौर अधिवेशन में
36.	अगस्त प्रस्ताव	8 अगस्त, 1940	वायसराय लिनलिथगो
37.	क्रिप्स मिशन का प्रस्ताव	मार्च, 1942	स्टीफर्ड क्रिप्स
38.	भारत छोड़ो प्रस्ताव	8 अगस्त, 1942	महात्मा गाँधी
39.	शिमला सम्मेलन	25 जून, 1945	सभी राजनैतिक दलों का सम्मेलन
40.	नौसेना का विद्रोह	19 फरवरी, 1946	मुम्बई *(INS तलवार के सैनिकों द्वारा)*
41.	प्रधानमंत्री एटली की घोषणा	15 मार्च, 1946	भारत को स्वतंत्र करने का आश्वासन
42.	कैबिनेट मिशन का आगमन	24 मार्च, 1946	ब्रिटिश मंत्रिमण्डल के तीन सदस्यों—पैथिक लॉरेंस, सर स्टीफोर्ड क्रिप्स एवं ए.बी. एलेक्जेंडर का भारत आगमन, कैबिनेट मिशन योजना का प्रकाशन 16 मई, 1946 ई.को हुआ।
43.	प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस	16 अग., 1946	मुस्लिम लीग द्वारा
44.	अन्तरिम सरकार की स्थापना	2 सितम्बर, 1946	नेहरू प्रधानमंत्री बने
45.	माउण्टबेटन योजना	3 जून, 1947	वायसराय माउण्टबेटन ने भारत विभाजन की योजना रखी
46.	स्वतंत्रता की प्राप्ति	15 अग., 1947	भारत स्वतंत्रता अधिनियम द्वारा
47.	भारतीय गणतंत्र की स्थापना	26 जनवरी, 1950	डॉ. राजेन्द्र प्रसाद प्रथम राष्ट्रपति
48.	भूदान आन्दोलन	18 अप्रैल, 1951	इसकी शुरुआत पोचमपल्ली नलगोडा *(तेलंगाना)* में बिनोवा भावे ने की थी। रामचन्द्र रेड्डी ने सबसे पहले भूमि दान में दी।

* *द गजेटियर ऑफ इंडिया (V.–II) P. 577*

50. भारत के महान शहीद

नाम	संबंधित घटनाएँ	सजा
खुदीराम बोस	1908 ई. में सेशन जज किंग्सफोर्ड की गाड़ी पर बम फेंकने के कारण बेणी रेलवे स्टेशन पर गिरफ्तार हुए।	11 अगस्त, 1908 ई.को फाँसी दे दी गई।
राजेन्द्र लाहिड़ी	दक्षिणेश्वर बम काण्ड तथा काकोरी डाक गाड़ी डकैती काण्ड के सिलसिले में गिरफ्तार हुये।	17 दिसम्बर, 1927 ई. को गोण्डा की जेल में इन्हें फाँसी दे दी गई।
राम प्रसाद बिस्मिल	मैनपुरी षडयंत्र एवं काकोरी कांड का योजनाकार, इसी कांड में बंदी बनाया गया।	19 दिसम्बर, 1927 को गोरखपुर जेल में फाँसी दे दी गई।
अशफाकउल्ला खाँ	19 अगस्त, 1925 ई. को काकोरी डाकगाड़ी डकैती केस के अभियोग में बंदी बनाया गया।	19 दिसम्बर, 1927 ई. को फैजाबाद जेल में फाँसी दे दी गई।
ऊधम सिंह	13 मार्च, 1940 ई. को सर माइकल-ओ-डायर को कैक्सटन हॉल, लंदन में गोली मारने के कारण गिरफ्तार हुए।	31 जुलाई, 1940 ई. को पेंटनविले जेल में फाँसी दे दी गई।
भगत सिंह	सॉण्डर्स की हत्या तथा 8 अप्रैल, 1929 ई. को केन्द्रीय विधान सभा *(जो आज लोकसभा है)* में बम फेंकने के सिलसिले में गिरफ्तारी।	सॉण्ड्र्स की हत्या के केस में मौत की सजा हुई तथा 23 मार्च, 1931 ई. को फाँसी पर चढ़कर शहीद हो गये।
सुखदेव	सॉण्डर्स की हत्या के केस में मौत की सजा हुई। 15 अप्रैल, 1929 ई. को गिरफ्तार हुए।	23 मार्च, 1931 ई. को भगत सिंह के साथ फाँसी दे दी गई।
राजगुरु	17 दिसम्बर, 1928 ई. को सॉण्डर्स की हत्या में भाग लेने के कारण 30 दिसम्बर, 1929 ई. को पूना में एक मोटर गैराज में गिरफ्तार हुए।	23 मार्च, 1931 ई. को केन्द्रीय जेल लाहौर में भगत सिंह और सुखदेव के साथ फाँसी दे दी गई।

नाम	संबंधित घटनाएँ	सजा
बटुकेश्वर दत्त	भगत सिंह के साथ केन्द्रीय असेम्बली में बम फेंकने के आरोप में गिरफ्तार हुए।	इन्हें आजीवन कारावास का दंड मिला।
चन्द्रशेखर आजाद	काकोरी डाकगाड़ी डकैती केस के मुख्य अभियुक्त व अंग्रेजी सरकार ने इन्हें जिन्दा या मुर्दा पकड़ने के लिए तीस हजार रुपये पुरस्कार की घोषणा की।	27 फरवरी, 1931 ई. को अल्फ्रेड पार्क *(इलाहाबाद)* में शहीद हुए।
मास्टर अमीचन्द	दिल्ली षड्यंत्र के प्रमुख क्रान्तिकारी अमीचन्द फरवरी, 1914 ई. में वायसराय लॉर्ड हार्डिंग की हत्या करने के आरोप में बन्दी बनाये गये।	8 मई, 1915 ई. को चार साथियों के साथ इन्हें फाँसी दे दी गई।
अवध बिहारी बोस	दिल्ली षड्यंत्र केस एवं लाहौर बम काण्ड के आरोप में फरवरी, 1914 ई. में इन्हें बन्दी बनाया गया।	8 मई, 1915 ई. को फाँसी दे दी गई।
दामोदर चापेकर	22 जून, 1897 ई. को प्लेग कमिश्नर रैण्ड और लेफ्टिनेंट एयर्स्ट की हत्या के सिलसिले में अपने भाइयों के साथ गिरफ्तार हुए। **नोट :** *रैण्ड एवं एयर्स्ट की हत्या यूरोपियों की प्रथम राजनैतिक हत्या थी।*	18 अप्रैल, 1898 ई. को फाँसी के तख्ते पर चढ़ कर शहीद हो गये। इनके भाई बालकृष्ण चापेकर को 12 मई, 1899 ई. तथा वासुदेव चापेकर को 8 मई, 1899 ई. को फाँसी पर लटका दिया गया।
मदन लाल धींगरा	1 जुलाई, 1909 ई. में कर्नल विलियम कर्जन वाइली *(इंडिया ऑफिस में राजनीतिक सहायक)* की हत्या करने के कारण गिरफ्तार हुए।	16 अगस्त, 1909 ई. को इन्हें फाँसी पर चढ़ा दिया गया।
वासुदेव बलवंत फड़के	एक सशस्त्र सेना बनाकर ब्रिटिश सरकार का विरोध करने के कारण 21 जुलाई, 1879 ई. को गिरफ्तार हुए।	कालापानी की सजा के सिलसिले में अदन में आमरण अनशन करके 17 फरवरी, 1883 ई. को प्राण त्याग दिये।
करतार सिंह सराबा	गदर पार्टी के सक्रिय कार्यकर्त्ता तथा लाहौर सैनिक षड्यंत्र के नेता की हैसियत से गिरफ्तार किये गये।	16 नवम्बर, 1915 ई. को फाँसी के तख्ते पर झूलते हुए शहीद हो गये।
अनन्त कान्हरे	नासिक के जैक्सन हत्याकाण्ड के प्रमुख अभियुक्त होने के कारण बंदी बनाये गये।	19 अप्रैल, 1910 ई. को इन्हें फाँसी दे दी गई।
सुभाषचन्द्र बोस	21 अक्टूबर,1943 ई. को सिंगापुर में आजाद भारत के अस्थायी सरकार की स्थापना की घोषणा की तथा जापानी सेना की सहायता से अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह पर अधिकार करते हुए, 1944 ई. में भारतीय सीमा के इम्फाल क्षेत्र में प्रवेश किया।	18 अगस्त, 1945 ई. को वायुयान दुर्घटना में इनकी मृत्यु हो गई। परन्तु इस दुर्घटना को अभी तक प्रमाणिक नहीं माना गया है।
विष्णु गणेश पिंगल	23 मार्च, 1915 ई. को विस्फोटक बमों के साथ गिरफ्तार कर लिए गए।	17 नवम्बर, 1915 ई. को इन्हें फाँसी दे दी गई।
ब्रजकिशोर चक्रवर्त्ती	मिदनापुर के जिला मजिस्ट्रेट बर्ज पर गोली चलाने के आरोप में 2 सितम्बर 1933 ई. को गिरफ्तार कर लिये गये।	26 अक्टूबर, 1934 ई. को फाँसी पर इन्हें लटका दिया गया।
कुसाल कोंवर	9 अक्टूबर, 1942 ई. को ब्रिटिश सैनिक गाड़ी को पटरी से उतारने के संदेह में गिरफ्तार हुए।	16 जून, 1943 ई. को इन्हें फाँसी दे दी गई।
असित भट्टाचार्य	13 मार्च, 1933 ई. को हबीबगंज में हुई डाक डकैती तथा हत्या के अन्य मामले के सिलसिले में गिरफ्तार किये गये।	2 जुलाई, 1934 ई. को सिलहट जेल में इन्हें फाँसी दे दी गई।
जगन्नाथ शिन्दे	शोलापुर थाने पर हुए हमले का अभियोग लगाकर इन्हें बन्दी बनाया गया।	12 जनवरी, 1931 ई. में इन्हें फाँसी दे दी गई।
हरकिशन	23 दिसम्बर, 1930 ई. को पंजाब के गवर्नर पर गोली चलाने के आरोप में गिरफ्तार हुए।	9 जून, 1931 ई. को इन्हें फाँसी दे दी गई।
सूर्यसेन (मास्टर दा)	18 अप्रैल, 1930 ई. में चटगाँव स्थित ब्रिटिश शस्त्रागार पर आक्रमण में भाग लेने के कारण गिरफ्तार हुए।	12 जनवरी, 1934 ई. को इन्हें फाँसी पर लटका दिया गया।
लाला लाजपत राय	17 नवम्बर, 1928 ई. के साइमन कमीशन का विरोध करने पर पुलिस के द्वारा पाश्विक लाठी प्रहारों के शिकार हुए।	लाठी प्रहार के कारण उनका देहांत हो गया।

51. भारतीय स्वतंत्रता-आन्दोलन के प्रमुख वचन एवं नारे

क्र.	वचन एवं नारे	नाम
1.	इन्कलाब जिन्दाबाद	भगत सिंह
2.	दिल्ली चलो	सुभाष चन्द्र बोस
3.	करो या मरो, हे राम, भारत छोड़ो*	महात्मा गाँधी
4.	जय हिन्द	सुभाष चन्द्र बोस
5.	पूर्ण स्वराज्य, आराम हराम है	जवाहरलाल नेहरू
6.	वेदों की ओर लौटो	दयानन्द सरस्वती
7.	जय जवान, जय किसान *(1965 के पाकिस्तान युद्ध के समय)*	लाल बहादुर शास्त्री
8.	मारो फिरंगी को	मंगल पांडे
9.	जय जगत	विनोबा भावे
10.	कर मत दो	सरदार बल्लभ भाई पटेल
11.	सम्पूर्ण क्रांति	जयप्रकाश नारायण
12.	विजयी विश्व तिरंगा प्यारा	श्याम लाल गुप्ता पार्षद
13.	वन्दे मातरम्	बंकिमचन्द्र चटर्जी
14.	जन-गण-मन अधिनायक जय हे	रवीन्द्र नाथ ठाकुर
15.	साम्राज्यवाद का नाश हो	भगत सिंह
16.	स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है	बाल गंगाधर तिलक
17.	सरफरोशी की तमन्ना, अब हमारे दिल में है	राम प्रसाद बिस्मिल
18.	''सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा''	इकबाल
19.	तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा	सुभाषचन्द्र बोस
20.	साइमन कमीशन वापस जाओ	लाला लाजपत राय
21.	हू लिव्स इफ इंडिया डाइज	जवाहरलाल नेहरू
22.	मेरे सिर पर लाठी का एक एक प्रहार, अंग्रेजी शासन के ताबूत की कील साबित होगा	लाला लाजपत राय
23.	मुसलमान मूर्ख थे, जो उन्होंने सुरक्षा की माँग की और हिन्दू उनसे भी मूर्ख थे, जो उन्होंने उस माँग को ठुकरा दिया।	अबुल कलाम आजाद
24.	क्रांति की तलवार में धार वैचारिक पत्थर पर रगड़ने से ही आती है।	भगत सिंह

★ *भारत छोड़ो स्लोगन महात्मा गाँधी का ही था, पर इतिहासकार एक सम्मत नहीं हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार भारत छोड़ो स्लोगन लिखने का श्रेय मेहर यूसुफ अली को जाता है। इन्होंने ने ही भारत छोडो आन्दोलन आरंभ करने के कुछ समय पूर्व गाँधी जी से मुलाकत कर उन्हें Quit India स्लोगन का सुझाव दिया था। के गोपालास्वामी ने अपनी पुस्तक गाँधी एंड बॉबे में लिखा है कि Quit India को यूसूफ ने ही गाँधी जी के सामने पेश किया था और गाँधी जी ने उसे स्वीकार किया था।*

52. स्वतंत्रता-आंदोलन से संबंधित प्रकाशित पत्र, पत्रिकाएँ एवं पुस्तकें

पत्र-पत्रिकाएँ एवं पुस्तकें	लेखक/संपादक
अभ्युदय, लीडर, हिन्दुस्तान	मदनमोहन मालवीय
इंडियन मिरर, वाम बोधिनी	केशवचंद्र सेन
इंडिपेंडेंट	मोतीलाल नेहरू
काल	परांजपे
कामरेड, हमदर्द	मुहम्मद अली
बंदी जीवन	शचीन्द्रनाथ सान्याल
दैनिक केसरी *(मराठी)*, साप्ताहिक द मराठा *(अंग्रेजी)*, गीता-रहस्य	बाल गंगाधर तिलक
कर्मयोगी, युगान्तर, वन्देमातरम्, लाइफ डिवाइन, सावित्री	अरविंद घोष
नेशन	गोपाल कृष्ण गोखले
बंगाली, ए नेशन इन मेकिंग	सुरेन्द्र नाथ बनर्जी
भवानी मंदिर	बरिन्द्र कुमार घोष
यंग इंडिया, हरिजन, नवजीवन, हिन्द स्वराज, माई एक्सपेरीमेंट विथ ट्रूथ	महात्मा गाँधी
संवाद कौमुदी	राजा राममोहन राय
सोमप्रकाश	ईश्वरचंद्र विद्यासागर
अमृतबाजार पत्रिका *(वर्नाकुलर प्रेस एक्ट के कारण बांग्ला से अंग्रेजी में प्रकाशित होने लगा)*	शिशिर कुमार घोष
साप्ताहिक कॉमन विल, दैनिक न्यू इंडिया	एनी बेसेन्ट
फ्री हिन्दुस्तान	तारकनाथ दास
द रिवोल्यूशनरी	शचींद्रनाथ सान्याल
पावर्टी एंड अन-ब्रिटिश रूल इन इण्डिया, रस्ट गुफ्तूर	दादाभाई नौरोजी
इंडिया डिवाइडेड	डा. राजेन्द्र प्रसाद
अनहैपी इंडिया, यंग इंडिया	लाला लाजपत राय
इंडिया विन्स फ्रीडम, गुबारे खातिर, अल हिलाल	अबुल कलाम आजाद
डिस्कवरी ऑफ इंडिया, ग्लिम्प्सेज ऑफ वर्ल्ड हिस्ट्री, मेरी कहानी	जवाहरलाल नेहरू
हिन्ट्स फार सेल्फ कल्चर	लाला हरदयाल
इंडियन अनरेस्ट	सर वैलेंटाइन शिरॉल
इण्डिया फॉर इण्डियन्स	चित्तरंजन दास
वॉर ऑफ इंडियन इंडिपेन्डेन्स	वीर सावरकर
होम एंड द वर्ल्ड, गीतांजलि	रवींद्र नाथ ठाकुर
नील दर्पण	दीनबंधु मित्र
सोजे वतन, कर्मभूमि, शतरंज के खिलाड़ी	प्रेमचंद
बाँगे दरा, तराने हिन्द	मुहम्मद इकबाल
भारत भारती	मैथिलीशरण गुप्त
भारत दुर्दशा	भारतेन्दु हरिश्चंद्र
काँग्रेस का इतिहास	पट्टाभि सीतारमय्या
सत्यार्थ प्रकाश	दयानंद सरस्वती
इंडियन स्ट्रगल	सुभाष चंद्र बोस
आनंदमठ, देवी चौधुरानी	बंकिमचंद्र चटोपाध्याय
बंदी जीवन	शचीन्द्र नाथ सान्यात
भारतीय विद्रोह के कारण	सर सैयद अहमद खाँ
शुद्रों की खोज, जातिभेद का उच्छेद, अछूत कौन और कैसे	डॉ. भीम राव अम्बेडकर।

नोट : *राजा राममोहन राय को भारतीय पत्रकारिता का अग्रदूत कहा जाता है। 1821 में उन्होंने बंगाली साप्ताहिक 'संवाद कौमुदी' और 1822 में फारसी में 'मिरात-उल-अखबार' प्रारंभ किये।*

53. उपाधि, प्राप्तकर्त्ता एवं दाता

उपाधि	प्राप्तकर्ता	दाता
गुरुदेव	रवीन्द्रनाथ टैगोर	महात्मा गाँधी
महात्मा	महात्मा गाँधी	रवीन्द्र नाथ टैगोर
नेताजी	सुभाष चन्द्र बोस	एडोल्फ हिटलर
सरदार	बल्लभ भाई पटेल	बारदोली की महिलाएँ
देशरत्न/अजातशत्रु	डॉ. राजेन्द्र प्रसाद	महात्मा गाँधी
कायदे आजम	मोहम्मद अली जिन्ना	महात्मा गाँधी
देशनायक	सुभाष चन्द्र बोस	रवीन्द्र नाथ टैगोर
विवेकानन्द	स्वामी विवेकानन्द	महाराजा खेतड़ी
राष्ट्रपिता	महात्मा गाँधी	सुभाष चन्द्र बोस
राजा	राजा राममोहन राय	अकबर द्वितीय

54. काँग्रेस अधिवेशन : कब और कहां

काँग्रेस अधिवेशन 1885–1947

अधिवेशन	वर्ष	स्थान	अध्यक्ष	विशेष
पहला	1885	बंबई	व्योमेशचन्द्र बनर्जी	72 प्रतिनिधियों ने भाग लिया
दूसरा	1886	कलकत्ता	दादाभाई नौरोजी	
तीसरा	1887	मद्रास	बदरूद्दीन तैय्यबजी	प्रथम मुस्लिम अध्यक्ष
चौथा	1888	इलाहाबाद	जॉर्ज यूल	प्रथम अंग्रेज अध्यक्ष
पांचवां	1889	बंबई	सर विलियम वेडरबर्न	
छठा	1890	कलकत्ता	सर फिरोजशाह मेहता	
सातवां	1891	नागपुर	पी. आनंद चार्लू	
आठवां	1892	इलाहाबाद	व्योमेशचंद्र बनर्जी	
नौवां	1893	लाहौर	दादाभाई नौरोजी	
दसवां	1894	मद्रास	अल्फ्रेड वेब	
ग्यारहवां	1895	पूना	सुरेन्द्रनाथ बनर्जी	
बारहवां	1896	कलकत्ता	रहीमतुल्ला सयानी	पहली बार वंदे मातरम् गाया गया
तेरहवां	1897	अमरावती	सी. शंकरन नायर	
चौदहवां	1898	मद्रास	आनंदमोहन दास	
पंद्रहवां	1899	लखनऊ	रमेशचंद्र दत्त	
सोलहवां	1900	लाहौर	एन.जी. चंद्रावरकर	
सत्रहवां	1901	कलकत्ता	दिनशा इदुलजी वाचा	
अठारहवां	1902	अहमदाबाद	सुरेन्द्रनाथ बनर्जी	
उन्नीसवां	1903	मद्रास	लालमोहन घोष	
बीसवां	1904	बंबई	सर हेनरी काटन	
इक्कीसवां	1905	बनारस	गोपालकृष्ण गोखले	
बाइसवां	1906	कलकत्ता	दादाभाई नौरोजी	पहली बार 'स्वराज' शब्द का प्रयोग
तेइसवां	1907	सूरत	डॉ. रासबिहारी घोष	काँग्रेस का प्रथम विभाजन

अधिवेशन	वर्ष	स्थान	अध्यक्ष	विशेष
चौबीसवां	1908	मद्रास	डॉ. रासबिहारी घोष	काँग्रेस संविधान का निर्माण
पच्चीसवां	1909	लाहौर	पं. मदनमोहन मालवीय	
छब्बीसवां	1910	इलाहाबाद	विलियम वेडरबर्न	
सत्ताइसवां	1911	कलकत्ता	पं. बिशननारायण धर	पहली बार जन गण मन गाया गया
अट्ठाइसवां	1912	बांकीपुर	आर.एन.माधोलकर	
उनतीसवां	1913	कराची	नवाब सैयद मो. बहादुर	
तीसवां	1914	मद्रास	भूपेन्द्रनाथ बसु	
इकतीसवां	1915	बंबई	सर सत्येन्द्र प्रसन्न सिन्हा	लार्ड वेलिंगटन ने भाग लिया
बत्तीसवां	1916	लखनऊ	अंबिकाचरण मजूमदार	मुस्लिम लीग से समझौता
तैंतीसवां	1917	कलकत्ता	श्रीमती एनी बेसेंट	प्रथम महिला अध्यक्ष
विशेष अधि.	1918	बंबई	हसन इमाम	काँग्रेस का दूसरा विभाजन
चौंतीसवां	1918	दिल्ली	प. मदनमोहन मालवीय	
पैंतीसवां	1919	अमृतसर	प. मोतीलाल नेहरू	
विशेष अधि.	1920	कलकत्ता	लाला लाजपत राय	असहयोग का प्रस्ताव पास
छत्तीसवां	1920	नागपुर	सी. वि. राधवाचारियर	काँग्रेस संविधान में परिवर्तन
सैंतीसवां	1921	अहमदाबाद	हकीम अजमल खां	
अड़तीसवां	1922	गया	देशबंधु चितरंजन दास	
उनचालीसवां	1923	काकीनाडा	मौलाना मो. अली	
विशेष अधि.	1923	दिल्ली	अबुल कलाम आजाद	सबसे युवा अध्यक्ष
चालीसवां	1924	बेलगाम	महात्मा गाँधी	
इकतालीसवां	1925	कानपुर	श्रीमती सरोजिनी नायडू	प्रथम भारतीय महिला अध्यक्ष
बयालीसवां	1926	गुवाहाटी	एस. श्रीनिवास आयगार	सदस्यों हेतु खादी वस्त्र अनिवार्य
तेतालीसवां	1927	मद्रास	डॉ. एम.ए. अंसारी	पूर्ण स्वाधीनता की माँग
चौवालीसवां	1928	कलकत्ता	पं. मोतीलाल नेहरू	
पैंतालीसवां	1929	लाहौर	पं. जे.एल. नेहरू	पूर्ण स्वराज की माँग
छियालीसवां	1931	कराची	सरदार बल्लभ भाई पटेल	मौलिक अधिकार की माँग
सैतालीसवां	1932	दिल्ली	अमृत रणछोड़ दास सेठ	
अड़तालीसवां	1933	कलकत्ता	श्रीमती नेल्ली सेनगुप्ता	
उनचासवां	1934	बंबई	डॉ. राजेन्द्र प्रसाद	
पचासवां	1936	लखनऊ	पं. जे.एल. नेहरू	
इक्यावनवां	1937	फैजपुर	पं. जवाहरलाल नेहरू	गांव में आयोजित प्रथम अधिवेशन
बावनवां	1938	हरिपुरा *(गुजरात)*	सुभाष चंद्र बोस	
तिरपनवां	1939	त्रिपुरी	सुभाष चंद्र बोस	
चौवनवां	1940	रामगढ़	अ. कलाम आजाद	
पचपनवां	1946	मेरठ	आचार्य जे. बी. कृपलानी	आजादी के समय अध्यक्ष
छप्पनवां	1948	जयपुर	बी. पट्टाभि सीतारमय्या	
सनतावनवां	1950	नासिक	पुरुषोत्तम दास टंडन	

नोट : *डॉ राजेन्द्र प्रसाद 1947 ई. में दिल्ली में हुई विशेष अधिवेशन के अध्यक्ष थे।*

55. ब्रिटिशकालीन आयोग/समितियाँ

क्र.	आयोग	वर्ष	अध्यक्ष	गवर्नर-जेनरल/ वायसराय	उद्देश्य
1.	इनाम आयोग	1852	इनाम	डलहौजी	भूमि संबंधी विवेचना
2.	दुर्भिक्ष आयोग	1880	रिचर्ड स्ट्रेची	लिटन	अकाल निवारण हेतु विचार
3.	हण्टर आयोग	1882	विलियम हण्टर	रिपन	शिक्षा का विकास
4.	एचिन्सन आयोग	1886	चार्ल्स एचिन्सन	डफरिन	नागरिक सेवा में भारतीयों की संख्या में वृद्धि पर विचार
5.	अफीम आयोग	1893		लैंसडाउन	अफीम सेवन को रोकने हेतु
6.	हरशेल समिति	1893	हरशेल	लैंसडाउन	टकसाल संबंधी सुझाव
7.	दुर्भिक्ष आयोग	1898	जेम्स लायल	एल्गिन	प्रथम दुर्भिक्ष आयोग की रिपोर्ट पर विचार
8.	दुर्भिक्ष आयोग	1901	एंथनी मेक्डोनाल्ड	कर्जन	द्वितीय दुर्भिक्ष आयोग की रिपोर्ट पर सुझाव
9.	सिंचाई आयोग	1901	वोल्विन स्कॉट	कर्जन	सिंचाई में सुधार हेतु वित्तीय विचार
10.	विश्वविद्यालय आयोग	1902	थॉमस रैले	कर्जन	भारतीय वि. वि. पर की स्थिति पर विचार
11.	फ्रेजर आयोग	1902	फ्रेजर	कर्जन	पुलिस की कार्य-पद्धति पर विचार
12.	इसलिंग्टन आयोग	1912	इसलिंग्टन	हार्डिंग्ज	नागरिक सेवा में भारतीयों की हिस्सेदारी पर विचार
13.	मेक्लेगन समिति	1914	मेक्लेगन	हॉर्डिंग्ज	सरकारी वित्तीय अवस्था से संबंधित सुझाव
14.	कलकत्ता वि.वि. आयोग *(सेडलर आयोग)*	1917	माइकल सेडलर	चेम्सफोर्ड	कलकत्ता वि. वि. में दोषों की जाँच
15.	भारतीय छंटनी समिति	1923	लॉर्ड इंचकैप	रीडिंग	शिक्षा संबंधी विचार हेतु
16.	ली आयोग	1924	लॉड ली	रीडिंग	लोक सेवा आयोग की गठन की अनुशंसा*
17.	सेण्डहर्स्ट समिति	1925	एण्ड्रयू स्कीन	रीडिंग	भारतीय सेना का भारतीयकरण पर विचार
18.	बटलर समिति	1927	हरकोर्ट बटलर	इरविन	देशी राज्यों व अंग्रेजी सरकार के संबंधों पर विचार
19.	साइमन आयोग	1927	जॉन साइमन	इरविन	1919 ई. के अधिनियम की समीक्षा हेतु
20.	लिनलिथगो आयोग	1928	लिनलिथगो	इरविन	कृषि संबंधी समस्याओं पर विचार
21.	ह्विटले आयोग	1928	जे. एच. ह्विटले	इरविन	श्रमिकों की स्थिति पर विचार

★ *1926 में लोक सेवा आयोग का गठन।*

क्र.	आयोग	वर्ष	अध्यक्ष	गवर्नर-जेनरल/ वायसराय	उद्देश्य
22.	लिण्ड्से आयोग	1929	लिण्ड्से	इरविन	भारत में मिशनरी शिक्षा के विकास हेतु
23.	भारतीय वैधानिक आयोग	1929	फिलिप हर्टोग	इरविन	शिक्षा की स्थिति की समीक्षा करने हेतु
24.	सप्रू समिति	1934	तेज बहादुर सप्रू	विलिंगटन	बेरोजगारी की समस्या की समीक्षा हेतु
25.	भारतीय परिसीमन समिति	1935	लौरी हेमण्ड	विलिंगटन	निर्वाचन क्षेत्रों की अवस्था हेतु
26.	राष्ट्रीय योजना समिति	1938	जवाहरलाल नेहरू	लिनलिथगो	आर्थिक योजना
27.	क्रिप्स आयोग	1942	स्टेफोर्ड क्रिप्स	लिनलिथगो	भारत के राजनीतिक गतिरोध दूर करने हेतु
28.	कैबिनेट आयोग	1946	पैथिक लॉरेन्स	वेवल	भारतीयों को सत्ता हस्तान्तरित करने पर विचार हेतु
29.	दुर्भिक्ष जाँच आयोग	1943	सर चार्ल्स वुड	वेवल	बंगाल के अकाल के कारणों पर विचार हेतु
30.	सार्जेण्ट आयोग	1944	जॉन सार्जेण्ट	वेवल	शिक्षा के विकास हेतु

56. भारतीय प्रेस का विकास

क्र.	समाचार/पत्रिका पत्र	संस्थापक	वर्ष	स्थान	विशेष विन्दु
1.	बंगाल गजट[1]	जेम्स ऑस्तम हिक्की	1780	कलकत्ता	भारत का प्रथम समाचार-पत्र
2.	इंडिया गजट	—	1787	कलकत्ता	—
3.	मद्रास कुरियर	—	1784	मद्रास	मद्रास से प्रकाशित प्रथम समाचार-पत्र
4.	बॉम्बे हेराल्ड	—	1789	बंबई	बंबई *(मुम्बई)* से प्रकाशित प्रथम समाचार पत्र
5.	दिग्दर्शन	—	1818	कलकत्ता	प्रथम बंगला मासिक
6.	समाचार-दर्पण	विलियम कैरी	1818	कलकत्ता	प्रथम बंगला साप्ताहिक समाचार पत्र
7.	मिरात-उल-अखबार	राजा राममोहन राय	1822	कलकत्ता	प्रथम फारसी पत्रिका
8.	जाम-ए-जहांनुमा	एक अंग्रेजी फर्म	1822	कलकत्ता	उर्दू में प्रथम समाचार पत्र
9.	बंगदूत	राममोहन राय, द्वारकानाथ टैगोर एवं अन्य	1822	कलकत्ता	चार भाषाओं : अंग्रेजी, बंगला, हिन्दी एवं फारसी में साप्ताहिक
10.	बॉम्बे समाचार	—	1830	बंबई	गुजराती में प्रथम समाचार-पत्र
11.	बॉम्बे टाइम्स	—	1838	बंबई	1861 ई. में यह टाइम्स आफ इंडिया बना
12.	रस्त गोफ्तार	दादाभाई नौरोजी	1851	बंबई	एक गुजराती पाक्षिक
13.	हिन्दु पैट्रियट	गिरीशचन्द्र घोष *(बाद में हरिश्चन्द्र मुखर्जी इसके मालिक एवं संपादक बने)*	1853	कलकत्ता	
14.	सोम प्रकाश	द्वारकानाथ विद्याभूषण	1858	कलकत्ता	प्रथम बंगला समाचार-पत्र जो राजनीति से जुड़ा
15.	इंडियन मिरर	द्वारकानाथ टैगोर	1862	कलकत्ता	
16.	बंगाली	गिरिशचंद्र घोष	1862	कलकत्ता	
17.	नेशनल पेपर	द्वारकानाथ टैगोर	1865	कलकत्ता	
18.	मद्रास मेल	—	1868	मद्रास	भारत में प्रथम सांध्य समाचार-पत्र
19.	अमृत बाजार पत्रिका[2]	शिशिर कुमार घोष	1868	कलकत्ता	बंगला समाचार-पत्र
20.	बंग-दर्शन	बंकिमचन्द्र चटर्जी	1873	कलकत्ता	एक बंगला मासिक
21.	स्टेट्समैन	रॉबर्ट नाइट	1875	कलकत्ता	भारतीय प्रेस द्वारा बेयर्ड ऑफ इंडिया कहे जाते थे।
22.	हिन्दू	जी. एस. अय्यर एवं वीरराघवाचारी	1878	मद्रास	
23.	ट्रिब्यून	दयाल सिंह मजीठिया	1881	लाहौर	
24.	केसरी एवं मराठा[3]	बाल गंगाधर तिलक	1881	बंबई	केसरी-मराठा दैनिक; मराठा-अंग्रेजी साप्ताहिक
25.	स्वदेश मित्रम्	जी. एस. अय्यर	—	मद्रास	—

1. बंगाल गजट ने गवर्नर-जनरल उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीशों और कम्पनी के कर्मचारियों के दोषों को बहुत स्पष्ट रूप से प्रकाशित करना प्रारंभ किया जिसके कारण 1782 ई. में इस समाचार-पत्र को बंद कर दिया गया।
2. *बंगला समाचार-पत्र के रूप में शुरू, लेकिन वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट से बचने के लिए 1878 में अंग्रेजी समचार-पत्र बन गया।*
3. *तिलक के संपादक बनने के पूर्व अगरकर तथा केलकर द्वारा केसरी एवं मराठा का संपादन किया जाता था।*

नोट : भारत में सर्वप्रथम प्रेस की स्थापना 1550 में पूर्तगालियों ने की और 1557 में गोवा के ईसाई पादरियों के द्वारा प्रथम पुस्तक प्रकाशित की गयी।

57. भारत की ऐतिहासिक लड़ाइयाँ

प्रमुख युद्ध	वर्ष	परिणाम
तराइन का प्रथम युद्ध	1191 ई.	पृथ्वीराज ने मुहम्मद गोरी को हराया।
तराइन का द्वितीय युद्ध	1192 ई.	मुहम्मद गोरी ने पृथ्वीराज को हराया।
चन्दवार का युद्ध	1194 ई.	मुहम्मद गोरी ने जयचन्द को हराया।
पानीपत की पहली लड़ाई	1526 ई.	बाबर ने इब्राहिम लोदी को हराया।
खानवा का युद्ध	1527 ई.	बाबर ने राणा साँगा को हराया।
चन्देरी का युद्ध	1528 ई.	बाबर ने मेदनीराय को हराया।
घाघरा का युद्ध	1529 ई.	बाबर ने अफगानों को हराया।
चौसा का युद्ध	1539 ई.	शेरशाह ने हुमायूँ को हराया।
कन्नौज का युद्ध	1540 ई.	शेरशाह ने हुमायूँ को हराया।
पानीपत की दूसरी लड़ाई	1556 ई.	अकबर ने हेमू को हराया।
तालीकोट का युद्ध	1565 ई.	विजयनगर साम्राज्य का पतन।
हल्दीघाटी का युद्ध	1576 ई.	अकबर ने महाराणा प्रताप को हराया।

प्रमुख युद्ध	वर्ष	परिणाम
पलासी का युद्ध	1757 ई.	अंग्रेजों ने सिराजुद्दौला को हराया।
वाडीवास का युद्ध	1760 ई.	फ्रांसीसियों की पराजय।
पानीपत की तीसरी लड़ाई	1761 ई.	अहमद शाह अब्दाली ने मराठों को हराया।
बक्सर का युद्ध	1764 ई.	अंग्रेजों ने मीरकासिम को हराया।
रूहेला का युद्ध	1774 ई.	
खुर्दा का युद्ध	1795 ई.	निजाम की पराजय।
प्रथम स्वतंत्रता संग्राम	1857 ई.	
भारत चीन युद्ध	1962 ई.	
प्रथम भारत-पाक युद्ध	1965 ई.	
द्वितीय भारत-पाक युद्ध	1971 ई.	

नोट : *प्रथम विश्वयुद्ध 1914-18 में व द्वितीय विश्वयुद्ध 1939-45 में हुआ।*

58. प्रमुख राजवंश, संस्थापक तथा राजधानी

क्र	राजवंश	संस्थापक	राजधानी
1.	हर्यक वंश	बिम्बिसार	राजगृह
2.	शिशुनाग वंश	शिशुनाग	वैशाली
3.	नंद वंश	महापद्मनंद	पाटलिपुत्र
4.	मौर्य वंश	चन्द्रगुप्त	पाटलिपुत्र
5.	शुंग वंश	पुष्यमित्र शुंग	पाटलिपुत्र
6.	कण्व वंश	वासुदेव	पाटलिपुत्र
7.	सातवाहन	सिमुक	प्रतिष्ठान
8.	कुषाण वंश	कुजल कडफिसेस	पुरुषपुर
9.	गुप्त वंश	श्रीगुप्त	पाटलिपुत्र
10.	वाकाटक वंश	विन्ध्यशक्ति	....
11.	हूण वंश	तोरमाण	स्यालकोट
12.	वर्धन वंश	पुष्यभूति	थानेश्वर/कन्नौज
13.	पांड्य वंश	नेडियोन	मदुरै
14.	चोल वंश	विजयालय	तंजौर
15.	पल्लव वंश	सिंह वर्मन चतुर्थ	काँचीपुरम
16.	राष्ट्रकूट	दन्तिदुर्ग	मान्यखेट
17.	चालुक्य *(कल्याणी)*	तैलप-II	मान्यखेट/कल्याण
18.	चालुक्य *(बादामी)*	जयसिंह प्रथम	वातापी
19.	चालुक्य *(बेंगी)*	विष्णुवर्धन	बेंगी
20.	होयसल वंश	विष्णुवर्धन	द्वार समुद्र
21.	यादव वंश	भिल्लभ-V	देवगिरि
22.	कदम्ब वंश	मयूर शर्मन	वनवासी
23.	काकतीय वंश	बीटा प्रथम	अंमकोण्ड
24.	गंग वंश	ब्रजहस्त पंचम	कुवलाल व तलकाड
25.	पाल वंश	गोपाल	मुंगेर
26.	सेन वंश	सामंत सेन	लखनौती
27.	कार्कोट वंश	दुर्लभ वर्धन	....
28.	उत्पल वंश	अवन्ति वर्मन	....
29.	लोहार वंश	संग्राम राज	....
30.	वर्मन वंश *(कामरूप)*	पुष्यवर्मन	प्रागज्योतिषपुर
31.	गुर्जर प्रतिहार	नागभट्ट प्रथम	कन्नौज
32.	गहड़वाल वंश	चन्द्रदेव	कन्नौज
33.	चौहान वंश	वासुदेव	अजमेर
34.	परमार वंश	उपेन्द्र	धारा नगरी
35.	चंदेल वंश	नन्नुक	खजुराहो/महोवा
36.	सोलंकी वंश	मूलराज	अन्हिलवाड़
37.	कलचुरी वंश	कोकल्ल	त्रिपुरी
38.	गुलाम वंश	कुतुबुद्दीन ऐबक	दिल्ली
39.	खिलजी वंश	जलालुद्दीन खिलजी	दिल्ली
40.	तुगलक वंश	गयासुद्दीन तुगलक	दिल्ली
41.	सैय्यद वंश	खिज्र खाँ	दिल्ली
42.	लोदी वंश	बहलोल लोदी	दिल्ली
43.	संगम वंश	हरिहर एवं बुक्का	विजयनगर
44.	सालुव वंश	नरसिंह	विजयनगर
45.	तुलुव वंश	वीर नरसिंह	विजयनगर
46.	आरवीडू वंश	तिरुमल	पेनुकोंडा
47.	बहमनी वंश	हसन गंगु	गुलबर्गा *(बीदर)*
48.	आदिलशाही वंश	आदिलशाह	बीजापुर
49.	निजामशाही	मलिक अहमद	अहमदनगर
50.	इमादशाही	फतेहउल्ला इमादशाह	बरार
51.	कुतुबशाही वंश	कुली कुतुबशाह	गोलकुण्डा
52.	बरीदशाही	अमीरअली बरीद	बीदर
53.	शर्की वंश	मलिक सरवर	जौनपुर
54.	मुगल वंश	बाबर	दिल्ली/आगरा
55.	भोंसले वंश	शिवाजी	रायगढ़
56.	हैदराबाद के स्वतंत्र राज्य	निजाम-उल-मुल्क	हैदराबाद

59. सामाजिक सुधार अधिनियम

क्र	अधिनियम	गवर्नर जनरल	वर्ष	विषय
1.	शिशुवध प्रतिबंध	वेलेजली	1798-1805	शिशु-हत्या पर प्रतिबंध
2.	सती प्रथा प्रतिबंध	लार्ड विलियम बेंटिक	1829	सती-प्रथा पर पूर्ण प्रतिबंध
3.	दास प्रथा पर प्रतिबंध	एलनबरो	1843	1833 के चार्टर अधिनियम द्वारा 1843 में दासता को प्रतिबंधित कर दिया गया।
4.	हिन्दू विधवा पुनर्विवाह	लॉर्ड केनिंग	1856	विधवा-विवाह की अनुमति
5.	नैटिव मैरिज एक्ट	नॉर्थ ब्रुक	1872	अन्तर्जातीय विवाह
6.	एज ऑफ कन्सेंट एक्ट	लैंस डाउन	1891	लड़की के लिए विवाह की आयु 12 वर्ष निर्धारित
7.	शारदा एक्ट	इरविन	1930	विवाह के लिए लड़की की न्यूनतम आयु 14 वर्ष व लड़कों की न्यूनतम आयु 18 वर्ष निर्धारित

60. मुस्लिम सामाजिक-धार्मिक आन्दोलन और संगठन

क्र	आन्दोलन	वर्ष	स्थान	संस्थापक
1.	फरैज़ी आन्दोलन	1804	फरीदपुर बंगाल	हाजीशरीयतुला और दादु मियाँ
2.	तायूनी आन्दोलन	1839	ढाका	करामत अली जौनपुरी
3.	दार-ऊल-उलूम	1867	देवबंद सहारनपुर *(उ.प्र.)*	मुहम्मद कासिम, रशीद अहमद गंगोही
4.	अलीगढ़ आन्दोलन	1875	अलीगढ़	सर सैयद अहमद खाँ
5.	अहमदिया आन्दोलन	1889-90	फरीदकोट कादियान के मर्जा	गुलाम अहमद
6.	नदवातल उलेमा	1894-95	लखनऊ	मौलाना शिबली नूमानी

विश्व इतिहास

1. पुनर्जागरण

- पुनर्जागरण का प्रारंभ इटली के फ्लोरेंस नगर से माना जाता है।
- इटली के महान कवि दाँते *(1260-1321 ई.)* को पुनर्जागरण का अग्रदूत माना जाता है। इनका जन्म फ्लोरेन्स नगर में हुआ था।
- दाँते ने प्राचीन लैटिन भाषा को छोड़कर तत्कालीन इटली की बोल-चाल की भाषा 'टस्कन' में 'डिवाइन कॉमेडी' नामक काव्य लिखा। इसमें दाँते ने स्वर्ग और नरक की एक काल्पनिक यात्रा का वर्णन किया है।
- दाँते के बाद पुनर्जागरण की भावना का प्रश्रय देनेवाला दूसरा व्यक्ति पेट्रॉक *(1304-1367 ई.)* था।
- पेट्रॉक को मानववाद का संस्थापक माना जाता है। वह इटली का निवासी था।
- इटालियन गद्य का जनक कहानीकार बोकेशियो *(1313-1375 ई.)* को माना जाता है।
- कहानीकार बोकेशियो की डेकामेरॉन *(Decameron)* प्रसिद्ध पुस्तक है।
- आधुनिक विश्व का प्रथम राजनीतिक चिन्तक फ्लोरेंस निवासी मैकियावेली *(1469-1567 ई.)* को माना जाता है।
- मैकियावेली की प्रसिद्ध पुस्तक है : द प्रिन्स, जो राज्य का एक नवीन चित्र प्रस्तुत करती है।
- आधुनिक राजनीतिक दर्शन का जनक मैकियावेली को कहा जाता है।
- पुनर्जागरण की भावना की पूर्ण अभिव्यक्ति इटली के तीन कलाकारों की कृतियों में मिलती है। ये कलाकार थे—लियोनार्दो द विंची, माइकेल एंजेलो और राफेल।
- लियोनार्दो द विंची एक बहुमुखी प्रतिभासम्पन्न व्यक्ति था। वह चित्रकार, मूर्तिकार, इंजीनियर, वैज्ञानिक, दार्शनिक, कवि और गायक था।
- लियोनार्दो द विंची 'द लास्ट सपर' और 'मोनालिसा' नामक अमर चित्रों के रचयिता होने के कारण प्रसिद्ध हैं।
- माइकल एंजेलो भी एक अद्भुत मूर्तिकार एवं चित्रकार था।
- 'द लास्ट जजमेंट' एवं 'द फाल ऑफ मैन' माइकल एंजलो की कृतियाँ हैं।
- सिस्तान के गिरजाघर की छत में माइकल एंजेलो के द्वारा ही चित्र बनाये गये हैं।
- रॉफेल भी इटली का एक चित्रकार था, इसकी सर्वश्रेष्ठ कृति जीसस क्राइस्ट की माता मेडोना का चित्र है।
- पुनर्जागरण काल में चित्रकला का जनक जियाटो को माना जाता है।
- पुनर्जागरण काल का सर्वश्रेष्ठ निबंधकार इंग्लैंड का फ्रांसिस बेकन था।
- हॉलैंड के इरासमस ने अपनी पुस्तक द प्रेज आफ फौली में व्यंग्यात्मक ढंग से पादरियों के अनैतिक जीवन एवं ईसाई धर्म की कुरीतियों पर प्रहार किया है।
- इंग्लैंड के लेखक टॉमस मूर ने अपनी पुस्तक यूटोपिया में आदर्श समाज का चित्र प्रस्तुत किया है।
- मार्टिन लूथर ने जर्मन भाषा में बाइबिल का अनुवाद प्रस्तुत किया है।
- 'रोमियो एण्ड जुलियट' शेक्सपीयर *(इंग्लैंड)* की अमर कृति है।
- इंग्लैंड के रोजर बेकन को आधुनिक प्रयोगात्मक विज्ञान का जन्मदाता माना जाता है।
- पृथ्वी सौरमंडल का केन्द्र है : इसका खंडन सर्वप्रथम पोलैंड निवासी कोपरनिकस ने किया।
- गैलीलियो *(1560-1642 ई.)* ने भी कोपरनिकस के सिद्धान्त का समर्थन किया।
- जर्मनी के प्रसिद्ध वैज्ञानिक केपलर या केपलर *(1571-1630 ई.)* ने गणित की सहायता से यह बतलाया कि ग्रह सूर्य के चारों ओर किस प्रकार घूमते हैं।
- न्यूटन *(1642-1726 ई.)* ने गुरुत्वाकर्षण के नियम का पता लगाया।
- धर्म-सुधार आन्दोलन की शुरुआत 16वीं सदी में हुई।
- धर्म-सुधार आन्दोलन का प्रवर्तक मार्टिन लूथर था, जो जर्मनी का रहनेवाला था। इसने बाइबिल का अनुवाद जर्मन भाषा में किया।
- धर्म-सुधार आन्दोलन की शुरुआत इंग्लैंड में हुई।
- 'जॉन विकलिफ को धर्म-सुधार आन्दोलन का प्रातःकालीन तारा कहा जाता है। इसके अनुयायी लोलाइर्स कहलाते थे।
- अमेरिका की खोज क्रिस्टोफर कोलम्बस ने की थी।
- अमेरिगो वेस्पुसी *(इटली)* के नाम पर अमेरिका का नाम अमेरिका पड़ा।
- प्रशान्त महासागर का नामकरण स्पेन निवासी मैगलन ने किया।
- समुद्री मार्ग से सम्पूर्ण विश्व का चक्कर लगानेवाला प्रथम व्यक्ति मैगलन था।

2. अमेरिका का स्वतंत्रता-संग्राम

- अमेरिका में ब्रिटिश औपनिवेशिक साम्राज्य की नींव जेम्स प्रथम के शासनकाल में डाली गयी। अमेरिकी स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान इंग्लैंड का शासक जॉर्ज तृतीय था।
- रेड इंडियन अमेरिका के मूल निवासी थे।
- अमेरिका को पूर्ण स्वत्रंतता 4 जुलाई, 1776 ई. को मिली। अमेरिकी स्वतंत्रता की घोषणा नैसर्गिक अधिकार *(Natural Rights)* के सिद्धान्तों पर आधारित थी।
- अमेरिका का स्वतंत्रता-युद्ध 1783 ई. में पेरिस की संधि के तहत समाप्त हुआ। इस संधि के अनुसार ब्रिटेन ने उत्तरी अमेरिका के 13 अंग्रेजी उपनिवेशों की स्वतंत्रता स्वीकार कर ली।
- अमेरिका के स्वतंत्रता संग्राम में लफायते के नेतृत्व में फ्रांसीसी सेना ने इंग्लैंड के विरुद्ध भाग लिया था।
- सप्तवर्षीय युद्ध में इंग्लैंड की काफी आर्थिक क्षति हुई थी। इस क्षतिपूर्ति हेतु तत्कालीन प्रधानमंत्री ग्रेनविले ने 1765 ई. में स्टाम्प एक्ट पारित किया जिसके अनुसार सभी अदालती कागजों, अखबारों आदि पर 20 शिलिंग का स्टाम्प लगना अनिवार्य था। 1767 में ब्रिटिश संसद ने कागज, शीशा, चाय एवं रोगन जैसे उपभोक्ता वस्तुओं पर भी कर लगाया। उपनिवेशवासियों ने इन करों का व्यापक विरोध किया तथा सैमुअल एडम्स ने 'प्रतिनिधित्व नहीं तो कर नहीं' का नारा दिया।

नोट : *सप्तवर्षीय युद्ध इंग्लैंड एवं फ्रांस में 1756 से 1763 ई. के बीच हुआ था।*

- स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान उपनिवेशवासियों ने स्वाधीनता के पुत्र एवं स्वाधीनता की पुत्रियाँ नामक संस्थाएँ बनाई जो ब्रिटिश सरकार की कार्रवाइयों का विरोध करती थी।
- 1776 में टॉमस पेन की लघु पत्रिका कॉमनसेंस प्रकाशित हुई। इसमें अत्यंत प्रभावशाली एवं उत्तेजक शैली में स्वतंत्रता की आवश्यकता पर बल दिया। टॉमस पेन ने राइट्स ऑफ मैन की भी रचना की।
- अमेरिकी स्वतंत्रता-संग्राम का नायक जॉर्ज वाशिंगटन थे, जो बाद में अमेरिका का प्रथम राष्ट्रपति बने।
- अमेरिकी स्वतंत्रता-संग्राम का तात्कालिक कारण 'बोस्टन की चाय पार्टी' थी, जो 16 दिसम्बर, 1773 ई. को हुई थी। इसी घटना से अमेरिका का स्वतंत्रता-संग्राम प्रारंभ हुआ। इस घटना का नायक सैमुयल एडम्स था।
- 5 सितम्बर, 1774 को 13 उपनिवेशों के प्रतिनिधियों का फिलाडेल्फिया शहर में एक महादेशीय सम्मेलन आयोजित किया जिसमें ब्रिटिश कानूनों का विरोध तथा व्यापार के बहिष्कार का निर्णय हुआ।

- 18 अप्रैल, 1775 को ब्रिटिश सेना तथा उपनिवेशवासियों के बीच लेक्सिंग्टन में प्रथम संघर्ष हुआ।
- 4 जुलाई, 1776 ई. में फिलाडेल्फिया में दूसरा महादेशीय सम्मेलन हुआ, जिसमें टॉमस जैफर्सन द्वारा तैयार किया गया स्वतंत्रता का घोषणा पत्र जारी किया गया।
- प्रजातंत्र की स्थापना सर्वप्रथम अमेरिका में हुई। इसे ही आधुनिक गणतंत्र की जननी कहा जाता है। धर्मनिरपेक्ष राज्य की स्थापना भी सर्वप्रथम अमेरिका में हुई।
- संसार में सर्वप्रथम लिखित संविधान संयुक्त राज्य अमेरिका में 1789 ई. में लागू हुआ जिसमें महिलाओं को सम्पत्ति का अधिकार मिला तथा उत्तराधिकार कानून को न्यायसंगत बनाया गया।
- मौंटेस्क्यू के शक्ति पृथक्करण सिद्धान्त को मान्यता मिली।
- 1781 ई. में उपनिवेशी सेना के सम्मुख आत्मसमर्पण करनेवाला ब्रिटेन का सेनापति लॉर्ड कार्नवालिस था।
- अमेरिका विश्व का पहला देश था, जिसने मनुष्यों की समानता तथा उसके मौलिक अधिकारों की घोषणा की।
- अमेरिका में दासों के आयात को 1808 ई. में अवैध घोषित किया गया।
- अब्राहम लिंकन अमेरिका के राष्ट्रपति 1860 ई. में हुए।
- अमेरिका में गृह-युद्ध की शुरुआत 12 अप्रैल,1861 ई. में दक्षिण एवं उत्तरी राज्यों के बीच हुई। दक्षिणी राज्य दासता के समर्थक एवं उत्तरी राज्य उसके विरोधी थे।
- अमेरिकी गृह-युद्ध की शुरुआत दक्षिणी कैरोलिना राज्य से हुई। इसी युद्ध के फलस्वरूप ही दास-प्रथा का अंत हुआ।
- 1 जनवरी, 1863 ई. को अब्राहम लिंकन ने दास-प्रथा का उन्मूलन किया।
- ''प्रजातंत्र जनता का, जनता के द्वारा और जनता के लिए शासन है''—प्रजातंत्र की यह परिभाषा अब्राहम लिंकन ने ही दी है।
- अब्राहम लिंकन की हत्या जॉन विल्कीज ब्रुश नामक व्यक्ति ने 14 अप्रैल, 1865 ई. को कर दी।
- अमेरिकी गृह-युद्ध की समाप्ति 26 मई, 1865 ई. को हुई।
- अमेरिका फिलोसोफिकल सोसाइटी की स्थापना बेंजामिन फ्रैंकलिन ने की थी।

3. फ्रांस की राज्यक्रांति

- फ्रांस की राज्यक्रांति 1789 ई. में लुई सोलहवाँ के शासनकाल में हुई। इस समय फ्रांस में सामन्ती व्यवस्था थी।
- 14 जुलाई, 1789 को क्रांतिकारियों ने बास्तील के कारागृह के फाटक को तोड़कर बंदियों को मुक्त कर दिया। तब से 14 जुलाई को फ्रांस में 'राष्ट्रीय दिवस' स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जाता है।
- समानता, स्वतंत्रता और बन्धुत्व का नारा फ्रांस की राज्यक्रांति की देन है।
- ''मैं ही राज्य हूँ और मेरे शब्द ही कानून हैं।'' यह कथन है—लुई चौदहवाँ का।
- राजा की निरंकुशता एवं स्वेच्छाचारिता पर अंकुश लगाने के लिए फ्रांस में पार्लमा नामक संस्था थी जिसकी संख्या 17 थी और जिसका गठन न्यायालय के रूप में किया गया था। न्यायाधीशों का पद कुलीन वर्ग के लिए सुरक्षित होता था और ये पद वंश क्रमानुगत होते थे।
- वर्साय के शीशमहल का निर्माण लुई चौदहवाँ ने करवाया था।
- वर्साय को फ्रांस की राजधानी लुई चौदहवाँ ने बनाया था।
- लुई सोलहवाँ 1774 ई. में फ्रांस की गद्दी पर बैठा।
- लुई सोलहवाँ की पत्नी मेरी एंत्वानेत आस्ट्रिया की राजकुमारी थी।
- राष्ट्र की समाधि वर्साय का भड़कीला राजदरबार था।
- लुई सोलहवाँ को देशद्रोह के अपराध में फाँसी दी गई।
- टैले *(Taille)* एक प्रकार का भूमि-कर था और टीथे *(Tithe)* एक प्रकार का धार्मिक कर था, जिसे चर्च को देना पड़ता था।
- फ्रांसीसी क्रांति में वाल्टेयर, मौंटेस्क्यू एवं रूसो ने सर्वाधिक योगदान किया।
- वाल्टेयर चर्च का विरोधी था।
- रूसो फ्रांस में प्रजातंत्रात्मक शासन-पद्धति का समर्थक था।
- ''सौ चूहों की अपेक्षा एक सिंह का शासन उत्तम है'' यह उक्ति वाल्टेयर की है।
- सोशल कांट्रैक्ट रूसो की एवं लेटर्स ऑन इंगलिश वाल्टेयर की रचना है।
- 'कानून की आत्मा' *(The sprit of laws)* की रचना मौंटेस्क्यू ने की थी जिसमें सरकार के तीन अंगों कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका को अलग-अलग रखने के विषय में बताकर शक्ति पृथक्करण सिद्धान्त का पोषण किया।
- फ्रांस की क्रांति का सबसे महत्वपूर्ण नारा 'समानता' था जिसे मध्यम वर्ग ने आगाज किया था। स्वतंत्रता एवं बन्धुत्व भी क्रांति का नारा था।
- 18वीं शताब्दी में फ्रांसीसी समाज तीन एस्टेट्स *(Estates)* अर्थात् श्रेणी में बँटा हुआ था—प्रथम एस्टेट्—पादरी *(Clergy)*, द्वितीय एस्टेट्—अभिजात वर्ग *(Nobility)* था जबकि तृतीय एस्टेट्—इसमें देश की 90% जनता थी, उन्हें सभी प्रकार के कर देने पड़ते थे। इस वर्ग में व्यापारी, डॉक्टर, वकील, जज, अध्यापक, शिक्षक, लेखक, शिल्पी, किसान एवं मजदूर सभी शामिल थे।

नोट : *फ्रांस की राज्यक्रांति के समय फ्रांस की मुद्रा लिव्रे थी।*

- स्टेट्स जनरल के अधिवेशन की शुरुआत 5 मई, 1789 ई. में हुई थी।
- माप-तौल की दशमलव प्रणाली फ्रांस की देन है।
- सांस्कृतिक राष्ट्रीयता का जनक हर्डर को कहा जाता है।
- नेपोलियन का जन्म 15 अगस्त, 1769 ई. को कोर्सिका द्वीप की राजधानी अजासियो में हुआ था।
- नेपोलियन के पिता का नाम कार्लो बोनापार्ट था।
- नेपोलियन ने ब्रिटेन के सैनिक अकादमी में शिक्षा प्राप्त की।
- 1796 में नेपोलियन ने इटली में आस्ट्रिया के प्रमुख को समाप्त किया।
- फ्रांस में डायरेक्टरी के शासन का अन्त 1799 ई. में हुआ।
- नेपोलियन 1799 ई. में प्रथम कॉन्सल बना और 1802 ई. में जीवनभर के लिए कॉन्सल बना।
- 1804 ई. में नेपोलियन फ्रांस का सम्राट् बना।
- आधुनिक फ्रांस का निर्माता नेपोलियन को माना जाता है।
- नेपोलियन ने ही सर्वप्रथम इंग्लैंड को 'बनियों का देश' कहा था।
- नेपोलियन ने पत्नी जोजेफाइन को तलाक देकर आस्ट्रिया की राजकुमारी मोरिया लुइसा से शादी की।
- ट्राल्फगर का युद्ध 21 अक्टूबर, 1805 ई. में इंग्लैंड एवं नेपोलियन के बीच हुआ।
- नेपोलियन ने बैंक ऑफ फ्रांस की स्थापना 1800 ई. में की।
- नेपोलियन ने कानूनों का संग्रह तैयार करवाया, जिसे नेपोलियन का कोड कहा जाता है।
- नेपोलियन को नील नदी के युद्ध में अंग्रेजी जहाजी बेड़े के नायक नेल्सन के हाथों बुरी तरह पराजित होना पड़ा।
- यूरोप के राष्ट्रों ने मिलकर 1813 ई. में नेपोलियन को लिपजिग नामक स्थान पर हरा दिया और उसे बन्दी बनाकर एल्बा के टापू पर भेज दिया गया; परन्तु वह एल्बा से भाग निकला और पुनः फ्रांस का सम्राट् बना।
- अन्ततः मित्रराष्ट्रों की सेना ने नेपोलियन को 18 जून, 1815 ई. को वाटरलू के युद्ध में पराजित कर बन्दी बना लिया और उसे सेंट हेलेना द्वीप पर भेज दिया। वहाँ 1821 ई. में उसकी मृत्यु हो गयी। नेपोलियन लिट्ल कारपोरल के नाम से जाना जाता है।

- नेपोलियन के पतन का कारण था, उसका रूस पर आक्रमण करना।
- इंग्लैंड के वाणिज्य एवं व्यापार का बहिष्कार करने के लिए नेपोलियन ने महाद्वीपीय व्यवस्था का सूत्रपात किया था।
- विएना काँग्रेस समझौता के तहत यूरोप के राष्ट्रों ने 1815 ई. में फ्रांस के प्रभुत्व को समाप्त किया।

4. इटली का एकीकरण

- 19वीं सदी के पूर्वार्द्ध में इटली में 13 राज्य थे।
- इटली के एकीकरण का जनक जोसेफ मेजिनी को माना जाता है।
- मेजिनी का जन्म जेनेवा में हुआ था।
- इटली के एकीकरण में सबसे बड़ा बाधक आस्ट्रिया था।
- इटली के एकीकरण में सार्डीनिया पीडमौंट राज्य ने अगुआई की थी।
- इटली की समस्या को काउण्ट कावूर ने अन्तरराष्ट्रीय समस्या बना दिया।
- इटली के एकीकरण की तलवार गैरीबाल्डी को कहा जाता है।
- इटली के एकीकरण का श्रेय मेजिनी, काउण्ट कावूर और गैरीबाल्डी को दिया जाता है।
- 'यंग इटली' की स्थापना 1831 ई. में जोसेफ मेजिनी ने की।
- गैरीबाल्डी 'लाल कुरती' नाम से सेना का संगठन किया था।
- 'कार्बोनरी सोसायटी' का संस्थापक गिवर्टी था।
- विक्टर एमैनुएल सार्डिनिया का शासक था।
- इटली के एकीकरण की शुरुआत लोम्बार्डी और सार्डिनिया राज्यों के मेल से हुई।
- इटली राष्ट्र का जन्म 2 अप्रैल, 1860 ई. को माना जाता है।
- 1871 ई. में रोम को संयुक्त इटली का राजधानी घोषित किया गया।
- ''यदि समाज में क्रांति लानी हो तो क्रांति का नेतृत्व नवयुवकों के हाथ में दे दो'' यह कथन जोसेफ मेजिनी का है।
- इटली का एकीकरण 1871 ई. में काउण्ट कावूर ने किया।
- इटली की एकता का जन्मदाता नेपोलियन था।

5. जर्मनी का एकीकरण

- जर्मनी का एकीकरण बिस्मार्क ने किया। बिस्मार्क प्रशा के शासक विलियम प्रथम का प्रधानमंत्री था।
- जर्मनी का सबसे शक्तिशाली राज्य प्रशा था।
- बिस्मार्क जर्मनी का एकीकरण प्रशा के नेतृत्व में चाहता था।
- विलियम को जर्मन संघ के सम्राट् का ताज 8 फरवरी, 1871 ई. में पहनाया गया।
- बिस्मार्क को सबसे अधिक भय फ्रांस से था।
- जर्मनी में राष्ट्रीयता का संदेशवाहक नेपोलियन बोनापार्ट को माना जाता है।
- जर्मनी के आर्थिक राष्ट्रवाद का पिता फ्रेडरिक लिस्ट को माना जाता है।
- जर्मनी राष्ट्रीय सभा को डायट के नाम से जाना जाता था, यह फ्रैंकफर्ट में होती थी।
- 1815 ई. से 1850 ई. के बीच जर्मन साम्राज्य पर आस्ट्रिया का आधिपत्य था।
- आस्ट्रिया का चान्सलर मेटरनिख था।
- एकीकृत जर्मन राष्ट्र के निर्माण में राके, बोमर, लसरं इत्यादि दार्शनिकों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- फ्रैंकफर्ट संविधान सभा का गठन मई, 1848 ई. में किया गया।
- विलियम प्रथम के शासनकाल में प्रशा का रक्षामंत्री वानरून एवं सेनापति वान माल्टेक था।
- 23 सितम्बर, 1862 ई. को बिस्मार्क प्रशा का चांसलर बना।
- बिस्मार्क का जन्म 1 अप्रैल, 1815 ई. को ब्रेडनबर्ग में हुआ था।
- विलियम प्रथम ने बिस्मार्क को बाजीगर कहा था।
- सेरेजोवा के युद्ध में 1866 ई. में आस्ट्रिया ने प्रशा के आगे आत्मसमर्पण कर दिया।
- 23 अगस्त, 1866 ई. के प्राग संधि के तहत आस्ट्रिया जर्मन संघ में शामिल हुआ।
- फ्रांस एवं प्रशा के बीच सेडान का युद्ध 15 जुलाई, 1870 ई. को हुआ।
- नेपोलियन तृतीय ने प्रशा के आगे 1 सितम्बर, 1870 ई. को आत्मसमर्पण किया।
- बिस्मार्क ने जर्मनी के सम्राट् विलियम प्रथम का राज्याभिषेक वर्साय के राजमहल में किया।
- फ्रैंकफर्ट की संधि 10 मई, 1871 ई. को फ्रांस और प्रशा के बीच हुई।
- सूडान के युद्ध के बाद जर्मनी का एकीकरण संभव हो सका।

6. रूसी क्रांति

- समाजवाद शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम रॉबर्ट ओवेन ने किया था। वह वेल्स का रहनेवाला था।
- आदर्शवादी समाजवाद का प्रवक्ता रॉबर्ट ओवेन को माना जाता है।
- वैज्ञानिक समाजवाद का संस्थापक कार्ल मार्क्स था। कार्ल मार्क्स जर्मनी का निवासी था।
- कार्ल मार्क्स ने दास कैपिटल और कम्युनिस्ट मैनीफेस्टो नामक पुस्तक लिखी है।
- फ्रांसीसी साम्यवाद का जनक सेंट साइमन को माना जाता है।
- फेबियन सोशलिज्म का नेतृत्व जॉर्ज बर्नाड शॉ ने किया।
- लंदन में फेबियन सोसायटी की स्थापना 1884 ई. में हुई।
- 'दुनिया के मजदूरों एक हो' का नारा कार्ल मार्क्स ने दिया।
- रूस के शासक को 'जार' कहा जाता था। यह जारशाही व्यवस्था मार्च, 1917 ई. में समाप्त हुई।
- जार मुक्तिदाता के नाम से अलेक्जेंडर द्वितीय को जाना जाता है।
- रूस का अंतिम जार शासक जार निकोलस द्वितीय था।
- 1917 ई. में हुई रूसी क्रांति का तात्कालिक कारण प्रथम विश्वयुद्ध में रूस की पराजय थी।
- 7 नवम्बर, 1917 ई. की वोल्शेविक क्रांति का नेता लेनिन था।
- लेनिन ने चेका का संगठन किया था।
- लाल सेना का संगठन ट्राटस्की ने किया था।
- रूस के जार शासक अलेक्जेंडर द्वितीय की हत्या बम-विस्फोट में हुई।
- एक जार, एक चर्च और एक रूस का नारा जार निकोलस द्वितीय ने दिया था।
- रूस में सबसे अधिक जनसंख्या स्लाव लोगों की थी।
- अन्ना कैरेनिना के लेखक लियो टाल्सटाय था।
- शून्यवाद का जनक तुर्गनेव को माना जाता है।
- रूसी साम्यवाद का जनक प्लेखानोव को माना जाता है।
- सोशल डेमोक्रेटिक दल की स्थापना 1903 ई. में रूस में हुई।
- यह दल दो गुटों में विभाजित था—वोल्शेविक और मेन्शेविक।
- वोल्शेविक का अर्थ 'बहुसंख्यक' एवं मेन्शेविक का अर्थ 'अल्पसंख्यक' होता है।
- वोल्शेविक दल का नेता लेनिन था।
- 16 अप्रैल, 1917 ई. में लेनिन ने रूस में क्रांतिकारी योजना प्रकाशित की, जो 'अप्रैल थीसिस' के नाम से जानी जाती है।
- 1921 ई. में लेनिन ने रूस में नई आर्थिक नीति लागू की।
- आधुनिक रूस का निर्माता स्टालिन को माना जाता है।
- लेनिन की मृत्यु 1924 ई. में हो गयी।
- 'राइट्स ऑफ मैन' का लेखक टॉमस पेन है।
- 'मदर' की रचना मैक्सिम गोर्की ने की।
- स्थायी क्रांति के सिद्धांत का प्रवर्तक ट्राटस्की था।
- प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान लेनिन का नारा था 'युद्ध का अन्त करो'।
- कार्ल मार्क्स का आजीवन साथी रहा—फ्रेडरिक एंजेल्स।

7. औद्योगिक क्रांति

- औद्योगिक क्रांति की शुरुआत इंग्लैंड में हुई, क्योंकि इंग्लैंड के पास उपनिवेशों के कारण कच्चे माल और पूँजी की अधिकता थी।
- इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति की शुरुआत सूती कपड़ा उद्योग से हुई।
- सबसे पहले स्कॉटलैंड के मैकेडम नामक व्यक्तियों ने पक्की सड़कें बनाने की विधि निकाली।
- 1761 ई. में ब्रिंडले नामक इंजीनियर ने मैनचेस्टर से वर्सले तक नहर बनायी।
- 1814 ई. में जॉर्ज स्टीफेंसन ने पहला भाप से चलने वाला रेल इंजन रॉकेट बनाया।
- औद्योगिक क्रांति की दौड़ में जर्मनी इंग्लैंड का प्रतिद्वन्द्वी था।

औद्योगिक क्रांति के हुए आविष्कार		
आविष्कार	आविष्कारक	वर्ष
तेज चलने वाला शटल	जान	1733 ई.
स्पिनिंग जेनी	जेम्स हारग्रीव्ज	1765 ई.
स्पिनिंग जेनी *(पानी की शक्ति से चालित)*	रिचार्ड आर्कराइट	1767 ई.
स्पिनिंग म्यूल	क्राम्प्टन	1776 ई.
घोड़ा द्वारा चलाये जानेवाला करघा	कार्ट राइट	---
सेफ्टी लैम्प	हम्फ्री डेवी	1815 ई.

8. इंग्लैंड में क्रांति

- इंग्लैंड में गृह-युद्ध चार्ल्स प्रथम के शासनकाल में 1642 ई. में हुआ।
- इंग्लैंड में गौरवपूर्ण क्रांति 1688 ई. में हुई। उस समय इंग्लैंड का शासक जेम्स द्वितीय था।
- सप्तवर्षीय युद्ध इंग्लैंड एवं फ्रांस के बीच *(1756 से 1763)* में हुआ था।
- गुलाबों का युद्ध इंग्लैंड में हुआ।
- इंग्लैंड के सामन्तों ने राजा जॉन को सन् 1215 ई. में एक अधिकार-पत्र पर हस्ताक्षर करने को मजबूर किया। इस अधिकार-पत्र को मैग्नाकार्टा कहा जाता है। यह सर्वसाधारण के अधिकारों का घोषणा-पत्र था।
- ट्यूडर वंश के शक्तिशाली राजाओं के शासनकाल में संसद उनके हाथों की कठपुतली बनी रही।
- एलिजाबेथ प्रथम का संबंध ट्यूडर वंश से था।
- इंग्लैंड में गृह-युद्ध सात वर्षों तक चला।
- इंग्लैंड के राजा चार्ल्स प्रथम को फाँसी की सजा दी गयी।
- गृह-युद्ध के दौरान राजा के समर्थकों को कैवेलियर कहा गया था और संसद के समर्थकों को राउंडहेड्स कहा गया।

9. प्रथम विश्वयुद्ध

- प्रथम विश्वयुद्ध की शुरुआत 28 जुलाई, 1914 ई. को आस्ट्रिया द्वारा सर्बिया पर आक्रमण किये जाने के साथ हुई। यह चार वर्षों तक चला। इसमें 37 देशों ने भाग लिया।
- प्रथम विश्वयुद्ध का तात्कालिक कारण आस्ट्रिया के राजकुमार आर्क ड्यूक फर्डिनेंड की बोस्निया की राजधानी सेराजेवो में *28 जून, 1914* को की गई हत्या थी।
- प्रथम विश्वयुद्ध में सम्पूर्ण विश्व दो खेमों में बँट गया—मित्र राष्ट्र एवं धुरी राष्ट्र।
- धुरी राष्ट्रों का नेतृत्व जर्मनी ने किया। इसमें शामिल अन्य देश थे—आस्ट्रिया, हंगरी, तुर्की, बुल्गारिया और इटली आदि।
- मित्र राष्ट्रों में इंग्लैंड, जापान, संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस एवं फ्रांस शामिल था।
- गुप्त संधियों की प्रणाली एवं यूरोप में गुटबन्दी का जनक जर्मनी के चांसलर बिस्मार्क को माना जाता है।
- आस्ट्रिया, जर्मनी एवं इटली के बीच त्रिगुट का निर्माण 1882 ई. में हुआ। त्रिगुट का सदस्य होने के व बावजूद इटली कुछ समय तक तटस्थ रहा और अन्ततः वह 26 अप्रैल, 1915 को ऑस्ट्रिया-हंगरी और जर्मनी के खिलाफ युद्ध में शामिल हुआ।
- सर्बिया की गुप्त क्रांतिकारी संस्था थी—काला हाथ।
- रूस-जापान युद्ध *(1904-05 ई.)* का अन्त अमेरिकी राष्ट्रपति रूजवेल्ट की मध्यस्थता से हुआ।
- मोरक्को संकट 1906 ई. में पैदा हुई।
- प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान जर्मनी ने रूस पर आक्रमण 1 अगस्त, 1914 ई. में एवं फ्रांस पर आक्रमण 3 अगस्त, 1914 ई. में किया।
- 4 अगस्त, 1914 ई. को इंग्लैंड प्रथम विश्वयुद्ध में शामिल हुआ।
- 26 अप्रैल, 1915 ई. को इटली मित्र राष्ट्रों की ओर से प्रथम विश्वयुद्ध में शामिल हुआ।
- प्रथम विश्वयुद्ध के समय अमेरिका का राष्ट्रपति वुडरो विल्सन था।
- अमेरिका 6 अप्रैल, 1917 ई. को प्रथम विश्वयुद्ध में शामिल हुआ।
- जर्मनी के यू-बोट द्वारा इंग्लैंड के लूसीतानिया नामक जहाज को डुबाने के बाद अमेरिका प्रथम विश्वयुद्ध में शामिल हुआ, क्योंकि उस जहाज पर मरनेवाले 1153 व्यक्तियों में 128 व्यक्ति अमेरिकी थे।
- जुलाई 1918 में ब्रिटेन, फ्रांस और अमेरिका ने संयुक्त सैनिक अभियान आरंभ किया और जर्मनी तथा उनके सहयोगी देशों की हार होने लगी। सितम्बर, 1918 में बुल्गारिया, अक्टूबर, 1918 में तुर्की तथा 3 नवम्बर, 1918 की ऑस्ट्रेलिया तथा हंगरी के सम्राट ने आत्मसमर्पण कर दिया।
- जर्मन सम्राट् कैंसर विलियम द्वितीय ने 10 नवम्बर, 1918 ई. को अपने पद से इस्तीफा दे दिया और हॉलैण्ड भाग गया। ऐसी अवस्था में समाजवादी प्रजातांत्रिक दल ने सत्ता अपने हाथों में लेकर एकतंत्र के स्थान पर गणतंत्र की स्थापना की और अपने नेता फ्रेडरिक एबर्ट को जर्मनी का चांसलर बनाया, जिसने 11 नवम्बर, 1918 को युद्ध विराम की संधि पर हस्ताक्षर कर दिया फलस्वरूप प्रथम विश्व युद्ध समाप्त हुआ।
- 18 जून, 1919 ई. को पेरिस शांति सम्मेलन हुआ, जिसमें 27 देश भाग ले रहे थे; मगर शांति-संधियों की शर्तें केवल तीन देश—ब्रिटेन, फ्रांस और अमेरिका तय कर रहे थे।
- पेरिस शांति सम्मेलन में शांति-संधियों की शर्तें निर्धारित करने में जिन राष्ट्राध्यक्षों ने मुख्य भूमिका निभाई, वे थे—अमेरिकी राष्ट्रपति वुडरो विल्सन, ब्रिटेन के प्रधानमंत्री लॉयड जॉर्ज और फ्रांस के प्रधानमंत्री जॉर्ज क्लेमेंसो।
- वर्साय की संधि 28 जून, 1919 ई. को जर्मनी के साथ हुई। संधि के तहत् जर्मनी की सेना 1 लाख तक सीमित कर दी गयी। उससे वायुसेना एवं पनडुब्बियाँ रखने के अधिकार छीन लिए गए। जर्मनी के सारे उपनिवेश विजित राष्ट्रों ने आपस में बाँट लिए।
- युद्ध के हर्जाने के रूप में जर्मनी से 6 अरब 10 करोड़ पौंड की राशि की माँग की गयी।
- अन्तरराष्ट्रीय क्षेत्र में प्रथम विश्वयुद्ध का सबसे बड़ा योगदान राष्ट्रसंघ की स्थापना थी।
- प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान होनेवाली वर्साय की संधि में द्वितीय विश्वयुद्ध का बीजारोपण हुआ।

10. चीनी क्रांति

- मंचू राजवंश का पतन 1911 ई. में हुआ।
- 1911 ई. में हुई चीनी क्रांति का नायक सनयात सेन था।
- 1905 ई. में सनयात सेन ने तुंग-मेंग दल की स्थापना की, जिसका उद्देश्य चीन में मंचू वंश के शासन को समाप्त करना था।
- क्रान्तिकारियों ने 29 दिसम्बर, 1911 ई. में सनयात सेन को अपनी सरकार का अध्यक्ष चुना।

- कोवीनेड लीग सोसायटी का संस्थापक सनयात सेन था।
- 1911 ई. की क्रांति के बाद चीन में गणतंत्र शासन-पद्धति की स्थापना हुई।
- युआन शीह काई के समर्थन में सनयात सेन ने अपना नेतृत्व वापस ले लिया।
- 1912 ई. में सनयात सेन ने कुओमिनतांग पार्टी की स्थापना की। इस पार्टी के पुनर्गठन के लिए सेन ने माइकेल बोरोदिन को आमंत्रित किया।
- डॉ. सनयात सेन ने अपनी सेना के संगठन के लिए जनरल गैलेन को चुना।
- डॉ. सनयात सेन के तीन सिद्धान्त थे—राष्ट्रवाद, लोकतंत्रवाद और सामाजिक न्याय।
- डॉ. सनयात सेन को चीन का राष्ट्रपिता कहा जाता है।

तांग बंश

चीन में तांग राजवंश के तहत एक साम्राज्य स्थापित हुआ, जो लगभग तीन सौ वर्षों तक *(7वीं से 9वीं सदी तक)* सत्ता में रहा। इसकी राजधानी शिआन दुनिया के सबसे बड़े नगरों में एक थी।
तांग साम्राज्य परीक्षा के माध्यम से नियुक्त की गई नौकरशाही द्वारा प्रशासित होता था।

- डॉ. सनयात सेन की मृत्यु 1925 ई. में हो गयी।
- डॉ. सनयात सेन की मृत्यु के बाद च्यांग काई शेक ने 1926 ई. में कुओमिनतांग पार्टी का नेतृत्व सँभाला।
- 1927 ई. में कुओमिनतांग पार्टी से साम्यवादी लोग अलग हुए।
- चीन में गृह-युद्ध 1928 ई. में शुरू हुआ।
- 1925 ई. को हूनान के विशाल किसान आन्दोलन का नेतृत्व माओत्से तुंग ने किया।
- माओत्से तुंग का जन्म 1893 ई. में हुनान में हुआ था।
- च्यांग काई शेक ने केन्द्रीय सरकार की सत्ता नानकिंग में सँभाली।
- च्यांग काई शेक ने अपनी सरकार की स्थापना फारमोसा में की।
- साम्यवादियों के दमन करने के लिए च्यांग काई शेक ने ब्लूशर्ट आतंकवादी दल का गठन किया।
- माओत्से तुंग के नेतृत्व में 1 अक्टूबर, 1949 ई. जनवादी गणराज्य की स्थापना चीन में की गई।
- चीनी साम्यवादी गणतंत्र का प्रथम अध्यक्ष माओत्से तुंग था।
- चीनी जनवादी गणराज्य का प्रथम प्रधानमंत्री चाऊ-एन-लाई था।
- चीन के जनवादी गणराज्य की राजधानी हूनान था।
- खुले द्वार की नीति चीन में अपनाई गयी थी।
- चीन के द्वार खोलने का श्रेय ब्रिटेन को दिया जाता है।
- खुले द्वार की नीति का प्रतिपादक 'जॉन हे' था।
- चीन 'एशिया का मरीज' के नाम से जाना गया।
- चीन की कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना 1921 ई. में हुई।

11. तुर्की

- तुर्की को 'यूरोप का मरीज' कहा जाता था।
- पान इस्लामिज्म का नारा अब्दुल हमीद द्वितीय ने दिया था।
- युवा तुर्क आन्दोलन की शुरुआत अब्दुल हमीद द्वितीय के शासनकाल में 1908 ई. में हुई।
- प्रथम विश्वयुद्ध के बाद तुर्की के साथ भीषण अपमानजनक संधि सेव्र की संधि 10 अगस्त, 1920 ई. को की गयी। मुस्तफा कमाल पाशा ने इसे मानने से इनकार कर दिया।
- आधुनिक तुर्की का निर्माता मुस्तफा कमाल पाशा को माना जाता है। इसे 'अतातुर्क' *(तुर्की का पिता)* के उपनाम से भी जाना जाता है।
- मुस्तफा कमाल पाशा का औपचारिक जन्म तिथि 19 मई, 1881 में सेलेनिका में हुआ था। इसके पिता का नाम अली रजा *(Ali Riza)* था।
- तुर्की में एकता और प्रगति समिति का गठन 1889 ई. में हुआ।
- प्रारंभ में कमाल पाशा एकता और प्रगति समिति के प्रभाव में आया।
- एक सेनापति के रूप में कमाल पाशा ने गल्लीपोली युद्ध में शानदार सफलता हासिल की। इसके बाद 1919 ई. में कमाल पाशा ने सैनिक पद से इस्तीफा दे दिया।
- 1919 ई. के अखिल तुर्क काँग्रेस के प्रथम अधिवेशन की अध्यक्षता मुस्तफा कमाल पाशा ने की। 1923 ई. में तुर्की एवं यूनान के बीच में लोजान की संधि हुई।
- 23 अक्टूबर, 1923 ई. को तुर्की गणतंत्र की घोषणा हुई।
- कमाल पाशा ने तुर्की में 3 मार्च, 1924 ई. को खिलाफत को समाप्त कर दिया।
- 20 अप्रैल, 1924 ई. को तुर्की में नये संविधान की घोषणा हुई।
- तुर्की के नये गणतंत्र का राष्ट्रपति मुस्तफा कमाल पाशा हुआ।
- रिपब्लिकन पीपुल्स पार्टी का संस्थापक मुस्तफा कमाल पाशा था।
- मुस्तफा कमाल पाशा द्वारा किये गये महत्वपूर्ण कार्य निम्न हैं : 1. 1932 ई. में तुर्की भाषा परिषद की स्थापना। 2. 1933 ई. में तुर्की में प्रथम पंचवर्षीय योजना का लागू होना। 3. 1924 ई. में तुर्की को धर्मनिरपेक्ष राज्य की घोषणा। 4. इस्ताम्बुल में एक मेडिकल कॉलेज की स्थापना। 5. ग्रेगोरियन कैलेंडर का प्रचलन *(26 दिसम्बर, 1925 ई. से लागू)*।
- इस्ताम्बुल का पुराना नाम कुस्तुनतुनिया था।
- 25 नवम्बर, 1925 ई. को तुर्की में टोपी और औरतों को बुरका पहनने पर कानूनी प्रतिबंध लगाया गया।
- कमाल पाशा की मृत्यु 1938 ई. में हो गयी।

12. इटली में फासिस्टों का उदय

- फासिज्म का उदय सर्वप्रथम इटली में हुआ। इसका जन्मदाता मुसोलिनी को माना जाता है।
- मुसोलिनी का जन्म 1883 ई. में रोमाग्ना में हुआ था।
- मुसोलिनी के दल का नाम फासिस्टवाद था। इसकी स्थापना मिलान में की गयी थी।
- ड्यूस के नाम से मुसोलिनी को पुकारा जाता था।
- फासीवादी राष्ट्रवाद का समर्थन करते थे।
- फासीवादी दल के स्वयंसेवक काली कमीज पहनते थे।
- मुसोलिनी ने डियाज को सेना का अधिकारी नियुक्त किया।
- मुसोलिनी द्वारा बनाये गये निगमों की संख्या 22 थी।
- राष्ट्रीय निगम परिषद् का अध्यक्ष मुसोलिनी था, जिसकी सदस्यों की संख्या 500 थी।
- ग्रैण्ड कौंसिल ऑफ फासिस्ट पार्टी के सदस्यों की संख्या 25 थी।
- मुसोलिनी ने अक्टूबर, 1922 ई. में रोम पर और 1935 ई. में अबीसीनिया पर आक्रमण किया।
- जापान एवं जर्मनी के साथ मुसोलिनी ने रोम-बर्लिन-टोकियो धुरी का निर्माण 1936 ई. में किया।
- मुसोलिनी ने 10 जून, 1939 ई. को द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान मित्र राष्ट्रों के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की। इटली में फासीवाद का अन्त 28 अप्रैल, 1945 ई. को माना जाता है।

13. जर्मनी में नाजीवाद का उदय

- जर्मनी में नाजी दल का उत्थान हिटलर के नेतृत्व में हुआ।
- हिटलर का जन्म 20 अप्रैल, 1889 ई. को ऑस्ट्रिया के ब्रौना नामक शहर में हुआ था।
- हिटलर बचपन में चित्रकार बनना चाहता था।
- प्रथम विश्वयुद्ध (1914–18) में हिटलर जर्मनी की तरफ से लड़ा था और युद्ध में अभूतपूर्व वीरता के लिए उसे आयरन क्रास प्राप्त हुआ था।
- युद्ध के बाद हिटलर जर्मन बर्कर्स पार्टी का सदस्य बना। 1920 ई. में इस पार्टी का नाम बदलकर नेशनल सोशलिस्ट जर्मन वर्कर्स पार्टी रखा गया। धीरे-धीरे हिटलर इसका फ्यूहरर *(नेता)* बन गया।

- 1923 में हिटलर ने लूडेनडार्फ के साथ मिलकर वाइमर गणतंत्र के खिलाफ विद्रोह कर दिया। विद्रोह असफल हुआ। हिटलर को बंदी बना लिया गया। जेल में ही हिटलर ने अपनी प्रसिद्ध आत्मकथा मीनकैम्फ की रचना की। 1924 के अंत में उसे जेल से रिहा कर दिया गया। जेल से रिहा होने के बाद उसने अपने दल को फिर से संगठित किया और स्वास्तिक को प्रतीक के रूप में ग्रहण किया।
- 1932 के चुनाव में हिटलर की नाजी पार्टी को 230 सीटें प्राप्त हुई परन्तु उसे सरकार बनाने का मौका नहीं मिला। बाद में राष्ट्रपति हिंडेनवर्ग ने 30 जनवरी, 1933 को हिटलर को चांसलर मनोनीत किया।
- अगस्त, 1934 में हिंडेनवर्ग की मृत्यु ने पर चांसलर और राष्ट्रपति के पद को मिलाकर एक कर दिया गया और हिटलर जर्मन का सर्वेसर्वा बन गया।
- गुप्तचर पुलिस 'गेस्टापों' का संगठन हिटलर ने किया था।
- 'एक राष्ट्र एक नेता' का नारा हिटलर ने दिया।
- नाजी दल का प्रचार-कार्य गोयबल्स सँभालता था।
- जर्मन सुरक्षा परिषद् की स्थापना 4 अप्रैल, 1933 ई. में हुई।
- हिटलर ने 16 मार्च, 1935 ई. में जर्मनी में पुनःशस्त्रीकरण की घोषणा की उसने वर्साय संधि की निःशस्त्रीकरण संबंधी सभी धाराओं को तोड़ने की घोषणा की एवं उसने पूरे जर्मनी में अनिवार्य सैनिक सेवा लागू कर दिया।
- साम्यवादी खतरा से बचने के लिए जर्मनी, इटली एवं जापान के बीच कामिन्टर्न विरोधी समझौता 1936 में सम्पन्न हुआ जो कालान्तर में धुरी राष्ट्र के नाम से प्रसिद्ध हुआ।
- हिटलर ने 1 सितम्बर, 1939 ई. को पोलैंड पर आक्रमण किया।
- हिटलर की विस्तारवादी नीति का पहला शिकार आस्ट्रिया हुआ।
- एडोल्फ हिटलर के लिए शामी विरोधी नीति का अर्थ था–यहूदी विरोधी नीति।
- हिटलर ने 30 अप्रैल, 1945 ई. को आत्महत्या की।

14. जापानी साम्राज्यवाद

- जापान के साम्राज्यवाद का सबसे पहला शिकार चीन हुआ।
- 1863 ई. में एक अमेरिकी नाविक पेरी ने बल-प्रयोग कर जापान का द्वार अमेरिकी व्यापार के लिए खोला।
- जापान में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया की शुरुआत मूतसुहीतों ने की।
- 1872 ई. में जापान में सैनिक सेवा अनिवार्य कर दी गई।
- 1905 ई. में जापान ने रूस को हराया।
- जापान-रूस युद्ध की समाप्ति 5 सितम्बर, 1905 ई. को पाट्र्समाउथ की संधि के द्वारा हुई।
- जापान ने 1931 ई. में अपनी साम्राज्यवादी आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए मंचूरिया पर आक्रमण किया।
- 20 मार्च, 1933 ई. को जापान ने राष्ट्रसंघ की सदस्यता त्याग दी।
- पीत आतंक से जापान को संबोधित किया जाता था।
- द्वितीय विश्वयुद्ध में जापान ने धुरी राष्ट्र का साथ दिया था।
- अमेरिका ने जापान पर पहला अणु बम 6 अगस्त, 1945 ई. को हिरोशिमा पर गिराया था।
- द्वितीय विश्वयुद्ध में 10 सितम्बर, 1945 ई. को जापान ने आत्मसमर्पण किया।
- हिरोशिमा और नागासाकी पर अणु बम गिराये जाने के कारण जापान ने द्वितीय विश्वयुद्ध में आत्मसमर्पण किया था।

15. द्वितीय विश्वयुद्ध

- 1 सितम्बर, 1939 ई. को जर्मनी ने पोलैंड पर आक्रमण किया। इसके दो दिन बाद फ्रांस एवं ब्रिटेन ने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की और इसी के साथ द्वितीय विश्व युद्ध की शुरुआत हुई। यह 6 वर्षों तक लड़ा गया। इसका अन्त 2 सितम्बर, 1945 ई. को हुआ। इसमें 61 देशों ने भाग लिया।
- द्वितीय विश्वयुद्ध का तात्कालिक कारण जर्मनी का पोलैंड पर आक्रमण था।
- द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान जर्मन जनरल रोम्मेल का नाम डेजर्ट फॉक्स रखा गया था।
- म्यूनिख पैक्ट सितम्बर, 1938 ई. में सम्पन्न हुआ।
- जर्मनी ने वर्साय की संधि का उल्लंघन 1935 ई. में किया।
- स्पेन में गृह-युद्ध 1936 ई. में शुरू हुआ। संयुक्त रूप से इटली एवं जर्मनी का पहला शिकार स्पेन था।
- जर्मनी द्वारा सोवियत संघ पर आक्रमण करने की योजना को ऑपरेशन बारबोसा कहा गया।
- 23 अगस्त, 1939 ई. को जर्मनी-रूस आक्रमण समझौते पर हस्ताक्षर हुए। जर्मनी ने रूस पर समझौता उल्लंघन का आरोप लगाकर उस पर 22 जून, 1941 ई. में आक्रमण कर दिया। फरवरी 1943 में रूसी सेना जर्मनी को हराने में सफल हुई।
- जर्मनी की ओर से द्वितीय विश्वयुद्ध में 10 जून, 1940 ई. को इटली ने प्रवेश किया।
- अमेरिका का द्वितीय विश्वयुद्ध में प्रवेश 8 दिसम्बर, 1941 ई. को हुआ। इसका कारण जापान द्वारा 7 दिसम्बर, 1941 का हवाई द्वीप स्थित पर्ल हार्बर के अमेरिकी नौसैनिक अड्डे पर जबरदस्त हमला था।
- द्वितीय विश्वयुद्ध के समय इंग्लैंड का प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल एवं अमेरिका का राष्ट्रपति फ्रैंकलिन डी. रूजवेल्ट था।
- इंग्लैंड की शानदार अलगाववाद की नीति का विचारक सेलिसेवरी था।
- वर्साय की संधि को आरोपित संधि के नाम से जाना जाता है।
- द्वितीय विश्वयुद्ध में जर्मनी की पराजय का श्रेय रूस को दिया जाता है।
- मित्र राष्ट्रों के सामूहिक प्रयासों से 6 जून, 1944 को जर्मन सेना परास्त हो गयी और 7 मई, 1945 को इसने आत्मसमर्पण कर दिया।
- द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान अमेरिका ने 6 अगस्त, 1945 ई. को जापान पर अणुबम का प्रयोग किया। इस युद्ध में मित्रराष्ट्रों द्वारा पराजित होनेवाला अंतिम देश जापान था।
- अमेरिका ने 6 अगस्त, 1945 ई. को हिरोशिमा पर लिट्ल बॉय *(यूरेनियम-235)* तथा 9 अगस्त, 1945 ई. को नागासाकी पर फैटमैन *(प्लूटोनियम-239)* नामक एटम बम गिराया था।
- 2 सितम्बर, 1945 को यदों की खाड़ी स्थित अमेरिकी युद्ध-पोत मिसूरों पर मित्र राष्ट्रों के सर्वोच्च सेनापति मैक आथर के समक्ष जापान ने आत्मसमर्पण कर दिया और इसके साथ ही द्वितीय विश्व युद्ध समाप्त हो गया। जापानी प्रधानमंत्री एडमिरल सुजुकी ने त्यागपत्र दे दिया।
- अन्तरराष्ट्रीय क्षेत्र में द्वितीय विश्वयुद्ध का सबसे बड़ा योगदान संयुक्त राष्ट्रसंघ की स्थापना है।

★★★